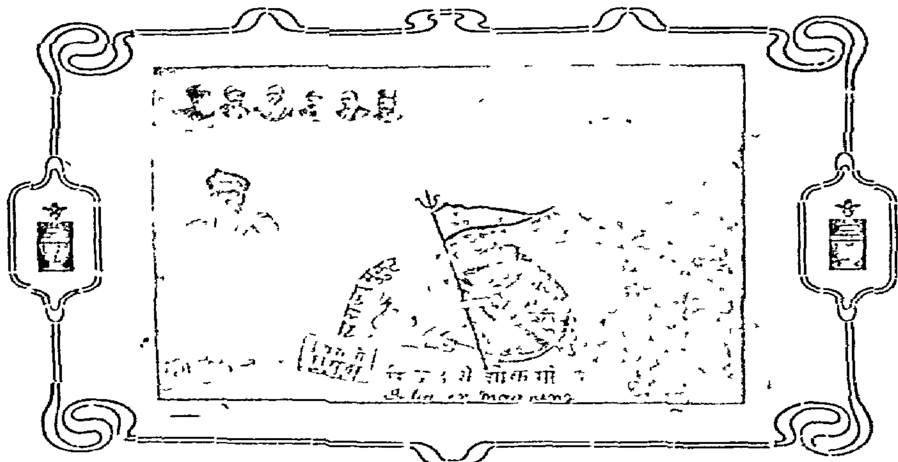
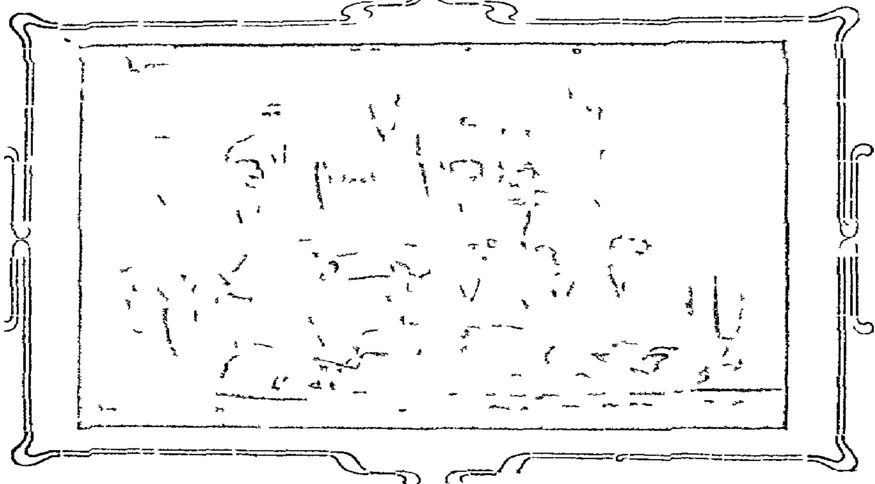


महाराष्ट्रकेशरी लो० मा० तिलकके वियोगमें हिन्द देवी शोकमें ।

(भैया नरम जैनी–सूरतसे प्राप्त)



॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बरं जैन समाज-मात्रम् ॥

वर्ष १४ वाँ.	वीर संवत् २४४७. कार्तिक. विक्रम सं० १९७७.	अंक १ २

"महावीराष्टकम्।"

प्रभो ! महावीर ! सुधर्मनेतः ! संसारकल्याणकरप्रवीण !
हितोपदेष्टः ! सुसमस्तबन्धो ! तुभ्यं नमो नाथ ! सुशान्तये नः ॥ १ ॥
यः पूर्वमासीद्धि मरीचीनामा, पुरार्जितैः कर्मभिरादिपौत्रः ।
विद्या शरीरादि समग्रशिष्टो, गार्हस्थ्यसौख्येन युतः समन्तात् ॥ २ ॥
यं मान मोहादि विशिष्ट जीवं, व्यधात्पुरस्ताद्भवितव्यतैव ।
यतोऽयमेवात्तसुदुःखभारः संसारपाथोधिपतौ पपात ॥ ३ ॥
येनात्तमानादिकषायकेन चतुर्गतौ दुःखसमन्वितेन ॥
भ्रान्तं तदा सर्वं प्रदर्शनाय मानेन जीवस्य न दुर्गतिः का ? ॥ ४ ॥
यस्मै पुनः श्रेष्ठनरामरेन्द्राः नतीर्दधुः स्वोन्नतिकारकाय ॥
सम्यक्त्वरत्नस्य प्रचारकाय सत्त्वेषु मैत्री प्रतिपादकाय ॥ ५ ॥
यस्मात् त्रिलोकस्थितवस्तुविज्ञात स्याद्वादविद्यामृतवर्षिणो वै ॥
लब्ध्वोपदेशान् ही सुभव्यजीवाः संसारतीरं ह्यलभन्त हृष्टाः ॥ ६ ॥
यस्यार्हतो-दर्शन लालसोपि स दर्दुरो देवगतिं ह्यवाप ॥
अन्ये न के तद्गुणदत्तचित्ता निश्रेयसं शीघ्रमवापुर्वै ॥ ७ ॥
यस्मिन्ननन्ताः सुगुणाः समस्ताः न दृश्यते दोष लवस्तु कश्चित् ॥
आसे महावीरसुनामधेये भूयान्मदीया चिरमेव भक्तिः ॥ ८ ॥

कुंवरलाल न्यायतीर्थः-अधिष्ठाता
सागर प्रांतीय दि० जैन विद्यालयस्य ।



Come, come, dear bewitching love, Union!
Make us happy and gay with thy sweet smile,
And shower on us the blessings of prosperity
Oh! what are thy joys! Thou make the earth heaven-like!
One draught of thy nectar sweet will make us immortal!
Oh! crown our forehead with thy precious divine glory!

Digambras and Swetambars, in duty bound—
May stand together, as true sons of Lord Jina!
No ill-feeling, no hatred shall abide them.
But lo peacefully they will walk hand in hand,
And pave a way to their long lost magnanimity!
Oh! how gladly welcome be that day to Jains!
Lord! may good will and benevolence be their companions,
Happy may be they and sing songs of thy glory
Jains we are! True followers of Lord Vira!
great warrior, who triumphed over mighty Kamas!
preached the true gospel of Truth & Peace!
...ce we will keep around and shake the slumber,
...l will strive together to diffuse Jain canons!
... how humanity is suffering of proud materlism,
...ut now we will fill it with wonder, at dazzeling powers of spiritulism
Waken we are and will be up and doing again,
And will stir the cold blood of our swooning Mother
Again, stride she will towards Progress and houlder her sister,
In the construction of a new India

Hyderabad (Sind) K. P. JAIN.

प्रेम—प्याला।

दादरा।

पियो जी पियो प्रेम-पियूष पियाला ॥ टेक ॥
हिन्दू-मुसल्मां,-जैन-इसाई, वृद्ध युवा और बाला।
सब मिलि चाखो स्वाद-प्रेम रंग, अद्भुत अजब निराला॥
वैर-विरोध, फूटने ऐसा, तुम्हें किया मतवाला।
कैई जुग बीतनको आए, अजहु न होश सँभाला ॥२॥
जैसे कुदशा हुई तुम्हारी, सो जानत सब हाला।
तौहु न छोड़त बान आपनी, सहते दुःख कराला ॥३॥
उठो! उठो! अब चेत करो तुम, देखो रंग निराला।
प्रेम करो भारतके प्रेमी, उन्नति हो ततकाला ॥४॥
'प्रियवर' येही अवसर है, सो करो न टालमटाल।
फेरि दाव ऐसा नहिं पावे, जो यह समय निकाला ॥५॥

'प्रिय' फूलेरा.

"नूतन वर्षे शुभाशिष"

ગઝલ.

અહા! ઓ જૈન સંતાનો, ધ્વજા "મહાવીરની ધારો"
મુબારક ધર્મ વૃત્તિથી, નૂતન શુભ વર્ષ પ્રગટાવો.
ત્યજી દો માન માયાને, તથા તમ ક્રોધ શત્રુને,
ઠરાવી ચિત્ત વૃત્તિને, ધરી લો શાંત વૃત્તિને.
બનો મો મુક્ત લાલચથી, સદા તૃષ્ણા નિવારીને,
ગ્રહો સંતોષ પ્યાલીને, અરે ભવ દુઃખ ટાળવાને
નિહાળો 'વીર'ના ગ્રંથો, તથા તમ શાસ્ત્રના સૂત્રો,
ધરી લઈ અંતરે તેને, પછી મુક્તિ સીડી પકડો.
અહા! સત્ કાર્ય કરવામાં, રહેજો શાસ્ત્ર શસ્ત્રોથી,
તથા સ્વાતંત્રી બનવાને, ન કરશો આતમ યત્નોથી.
અવર આ જૈન જ્ઞાતીની, તપાસો વસ્તીની સંખ્યા,
ક્રમે ક્રમ થાય કયમ ઓછી, પૂછું છું કારણો તેના.
પગથીયુ એક છે ઉત્કૃષ્ટ, તમારું શ્રેય થાવામાં,
ન કરશો 'વિક્ર' બાળાના', નથી લગ્નો કજોડાનાં
અવર ઓ જૈન ભ્રાતાને, વિનતી નમ્ર છે મારી,
તજો દુષ્કર્મની પ્યાલી, બનો સ્તનમગી ને ન્યારી.
અરે મુજ કોમની અંદર, સુદૃઢ હો પ્રેમ ને અંતર,
મુબારકબાદી મોકલતા "નવીન" શુભ વર્ષની અંદર.
અરે ઓ સ્નેહી મંડળમાં, તથા મુજ જૈન જ્ઞાતિમાં
મુબારકબાદી હો ધર્મે તથા શુભ જ્ઞાન દોલતમાં
પતાકા પ્રેમની ધરજો, અહા સુખશાંતિથી રહેજો,
પીને 'શુભ કિર્તિ રૂપ પ્યાલો 'નૂતન' શુભ વર્ષ દીપાવો
અહા! મુજ નમ્ર આશિષો, દયાળુ કોમના ભક્તો,
પ્રિતેથી અંતરે ધરીને, "મહાવીર" પ્રાર્થના કરજો

શુભચિંતક વિદ્યાર્થી-
મુલચંદ કસ્તુરચંદ તલાટી-દાહોદ.



नूतन वर्ष। 'दिगंबर जैन'को जैन समाजकी सेवा करते २ तेरह वर्ष वीत चुके है और इस ही अंकसे यह चौदहवे वर्षमे प्रवेश करता है। गत वर्षमें कौटुंबिक वैमनस्य आदिके कारणसे न तो हम सचित्र खास अंक प्रगट कर सके थे और न छह् मास तक अंक भी निकाल सके थे इस लिये ६ अंक निकाल कर अर्ध वर्षका ही मूल्य वसूल किया गया था। और वर्षका प्रारंभ तो वीर निर्वाण संवतके प्रारम्भसे ही होना चाहिये। इस लिये इस अंकसे १४ वा वर्ष गिना जायगा।

* * *

विशेषांक। गत आठ वर्षसे बडा भारी खर्च करके वर्षके प्रारम्भमें हम सचित्र विशेषांक प्रकट करते है। जिसमें सिर्फ गत वर्ष विशेषांक नहीं प्रकट कर सके थे जिसके कारण पाठकोंको विदित ही है परंतु हर्ष है कि फिर इस वर्ष अपने पाठकोंकी सेवामें यह सचित्र विशेषांक समर्पण कर सके है। इस अंकके ११२ पृष्टोंमें संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी और अंगरेजी ऐसी पांच भाषाके अलग२ ३६ लेख और कविताओंका संग्रह है जिनके विषय विषय-सूचीसे मालूम ही होंगे। इस वार धार्मिक सामाजिक विषयोंके अतिरिक्त सामाजिक उपन्यास भी है। अंगरेजी लेखोंमे मि० हर्बर्ट वोरन लंदनका कर्म (Karma) विषयक तथा मि० मणिलाल उदानीका जैन ग्रेज्युएटोंका कर्तव्य (Duties of Jain Graduates) ये दो लेख हरएक अंगरेजी पढे लिखे जैन बंधुओंको पढने और मनन करने योग्य है। इस वारके विशेषांकमें कुछ ३८ चित्रोंमे ६ पृष्ठके २६ रंगीन चित्र ऐसे प्रकट कर सके हैं जैसे कि आज तक किसी भी पत्रमें नहीं प्रकट हुए है। बूरे कृत्योंका नर्कमे क्या २ बूरे फल भोगना पडता है उसका दृश्य इन चित्रोंमें है। और चित्रोंके पीछे उनका परिचय भी है। सभी चित्रोंका परिचय भी अलग दिया गया है। साराश कि चित्रोंके ब्लोक बनने आदि कारणोंसे यह विशेषांक प्रकट होनेमें विलंब हो गया है। तौ भी यह अंक देखनेसे पाठकोंको विलम्बका कारण समझमें आ सकेगा। स्थानाभावसे हम कई लेख इस अंकमें प्रकट नहीं कर सके हैं वे क्रमशः आगामी अंकोंमें प्रकट होंगे और जिन २ लेखकोंने अपना अमूल्य समय खर्च करके लेख भेजनेकी उदारता दिखलाई है उसके लिये उनके हम आभारी है।

* * *

तिथि दर्पण। १२ वर्षसे हम अपने पाठकोंको सचित्र तिथिदर्पण भेट करते है उसी माफिक इस वर्ष भी वीर निर्वाण संवत २४४७ का जैन तिथिदर्पण इस अंकके साथमें अलग बांटा गया है। इस वार विशेषता यह है कि तिथियोंके खाने ऐसे रक्खे गये है कि

गुजरात और हिंदुस्थानके सभी जैन भाईयोंको यह उपयोगी होगा। तिथिदर्पणके साथ २ हरएक वर्ष हम किसी न किसी प्रखर दानी या विद्वान्का चित्र प्रकट करते हैं उसी मुवाफिक इसवार सुप्रसिद्ध दानी और बम्बईकी दि० जैन समाजके मुखिया **सेठ गुरुमुखराय सुखानंदजीका** चित्र प्रकट किया है। आपकी दान प्रणाली समाजसे छिपी नहीं है। आपका सचित्र जीवन वृत्तांत हम पांच वर्ष पर प्रकट कर चुके हैं। अभी ही बम्बईमें तीन चार लाख रुपये खर्च करके बड़ी भारी धर्मशाला आपने तैयार करवाई है और जिसका मुहूर्त शीघ्रही होनेवाला है। बम्बईमें भूलेश्वर पर नया मंदिरका स्थापित होना आपकी उदारता और आपकेही परिश्रमका फल है। और करीब एक लाख रुपये खर्च करके फिर इसी मंदिरको शिखरबंद बना देनेकी भी आपकी पूर्ण अभिलाषा प्रकट हो चुकी है। अब हम सेठ सुखानंदजीसे एक सूचना यह भी करते हैं कि दूसरे दानोंके साथ २ बम्बईमें एक जैन व्यापारिक विद्यालयकी बड़ी भारी आवश्यका है। क्या ही अच्छा हो यदि आप लाख दो लाख रुपये लगा कर बम्बईमें एक व्यापारिक विद्यालय ऐसा खोल देवे कि जिसमें व्या० विद्यालयके साथ २ धार्मिक शिक्षा भी दी जा सके।

* * *

जैन संवत्। कई वार हम लिख चुके हैं और फिर भी याद दिलाते हैं कि वही खाते, पत्रव्यवहार आदिमें अपना जैन संवत् अर्थात् वीर निर्वाण **संवत् २४४७** लिखना न भूलें। सभी संवतोंसे हमारा संवत् पुराना है। और इसके लिखनेसे हमारे अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीको निर्वाण हुए कितने वर्ष व्यतीत हुए यह नित्य स्मरणमें रहता है। इसी लिये तथा जैन जातिकी गौरवताके लिये भी इस संवतके प्रचार करनेकी परम आवश्यक्ता है। हर्ष है कि हमारे प्रयाससे मुंबाई, वडौधा, अहमदावाद आदिके गुजराती पंचांगकार अपने पंचांगमें वीर संवत् तथा दि० जैन त्यौहार प्रकट करते हैं जिससे अजैन भाई भी हमारे जैन संवत् तथा दि० जैन त्योहारोंसे परिचित होते हैं।

* * *

खंडेलवाल महासभा। कई दिनोंके आन्दोलनके बाद पं० पन्नालालजीके अटूट परिश्रमसे अखिल भारतवर्षीय दि० जैन खंडेलवाल महासभा स्थापित हो चुकी और उसका प्रथम अधिवेशन भी सेठ लालचंदजी सेठीके सभापतित्वमें कलकत्तेमें सफलताके साथ हो गया है। यह तो निःसंशय है कि जो कार्य महासभा और प्रांतिक सभा नहीं कर सकती है वह कार्य जातिय सभा आसानीसे कर सकती है। क्योंकि जातिय सभा हरएक प्रस्ताव तुर्त ही अमलमें ला सकती है। इसके कितनेक प्रस्ताव महत्वके हैं जिनमें विवाह समय लड़केकी उम्र कमसेकम १५ और लड़कीकी ११ वर्षकी ठहराई है, परंतु हमारे ख्यालसे लड़कीकी १२ और लड़केकी उम्र १८ वर्षकी विवाहके समय कमसेकम होनी चाहिये।

जब कि दोनों योग्य वयके होते हैं और सामान्य विद्या संपादन भी कर सकते हैं। सगाईके समय लड़कीकी उम्र कमसेकम ९ वर्षकी रखी है वह भी ११ वर्ष होनी चाहिये। कम उम्रमें सगाई कर देनेसे अनेक अनिष्ट परिणाम होते हैं। ३० वर्ष तककी उम्र वालेका नुकता न करना इसमें भी ४५ वर्ष कमसेकम रखना चाहिये। विधवा विवाह करनेवाले उदयलालको जातिच्युत किये हैं यह योग्य ही है परन्तु उनका मंदिर व्यवहार भी बंद करना ठीक नहीं है। मंदिरके दर्शन तो सभी कर सकते हैं। महासभाकी ओरसे खंडेलवाल जैन हितेच्छु' पाक्षिक पत्र प्रकट हो कर हरएक खंडेलवाल पंचायतीको मुफ्त भेजा जाने वाला है यह जान कर अतीव आनंद हुआ है। महासभाके कार्यकर्तागणं सगाई, विवाह तथा नुकतेके प्रस्तावको अपने हरएक ग्राम और नगरमें अमलमें लानेके लिये वर्ष भर जीजानसे प्रयत्न करेंगे और आगामी वर्षके अधिवेशनमें इन प्रस्तावोंको हमारी उपरोक्त सूचनानुसार आगे बढावेंगे ऐसी हमें पूर्ण उम्मेद है। विवाहके खर्चोंको कम करनेकी भी खास आवश्यकता है।

* * *

महासभा। जबसे हमारी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका कार्य लाला भगवानदासजी बड़नगरके मंत्रीत्वमें आया है तबसे महासभामें उसको महासभा कहने योग्य कार्य उत्तरोत्तर होने लगे हैं। महासभाका अधिवेशन गत साल अजमेरमें हुआ था और इस वर्ष कानपुरमें ता० १-२-३ अप्रैलको बड़े समारोहके साथ होगा। इस बार महासभामें एक अपूर्व नवीनता होनेवाली है वह यह है कि महासभाके साथ २ वहां **जैन साहित्य प्रदर्शन** भरनेका निश्चित हुआ है। इस प्रदर्शनमें अनेक हस्त लिखित ताडपत्रके ग्रंथ, शिलालेख, प्राचीन जैन चित्र, अनेक भाषाके प्राचीन जैन ग्रंथ आदि सारे हिंदुस्थानमेंसे संग्रह करके दिखाये जायंगे। प्रदर्शनके मंत्री वैद्यराज प० कनैयालालजी, जैन औषधालय कानपुर है। आप प्रदर्शनको उपयोगी बनानेके लिये खूब परिश्रम कर रहे हैं। आराके जैन सिद्धांत भवनसे सब प्राचीन जैन साहित्य वहां लाकर दिखाया जायगा। जहां २ प्राचीन जैन शास्त्र, शिलालेख, चित्र आदि हों वहांके भाई इस प्रदर्शनमें अवश्य भेजनेका प्रबंध करें तथा महासभाकी इस बैठकमें पधारनेकी तैयारी करें। इस बारका अधिवेशन अपूर्व ही होगा।

* * *

बम्बई प्रांतिक सभा। सभी प्रांतिक सभाओंमें सबसे प्रथम बम्बई दि० जैन प्रांतिक सभाकी स्थापना स्वर्गीय पं० गोपालदासजी बरैय्या, स्व० सेठ माणेकचंदजी, पं० धन्नालालजी, सेठ हीराचंद नेमचंदजी आदिके प्रयत्नसे हुई थी और उसको २० वर्ष हो चुके हैं। बहुत करके यह सभा प्रत्येक वर्ष अपना वार्षिक अधिवेशन अलग २ स्थानपर करती है। गत वर्षका अधिवेशन पावागढ़जी सिद्धक्षेत्र पर हुआ था। और इस वर्ष यह

करके भारतीय प्रजा पर उपकार कर रहे हैं। परन्तु इसके साथ २ वर्णाश्रमात्मक धर्मसे विरुद्ध स्पर्शास्पर्श भेदको मिटानेके उद्देश्यसे उच्च जातिके साथ १ नीच अस्पर्श जाति वालेको भी भरती करनेका आदेश करते है इसका सभा विरोध करती है और प्रार्थना करती है कि धर्मरक्षार्थ अस्पर्श जातिको शामिल न कर उनका जूदा प्रबन्ध करें।

अतीव शोकजनक मृत्यु–मास्टर सुन्दरलालजी बैनाडा झालरापाटन सीटिकी अतीव शोकजनक मृत्यु सिर्फ ४९ वर्षकी आयुमें पौष वदी १२ को हो गई। आप हिंदी संस्कृत और जैन साहित्यके अच्छे जानकार थे। आपकी जाति सेवा और धर्म सेवा अपार थी। बम्बईमें तीर्थक्षेत्र कमीटिकी स्थापनाके समय काम जमाने वाले आप ही थे, सेठ विनोदीराम लालचंदजी वाले आपकी सहायता और सूचनासे अनेक धार्मिक कार्य कर रहे थे। नित्य आप कई बालकोंको विना फीस पढाते थे। झालरापाटनकी सभी जैन संस्थाओंके आप परम सहायक थे। सारांश–आपके वियोगसे जैन जातिको और खास करके झालरापाटनकी जनताको एक जाति सेवककी अतीव कमी हुई है। आपकी आत्माको शान्ति लाभ हो।

झालरापाटन–राज्यकी ओरसे फिर जीव हिंसा दो वर्षसे प्रारंभ हुई है। उसको बन्द करानेके लिये सेठ लालचंदजीको अतीव परिश्रम करना चाहिये।

जातिसेवाका अवसर–देहलीसे सभी बड़ी २ यात्रा करनेके लिये ब्र० शीतलप्रसादजीके साथ ३००-४०० आदमियोंका एक संघ स्पेशल ट्रेन द्वारा ता० १४ जनवरीको रवाना होगा इसलिये जहां २ यह संघ मुकाम करे वहाके भाइयोंका फर्ज है कि संघकी यथाशक्ति सेवा करे और ब्रह्मचारीजीके उपदेशका भी लाभ लेवें।

रेशंदीगिरी–मे वार्षिक मेला हो गया। १० हजार यात्री हुए थे। और गोलापूर्व दि० जैन सभाका वार्षिकोत्सव हुआ था जिसमें पं० गणेशप्रसादजी वर्णी खास पधारे थे और करीब ८००) का चंदा जातिय विद्यालय स्थापित करनेको हो गया तथा सतर्क० दि० जैन पाठशाला सागरका उत्सव होकर उसको भी करीब २००००)की सहायता मिली थी। पं० मुन्नालाल रांधेलीयका प्रयास अत्युत्तम था।

सहायता–रा० बा० सर सेठ हुकमचंदजीने अपनी पुत्री ताराबाईके विवाहकी खुशीमें ९०) दिगंबर जैनको सहायतार्थ भेजे हैं वे धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करते हैं।


૫૬


૫૭

॥ पचावनमाचित्रनादोहा ॥

घूम सगगावता घणा, भमरी करे काज ॥ जय नरकमें उपन्यो, पाप तणा ए साज ॥ १ ॥ पाप किया इण लोकमें, मार्या भलका साट ॥ ज्ञानीका आया नहीं, ए भूमा दीसे ठाठ ॥ २ ॥ तीर जोरथी मारता, परमाधामी देव ॥ भोगवतुं ताई कर्युं, पापकर्मने सेव ॥ ३ ॥

॥ पचावनमाचित्रनादोहा ॥

घूम सलगावता घणा, भमरी केरे काज ॥ जय नरकमें नपन्यो, पाप तणा एसाज ॥ १ ॥ पाप किया इणलोकमें ॥ मार्यां भलका साट॥ ज्ञानीका आया नहीं, ए भूमा दीसे ठाठ ॥ २ ॥ तीर जोरथी मारता, परमाधामी देव॥ भोगवतुं तारु कर्युं, पापकर्मने सेव ॥ ३ ॥

छपनमा चित्रमा जतावेला पापकर्म भोगववाना सतावनमा अंकना चित्रना दोहा

वांको राखी पग हाथथी, लीधार्या स्वयमेव ॥ परमाधामी तेहने, दुःख दिये अप्रमेय ॥ १ ॥ कर्वत ऊपर मूकिने, ताणे बहु करी क्रोध ॥ राड्यो नाखे दुःखथी, वणी नरहे कांहि सूधि ॥ २ ॥ दुकृत कर्मनायोगथी, भोगवे नहि तस लाग ॥ जेवां जय जांधे जरां, तेवां भोगवे भाग्य ॥ ३ ॥

छपनमा चित्रमां बतावेला पापकर्म भोगववाना सतावनमा अंकना चित्रना दोहा

वांको राखी पग हाथथी, लीमार्या स्वयमेव ॥ परमाधामी तेहने, दुःख दिये अप्रमेय ॥ १ ॥ कर्वत केमपर मूकिने, ताणे बहु करि क्रोध ॥ राड्यो नाखे दुःखथी चली नरहे कांहि सूधि ॥ २ ॥ दुकृतकर्मना योगथी, भोगवे नहीं तस लाग ॥ जेवां जीव बांधे खरां, तेवो भोगवे भाग्य ॥ ३ ॥

वैरायलनाशेठ शिवचंद डीसनक - सूरतना गुलाब भाई तथा मोतीचंद भाणु भाई- मारवाडी प्रथ्वीराज कृतमल मोडमचंदजालीवानीमदत

~~चोपनमां अंकना चित्रना दोहा-~~

~~मदिराविण चाले नहीं ॥ रात दीयस वली पीध ॥ परमाधामी तेहने, मुखमां तरवां दीध ॥ १ ॥ दया नहीं दिलमां जरा, करता पाप अघोर ॥ परमाधामी तेहने, मारे छे बहु जोर ॥ २ ॥~~

चोपनमां अंकना चित्रना दोहा.

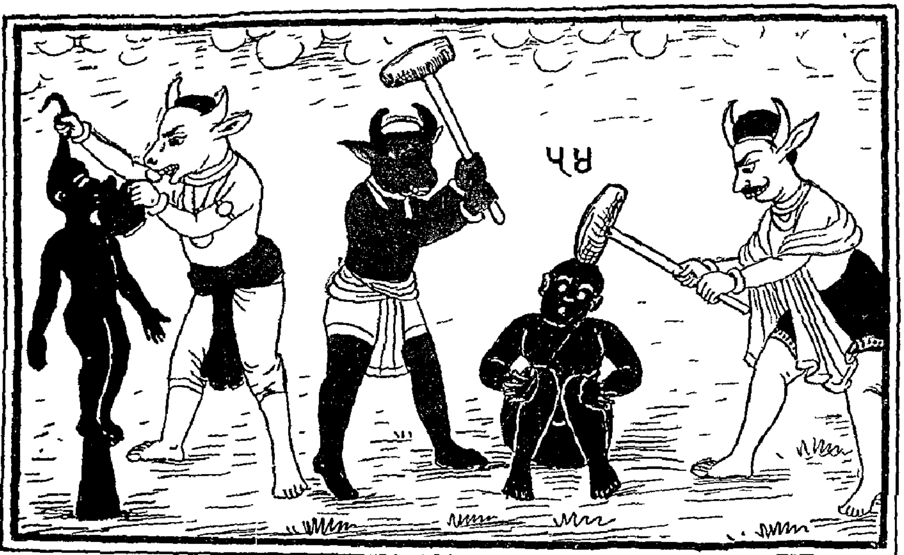
मदिरा विण चाले नहीं, रात दीवस वली पीध ॥ परमाधामी तेहने, मुखमां तरवां दीध ॥ १ ॥ दया नहीं दिलमां जरा, करता पाप अघोर ॥ परमाधामी तेहने, मारेछे बहु जोर ॥ २ ॥

~~जाहेरखबर-~~

~~अमारी पासें जंबुद्वीपना नकशा तेमां प्रथम करतां सुधारावधारा चौदसपना मधबिंदुवा छलेश्या कालचक्र चौदराजलोक तथा अढीद्वीपना नकशामध्ये अष्टमंगलिक रामरावण मरुदेवामाताना चित्र करया छे ग्नानबाजीना नकशामध्ये कालचक्रने चौदराजलोकना चित्र वधारयाछे. नारकीना चित्रना पाना प्रथम सोळ हता हमणा वीशमध्ये चित्र वधारयाछे. कीमत प्रथमनी रु. ॥ बीजी मोटी पाना ३६ तेमां चित्र वधारयाछे. एक नवतत्त्वनो नकशो साथे आपवामां आवशे. कीमत रु. १ बीजा वैरागना, देवलोकना चित्रो तैयार थायछे.~~

जाहेरखबर-

अमारी पासें जंबुद्वीपना नकशा तेमां प्रथमकरतां सुधारावधारा चौदसपना मधबिंदुवा छलेश्या,कालचक्र चौदराजलोक तथा अढीद्वीपना नकशामध्ये अष्टमंगलिक रामरावण मरुदेवामाताना चित्रकरयाछे. ग्नानबाजीनानकशामध्ये कालचक्रने चौदराजलोकना चित्र वधारयाछे. नारकीना चित्रना पाना प्रथम सोळ हता हमणा वीशमध्ये चित्र वधारयाछे. कीमत प्रथमनी रु. ॥ बीजी मोटी पाना ३६ तेमां चित्र वधारयाछे. एक नवतत्त्वनो नकशो साथे आपवामां आवशे. कीमत रु. १ बीजा वैरागना, देवलोकना चित्रो तैयार थायछे.



चित्र-परिचय।

(१) टाइटल पृष्ठ–पूज्यवर देशभक्त महात्मा गांधीजी भारतवर्षकी सेवा करनेके लिये हिंद देवीकी आज्ञा मांगते हैं और हिंद देवी आशीर्वाद दे रही हैं। म० गांधीजी अपने आफ्रिकाके पहिनावमें हैं। ऊपरसे स्व० देशभक्त म० गोखले महात्मा गांधीजी पर पुष्प वृष्टि कर रहे हैं। यह चित्र सरैय्या चदर्स जैनी सूरतसे प्राप्त हुआ है।

(२) हिंद-देवी शोकमें–ऊपर परलोकवासी देशभक्त-दादाभाई, बद्रुदीन तैयबजी, विलियम वेडरबर्न, गोखले, रोमेशचंद्र दत्त और फीरोजशाह हैं बीचमें स्व० लो० तिलक हैं नीचे हिंद देवी स्वराज्यकी झंडी लेकर शोकमें बैठी है। पासमें स्वराज्य मुकुट और सुधारेका कायदा पड़ा है। हिंद देवी शोकमें यही विचार कर रही है हिंदको जन्मसिद्ध हक कब मिलेगा। यह चित्र भी सरैयाजीसे प्राप्त हुआ है।

(३) जैन मित्रमंडल देहली–इस संस्थाका जन्म मिती भादो वदी ९ सं० १९७२ को हुवा था पांच वर्षके अल्पकालमें इस मंडलने अपने उद्देश्यानुसार इस प्रकार कार्य किया है।

(१) इसने प्रथम ही पौष वदी २ के दिन जो रथयात्रा होती थी उसमें ठेलेपर भजन उपदेशों द्वारा पब्लिक पर जैन धर्मका प्रचार किया।

(२) यहां पर आये हुवे पं० नरसिंहदेव शास्त्री आर्य समाजीने जैन-धर्मपर झूठे आक्षेप लगा कर अन्य वर्षोंकी भांति चेलेंजकी धर्मकी दी उसको सुनकर मित्रमंडलके मेम्बरोंने शीघ्र चेलेंज मंजूर कर वृहत शास्त्रार्थ करनेके लिए आर्य समाजको वाध्य किया और इस शास्त्रार्थमें दोनो समाजोंके धुरंधर विद्वान पधारे हुवे थे तौ भी जैन विद्वान न्यायालंकार पं० मक्खनलालजी शास्त्री द्वारा शास्त्रार्थ कराया जो कि बराबर छः दिन तक ईश्वर जगत्कर्त्ता, व सर्व सिद्धि पर लिखित शास्त्रार्थ हुवा जिसमें आर्य समाजको बुरी तरह हार खानी पड़ी। इस विजयके उपलक्षमें पं० मक्खनलालजीको यहांकी जैन पंचायतने वादीभकेशरीका पद देकर सम्मानित किया।

(३) इस सभाकी तरफसे जैन परोपकारी औषधालय ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके करकमलों द्वारा हुवा जिसने तीसरे साल महामारी (इन्फ्लुएन्ज़ा) के समय पर कई शाखाएं जगह २ पर स्थापित कर गरीबोंको भोजन दवा आदिका पूर्ण रूपसे प्रबंध किया था इसके अतिरिक्त इस संस्थाकी निम्न शाखासभाएं कार्य कर रही हैं।

(१) जैन तर्कशास्त्रिणी–इसमें प्रत्येक समाजका मनुष्य जैन धर्म संबंधी शंकाओंका समाधान कर सकता है।

(२) जैन ट्रैक्ट सोसाईटी–इसमें इस समय निम्न लिखित ६ ट्रैक्ट निकल चुके हैं–मिथ्यातमोविध्वंशार्क, घोर अत्याचार, जैन हितैषी भजन संग्रह, हितैषी गायन, तीर्थंकर दर्पण, देहली शास्त्रार्थ, पार्श्वपुराणकी वचनिका और ७ वां ट्रैक्ट शीघ्र प्रकाशित होगा।

(३) वर्द्धमान पब्लिक लाइब्रेरी।

(४) दि० जैन कुमार सभा।

उपरोक्त कार्योंमें लायब्रेरी और औषधालय चंदेकी कमीके कारण अभी बन्द हुवे हैं, उनको देहलीके जैनियोंको मदद करके फिर चालू करने

श्रीमान्ने काशी स्याद्वाद पाठशालामें चार वर्ष संस्कृतका अध्ययन किया था और कुछ समय तक स्याद्वादवारिधि पं० गोपालदासजी बरैयाके पास रह कर गोमटसारादि धर्म ग्रन्थोंका भी अध्ययन किया था। आपने अब तक १०-१९ शिष्योंको तय्यार किये हैं। अब ७-८ सालसे आप दक्षिण प्रांतमें धर्म प्रचार कर रहे हैं और आपके शिष्य भी भिन्न २ प्रांतोंमें धर्म प्रचार कर रहे हैं। दक्षिण देशमें धर्म जागृतिका यश श्रीमान्को है। आपके प्रयत्नसे ही म्हैसुरका जैन बोर्डिंग सेठ वर्द्धमानैयाजी द्वारा चल रहा है। और आपकी कृपासे ही इस प्रांतमें अनेक अजैन लोग भी जैन धर्मके विषयमें परिचित हुए हैं। आप व्याख्यान देनेमें अच्छी योग्यता रखते हैं आपसे जैन बोर्डिंग म्हैसुरके पतेसे पत्र व्यवहार हो सक्ता है।

(३९)श्रीमान् सेठ घासीलालजी उज्जैन—आपके पिताका नाम सेठ हुकमचंदजी था। आपका जन्म १९१२ में हुआ था। गवालियर प्रान्तमें आप बडे व्यपारी और दानी गिने जाते हैं। आपके दानकी सूची इस प्रकार है—-सं० १९९२में १०००) खर्च करके श्रीगिरनारजीकी तलेटीमें धर्मशाला बनवाई। सं० १९५१ में उज्जैन लूणमंडीके मंदिर पर कलश चढाया उसमें ५९००) खर्च किये। सं० १९६१ मे वडनगरमें बिम्ब प्रतिष्ठा ९००००) खर्च करके करवाई। सं० १९७१ में उज्जैनमें २९०००) लगाकर एक आयुर्वेदी औषधालय खोल दिया है। तथा तारंगाजी, पावागढ आदि क्षेत्रोंमें भी धर्मशाला (कोठडी) बनवाई हैं। पहिले आप अफीमका व्यापार करते थे और अभी कई वर्षोंसे रुईका व्यापार है। आपके सुयोग्य पुत्र सेठ कल्याणमलजी बहुत उत्साही और धर्मप्रेमी हैं। हम यह आशा करते हैं कि आपका लक्ष विद्या दानकी तरफ झुक जावे और आपके हस्तसे बडे २ स्थायी विद्यादान होवे और औद्योगिक-संस्थाएँ खुलें। हमारे वयोवृद्ध सेठजी हमारी इस प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देवेंगे ऐसी पूर्ण उम्मेद है।

(३६) सिवनीमें शास्त्रिय परिषद्—वीर सं० २४४९ में सिवनीमें दि० जैन शास्त्रिय परिषदका अधिवेशन पं० मक्खनलालजी शास्त्रीके सभापतित्वमें हुआ था उस वक्तके अग्रगण्य पंडितों, श्रीमानों और खंडेलवाल सभाके सभापति सेठ गंभीरमलजी पांड्या आदिका यह ग्रूप फोटो खास मंगा कर प्रकट किया गया है। खास २ महाशयोंकी नामावली चित्रके नीचे दी गई है।

(३७) लाला रंजितसिंह जैन अग्रवाल B S C देहली—आपका जीवनचरित्र पृ० ८३ पर अलग दिया गया है।

(३८) उदैपुरमें त्यागी सम्मेलन—वीर संवत २४४९मे उदैपुर (मेवाड)में भारत० दि० जैन महासभाका नैमित्तिक अधिवेशन लाला सोहनलालजी देहलीके सभापतित्वमें हुआ था तब वहां मुनि चंद्रसागरजी, ऐलक पन्नालालजी महाराज तथा ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी, ब्र० ज्ञानानंदजी, ब्र० भगीरथजी वर्णी, ब्र० ठाकुरप्रसादजी, ब्र० छोटेलालजी, ब्र० जयचन्दजी, ब्र० चांदमलजी, ब्र० कु० दिग्विजयसिंहजी, ब्र० लहरीबाबा आदि त्यागीगणोंका समुद्र पधारा था उनका यह सभा मंडपमें लिया हुआ ग्रूप फोटो है।

सेठ पदमराजजीके व्याख्यानका कुछ अंश।

नागपुरमें कांग्रेसके समयमें गत ता० २६ दिसम्बरको भारत जैन पोलीटिकल कौन्फरेन्सकी चतुर्थ बैठक हुई थी जिसके सभापति सेठ पदमराज रानीवाला (कलकत्ता)ने महत्वशाली व्याख्यान दिया था उसका कुछ अंश इस प्रकार है—

जैन समाज और उसकी पूर्वस्थिति।

मान्यवर बान्धवो, मुझे यह कहनेकी कुछ विशेष आवश्यकता प्रतीत नहीं होती कि जैन धर्म तथा जैन समाज अपने अकाट्य सर्वतन्त्र उदार सिद्धांतों और आदर्शनीय पावन चरित्रोंके आधार पर स्थित होनेके कारण एक समय संसारमें उत्तम धर्म तथा समाज माना गया था, हमारे ही समदर्शी तीर्थंकरोंने प्राणीमात्रको समभावसे देख सबसे प्रथम निरपेक्षतासे साम्यवाद तथा स्याद्वादकी घोषणा की, उन्होंने अहिंसाकी परिभाषा " प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणम् हिंसा " निर्णीत की थी और "स्वार्थ" तथा परस्परके द्वेषको महानिंदनीय तथा त्याज्य प्रमाद बता कर परोपकारी तथा निर्वैर होकर जीवन व्यतीत करना परमश्रेय ठहराते हुए अहिंसाको परम धर्म बताया था तभी तो उन देवाधिदेवोंने अपनी धर्म शिक्षाकी सभाओंमें जहां इन्द्रादिको बैठनेकी आज्ञा दी थी वहां साधारणसे साधारण तुच्छसे तुच्छ प्राणी तकको भी बैठने और उपदेश श्रवण तथा ग्रहण करनेका अधिकार दे रक्खा था इसीसे यह प्रत्यक्ष देख पड़ता है कि उनके अभ्युदयके समयमें समदर्शिता, निःस्वार्थ, निर्वैर, निर्दोष, अहिंसा और प्रमाद मूर्तमान हो जैन समाजके अन्तर्गत विराजते थे जिनके कारण जैन समाजमें ओतप्रोत बंधुभावका प्रसार था और श्री अटलरूपसे उसके घर विराजती थी। उपरोक्त गुणोंसे विभूषित होनेसे कोई किसीके उन्नति पथमें बाधक न था जिससे नित्य प्रति दिवस और विदेशमें अमिति उन्नति होती जाती थी, नित नवीन आविष्कार होते थे जिनसे कला कौशलकी दिनोंदिन वृद्धि हो रही थी, वणिज व्योपार, पठन पाठन, मन निश्वासन आदि सुगम थे, कहां तक कहा जावे जातीय जीवनरूप वृक्ष उपरोक्त साधनोंरूपी जल वायुकी अनुकूलता से सब प्रकार शाता प्रशान्तमय हराभरा हो हलहलाकर फल फूलरहा था, जैन समाजान्तर्गत ही महानुभाव इन्द्रभूतिगणधर गौतमस्वामी सम प्रबल उपदेष्टा, पूज्यपाद भद्रबाहुस्वामी, प्रभाचंद्र, कुंदकुंदाचार्य, उमास्वामी, अमितिगति, अकलंकदेव, धनंजय, देवनंदी, वीरनंदी, सोमदेव, सुधर्म, जम्बूस्वामी, यशोभद्र, संभूतिविजय, स्थूलभद्र, समंतभद्र, दिङ्नागाचार्य, हेमचंद्र, हरिभद्रसूरि, हरिविजयसूरिके समान उद्भट तत्वदर्शी विद्वान तथा ग्रंथकार नाना शास्त्रोंके ज्ञाता, महाराज चंद्रगुप्त, सम्प्रति, बिम्बसार, श्रेणिक, दधिवाहन, अशोकचंद्र, लक्षिक उदायन, शांतानिक, नन्दिवर्धन, चंडप्रद्योत, प्रसेनचंद्र, प्रियचंद्र, कुमारपाल, सरीखे नीतिनिपुण प्रजावत्सल पराक्रमी तथा प्रजापालक महाराजे, विमलपाल, वस्तुपाल, बिपलशाह सरीखे धर्मवान, व्यवसायी श्रीमान् सेठ इसी जैन जाति हीके अंदर जन्मे थे।

मेवाड़ाधिपति महाराणा प्रतापसिंहके संकटके समयमें भी जिस देशप्रेमी धर्मवीर स्वामिभक्तिने

त्तियां आपको अवश्य झेलनी पडेगी "श्रेयांसि बहु विघ्नानां" की जन श्रुति सदासे चली आ रही है अतः विघ्न अवश्य उपस्थित होंगे परन्तु उद्योगशीलोंकी विजय अन्तमें अवश्य होती है इस पर आपको विश्वास करना चाहिये। स्वराज्य और स्वतंत्रताकी प्राप्तिके दो ही उपाय होते हैं एक तो शरीरबल, दूसरे आत्मबल। हमें शरीर बल प्रयोगकी आवश्यकता नहीं क्योंकि एक तो हमारे पास उसके साधन शस्त्रादि नहीं और यदि हों भी तो हम अहिंसाको मूलधर्म माननेवाले निष्प्रयोजन शस्त्रोंके प्रयोगके अधिकारी नहीं, निरूपद्रवता सदैवसे हमारा भूषण रहा है, ऐसी दशामें हमारा दूसरा उपाय आत्मबल प्रयोगनीय है जिसके आधारपर हमें अहिंसाको सामने रखते हुए निरूपद्रवतासे शासकोंके विरुद्ध उपराम और असहयोगका प्रयोग करना चाहिये। हमें आपसके झगडोंके निवटेरे अपने वयोवृद्ध निस्पृह और निष्पक्ष नेताओंको पंच करके निपटा लेना चाहिये। ऐसा करनेसे हमें न तो व्यर्थ की आर्थिक हानि सहना पड़ेगी, न परस्पर वैमनस्य बढ़ेगा, न अपवाद ही सहना पड़ेगा न हमारा समय जो हम और उपयोगी काम करनेमें व्यतीत कर सकते हैं नष्ट होगा। हमें पंचायतकी परिपाटि ग्रहण करना योग्य है और अदालतोंसे सम्बन्ध छोड देना उचित होगा, इसी प्रकार गवर्नमेंटके दिये हुए टाइटलोंको छोड देना उचित होगा क्योंकि जिनके द्वारा हमारे लोकमतकी उपेक्षा होती है। हमारे निरपराध भाइयोंका रक्तपात हो चुका है उनकी दी हुई पदवियोंसे अपनेको प्रतिष्ठित मानना हमारी मर्यादाके विरुद्ध है।

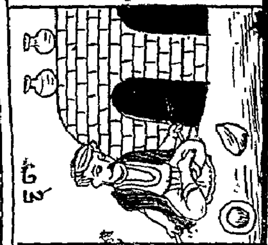
असहयोगका प्रश्न बडे स्वार्थ त्यागका है। देशकी स्वतंत्रता चाहने वालोंको बडे २ उपद्रव सहने होंगे। आज भी जैनी टाइटलोंके कारण जनताका गला घोटना चाहते हैं। जो लोग राज्य नैतिक क्षेत्रसे रोकते हैं वे जैन समाजके घोर शत्रु तो हैं ही परंतु देशके भी वे शत्रु हैं। क्या भारतके जैनियोंका यह देश नहीं है? क्या यहांका अन्न जल जैनी नहीं लेते? जैनी भारतोत्थानमें भाग क्यों न लें—जैनियोंको भी टाइटिल त्यागना होगा आदि।

हमें स्वदेशी वस्तुओंका व्यवहार और विदेशी वस्तुओंका बहिष्कार करना उचित है। इसके करनेसे हमारे देशके व्योपार और कलाकौशलकी वृद्धि होगी और हमारा जो धन विदेशोंको जा रहा है वह हमारे देशमें रहेगा।

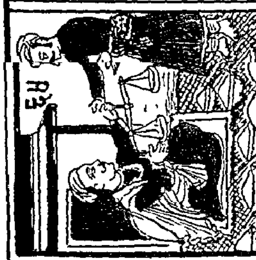
हमारे वकील भाइयोंको वकालतका काम छोड देना भी उचित है और हमको साथ ही साथ अपने बालकोंको स्कूल व कालेजोंसे हटाकर उनके लिये जातीय शिक्षाका प्रबन्ध कर देना उचित होगा क्योंकि वर्तमान शिक्षा हमारे जातीय जीवनके नाशका कारण है।

संक्षेप यह कि हमें जहांतक संभव हो विदेशियोंसे अहिंसात्मक असहयोग करना चाहिये। बांधवों! यदि आप असहयोगका प्रयोग करेंगे तो निश्चय जानिये कि थोडे समयकाल ही में स्वराज्यकी प्राप्ति कर सकेंगे और आपका, आपके देश, जाति और धर्मका शीघ्र ही उत्थान होगा।

बांधवों! मैं अन्तमें अपने अन्तःकरणसे आपको धन्यवाद देकर भाषणको समाप्त करता हूं।





हुआ तथा पं० नाथूरामजी प्रेमीने १०१) । बरा आ

गोसठ अंकना चित्रमां जनावेलां पापकर्म भोगवया पासठ अंकना

चित्रना दोहा

गड़डी बांधे मस्तकें, नाखे घाणीमाय ॥ परमाधामी तेहने, पीले छे न दयाय ॥१॥ आक्रंद करे जहु, कापे कापे मुकदेय ॥ परमाधामी ते कहे, करयुं भोगव्य नतजेवन असमजनें काम करे जिको, तेना एह हवाल ॥ विचारी जे चालशे, ते थाशे सुखियाल

चोसठ अंकना चित्रमां बतावेलां पापकर्म भोगवया पासठ, अंकना चित्रना

॥ दोहा ॥

पकडी बंधे मस्तकें, नाखे घाणीमाय ॥ परमाधामी तेहने, पीले छे न दयाय ॥ १ ॥ आक्रंद करे न बहु, कापे कापे मुक्ळ देय ॥ परमाधामी ते कहे, करयुं भोगव्य नतखेय ॥ २ ॥ अ-समर्जीने कामकरे जिको, तेना एह हवाल ॥ विचारी जे चालशे, ते थाशे सुखियाल ॥ ३ ॥

छासठमा चित्रमां दर्शावेलां पापकर्म भोगववाना सडसठमा अंकना

चित्रना दोहा

रज्जु पाशथी बांधीने, अग्नि चितामां नाखी ॥ आमासामा जेहुने, ताणे बीलां राखी ॥ १ ॥ करे आक्रोश घणा तदा, घडी न पामे शर्म ॥ परमाधामी तेहने, भोगवावे दुष्कर्म ॥ २ ॥

छासठमा चित्रमां दर्शावेलां पापकर्म भोगववाना सडसठमां अंकना

चित्रना दोहा

रज्जुपाशथी बांधीने, अग्नि चितामां नाखी ॥ आमासामा बेहुने, ताणे न ला गाखी ॥ १ ॥ करे आक्रंश घणा तदा, घडी न पामे शर्म ॥ परमाधामी तेहने, भोगवावे दुष्कर्म ॥ २ ॥

॥ अडसठमा चित्रमां दर्शावेला पापकर्म भोगववाना ओगणसत्तरमा अंकना चित्रना दोहा ॥

अतिप्रज्वलित चिताविषे, पकडी नाखे तेदेव ॥ अर्धदग्ध थवा थकी, रीव करे नतजेव ॥ १ ॥ जेरमाहे थी धूंधवे, अग्नि चिता विकराल ॥ राडयो नाखे गंचाकरी, हाथ ज्यां ... नारकी कराल ॥ २ ॥ कापे कापे अम्हने, अकृत कर्यां अमे कर्म ॥ तेनु दुःख अमे भोगव्युं, नकरियें हवे दुष्कर्म ॥ ३ ॥ मारमारतो एम कहे, ... अग्निमां दूर ॥ परमाधामी देवतो, दुःख दियें त्यां क्रूर ॥ ४ ॥

अडसठमा चित्रमां दर्शावेला पापकर्म भोगववाना ओगणसत्तरमा चित्रना दोहा

अतिप्रज्वलित चिताविषे, पकडीनाखे तेदेव ॥ अर्धदग्ध थवा थकी, रीव करे नतखेव ॥ १ ॥ जोरमाहे थी धूंधवे, अग्निचिता विकराल ॥ राडयो नाखे गुंचाकरी, हाय ज्यां मारफी कराल ॥ २ ॥ कापे कापे अम्हने, अकृत कर्यां अम्हे कर्म ॥ तेनुं दुःख अमे भोगव्युं, नकरियें हवे दुष्कर्म ॥ ३ ॥ मारमारतो एम कहे, जा अग्निमां दूर ॥ परमाधामी देवतो, दुःख दिये त्यां क्रूर ॥ ४ ॥

मैंने अपनेको प्रतिष्ठित मानता हुआ हूँ। धन्यवाद देकर भाषणको समाप्त करता हूं।

ओगणसाठमां अंकना चित्रमां बतावेला पापकर्म ते ओगणसाठमां भोगवे.
परस्त्रीने भोगवी, सुख भोगव्युं संसार ॥ मरीने नरके उपनो, त्यां दुःख भोगवे अपार ॥ १ ॥ लोहपुतळी धखावीने, जम भीडावे बाथ ॥ मुको मुको मुखथी कहे, कोनी नमळे आथ ॥ २ ॥

ઓગણસાઠમાં અંકના ચિત્રમાં બતાવેલા પાપકર્મ તે ઓગણસાઠમાં ભોગવે.
પરસ્ત્રીને ભોગવી, સુખ ભોગવ્યું સંસાર ॥ મરીને નરકે ઉપનો, ત્યાં દુઃખ ભોગવે અપાર ॥૧॥ લોહપુતળી ધખાવીને, જમ ભીડાવે બાથ ॥ મુકો મુકો મુખથી કહે, કોની નમળે આથ ॥૨॥

साठ अंकना चित्रमां दर्शावेलां पापकर्म भोगववाना -
एकसठमा अंकना चित्रना दोहा.

अग्निचितामानाखीने, पगपर मुकी पाय ॥ परमाधामी तेहने, पकडी करदे घाव ॥ १ ॥ अग्नितप्तलोढातणी, सळी घाले मुखमाय ॥ वेदन अति घणी भोगवे, करे रुदन दुःखपाय ॥ २ ॥ एकनरक तणोरही, परमाधामी देव ॥ बे मुद्गर बेहु हाथ ग्रही, मारे शिर ततखेव ॥ ३ ॥

સાઠ અંકના ચિત્રમાં દર્શાવેલાં પાપકર્મ ભોગવવાના
એકસઠમા અંકના ચિત્રના દોહા.

અગ્નિચિતામાં નાખીને, પગપર મૂકી પાય ॥ પરમાધામી તેહને, પકડી કરદે ઘાવ ॥૧॥ અગ્નિતપ્ત લોઢા તણી, સળી ઘાલે મુખમાય ॥ વેદન અતિ ઘણી ભોગવે, કરે રુદન દુઃખપાય ॥૨॥ એકનરક ઉભો રહી, પરમાધામી દેવ ॥ બે મુદ્ગર બેહુ હાથ ગ્રહી, મારે શિર તતખેવ ॥૩॥

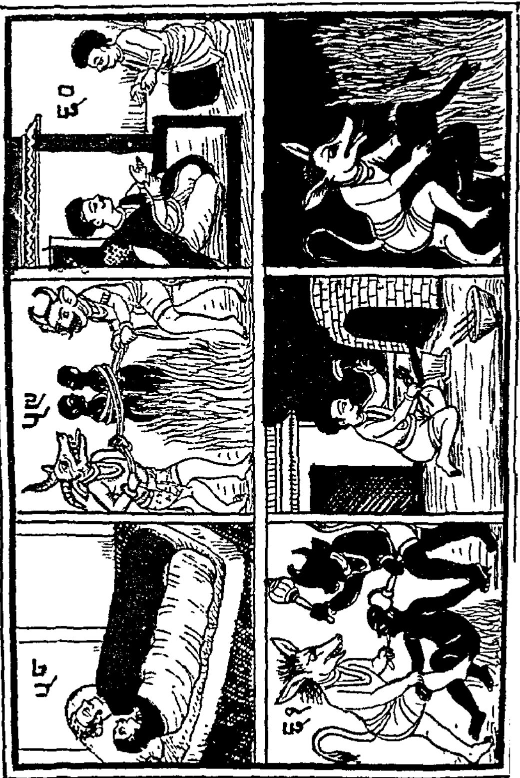
बासठमा अंकना चित्रमां दर्शावेला पापकर्म भोगववाना त्रेसठमा
अंकना चित्रना दोहा.

तीव्रताप तपावीने, पकडी कढनी मांहि ॥ नाखे बलवत्तरपणें, परमाधामी त्यांही ॥ १॥ शिर सळगी गयु अग्निमां, हाथ हुताशनमांहि ॥ क्रोशकर अति आकरा, नचले तेनुं कांहि ॥ २ ॥ जेवां ते कर्मो कर्यां, भोगवे तेवा तेह ॥ कर्मधर्मनां कोडमो, भागन होयते रेह ॥ ३ ॥

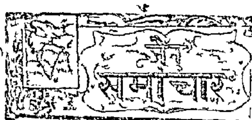
બાસઠમા અંકના ચિત્રમાં દર્શાવેલા પાપકર્મ ભોગવવાના
ત્રેસઠમા અંકના ચિત્રના દોહા.

તીવ્રતાપ તપાવીને, પકડી કઢની માંહિ ॥ નાખે બલવત્તર પણે, પરમાધામી ત્યાંહિ ॥૧॥ શિર સળગી ગયું અગ્નિમાં, હાથ હુતાશન માંહિ ॥ ક્રોશ કરે અતિ આકરા, નચલે તેનુ કાંહિ ॥૨॥ જેવાં તે કર્મો કર્યાં, ભોગવે તેવાં તેહ ॥ કર્મધર્મમાં કોઈમાં, ભાગ ન હોય તે રેહ ॥૩॥

મોટી મદદ- નવીદાસ રતનલાલની વિધવા શિવકુંઅર બાઈએ આપી છે.
જાહેર ખબર પોપટના ચિત્રમાં છે.



ोंसे अपनेको प्रतिष्ठित मानना हमारा। धन्यवाद देकर भाषणको समाप्त करता हूं ।



स्या० महाविद्यालय-काशीका वार्षिकोत्सव गत ता० १८-१९को हिन्दू युनिवर्सिटीके वाइस चेन्सेलर और प्रोफेसर श्री० आनदशकर ध्रुवके सभापतित्वमें हुआ था। इसमें ब्र० शीतलप्रसादजी, प० देवकीनंदनजी, बाबू निर्मलकुमारजी, प० नाथूरामजी प्रेमी, प० गणेशप्रसादजी वर्णी आदि पधरे थे। विद्यार्थियोंके संस्कृत और हिन्दीमें अच्छे व्याख्यान हुए थे तथा प्रो० ध्रुवने अपने व्याख्यानमें कहा था कि वर्तमान वेदोंके पहले भी धर्म होना चाहिये। ऐतिहासिक दृष्टिसे जैनियोंके तीन तीर्थंकर प्रसिद्ध हैं-श्रीकृष्णके समयमें नेमनाथ, २८०० वर्ष हुए पार्श्वनाथ तथा बुद्धके समकालीन श्री महावीर स्वामी-इनके पूर्वके तीर्थंकरोंका हाल बहुत ही पूर्वका है-जो एक प्राचीन जन श्रुति है। जैन ग्रन्थोंमें अहिंसा तत्व भरा है यह अहिंसातत्व इन वेदोंसे पहलेका है। भारत एक प्राचीन देश व जाति है। एक ही प्रजा है एक ही भाषा है और एकसे ही रीति रिवाज है। एक ही धर्म था उसकी तीन शाखाएं ब्राह्मण जैन और बौद्ध धर्म है। प्रो० ध्रुवने आगे कहा कि स्याद्वाद प्रचारार्थ इस स्याद्वाद विद्यालयकी बहुत जरूर थी। इसमे अहिंसाका भी प्रचार करना चाहिये आदि। सभामें ७०१ का चंदा हुआ तथा प० नाथूरामजी प्रेमीने १०१) प्राकृत भाषामें परीक्षोतीर्ण छात्रको पारितोषिक देनेके लिये दिये। स्या० महाविद्यालयका कार्य और स्थान देख कर प्रो० ध्रुव अति प्रसन्न हुए थे। साथ २ स्याद्वाद प्रचारिणी सभाका उत्सव पं० देवकीनंदनजीके सभापतित्वमें तथा अहिंसा प्रचारिणी सभाका उत्सव बाबू भगवानदास एम० ए०के सभापतित्वमें हुआ था। सभापतिने अहिंसा धर्मकी बहुत प्रशंसा करके उसकी आवश्यकता प्रकट की थी। मुहमदअलीने कहा कि देशके लाभके लिये अहिंसा और दयाके प्रचारकी आवश्यकता है।

यात्रियोंको-तीर्थ क्षेत्र कमेटीके महामंत्री सूचित करते हैं कि जैनबिद्री, मूडबिद्री जानेके मार्गमें पानी काफी मिलता है इस लिये यात्री लोग खुशीके साथ पधारें।

सुजानगढ-में कन्या पाठशाला स्थापित हो गई।

देहली-में जैन अनाथाश्रमका वार्षिकोत्सव २३-२४ दिसम्बरको नहीं हुआ परन्तु ता० ८-९ जनवरीको बहुत धूमधामसे होगा।

सम्मेदशिखरजी-पर बीसपंथी कोठीकी दूकानोंका मामला चला था उसकी अपील श्वे० भाईयोंने प्रीविकौंसिल (विलायत) में की थी वहां अपील खारीज हो गई। अर्थात् हाईकोर्टसे श्वेतांबरी पर जो डीगरी हुई थी कायम रही। तथा इस मुकदमेंकी वजहसे श्वेतांबरीका स० १८७२ का जो इकरारनामा राजा पालीगंजके साथ था टूट गया।

हस्तिनापुर-में कार्तिकी मेले पर श्वेतांबरी और दिगम्बरी भाईयोंकी एक संयुक्त

भिषेक ३० या ४० वर्षके बाद होता है और वह इस वर्ष माघ सुदी ९ से फाल्गुन वदी १ तक होगा। कारकल मूडबिद्रीसे १० मील और मेंगलूर स्टेशनसे १६ मील है। पंचमीसे नित्य अनेक प्रकारकी विधि होम आदि होंगे और महामस्तकाभिषेक १००८ कलशोंसे सुदी १९ को होगा। सबको ठहरनेके लिये कारकलकी जैन पंचायतने सब प्रकारका प्रबंध किया है। अंग्रेजीमें पत्र व्यवहार करनेका पता-श्रोनी मुधरु, जैन पंचान, कारकल (दक्षिण केनेरा)

खंडेलवाल महासभा—कारकलमें भारत दि० जैन खंडेलवाल महासभाका प्रथम अधिवेशन मेलेके समयमें अतीव उत्साहके साथ मगसर वदी २-३-४ को झालरापाटन निवासी श्री० **सेठ लालचंदजी** (विनोदीराम बालचंदजी,के समापतित्वमें बड़े समारोहके साथ हो गया। दूर२के १५०० प्रतिष्ठित खंडेलवाल भाई उपस्थित हुए थे जिनमें रा० ब० सेठ कल्याणमलजी, रा० ब० सेठ कस्तूरचंदजी, कुंवर हीरालालजी सेठ हुकमचंदजी, सेठ लूणकरणजी, सेठ राजमलजी नसीराबाद, श्री० घेवरचंदजी अलवर, चैनसुखजी सिवनी, सेठ केशरीमलजी गया, सेठ हरसुखजी सुसारी, सेठ खुशालचंदजी नांदगांव, पं० पन्नालालजी सोनी, खडेलवाल कुलभूषण पं० धन्नालालजी महामंत्री आदि भी थे। सभाकी ४ बैठकें हुई थीं जिनमें नित्य ३०५० आदमी उपस्थित होते थे। स्वागत कमेटीके अध्यक्ष सेठ फतेलालके व्याख्यानके बाद सभापति सेठ लालचन्दजीने बड़ा सारगर्भित व्याख्यान दिया था जिनमें समाज और धर्मोन्नतिके लिये आपने कई नवीन बातें दर्शाई हैं (यह **व्याख्यान** आपके चित्र सहित पुस्तकाकार मौजूद है जो आध आनेका टिकट भेजनेसे सूरतसे **मुफ्त** भेजा जायगा) सभामें कुल १७ प्रस्ताव पास हुए हैं जिनमें मुख्य ९ ये हैं-(१) सभाके आधीनस्थ १९ प्रान्त नियत होना, (२) "**खंडेलवाल जैन हितेच्छु**" नामक पाक्षिक पत्र प्रकट करना और हरएक पंचायतिको मुफ्त भेजना, (३) कार्याध्यक्ष-सेठ लालचंदजी सभापति, सेठ लालचंदजी पाटनी छिंदवाडा उप सभापति, पं० धन्नालालजी महामंत्री, बा० माणिकचंदजी बेनाड़ा स० महामंत्री, हरएक प्रान्तके प्रांतिक मंत्री, सेठ राजमलजी ऑडिटर और सेठ जुहारमल मूलचंद खजांनची नियत होना, (४) ७९ से १०१ मेम्बरोंकी प्रबंधक कमेटी बनाई जाना, (६) ३० वर्ष या इससे कम उमर वाले पुरुष या स्त्रीका मरणका नुक्ता न किया जाय, (६) लड़केका विवाह १९ वर्षसे पहले और कन्याका ११ वर्षसे पहले न करे तथा ४५ वर्षसे ऊपर कोई भी विवाह न करे। (७) विधवा विवाहका आन्दोलन जैन धर्मसे सर्वथा नाजाइज है इसमे इसका पूर्ण विरोध (८) सभाके उद्देशोंके प्रचारार्थ सहायक ध्रौव्य फंडका स्थापित होना (९) उदयलाल काशलीवालने किसी अज्ञात जातीय विधवासे जैन विधिको बताकर विधवा विवाह ! किया है वह धर्म और जातिसे विरुद्ध होनेसे उनको जातिसे खारिज और मंदिर व्यवहार बंदके बम्बई खं० पंचायतीके ठहरावका अनुमोदन (१०) पं० अर्जुन-

गल सेठीके जातिच्युत तथा मंदिर बन्दके प्रस्तावका भी समर्थन, (११) लडकीकी सगाई ८ वर्षसे कम ऊमरमें न की जाय, (१२) जैन हितैषी, सत्योदय और जाति प्रबोधक मासिक जैनागमको जूठा बतलाता है। और तीर्थंकरों आचार्योंको गाली तक देते हैं, इससे इन तीनों पत्र जैन पत्र न समझे जांय और इनका बहिष्कार किया जाय आदि।

स्थायी फंडके लिये १००) के सो शेअर निकाले गये उनमें बहुत शेअर बिक गये तथा सभापति सेठ लालचंदजीने ४०००) सभाको और २५०) का अलग २ दान किया।

डॉ० थामस-का बम्बई ही० गु० जैन बोर्डिङ्गमें अच्छा स्वागत किया गया था और डॉ० साहबने जैन धर्म पर अपनी अटल श्रद्धा कैसे हुई उसका तथा विलायतमें जैन साहित्यके प्रचारका तथा जैनधर्मके उत्तम सिद्धांतोंका अच्छा वर्णन किया था। डॉक्टर साहबने पं० रामप्रसादजीसे संस्कृतमें खूब धर्मचर्चा करके आनंद प्राप्त किया था। प्रवचनसार ग्रन्थका अंगरेजी अनुवाद आप तैयार करके यहां लाये हैं और संशोधन कराकर छपाना चाहते हैं।

अमेरिका-के एलमन ए० लोकेने १००००) सिलिंग इस लिये दान किये हैं कि इसकी आमदनीसे स्कूलोंमें "पशुओंपर दया कैसे की जाय" यह सिखाया जाय।

सर सेठ हुकमचन्दजी-को इन्दौर सरकारकी ओरसे 'राज्यभूषण' का पद मिला है।

वीर पवनंजयकी वीरता-श्री पवनंजय चौगुले (बेलगाम) दौडकी कई शर्तें जीत कर विलायतसे आये हैं और अभी बम्बईमें २६ नवम्बरको माहिमसे ओवल तक ९॥ मीलकी पैदल दौडकी शर्त हुई थी जिसमें २१ दौडनेवालेमें २० तो भारतकी सेना विभागके थे तो भी भाई **पवनंजय सबसे प्रथम** आये थे। चौगुलेने यह दौड १७ मिन्ट ११ सेकन्डमें पूर्ण की थी।

देहलीसे तीर्थयात्राका संघ-ता० १४ जनवरीको निकलनेवाला है। संघपति होंगे हुकमचन्द जगाधरमल जैन सर्राफ-देहली। आपने स्पेशल ट्रेन द्वारा दक्षिण उत्तर पूर्व पश्चिमकी करीब सभी यात्राएं ३॥ महिनेमें करनेका प्रोग्राम प्रकट किया है। साथमें ब्र० शीतलप्रसादजी भी जानेकी खबर है। प्रथम गुजरात और दक्षिणकी यात्रा करके संघ शिखरजी आदिको जायगा। हरएक यात्रीदीठ खर्च अनुमान १८०) लगाये गये हैं जिसमें १९०) प्रथम चलते समय देने पडेंगे।

चातुर्मासका परिणाम-इसवार ब्र० शीतलप्रसादजीने देहलीमें चातुर्मास निर्गमन किया था वहां पांच महिनेमें क्या २ धर्मलाभ हुआ वह आपने 'जैनमित्र' में प्रकट किया है उसका संक्षेप इस प्रकार है-(१) सिवाय ४-५ घरोंमें प्रति दोवार प्रतिदिन नये घरमें भोजन हुआ जिससे हरएक घरवाले तथा उनके संबंधी स्त्री पुरुषोंने स्वाध्याय, जाप, दर्शन रात्रि भोजन त्याग, तास चौपड़ त्याग, नशा त्याग, गाली त्याग, सामायिक, उपवास, एकासन आदि प्रतिज्ञाएं लीं (२) आत्मख्याति समयसारका विशुद्ध अधिकार तक स्वाध्याय करनेसे १०-५

भाइयोंको अध्यात्मिक प्रेम पैदा हो गया। (२) दो तीन अंग्रेजी पढे लिखे भाइयोंने हमसे तत्वार्थ तथा द्रव्य संग्रह अच्छी तरह समझ लिया (४) 'समाधिशतक' ग्रन्थकी टीका बनाई जो छपकर 'जैन मित्र'के १३०० ग्राहकोंको उपहारमें देहलीके भाई ही बांटेंगे (६) सरस्वति भंडारोंकी जांच करनेसे अनेक अप्रकट और प्राचीन ग्रन्थोंका पता लगा जिसकी सूची 'जैन मित्र'में छपी है। (६) ला० [illegible]सिंह जैनके निमित्तसे दो तीन बौद्ध पुस्तकोंका सूक्ष्मतासे पठन किया जिससे झलका कि बोद्ध मतके उपदेशोंमें जैन मतकी ही छाया है (७) सामायिक पाठ (अमितगति)के भाषा छंद बनाये जो छप चुका है और महावीरप्रसाद ठेकेदार धर्मपुरा देहलीसे मुफ्त मिलता है (८) सामायिक शैली स्थापित की गई जो प्रति चौदस हुआ करेगी (९) जैन संस्कृत व्यापारिक विद्यालय स्थापित हुआ जिसमें ५००) मासिक तथा २७०००) का ध्रुव फंड हो गया (१०) श्राविकाशाला धर्मपुरामें स्थापित की गई जिसमें [illegible]) का ध्रुव फंड भी हो गया ११) कुतुबकी लाटके पास ६४ खंभेकी मसजीद है वहां एक या अनेक जैन मंदिर थे इसका साक्षात् प्रमाण छतों पर अंकित जैन प्रतिमाएं व खंभोंकी बनाचट है (१२) अशोकका स्तम्भ कोटला नामके स्थान पर खडसे उस पर जो लेख है उसका हाल माल्म हुआ इससे प्रकट हुवा कि उसमें सर्व शिक्षाएँ जैन धर्मानुसार हैं तथा यह पूर्णतया प्रमाणित है कि जब यह स्तम्भ लिखा गया तब राजा अशोक जैन धर्मको माननेवाला था। इस लेखका वर्णन पुस्तकाकार भी प्रकट होगा (१२) मालीवाडेके मंदिरमें महावीर स्वामीके भीलके भवसे अंत तकके अपूर्व चित्रोंका संग्रहरूप एक ग्रंथ मिला जिसके जीर्णोद्धारकी अतीव आवश्यकता है। भाइयोंने वचन भी दिया है (१४) बम्बई श्राविकाश्रमके लिये मगनबाई आदिके आनेसे ८०००) का फंड कराया गया। (१५) स्या० महाविद्यालय काशीके लिये १०२०)की सहायता मिली तथा हस्तिनापुर आश्रम, उडीसा दुष्काल फंड आदिमें भी रकमें भिजवाई गई (१६) ऐलक अनंतकिर्तिको समजानेसे उनकी परिणति बदली और बहुत अंशमें उनका चारित्र शास्त्रोक्त होचला है आदि।

विनामूल्य-श्री सम्मेदशिखर और सोनागिरी यात्रा विवरण बैरंग या)॥ टीकट भेज कर मुफ्त मगानेका पता—गुलाबचंदजी काला दि० जैन फ्री बुक डिपो, सांभरलेक (राजपूताना)

गोम्मटस्वामी-(श्रवणबेलगोला)में चैत्र सुदी १५ को रथोत्सवका मेला होगा।

मेरठमें—जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव ब्र० शीतलप्रसादजीके सभापतित्वमें ता० ११-१२ नवम्बरको हुआ था जिसमें बोर्डिंगके मकानके लिये ८०००) का चंदा था और ३०००) और हो गये और विशेष होनेकी संभावना है।

बम्बई-की खंडेलवाल दि० जैन पंचायतने उदयलालजी, सेठी अर्जुनलालजी, नाथूराम प्रेमी, रामलालजी, बारेलालजी, आदिका जाति तथा धार्मिक संबंध उदयलालजीका विधवा विवाह करने कराने या उसमें सामिल होनेके लिये त्याग दिया है।

नागपुर-में जैन व्याख्यानमाला प्रारंभ हुई है। प्रति बुधवारको सभा होती है। सेतवाल डिरैक्टरी करनेका भी निश्चित हुआ है। और फार्म भी तैयार हुए हैं। **पत्रव्यवहार** लक्ष्मण गुलाजी श्रावणे मंत्री, सेतवाल मंदिर इतवारी, नागपुर।

विद्या और शास्त्रदान-बडगांव निवासी सेठ रघुनाथराम नारायणदासजीने १००००) गोलालारीय दि० जैन बालकोंके शिक्षा विभागमें तथा २०००) अन्य संस्थाओंको विद्यादान तथा जैन सिद्धांत संग्रह ग्रन्थ (मूल्य २ रुपये) की १०० कोपी विनामूल्य वितरण की है।

अमरोहा-में प्रेमवर्द्धक जैन कुमार सभा स्थापित हुई है जिसके उद्देश-परस्पर ऐक्यता और मैत्रीभाव पैदा करना, कुरीतियें छुडाना, समाज और देशसेवा करना, स्वदेशी वस्तु प्रचार करना, जैन संस्कारोंका प्रचार करना, सभासदोंको व्याख्यानदाता बनाना, पुस्तकालय स्थापित करना आदि हैं। मंत्री चांदबिहारीलाल जैन, अमरोहा (मुरादाबाद) है।

दान-चौरई छिंदवाडाके सिं० नन्नूलालजीका स्वर्गवास हो गया। अंत समय २०००) चौरई पर धर्मशाला तथा ५५६) तीर्थक्षेत्रों, संस्थाओं आदिको दिये गये हैं।

रावलपिंडी-में महावीर जैन पुत्री पाठशाला स्थापित हुई है जिसमें सहायता तथा अध्यापिकाकी आवश्यक्ता है।

पता-जैन धर्मप्रचारक सभा, रावलपिंडी।

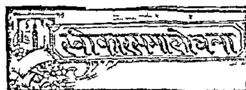
बड़वानीका मेला-सिद्धक्षेत्र श्री बावनगजाजी (बडवानी)का वार्षिक मेला आगामी पौष सुदी ८ से १९ तक होगा। इस मेलेमें शास्त्र, उपदेश, भजन, कीर्तन आदि भी होंगे तथा स्थानीय व बाहरसे आये हुए विद्यार्थियोंकी परीक्षा लेकर उनके उत्साह वर्धनार्थ पारितोषिक दिया जावेगा। यह क्षेत्र मऊ स्टेशन (R. M. R) से करीब ८० मील पक्की सडक है। मोटोर सर्वीस भी चालू हुई है। तथा तांगा बैलगाडी भी जाती है।

बडनगर अनाथालय-में ४५ अनाथ भरती हो चुके हैं और अनेक प्रार्थनापत्र आ रहे हैं अतः उदार सज्जनोंको सौ रु० के एकरे दो २ भाग भर कर १००० भाग शीघ्र भर देने चाहिये।

भगवानदास महामंत्री, बडनगर (मालवा)

महासभाके प्रस्ताव-(नं-९) सन् १९२१ मार्चमें जो मनुष्य गणना होगी उसमें दिगंबर जैनोंकी संख्या ठीक लिखी जाय (धर्मके खानेमें "दिगंबर जैन" शब्द अवश्य लिखे) (प्रस्ताव नं० १४) भारतकी आर्थिक स्थितिके सुधार हेतु जैन भाईयोंको देशी माल बनानेकी ओर ध्यान देना चाहिये तथा यथाशक्ति देशी वस्तुएं काममें लेना चाहिये। ये दोनो प्रस्ताव अमलमें लाइये।

पाटन-(जबलपुर) में उपदेशक पं० मौजीलालजीके उपदेशसे गत ता० १४ को यहांके कुल चमार, बसोर और भंगियोंने देवताओंपर बलि चढाना तथा शराब पीनेका आजन्म त्याग किया तथा उन्होंने यह ठहराव भी किया कि यदि कोई पीयेगा तो उससे ५०) दंड और दो जीमन लेवेंगे और दंड न देवेगा तो जाति च्युत करेंगे। दो ढीमरोंने मछली मारना व मांस खाना त्याग किया तथा परवार और गोलापूर्वमें फूट मिटकर एका हो गया।



लो० तिलकका चित्र—स्वर्गीय लोक मान्य बालगंगाधर तिलक महाराजका १६–२० की साईजका रंगीन चित्र। प्रकाशक, चित्रशाला प्रेस–पूना सीटि। मूल्य आठ आने। यह ओइल पेन्टिंग जैसा बहुत ही आकर्षक चित्र है। हरएकको मंगाकर अपने घरको लोकमान्यके चित्रसे सुशोभित करना चाहिये जिससे आपकी देशसेवाका अहर्निश स्मरण रहेगा। कामके प्रमाणमें मूल्य भी कम है।

अहिंसा—वर्ष १ अंक १–५ सं० ब्र० ज्ञानानंदजी, काशी। वार्षिक मूल्य रु० ३॥) अहिंसा प्रचारिणी सभा काशीके इस साप्ताहिक पत्रमें जीवदयाके अतिरिक्त अनेक राजनैतिक लेख, समाचार, कविता आदि भी रहते हैं। बहुत ही योग्यतासे संपादन हो रहा है। पृ. १२ और छपाई सफाई भी ठीक है।

मुखपृष्ठकी कविता इस प्रकार है—

इस पुण्य पृथिवी पर कभी सबमें अहिंसा भाव था,
राजा प्रजा पशु पक्षि तक पर बडा प्रेम प्रभाव था।
हिंसक विरोधी जीव भी थे शांत तज बीभत्सको।
थी गो पिलाती सिंहके पय, सिंहनी गोवत्सको॥

हरएक जैन अजैन सभीको यह पत्र मंगाना चाहिये जिसमें जैनोंको तो जीवदयाके कार्यके उत्तेजनार्थ तुर्त ही ग्राहक या सभासद होना चाहिये।

प्रजा बन्धु—पटना सीटिसे प्रकाशित नवीन राजनैतिक साप्ताहिक पत्र। वर्ष १ अंक ३–५ वार्षिक मूल्य ३) इसमें देशोपयोगी तथा राजनैतिक अच्छे २ लेख टिप्पणियें आदि रहते हैं। पत्रकी लेखनशैली अच्छी है।

जैनधर्मका महत्व—प्रकाशक निर्भयराम जैन धर्म प्रकाशक मंडल, कटडा अशरफी, देहली। मूल्य सिर्फ एक आना और ९॥) सैंकडा। इसमें जैन धर्मके महत्व विषयक ब्र० शीतलप्रसादजी, बा० बनारसीदासजी और सेठ हीराचंदजीके व्याख्यानोंका अपूर्व संग्रह एक साथ छपाकर प्रकट किया गया है। अजैनोंमें जैन धर्मका प्रचार करनेके लिये बहुत उपयोगी है। प्रकाशक दूसरा भाग भी प्रकट करनेकी उम्मेद रखते हैं।

जैन सिद्धान्त—दि० जैन शास्त्रिय परिषदका मासिक पत्र। वर्ष १ अंक १–२ संपादक न्यायतीर्थ पं० वंशीधरजी शास्त्री, सोलापुर। वार्षिक मूल्य ३) जैन सिद्धान्त विषयक अनेक उपयोगी लेखके अतिरिक्त जैन धर्मपर मिथ्या आक्षेपके लेखोंके मुंहतोड उत्तर प्रकट होते हैं। इसको बराबर समय पर प्रकट करना चाहिये। जैन धर्मका मर्म जाननेके लिये यह पत्र अवश्य मंगाने योग्य है।

विधवा विवाहकी असिद्धता—कलकत्तेसे स्याद्वाद पुस्तकमाला **बिना मूल्य** प्रकट हो रही है जिसका यह चौथा पुष्प है। इसके लेखक पं० श्रीलालजी अलीगढ और प्रकाशक पं० जयदेव, राजा उडमन स्ट्रीट बाजार, कलकत्ता। इसके ४२ पृष्ठोंमें विधवाविवाहको अनेक प्रमाणोंसे असिद्ध किया है। इस पुस्तकमालाकी सब पुस्तकें एक कार्ड लिखकर मंगा लेना चाहिये। यह प्रयास अतीव प्रशंसनीय है।



श्रीयुक्त रायसाहब सेठ विजयचंदजी, बांसवाडा।
(दि० जैन विद्यालय बांसवाडाके दानी स्थापक)



श्रीयुक्त रायसाहब सेठ विजयचंदजी, बांसवाडा।

(राजवंशी पहनावमें अश्वारूढ चित्र)

जैन विजय प्रेस सूरत.

जीवनचरित्र

श्रीयुक्त रायसाहब सेठ विजयचंदजी बांसवाडा।

एतत्प्रांतर्गत तलवाडा ग्राममें दिगम्बर जैन धर्मानुयायियोंमें दशाहूमडोंकी अच्छी संख्या है। व्यापारादि तो सामान्य है तथापि वैश्योंके निर्वाहकी अपेक्षा अन्यान्य छोटेर गांवोंमें अच्छा है। इस ग्राममें श्रीयुक्त दोसी भोगजी नाथजी नामक गृहस्थ रहते थे। आपकी सहधर्मिणी श्रीमती कुरीव्हेन थीं तथा आप रमियाणा गोत्रके प्रसिद्ध व्यक्ति थे। इस प्रांतके व्यापारानुसार आप भी आसामियोंसे लेन देन और कपडेका व्यापार करते थे। इस दम्पत्ति के ४ पुत्रोंमें चतुर्थ अपने **सेठ विजयचंदजी** हुए तथा ३ पुत्रियां हुईं, परन्तु इस समय उक्त सेठजीके अतिरिक्त सर्व ही कालकवलित होचुके हैं। उनके कुटुम्ब पुत्र पुत्री हैं।

सेठ विजयचंदजीका **जन्म** शुभ सम्वत १९३८ पौष मासमें हुआ। तदनंतर भाई बहिनोंके साथ शैशवकाल सानंद व्यतित किया और इस प्रांतकी सार्वजनिक शिक्षा पद्धतिके अनुसार आपने ११ वर्षकी उम्र पर्यंत ही देशी भाषाकी शिक्षा प्राप्त कर ली। उसी समय (अर्थात् जब आप ११ वर्षके थे) आपके पिता नाथजी सं० १९३९ में स्वर्गवासी हुए। गृहस्थीका कुल कार्य इन सब भाइयों पर ही रहा। उनकी मृत्युके लगभग ४ वर्षके बाद आपका प्रथम लग्न दोसी बालचंदजी दुआचदजीकी पुत्री मुखीबाईके साथ १९४३ में हुआ। यह बहुत ही बुद्धिमती, धार्मिक और शान्तिस्वभाविनी थीं। इनके इस शुभलग्नको लगभग एक ही साल बीता था कि भाग्यने पल्टा खाया और 'भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषं' तथा "कः कदा कीदशो न स्याद्भाग्ये सति यथेप्सिते" वाली आचार्योंकी सदुक्तियोंको चरितार्थ कर दिया। उसका संक्षेपमें हम पाठकोंको इस तरह परिचय कराये देते हैं कि—

बांसवाडा ग्राममें सुरेश्या महनती धनवानजीकी वंशपरम्परा जोकि दशाहूमड़ोंके बुद्धीश्वर गोत्रमें अच्छी व्यापारिणी और धनशालिनी एवं जनसम्मानित गिनी जाती है, में सेठ फतेचंदजीके सुपुत्र सेठ जडावचंदजी थे और उनके सुपुत्र सेठ हीरालालजी हुए इनके सुपुत्र सेठ दलीचंदजी थे, इनके एक मात्र सुपुत्र सेठ **चम्पालालजी थे,** जो कि केवल २२ वर्षकी आयुमें निःसन्तान २ पत्नियों और अपनी माताको छोडकर स्वर्गवासी हुए—उनके यहां अपने सेठ विजयचन्दजी दत्तक पुत्र हुए (गोद बैठे), वही दिन अर्थात् ज्येष्ठ वदी २ सम्वत १९४४ आपके जीवनलीलाको परिवर्तित एवं विलक्षण बनाने वाला हुआ। बस! आप तब ही से यहां सपत्नीक रहने लगे। आपने यहां आकर न केवल व्यापारोन्नति ही की, किन्तु साथमें लक्ष्मीका सदुपयोग भी करते रहे, तथा यहां पर आकर आपने अपनी अच्छी धाक बैठा ली। सं० १९५६ में जबकि प्रायः भारतवर्षमें दुष्कालका पूर्ण प्रकोप था, उस समय भी आपने १००१) गरीबोंकी सहायतार्थ सरकारी चन्देके अतिरिक्त ४०००) का अनाज तथा कपडा असहाय दीन हीन लोगोंके सहायतार्थ खर्च किया। इसही सालमें

हांके राज्यके आप खजानची नियत हुए, और व लगाकर अवतक आप उक्त पद पर नियुक्त , इतना ही नहीं, किन्तु आपने समय २ पर श और कालके विचारानुसार हमेशा ही अपनी माईके सद्द्रव्यका कुछ न कुछ अंश सदुपयोगमें जाते ही रहे। सं० १९९८ में ही इधर एकाल कम न था, गरीब लोग तो मुठी २ नोंके दर्शनों तकको तरसरहे थे, उस समय ी १०००) रुपया सरकारी चन्देमें देनेके सेवाय २०००) का अनाजमें घाटा उठाकर सते भावमें वेचा और कुछ गरीबोंको कपड़ा मी बांटा, यह नहीं कि आप सर्वदा सार्वजनिक ानादि कार्यके करते रहनेके कारण धार्मिक दान और विद्यादानसे विमुख रहते हों, किन्तु बाबर इधर भी आपका पूर्ण लक्ष्य रहा। सं० १९६२ में आपने श्री केसरियाजी धुलेवजीको बड़ा मारी संघ निकाला और १०००१) की रकम इस धार्मिक या यों समझिये कि समाज बन्धनमें पड़े होनेके कारण सामाजिक कार्य सम्पादनमें व्यय-की, और यश उपार्जन किया।

यद्यपि आप स्वयं अच्छे विद्वान नहीं हैं, तथापि नित्यप्रति पूजन, जाप और स्वाध्यायके प्रभाव तथा बम्बई आदि बड़े २ शहरोंके विद्यालय और बोर्डिङ्गके निरीक्षणसे आपके चित्तमें अपने यहां भी एक बोर्डिङ्ग तथा विद्यालय खोलनेकी धुन समाई हुई थी इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि आपने सं० १९६८ में एक बहुत अच्छा मकान लगभग ७०००) लगाकर तैयार कराया (जिसमें कि अब विद्यालयका कार्य सानन्द चालु है) इसही सम्वतमें आपने एक बहुत ही योग्य कार्य किया अर्थात इस प्रान्तके तेजपुर नामक ग्राममें प्रतिवर्ष दशहरेके शुभोत्सवपर भैसोंकी हत्या की जाती थी, वहांपर आपने पूर्ण उद्योग किया। वहां जागीरदार साहबको १०००) नकद भेंट देकर हमेशाके लिये नियम करा लिया कि वहां पर कभी भी इस मौके पर वध न किया जाय, तथा उस समय भी जो १८ भैंसों पर छुरी चलनेकी तैयारी हो रही थी उसे भी आपने उन अठारहोंका मूल्य देकर रुकवा दी, इससे भी इस प्रान्तमें आपका अच्छा नाम होगया!

आपको सं. १९७२में अकस्मात् बड़ी भारी बीमारीका सामना करना पड़ा। आपके जीवित रहने तककी किसीको भी आशा न रही, स्वयं आपको निश्चिय होगया कि अब यह मनुष्य जीवनलीला पूर्ण हुई। उस समय भी आपने अपने दानशील स्वभावके कारण १९००१)की रकम अपनी गाढ़ी कमाईके द्रव्यमेंसे पृथक् की, जिसमें सबसे बड़ी १०००१) की रकम विद्यादानके लिये थी। जो कि इस वर्ष विद्यालयकी २७१९१) की रकममें मिली हुई है, परन्तु "नाकाले म्रियते जन्तुः काले सति न जीवति" वाली शास्त्रोक्तिके अनुसार आपका मनुष्य आयुष्कर्म अवशिष्ट था, अतः आप कुछ दिन ही बीमारीकी पीड़ाका अनुभव करके स्वस्थ होगये, फिर सब कार्य करने लगे। सं. १९७३में भी आपने १३००) गरीबोंके हितार्थ लगा दिये और गत वर्ष आपने इस प्रांतके लिये सर्वथा नवीन उन्नितीपु-समाज सुधार, और मनुष्याकार पशुओंको मनुष्य बनानेके लिये दि० जैन विद्यालय खोल दिया।

इस समय आपही इस प्रांतमें सबसे बड़े धनाढ्य समझे जाते हैं। आपकी रतलाम, वांसवाड़ा, और गढीमें दुकानें हैं।

आपने न केवल यहांके राज्यसे ही सम्मान पाया किन्तु न्यायशील गवर्नमेन्टकी ओरसे भी आपको १९१४ ई०में **रायसाहिब**की उपाधि मिली है।

आपको ६ पुत्र और एक पुत्री ऐसी ७ संतान अपनी दोनो पत्नियोंसे हुई थी परंतु अभी सिर्फ नूतन पत्नी जड़ावबाई और एक पुत्र मोतीचंद ही करीब ९ वर्षका विद्यमान है और नवीन विद्यालयमें विद्याभ्यास करता है।

सेठ विजयचंदजीकी दान सूची।

२०१) सं० १९४६ में परचूणी तथा चांदीका थूणा सलूम्बरके मंदिरमें चढ़ाया तथा शास्त्रजी लिखाये।

२१५०) स० १९४७में १६००) माई दुलीचंदजीकी स्त्रीकी बीमारीमें दान किया। ५५०) परचूणी शास्त्रजी तथा कलश वगैरहमें खर्च किया।

८०१) सं० १९४८ में ३५१) सागवाड़ामें जूने मंदिरजीमें प्रतिष्ठा हुई उसमें दिये। ४५०) परचूणी श्री जीर्णोद्धार मंदिरजी गांववालोंके।

३३०१) सं० १९४९ में ४५०) बाड़ोदिया मंदिरमें प्रतिष्ठा हुई उसमें दिया, २००१) कार्तिकबदी ३ को श्री गिरनारजीकी यात्रामें, ५२५) गढीमें जूना मंदिरकी प्रतिष्ठामें दिये ३२५) परचूणी चांदीका सिंहासन।

१०१) सं० १९९० में १०१) परचूणी चांदीके फूल तथा चांदी धूप दान।

११०१) सं० १८९१ में ७००) श्री खोडन मंदिरमें प्रतिष्ठा हुई उसमें खर्च पडा, ४०१) श्री गजपंथाजी, पावागढ मांगीतुंगी वगैरहकी यात्रामें।

२००) सं० १[illegible]२ २००) परचूणी धर्म [illegible] खर्च किया।

[illegible]) सं० १९९३ ६००) परचूणी धर्म खाते।

२००) सं० १९९४ २००) परचूणी धर्म खाते।

२७१) सं० १९९९ २७१) परतापगढमें माईजीके मंदिरजीमें ध्वजा दड चढानेके लिये तैयार कराने तथा स्त्रीकी बीमारीमें कपड़ा वगैरह बांटा।

५००१) सं० १९९६, १०००) कैदसाली दुष्कालकी वजहसे गरीब लोगोंको कपडा तथा अनाज बांटनेके वास्ते चंदेमें दिया, घरसे ४००१) गरीबोंको बांटा।

४४१) सं० १९५७ परचूणी तथा श्री इन्द्रीश्वरजी, १४१) गोमट्टसारजी आदि ग्रन्थ लिखे हुए लिये।

५९०१) सं० १९९८ में १००१) फाल्गुण सुदी ५ दुष्कालकी वजहसे गरीब लोगोंकी सहायताके लिये सरकारी चंदेमें दिया, २०००) दुष्काल पीडितोंको गांवोंसे तेज अनाज मंगा कर सस्ते भावमें बेचनेके दानमें, १००) गरीबोंको कपडा बांटा,

२००) पाचूणी अन्य लोगोंको दिया, १९००) चम्पालालजीकी दोनों स्त्रियोंने श्री सम्मेदशिखरजी की यात्रामें खर्च किये, ११००) सोनागिर, चौरासी, तथा सिद्धवरकूट, मक्सी पार्श्वनाथजीकी यात्रामें।

९००) सं० १९५९ में २००] मगसर वदी १२ शाहंशाहकी खुशीकी कमेटीमें दिये, ७००] पाचूणी बाई बावणी साधर्मियोंको दिया।

५५१) सं० १९६०] कर्तिक वदी १ परतापगढकी पाठशालामें दिये, ३५०] पाचूणी अन्नदानादिमें दिये।

४३०१] सं० १९६१, १९००] अपनी बडी बहूके दशलक्षणीके १० उपवासोंके उत्सवमें खर्च किये, १००] लायब्रेरीके चंदेमें, २००] पाचूणी बाई बावणी साधर्मियोंको दिया, ३९०१] श्री सम्मेदशिखरजीकी यात्रामें खर्च किये।

१०४७६) सं० १९६२में १०००१) श्री केसरियाजी धुलेवको संघ निकाला उसमें खर्च किया, २५०) साधर्मीको दिये, २२५) पाचूणी जीर्णोद्धार मंदिरमें दिये।

३६६) सं० १९६३में १०१) गुवाडी गांवके मन्दिरके जीर्णोद्धारमें दिये, १६५) श्री ऋषभदेवजीके मन्दिरजीमें श्री ती-लोकजीका पूजन करानेमें कलश ढारा तथा वरमाला पहने, १००) पाचूणी साधर्मी बाईबावणी।

१३५२) सं० १९६४मे ९०१) श्री सम्मेदशिखरजीके चन्देमें, २५१) चम्पालालजीकी बड़ी स्त्रीके बीमारीमें दान किया, ४५०) घाटोलकी प्रतिष्ठामें खर्च किया, १५०) पाचूणी बाई बावणी साधर्मीको दिया।

२००) सं० १९६५में २००) पाचूणी बाइ बावडी तथा साधर्मियोंको दिये।

१७०१) सं० १९६६में १६०१) श्री गोमट्टस्वामीकी यात्रामें खर्चमें किये, १००) पाचूणी कर्णाटकबोर्डिंगके फण्ड तथा लायब्रेरीके चन्देमें तथा पाचूणी।

७५०) सं० १९६७ ५५०) सकुटुम्ब श्री अन्दीश्वर तथा ऋषभदेव भी गये सो खर्च किये, २००) पाचूणी मन्दिरमें कलश, वरमाला, छत्र वगैरहमें खर्च हुआ।

१३६७) सं० १९६८ ७२५) तलवाडामें पञ्चकल्याणकोत्सवमें खर्च हुए। २४२) बोरीगांवके पञ्चकल्याणकोत्सवमें खर्च किये, १००) पोहण तथा सागा तथा अरथूणा मन्दिरमें तथा पाचूणी खर्च, ३०१) सगवाडेकी धर्मशालाके चंदेमें दिये।

८५११) सं० १९६९में ७००१) श्री ऋषभदेवके मन्दिरमें पाठशालाके लिये मकान बनवाया, ४०३) हेमल्टन फण्डमें गरीब लड़कोंकी

पढ़ाईके लिये सरकारी स्कूलमें दिये, १०१] अनाथालयफण्ड अजमेरमें दिये, ३२९] इन्दौरमें गेन्दालालजी मन्दिरकी प्रतिष्ठामें गये, सो खर्च पडे, ६००] परचूणी, रतलाम बोर्डिङ्गके लड़कोंकी परीक्षामें तथा सावरागावकी पाठशालामें तथा विशावाड़ाकी धर्मशालामें तथा बाई बावणी साधर्मियोंको दान दिया तथा स्त्रीकी बीमारीमें दान वगैरह, १०८१] दशहरापर १८ भैंसे बचाये गांव तेजपुरमें ।

११०१] सं० १०७०में ५०१] हेमन्टनफण्ड-गरीब लडकोंकी पढाईमें,
२९०] ईम्पीरियलफण्डके चन्देमें, १००) लायब्रेरीके चन्देमें दिये, २९०] परचूणी रतलाममें अन्नक्षेत्रमें तथा छत्र चढ़ानेमें तथा धर्मादा।

८२६) सं० १९७१में १०१)श्री मालवा-प्रान्तीय सभा बडनगरको भेजे, ४२५] महाराजा आत्मानन्दजीने के केशलोच किया तब सागवाडेकी पाठशालामें दिये, ३००] परचूणी बाइवावली साधर्मी भाईको दिये।

६३८८] सं० १९७२में ७३९ बांसवाड़ेके ऋषभदेवजीके मन्दिरमें रथके लिये चांदीके छत्र नंग २ बड़े गीनरासुद्दी तैयार करके रथके ऊपर हमारे घरसे चढाया, २९०] अपनी बहूकी बीमारीमें जावरा तथा बम्बईमें दवाई कराने गये सो वहां गरीबोंको बांटा। १००] हवाई जहाजके चन्देमें दिये।

अपनी (भाई विनयचन्दजीकी) बीमारी—मिती आषाढ़ सुदी ६ के दिन हुई उसमें [illegible] पुण्य किया उसकी विगत यह है—

१०००१) पाठशालाके लिये (जोकि १९७६ [illegible] लिखे अतः यहां नहीं जोडे)
९०१) श्री ऋषभदेवजीके मंदिरमें पूजन प्रक्षालके लिये।
२६९) श्री तीर्थक्षेत्रोंके लिये भेजे।
९२६) श्री मांगीक्षेत्रके मंदिरजीमें।
१००) श्री परतापगढ कन्या पाठशालामें।
६७९) बहनभानजी वगैरह
६९३) अनाज तथा कपड़ा तथा गायोंको चारा वगैरह परचुणीमें।
१८४०) अपने घरके चैत्यालयमें चान्दीकी उतरीमें लगाना—तथा बचे तो दूसरी चीज करानी।

१५००१)

१०१) अपने पुत्र कस्तुरचन्दजीकी मृत्युमें दान दिया।
२०१) अपनी बड़ी बहुकी बीमारीमें दान किया।
६३६) सं० १९७३ में २११) मुनिश्री चन्द्रसागरजीने तलवाड़ामें केशलोच किया सो पाठशालामें तथा कलश भरनेमें खर्च किये, ४२५) परचुणी धर्मादा।

३२७७) सं० १९७४ में २९०१) श्री अन्दीश्वरजीमें समामण्डप बनानेके लिये दिये, ९२५) कार्तिक वदी २ को मुनिश्री चन्द्रसागरजीने वाणीदौरामें केशलोच किया सो पाठशालामें दिये, २९१) परचुणी कलश वगैरह तथा जीर्णोद्धारमें दिये तथा बद्रीनारायण उत्तरखंडमें दुष्काल पड़ा तब गरीबोंकी सहायताके लिये दिये।

१४००) सं० १९७५ में १३००) परचूणी बाई वावणीको दिये तथा दुष्काल होनेसे गरीबोंको कपड़ा और अनाज बांटा। १००) वायसरायके चंदामें वास्ते बीमारोंसे सिपाहियोंकी सहायताके।

२८१९९) सं० १९७६ में विद्यालय खोला उसकी विगत यह है—कुल २७१९१)

२००४) सं० १९६९ पौष सुदी १४ पुत्र कस्तूरचंदके जन्मोत्सवपर

१००१) सं० १९६९ आसौज सुदी ७ पुत्र भगवानदासके जन्मोत्सवपर।

१००१) सं० १९६८ ज्येष्टसुदी २ पुत्र मोतीचंदके जन्मोत्सवपर।

१०००१) सं० १९७२ आषाढसुदी ६ अपनी (विनयचंदजीकी) बीमारीमें

२१८३] पहिले दिये हुए रुपयोंके व्याजके उपजे।

१०००१] श्रीमान् जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके आदेशानुसार मिती श्रावणवदी ६ सं० १९७६ को विद्यालय तथा बोर्डिङ्ग खोलनेके लिये दिये।

२९७) मुनि श्री चन्द्रसागरजीने मिती आषाढ वदी ३को पारोदामें केशलोंच किया उस समय खर्च किये, पाठशालामें१९१)कलश वगैरे १०२)

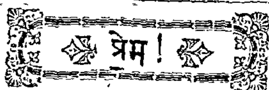
९००) श्री ऋषभदेवजीके मंदिरमें चौकमें फर्स जड़वाया।

२९१) श्री माणिकचन्द्र जैन ग्रंथमाला बम्बईको दिये।

कुल जोड़ ९३९५१)

इस प्रकार आज तक आप करीब एक लाख रुपयेका दान कर चुके हैं। अंतमें हम यही चाहते हैं कि आप अपने विद्यालयको और भी बड़ा भारी दान करके उसका ट्रस्टडीड बना देवें और उसको एक ऐसा आदर्श विद्यालय बनावे कि जिससे वागड प्रांतके दि० जैनियोंका उद्धार हो जाय। आपके दो चित्र हमने प्रकट किये हैं जिनमें एक तो अश्वारूढ राजवंशी पहिनावमें हैं जो अतीव आकर्षक है। हमारी यही भावना है कि आप चिरायु होवें और विद्यादानके और भी अनेक कार्य आपके करकमलोंसे हो।

चर्चा समाधान।



"प्रेम न वाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय"
-कबीर।

Love is Divine—Pope.

प्रेम अपूर्व है। अलौकिक है। प्रेमके शोभा, सौन्दर्य, प्रतिभा, आनंद एवं सुख उसीके स्वादनमें भरे हैं! प्रेममें भाषाकी गम्य नहीं। चाहे समस्त जगत एक स्वर हो उसकी परिभाषा करनेको उतारू हो जांय तो भी उसके अगम भेदको तनिक भी न पा पांय! प्रेम कहा नहीं जा सकता! उसका नज़रोंमें बुझना ही मानना है। प्रेम साम्राज्यमें अपूर्व शान्ति है—अगाध सुख हैं। संसारमें उसका स्थान कंठ-नतासे है। संसार प्रेम सुख-शांतिका प्यासा अवश्य है; परंतु स्वार्थवश अपने ही चहुं ओर केवल अपने ही लिए उसकी ताक झांकमें है। फिर भला प्रेम कहां? संसारमें स्वार्थ है। स्वार्थ पूर्ण संसार है। वहां 'मेरे-मेरे' का बोलबाला है। मोहका साम्राज्य है। ईर्षा, द्वेष, मान, मत्सर सदश उसके सहकारी बाग्वीर-रणवीर हैं जो अपना प्रपंच फैलाए हुए हैं। जरा अवसर पाया पर दबाया। साम्राज्य साम्राज्यका द्वेषी है उसके स्वत्व हड़प जानेका प्रयत्न कर रहा है—राष्ट्र राष्ट्रोंके-समान समाजोंके-पिता पुत्रके-सरल निर्बलका और क्या संसारकी छोटीसी शक्तिसे लेकर मनुष्य तक इसी स्वार्थ पूर्ण स्वोद्देश्यकी पूर्तिमें लगे हुए हैं 'प्रेम'का स्थान 'मोह'ने ग्रहण कर रक्खा है। जिसके वश हो हजारों लाखों मोही अपनी तानमें मस्त अपने जीवनकी इतिश्री करते जाते हैं। परंतु बिचारे इस दैवी मंत्रकी फुंकसे वंचित रहते हैं। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण—ऊपर, नीचे-स्वर्ग, अपवर्ग—आधुनिक और प्राचीन सब ही छान डाले परन्तु प्रेममयी शांतिका उपभोग करानेवाला कोई मार्ग ही न मिला! प्रेमकी महिमा—अपार महिमा सुनी, अपरिमित तान [illegible] पर सुख नहीं—शांति नहीं। [illegible] बड़ी गलती खाई पर प्रेमको जाना नहीं—प्रेमीको पहिचाना नहीं!

छिनहि चढ़ै छिन ऊतर सो तो प्रेम न होय।
अघट प्रेम पिंजर बसै, प्रेम कहावै सोय॥

प्रेमका अन्त नहीं। प्रेमका तीर छुटा कि छुटा, फिर लौट कर नहीं आता! यदि लौटा तो मृत्यु सी वेदनाका आह्वान साथ लाता है। प्रेमका तीर वेधता भी खूब है उससे बचनेका साहस करना व्यर्थ है। वह अपने ध्येय पर पहुंचता अवश्य है। बस, प्रेमियोंका मिलन प्रेम सरोवरमें अनिवार्य्य है। प्रेममिलन ही विचित्र सुखपूर्ण है। स्वार्थ और मोह दुम दबा कर भाग जाते हैं। द्वेषपूर्ण संसार प्रेममयी दृष्टिगोचर होने लगता है। अपने प्रेमीकी मूर्ति शनैः शनैः सर्व धाममें भासने लगती है। अन्तमे प्रेमकी निमग्नता में ऐसी आत्म विस्मृति होती है कि समस्त संसार पवित्र दीखता है, जीवन पवित्रतासे बीतता है। और जीवन—पवित्रता ही पूर्ण सुख है। शांति है एवं पूर्ण स्वतंत्रता है। महात्मा तुलसीदासका अपनी स्त्रीमें प्रेम अत्याधिक था। बस उनके हृदयमें प्रेमकी प्रचुरता थी यद्यपि वह थी एकान्त! परन्तुः निमित्त पा वही प्रेम

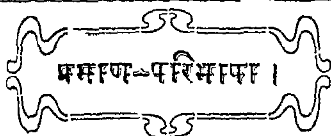
सर्व व्यापक 'विश्वप्रेम'में परिणति हो गया। महात्माको अपनी सहचरीकी सुडौल मूर्तिसे चर्चित जगतकी समस्त वस्तु प्रदर्शित होने लगी और वे प्रेम सरोवरके निर्मल जलमें डुबकियां लगाते लगाते पवित्र हो गए सुतरां दूसरोंके लिए सीधे मार्ग दिखला गए। वस्तुतः-

प्रेम प्रेम सब कोई कहै, प्रेम न चीन्हे कोई।
आठ पहर भीना रहै, प्रेम कहावै सोई॥

हर समय, हर घडी प्रेममें मग्न रहना ही प्रेम है। प्रत्येक पल अपने प्रेमीकी मोहनीसी मूरत अपनी आंखोंके आगे नाचती देखनेमें आनंद है, हर्ष है। यही प्रेम अखण्ड है। यही सांसारिक आपत्तियोंके सामने नीचा नहीं देखता बल्कि स्वयं उनको नीचा दिखाता है। प्रेमी प्रेमोन्मत्त हो अपनेको भूल जाता है। फिर अपने प्रेमीके लिए-ध्येयके लिए-अन्ततः जगतके लिए सर्वस्व अर्पण कर देता है। इसीमें उसे निराकुल आनंदका रसास्वादन होने लगता है। भेदभावका अभाव हो जाता है। संकीर्णताका ताला टूट जाता है। संकोचताका कोसों पता नहीं चलता। समदृष्टि-मैत्रीभावके ओकोंमें सुखकी हिलोरें आने लगती हैं। सब धर्म-धर्म उसके सामने हेय हो जाते हैं। जैन धर्मका क्या, हिंदू धर्मका क्या, बौद्ध धर्मका क्या, किसी धर्मका क्या, किसी संप्रदायका क्या! वह विश्वप्रेमी जगत हितैषावश सब प्राणियोंको सुखकर विश्वप्रेम एवं सत्य धर्मका डंका समस्त भूमंडलमें बजा देता है। और दुष्मार्गमें पड़े हुए जीवोंको सुमार्ग पर ला प्रेममयी शांतिसे मिला देता है। ऐसे महात्मा प्रत्येक समयमें अवतीर्ण हो जगतका उपकार करते हैं। तीर्थकर, बौद्धों और विविध हजरत महात्माओंने इसी विश्वप्रेमका शंख बजाया था और अपनी २ प्रेमोन्मत्तता-आत्मविस्मृतिके अनुसार सत्यका प्रचार किया है। ऐसे ही महात्माओंने भारत वर्षका मुख उज्वल किया है। आधुनिक सभ्यताने इस मोहसे सड़े हुए संसारमें अजब रंग फैला दिया है। सभ्य समाज प्रेमाभासको प्रेम मान प्रेमके मार्गसे विमुख हो द्वेष और स्वार्थमें और भी फंसते जा रहे है। परन्तुः-प्रेम प्रकृतिकी लीला अद्भुत है। उसके नियम अटल, अलौकिक हैं। सदैव 'सत्य' ही प्रगट होगा। मेघपटल सूर्य राशिको ढक दें परंतु अंतमें दिनकर चमकेहींगे। प्रेम ही-मैत्री ही-ऐक्य ही एवं सर्वस्व-त्याग ही विश्व विजय मंत्र है। तलवारके वार करनेमें तनिक भी बहादुरी नहीं सुतरां तलवारका वार सहनेमें सच्ची बहादुरी है। प्रेमसे ही स्वार्थी पापमय स्वार्थ साधनसे विमुख किया जा सक्ता है। यही विलक्षणता प्रेम है। आप दुख जाता है पर दूसरेका जी नहीं दुखाता। प्रेमी ही वीर है। क्षमा वीरस्य भूषणं। प्रेमकी जय! अस्तु।

विश्व प्रेम न भूलेंगे, मत्सरका सिर तोडेंगे।
अब मद मान भगा देंगे, संयम ना फिर त्यागेंगे॥
जगतकी ध्वंस बुझायगे, सुख शांतिको अपनायगे।
जगतके दुःख घटायगे, अपर प्रेम बरसायगे॥
किसीको अब न सतायग, फल च्यारोंके पायंगे।
सुखी देश बन जायेंगे, झण्डा प्रेम उठायगे॥

प्रेमोन्मत्त—
कामताप्रसाद जैन, हैदराबाद सिंध।



प्रमाण-परिभाषा।

लेखक पं॰ कुंवरलाल, न्यायतीर्थ दि॰ जैन विद्यालय, बांसवाड़ा।

हमें सुवर्ण, रजत आदि धातुओंकी परीक्षा करनेके लिये कसौटीकी आवश्यकता होती है, विना कसौटीके हम धातुओंका यथार्थ निर्णय नहीं कर सकते, इसीलिये धातुओंका व्यापार करनेवालोंको सबसे पहिले उस हीका संग्रह करना पड़ता है, साथमें यह भी ध्यान रहता है कि हमारी कसौटी सच्ची है, उसकी सचाईका विश्वास स्वयं कर लिया जाय या दूसरोंसे करा लिया जाय। सत्यताकी आवश्यकता दोनों ही अवस्थाओंमें होती है। क्योंकि जब तक कसौटी ही सच्ची निर्णीत नहीं जायगी तब तक उसपर कसे हुए धातुओंकी सचाई पर भी विज्ञजनोंको विश्वास नहीं हो सकता।

अथवा दूसरे शब्दोंमें यों समझिये कि अन्धकारमें पड़े हुए पदार्थोंको जाननेके वास्ते प्रदीप आवश्यक होता है। विना प्रदीपके [दियाके] उनका ज्ञान लेना प्राकृतिक मनुष्योंकी शक्तिके बाहर है, परन्तु वह प्रदीप भी किसी प्रयोगसे दूषित न होना चाहिये, नहीं तो सत्य ज्ञानमें सहायक होनेकी जगह बाधक हो जायगा। ठीक इस ही तरह तत्त्वको जानने और उसकी सत्यासत्यता निर्णय करनेके लिये भी एक सहायककी आवश्यकता मालूम पड़ती है, उस सहायकका नाम प्राचीन विद्वानोंने प्रमाण रक्खा है। तथा यह भी बतलाया है कि अंधेरेमें पड़ी हुई वस्तुओंका सामान्य ज्ञान हमें मामूली और दूषित दीपकोंसे भी हो सकता है, परन्तु जब हम उनका सूक्ष्म दृष्टिसे बारीकीसे विज्ञान करने पर उतारू होंगे तब वे सामान्य दीपक, जो कि स्वयं मंद है, हमें उस दशामें सहायता नहीं दे सकते, और न वे ही दीपक हमारे सहायक बन सकते हैं कि जो सामने आते ही चकाचौंध पैदा कर हमें वस्तु विज्ञानसे पीछे हटानेवाले हैं।

बस! इस ही बात पर ध्यान देकर हम निश्चय कर सकते हैं कि पहिले हम पदार्थान्वेषण और उनका यथार्थ परीक्षण करानेवाले सच्चे "प्रमाण" को ही ढूंढें। यदि हमारे हाथ सच्चा प्रमाण लग गया तो हम फिर किसी प्रकार भी तत्त्वविज्ञानमें भ्रान्त नहीं हो सकते, या सच्ची कसौटीवालेकी तरह कभी धोखा नहीं खा सकते। धोखा और भ्रान्ति तभी तक अपने अस्तित्वको रख सकते हैं जब तक कि हम सच्चाईसे पीछे हटे हैं या सच्ची परीक्षा करनेवाली सहायक शक्तियोंका हममें अभाव है।

विचारशील वाचकवृन्द! संसार भरके तत्त्वान्वेषी और सिद्धान्तज्ञोंकी यह अनुमत आज्ञा है कि "यदि किसी पदार्थका विचार

करना और उसे यथार्थ ज्योंका त्यों जानना है तो सबसे पहिले उसकी परिभाषा बना लो।" परिभाषाको ही दूसरे शब्द 'लक्षण'का पर्यायवाची माना है। साथ ही उन्होंने यह भी शिक्षा दी है कि वह लक्षण या परिभाषा भी दूषित नहीं होना चाहिये क्योंकि यदि वही दूषित होगी तो फिर उससे हम पदार्थोंका निर्दोष ज्ञान कैसे कर पावेंगे? जैसे कि मंद या धुंधले चश्मेको लगाकर क्या ठीक जानना होसकता है? नहीं। इसलिये लिखा है कि अनेक चीजोंके आपसमें संगठन या समुदायरूप होने पर भी जिसके द्वारा हम अभीष्ट वस्तुको पृथक् अलहदा जान सकें वही वास्तविक परिभाषा या लक्षण है" और वह निश्चित परिभाषा भी अव्याप्ता अतिव्याप्ता तथा असम्भविता नहीं होना चाहिये। उन्होंने बतलाया है कि लक्ष्य जिसकी परिभाषा की हो, उसके किसी ही अंशमें रहनेवाली या उसके किसी अंश-हिस्सेमें नहीं रहनेवाली परिभाषा अव्याप्ता कहलाती है, जैसे कि यदि कोई पशुमात्रकी परिभाषा 'शृङ्गवत्व' (सींग) बना दे तो पशुमात्रके कुछ हिस्से गाय, बैल, भैंस, बकरी आदिमें वह परिभाषा रहनेपर भी उसहीके अन्यांश हाथी, घोडा, गधा और कुत्ता बिल्ली आदिमें नहीं रहनेसे अव्याप्ता है तथा लक्ष्यमें रहने पर भी जो उसके सिवाय अलक्ष्य (जिसकी परिभाषा नहीं बनाई है)में भी रह जाय वह अतिव्याप्ता परिभाषा मानी है, जैसे कि कोई केवल गायकी ही परिभाषा बननेवाला "सींग" (शृङ्गवत्व) बनादे, तो वह 'सींग' रूप परिभाषा गायमें रहकर भैंस आदिमें रह जानेके कारण अतिव्याप्ता परिभाषामें परिगणित होजाती है और लक्ष्यमें जिसकी सम्भावना ही न हो वही असम्भविताके नामसे पुकारी जाती है जैसे कि मनुष्यकी परिभाषा "सींग", यह किसी भी दशामें मनुष्यके न होनेकी वजहसे असम्भविता परिभाषा कहलाई जाती है।

अतः अब हमें भी यदि "प्रमाण"का विचार करना या उसका स्वरूप जानना है तो त्रिदोषसे रहित परिभाषा बना लें, परिभाषा या लक्षण बन जाने पर हमें फिर किसी बातकी झंझट नहीं पड़ सकती। प्रमाणकी सच्ची या सद्युक्तियोंसे अकाट्य परिभाषा यदि होसकती है तो वह "सम्यग्ज्ञान" हो सकती है, यद्यपि प्रमाणकी परिभाषाएं अनेक मतवालोंने अपनी मतिके अनुसार भिन्न २ बनाई हैं तथापि युक्तियुक्त विचार परम्परा चलाने पर अन्तमें यहीं पर अवसान करना पडता है। तीरादर्शिशकुनिके समान अन्तमें यही सिद्धान्त आश्रयभूत होता है, हां! यह बात दूसरी है कि माननेवाले भी 'अपनी नाक ऊंची रहे" वालोंके समान इन शब्दोंमें स्वीकार नहीं करते किन्तु सच्चे परीक्षक और आत्महितैषी अवश्य ही इस तत्त्वके सामने मस्तक नवाते हैं। आगे चलकर पाठकोंको हम इसकी भी थोड़ीसी बानगी (नमूना) दिखलावेंगे।

पहिले तो हमें यह विचार लेना है कि इस परिभाषान्तर्गत दोनों (सम्यक् और ज्ञान) शब्दोंका असली क्या अर्थ है? इन दोनों शब्दों या यों समझिये कि इस परिभाषा "सम्य-

ज्ञान"का अर्थ "सकलतार्किकचक्रचूडामणिस्या-द्वादविद्यापति श्रीमद्विद्यानन्दि स्वामीने अपने तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक नामक ग्रन्थमें इस भांति लिखा है—

" स्वार्थाकारपरिच्छेदो निश्चितो बाधवर्जितः
सदा सर्वत्र सर्वस्य सम्यग्ज्ञानमनेकधा ॥ "

यद्यपि दूसरे २ ग्रन्थकारोंने भी उक्त परिभाषाका इस ही भावमें प्रतिपादन किया है, तथापि जो महत्त्व या गौरव और स्पष्टता इनके व्याख्यानसे झलक रही है, उतनी दूसरोंसे नहीं। देखिये ! इन्होंने 'ज्ञान" शब्दका अर्थ "स्वार्थाकार परिच्छेद" करके कई कठिन ग्रन्थियां खोल दीं, अर्थात् जो स्व आत्म और अपूर्व अर्थका साकार ग्रहण हो—वही ज्ञान कहलाने योग्य है, निराकारको ज्ञान शब्दसे नहीं पकड़ सकते क्योंकि वह तो केवल सामान्य सत्तावग्राही दर्शन माना गया है। इतना कह देनेसे अन्य मताभिमत "फलज्ञानं प्रमाणं" [फलज्ञान प्रमाण होता है] "सन्निकर्षः प्रमाणं" (इन्द्रिय और अर्थके सम्बन्धको प्रमाण कहते हैं) तथा "निर्विकल्प प्रतिभासः प्रमाणं (निर्विकल्प प्रतिभास—सत्तामात्रग्राही—प्रमाण होता है) आदि २ अनेकों युक्तिसे खण्डित होजाने वाले लक्षणोंको साफ फटकार दिया है (इन सबका विस्तारपूर्वक खण्डन आगे किया जायगा) तथा न केवल आत्म परिज्ञान और न केवल अर्थ-परिज्ञान ही प्रमाण कोटीमें गिना जा सकता है। क्योंकि ऐसा ज्ञान होना सर्वथा असंभव ही है। उक्त आचार्यने इतना ही कहकर नहीं छोड़ दिया किन्तु आगे चलकर वह इसको भी और विशेष स्पष्ट करनेके लिये यह बतला रहे हैं कि हमारे लक्षण (सम्यग्ज्ञानं प्रमाणं) में आया हुआ "सम्यक्" शब्द अन्यलोगोंसे दी हुई अविचारितरम्य—कुयुक्तियोंका परिमार्जन बड़े हौंसलेके साथ इस भांति कर देता है कि "सम्यक्" शब्दकी ही शक्ति या व्याख्यामें "निश्चितत्व बाधवर्जितत्व—आदि योग्य विशेषणोंका अन्तर्भाव हो जाता है" क्योंकि "निश्चित" कह देनेसे संशय और अनध्यवसायको अपने तई प्रमाण कहलानेका दावा नहीं हो सकता, तथा 'बाधवर्जित' विशेषण विपरीत ज्ञानको नहीं टिकने देता, तथा यदि कोई कह बैठे कि बाधकप्रत्यय उत्पन्न होनेसे पहिले तो उस मिथ्याज्ञानको भी सम्यक्ज्ञानत्व प्राप्त हो जा सकता है। क्योंकि न तो उसमें कोई बाधकज्ञान ही पैदा हुआ है और न उस बाधकको बाधित करनेवाला ही कोई तृतीय ज्ञान। इस कुयुक्तिको भी हटानेके लिये आचार्यने "सदा" विशेषण दे दिया है जो कि यह बतला रहा है कि प्रमाणमें बाधवर्जितत्व या निश्चितत्व थोडेसे समयके लिये ही नहीं किन्तु त्रिकाल या सर्वदा—हमेशाके लिये है, जिस ज्ञानमें कभी भी बाधा पैदा हो जाय—वह अपनेको प्रमाण बननेका दावा नहीं कर सकता-इतना होने पर भी मान लीजिये कि किसीको "सीपमें चांदी" का ज्ञान हो गया और बाधक प्रत्यय पैदा होनेसे पहिले ही वह व्यक्ति कहीं देशान्तर चला जाय और कभी भी उसे फिर उस सीपके देखनेका अवसर प्राप्त न हो तो क्या उसके इस उल्टे ज्ञानको प्रमाण कहना

पडेगा क्योंकि प्रमाणके लक्षणमें आये हुए बाधवर्जितत्व, निश्चितत्व और सदा विशेषणोंकी सत्ता बराबर मौजूद है–पर दर असल वह ज्ञान सच्चा नहीं ? बस ! इसीके निराकरणके लिए ग्रन्थकारने " सर्वत्र " विशेषण भी दिया है अर्थात् एक स्थानपर जिस चीज (सीप) में जिस वस्तु (चांदी–रजत) का ज्ञान हो जाय तो भी वह उस रूपमें प्रमाण नहीं हो ! यदि सब जगह वैसा ही होवे तो उसे भी प्रमाण मान लेवें लेकिन सर्वत्र वैसा होना कब सम्भव है ? इसलिये अन्य विशेषणोंके होने पर भी "सर्वत्र" विशेषण बहुत ही मार्केका लिखा है, इसी तरह किसी अतिमूढ़–अकलंके दुश्मनको किसी झूठे ज्ञानमें भी कभी और किसी स्थान पर भी पहिले ज्ञानसे प्रकारान्तरका ज्ञान ही न होवे अर्थात् यदि उसे हमेशा और हर जगह सीपमें चांदीका ही ज्ञान होता रहे, तो भी उसे प्रमाण नहीं कह सकते–कारण कि आचार्यके "सर्वत्र" विशेषणने इस कल्पनाको पहिले ही जर्जरित कर हटा दिया है–अत अन्तमें यही निष्कर्ष निकला कि जो सर्वदेश, सर्वकाल और प्रायश सर्व व्यक्तियोंकी अपेक्षा बाधा रहित, निश्चित और स्व–परपदार्थका साकार गृहण हो वही सम्यग्ज्ञान या प्रमाण है।

इसी बातको इन्हीं विद्यानन्दि स्वामीने अपने अष्टसहस्री नामक ग्रन्थराजमें शब्दान्तरों द्वारा इस भांति प्रतिपादन किया है कि "तत्व ज्ञान प्रमाण' अर्थात् यथार्थ ज्ञान ही वही प्रमाण है–ऐसा कह देने पर बौद्धदर्शनाभिमत निराकार दर्शन और अन्यान्य वादि प्रवादियों द्वारा स्वीकृत सन्निकर्षादिकोंकी अप्रमाणता भली भांति सिद्ध हो जाती है–क्योंकि वे अज्ञान स्वरूप हैं। उन अज्ञानरूप सन्निकर्षादिकोंको स्वार्थाकार प्रमिति (स्व–आत्म और पर–पदार्थके ज्ञान)में नियमरूपसे साधकतमता–सहायकपना नहीं हो सकता क्योंकि जो स्वयं अज्ञान है–वह स्वार्थाकार ज्ञानके प्रति कैसे सहायक हो सकता है ? स्वार्थाकार परिच्छेदमें तो ज्ञान ही नियमरूपसे पक्का सहायक होनेकी सामर्थ्य रखता है अन्य नहीं।

क्योंकि न्यायशास्त्रोंका यह सर्वमताभिमत–सर्व मान्य नियम है कि "जिसके होने पर ही जो होवे–और नहीं होने पर नहीं ही होवे वही उसके प्रति साधकतम या नियमरूपसे पक्का कारण है। इसीका नाम दूसरे शब्दोंमें अन्वय और व्यतिरेक है सो यह अन्वय व्यतिरेक ज्ञान विरोधी–अज्ञान स्वरूप सन्निकर्षादिके साथी नहीं अर्थात् यह नियमसे नहीं कहा जा सकता कि स्वार्थाकार प्रमितिके प्रति इन सन्निकर्षादिका अन्वय व्यतिरेक बनता है क्योंकि बहुत दूर पर पडे हुए सीपके टुकडेसे इन्द्रिय–चक्षुका सम्बन्ध होने पर भी–सीप रूपमें ज्ञान न होकर रजत या चांदीके रूपमें भी हो जाता है। तथा वहीं पर लकड़े अत एव दण्ड धारण करनेवाले दण्डीके बाहर रक्खे हुए दण्ड मात्रके दर्शनसे उस लगडके ज्ञान विना उस लगडसे इन्द्रियोंके सम्बन्ध हुए ही पैदा हो जाता है तब कैसे मान लिया जाय कि सन्निकर्षादि अवश्य ही साधकतमया कारण है, क्योंकि " अन्वयव्यतिरेकगम्यो हि कार्य

कारणभाव" अर्थात् कार्यकारणोंके नियामक अन्वयव्यतिरेक ही हुआ करते हैं सो यहां पर उनके अभावसे कभी भी साधकतमता (सन्निकर्षादिको) नहीं हो सकती और जब तक स्वार्थाकार प्रमितिके प्रति साधकतमता न हो तब तक "प्रमीयतेऽनेनेति प्रमाणं" इस वाक्यके रहनेसे उन्हें कैसे प्रमाण कक्षामें स्थान दिया जाय?

परन्तु अपने "तत्त्वज्ञानं प्रमाणं" इस लक्षणमें तत्त्व शब्दके ग्रहण कर लेनेसे कोई यह भी नहीं कह सकता कि "ज्ञानको भी साधकतमता नहीं मान सकते क्योंकि संशयादि ज्ञानोंके होनेपर भी सच्ची प्रमिति नहीं होती"। बल्कि "तत्त्वज्ञानं प्रमाणं" ऐसा कह देने मात्रसे ही संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय और मत्याभासादि अपनी २ जान बचा कर दूर भाग जाते हैं-कोई अपनी दाल गलानेकी ताक नहीं सोचते, अर्थात "तत्त्वज्ञान"की सामर्थ्यसे उनका स्वयं ही व्यवच्छेद या नाश होजाता है।

इन दोनों लक्षणोंके समझ लेने पर अन्य प्रमाण ग्रंथोंमें शब्दांतरोंसे आचार्योंने जो प्रमाण लक्षण बतलाये हैं उनका निष्कर्ष या सार इसी रूपमें निकलता है, अन्यथा नहीं।

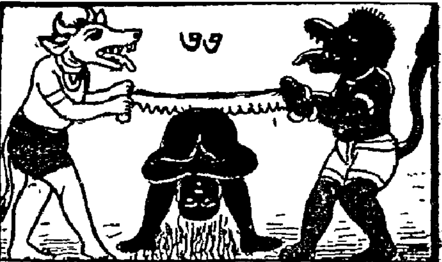
तथा श्री माणिक्यनंदि महाराजने भी अपने परीक्षामुख नामक ग्रंथमें इसी बात अर्थात "प्रमाणलक्षण" को इन शब्दोंमें प्रदर्शित किया है-कि "स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणं" अर्थात् स्व और अपूर्व-अर्थके व्यवसायात्मक-निश्चयात्मक ज्ञानको ही प्रमाण कहना चाहिये क्योंकि अन्य किसी भी प्रकार प्रमाणका निर्दोष लक्षण बनही नहीं सकता। "किसी भी लक्षणमें पड़े हुए विशेषण, उस लक्षणके अर्थमें दृढ़ता लाते हुए अलक्ष्यसे उसकी व्यावृत्ति-पार्थक्य या जुदाई किया करते हैं" इस नियमके अनुसार हमें विचारना है कि उक्त लक्षणमें कई विशेषण देकर आचार्यने लक्षणार्थकी कितनी मजबूती की है (व्यावृत्ति आगे दिखलायेंगे)।

सबसे पहिले हमें यह सोचना चाहिये, कि "प्रमाणकी आवश्यकता ही क्या"? यद्यपि इस विषयमें लेखके आदि भागने भी कुछ प्रकाश डाला है-तथापि वह पूरा नहीं इसीलिए यहां पर भी कुछ शब्द लिख देना उचित प्रतीत होता है। इस प्रश्नका उत्तर भी इन्हीं आचार्यके शब्दोंमें "प्रमाणादर्थसंसिद्धिः" अर्थात हेय, उपादेय और उपेक्षणीय पदार्थोंकी योग्य व्यवस्था, और उपादेय-ग्रहण करने योग्य पदार्थोंका ग्रहण तथा हेय-छोड़ने योग्य-और उपेक्षणीय-जिनकी उपेक्षा की जाय ऐसे पदार्थोंका त्याग करानेके लिये प्राणीमात्रको प्रमाणकी आवश्यकता हुआ करती है।

जाति प्रकृति आदिकी अपेक्षासे जो पदार्थ सुखरूप या सुखके कारण समझे जाते हैं, उनका संग्रह और जो उनसे विपरीत-दुःखरूप या दुःखके कारण समझे जाते हैं-उनका त्याग विना प्रमाणके होना कथमपि और कदाचिदपि सम्भव नहीं, जैसे कि नीम (निम्बवृक्ष) के कीड़े और ऊंट वगैरहको नीम (जो कि कडुवा और मनुष्योंकी खाद्यसामग्रीके हिसाबसे अखाद्य है-तथापि) अच्छा और हितकर मालूम पड़ता है या जो चन्दन आदि-जिन्हें कि मनुष्य अपने

रफा झूलता हुआ और निर्णय रहित हो, जैसे सीपके टुकड़ेमें यह निर्णय न होना कि "यह सीप ही है या चांदी" ऐसे संशय, तथा पदार्थका बिल्कुल उल्टा ज्ञान जैसे सीपमें यह निश्चय कर लेना कि "यह चांदी ही है" विपर्यय, और पदार्थके निर्णयकी ओर लक्ष्य ही न होना-विक्षिप्तके समान किसी भी पदार्थके स्पर्शादि होनेपर भी "यह कुछ है या-क्या है" आदि विचार रहित ज्ञान अनध्यवसाय कहलाता है, इन्हीं तीनोंको मिथ्याज्ञान या एक शब्दमें "समारोप" कहते हैं। इस समारोपसे विरुद्ध ज्ञान वस्तुका यथार्थ परिचायक-परिचय करानेवाला या ग्राहक हो सकता है। और दर असलमें वही प्रमाण भी है क्योंकि पहिले ही हमने यह बात बतला दी है कि "सम्यग्ज्ञानं प्रमाणं" अर्थात् सम्यक् शब्द द्वारा संशय, विपर्यय और अनध्यवसायसे रहितका ही बोध होता है। इसलिए इन तीनों रूप समारोपसे विरुद्ध या रहित ज्ञानमें ही प्रमाणता सचाई है। ऐसी दशामें यह बात भी अगत्य माननी ही पड़ती है कि वह सम्यग्ज्ञान या प्रमाण निश्चय रूप ही है क्योंकि इन तीनों रूपोंसे बचा हुआ ज्ञान अनिश्चयात्मक या निर्विकल्प नहीं हो सकता। दूसरी बात यह भी है कि जो पराई अपेक्षाके विना ही स्वपर वस्तुओंका यथार्थ भाव बतलाने या जाननेवाला है वह स्वयं लचरा पोच कैसे माना जा सकता है? जब तक उसके भीतरी अंशको पुष्ट मजबूत न मान लें तब तक उससे पदार्थोंके यथार्थ निर्णय रूप कार्य कभी ले ही नहीं सकते। इसलिए भी उसके भीतरी अंशकी पुष्टता या मजबूती, व्यवसायात्मकता या निश्चयात्मकत्व, नियमसे माननी ही पड़ती है। इसीलिए ग्रन्थकारने "तन्निश्चयात्मकं समारोपविरुद्धत्वात्" यह हेतु पुरःसर युक्ति दी है।

ऐसा सिद्ध कर देनेसे कोई यह कहनेका भी साहस नहीं कर सकता कि "व्यवसायात्मक ज्ञानको ही प्रमाण माननेसे जितने भी व्यवसात्मक ज्ञान होंगे सब ही प्रमाण मानना पड़ेगा। और ऐसा माननेसे प्रमाण और अप्रमाणकी व्यवस्थाका सर्वथा लोप-अभाव हो जायगा; क्योंकि विपर्यय ज्ञान और धारावाहिक ज्ञान (एक ही पदार्थमें निर्विशेष रूप पुनः २ ज्ञान होना) भी प्रमाण कक्षामें परिगणित होनेके लिए इस वास्ते तैयार हो जायंगे कि व्यवसायात्मकता उनमें भी है" कारण कि उक्तरूपसे प्रतिपादन करनेवालोंके लिए आचार्यने पहिले ही व्यवसायात्मक या निश्चयात्मक शब्दकी व्याख्यासे ही "विपर्ययज्ञान" को कोसों दूर भगा दिया, रहे बचे "धारावाहिक ज्ञान" की कलई भी "अपूर्वार्थ" विशेषण खोल ही देता है क्योंकि किसी पदार्थमें पूर्वज्ञान सदृश निर्विशेष ज्ञानका नाम ही धारावाहिक ज्ञान है अर्थात् यदि घट विषयक एक ज्ञान होनेके बाद भी 'घटोयं" "घटोयं" "घटोयं" इत्यादि उसी पहिले ज्ञानके समान अनेक ज्ञानोंकी धाराका होना पहिले ज्ञानद्वारा जैसा कुछ बोध हुआ है उससे किञ्चिदपि तरतमता न होकर जैसेका तैसा ज्ञान होना "धारावाहिक" ज्ञान कहलाता है। यद्यपि ऐसे ज्ञानोंमें भी स्वप्रत्ययके भाव


๗๖


๗๗


๗๘



नांना अनमा [illegible] पापकर्म भोगव ।।

सत्या ।। [illegible] ।। चित्रना दोहा

पशुपन्खीने मारीआ, गरका कर्या अनेक ॥ जमना फांरशातां तेहने, मारे
छे बहुरेक ॥ १ ॥ मारी मांश जे वेची आ, कर्या अनर्थ बहु पाप ॥ जमरा
जा तेहने, मारे मार अमाप ॥ २ ॥

छहोत्तर अंकमां चित्रमां दर्शावेला पापकर्म भोगववाना

संत्योत्तर अंकना चित्रना दोहा

पशुपक्षीने मारिआ, गरक कर्या अनेक ॥ जमना फांरशातां तेहने,
मारेछे बहुरेक ॥ १ ॥ मारी मांश जे वेचीआ, कर्या अनर्थ बहु पाप ॥
जमराज तेहने, मारे मार अमाप ॥ २ ॥

अठ्योतर अंकमां चित्रमां दर्शावेला पापकर्म भोगववाना

ओगणेशीं अंकना चित्रना दोहा

मछीमार तणे भवे, मछ वींध्या धरी तान ॥ भाइ हवे दुःख भोगवो,
क्यां गयुं तमारुं मान ॥ १ ॥ मछ मारी भोजन किया, प्राण लुट्या जे-
णे दश ॥ जमराय हवे तेहने, पीली काढे कश ॥ २ ॥

अठ्योत्तर अंकमां चित्रमां दर्शावेला पापकर्म भोगववाना

ओगणेशीं अंकना चित्रना दोहा

मछी मारतणे भवे, मछ वींध्या धरी तान ॥ भाई हवे दुःख भोगवो
क्यां गयुं तमारुं मान ॥ १ ॥ मछमारी भोजन किया, प्राण लुट्या
जेणे दश ॥ जमराय हवे तेहने, पीली काढे कश ॥ २ ॥

अर्थप्रत्यय या बाह्यपदार्थोंका बोध होता है। तथापि पहिले ज्ञानके बादमें उत्पन्न हुए सब ही ज्ञान निष्फल है-इस लिए उन्हें प्रमाण नहीं माना कारण कि प्रमाण या सच्चे ज्ञानका फल-इष्ट पदार्थोंका ग्रहण अनिष्टोंका त्याग और उपेक्ष्य पदार्थोंकी उपेक्षा माना गया है-सो यह बात पहिले ही ज्ञानसे यथासम्भव हो जाती हैं। फिर क्यों कर बादमें होनेवाले निष्फल ज्ञानोंको प्रमाणोंकी कक्षामें बिठलाया जाय? बस! इसी उद्देशसे महर्षियोंको धारावाहिक ज्ञानोंकी प्रमाणता स्वीकृत नहीं-और इसी कारणसे यहां पर प्रमाणलक्षणमें अपूर्वार्थविशेषण देनेकी आवश्यकता जानकर आचार्योंने इस विशेषणका प्रयोग किया है। क्योंकि धारावाहिक ज्ञानोंमें अपूर्वार्थत्वके अभावसे ही प्रमाणताका अभाव है।

हां! यहां पर कोई यह अवश्य कह सकता है कि यदि हम यह नियम बना लेंगे कि जिस ज्ञानसे पूर्वज्ञान प्रतिभासित पदार्थ प्रतिभासित न हो वही प्रमाण है जिसके द्वारा केवल ऐसा ही पदार्थ ज्ञान हो जो कभी और किसी ज्ञानसे न जाना गया हो-तो संसारभरमें जितने भी ज्ञान उत्पन्न होते हैं-उनमें कोई भी प्रमाण नहीं कहलाया जा सकेगा। क्योंकि प्रथम तो ऐसा पदार्थ ही मिलना कठिन है कि जिसे सर्वज्ञज्ञानसे भी प्रतीत न हुआ हो, आस्तिक दार्शनिकोंमें कोई भी ऐसा नहीं जिसने सर्वज्ञका अस्तित्व न माना हो और जब सर्वज्ञका अस्तित्व माना तब यह माननेमें भी कोई आपत्ति नहीं की जासकती कि उसके अप्रतिभासित पदार्थ संसारमें अपना अस्तित्व ही नहीं रख सकता। ऐसा कोई पदार्थ नहीं हो सकता कि जो उस ज्ञानसे भी छिपा रहा हो। कारण कि उसके ज्ञानके विषयमें यह बात सर्व सम्मत और मान्य है कि 'त्रिकालवर्ती तीनों-लोकोंके समस्त पदार्थोंको सपर्याय जाननेवाला सर्वज्ञका ज्ञान होता है।' दूसरी बात; मान लिजिये कि पहिले हमने किसी व्यक्तिसे अग्निका नाम सुनकर श्रोत्रेन्द्रियजन्य शाब्दिक ज्ञान कर लिया या किसीसे व्याप्ति-अविनाभाव सम्बन्ध द्वारा अग्निको जान लिया। इसके बाद हमें धूमज्ञानसे होनेवाले अनुमानिक अग्निज्ञान को और अग्निके पास पहुंच जाने पर चक्षुरिन्द्रिय या स्पर्शनेन्द्रियसे समुत्पन्न सांव्यवहारिक प्रत्यक्षज्ञानको ही प्रमाण माननेसे हाथ खींचना पड़ेगा। हमें इन सच्चे ज्ञानोंको भी 'प्रमाण" कहनेमें हिचकिचाहट होगी। और ऐसा होने पर "विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरं" वाली कहावतके अनुसार "अपूर्वार्थ" विशेषणसे प्रमाणमें विशेषता या अप्रमाणिक लक्षणकी व्यावृत्ति न हो कर हाथसे प्रमाण भी निकल जायेंगे और ऐसा होना अनुचित है।

इस प्रकार प्रतिपादन करने महाशयको विचारना चाहिये कि प्रमाणका लक्षण बतलानेवाले आचार्यका यह अभिप्राय नहीं है कि "अपूर्वार्थ" विशेषण द्वारा हम उस अर्थ पदार्थका ग्रहण करें कि जो 'सर्वथा' "अपूर्व" हो, कारण पहिले तो सर्वथा 'अपूर्व अर्थ" ऐसा जैन सिद्धान्त माननेवाला कोई भी व्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकता, जैन दर्शनका मुख्य प्राण "स्याद्वाद" है। उसे माननेवालेके हृदयसे

कभी "सर्वथा" शब्द ऐसे दार्शनिक विषयोंमें नहीं निकल सकता। शब्द निकले या न भी निकले किन्तु मुख्य अभिप्राय यह है कि जब कोई भी पदार्थ सर्वथा अपूर्व हो ही नहीं सकता तब वहां पर ऐसी स्वयं कल्पना करके दोषोद्भावन करना युक्तिसंगत नहीं। अर्थका अपूर्व-विशेषण तो यही सिद्ध करता है कि अपने ही पूर्वज्ञानद्वारा जिस पदार्थका जिस रूपमें बोध हो चुका है। ठीक वैसे ही रूपमें दूसरा तीसरा चौथा आदि ज्ञान होना निष्फल होनेसे अप्रमाण है। प्रमाण वही है जिसने उत्पन्न होकर हानि, उपादान और उपेक्षारूप फलत्रय-मेंसे यथायोग्य किसी फलकी निष्पत्ति की हो। पूर्वज्ञानसे जाने हुए अर्थमें भी कुछ विशेषता सहित ज्ञान प्रमाण कहलाया जासकता है। क्योंकि "ज्योंका त्यों ही" न होना अपूर्व विशेषणकी सार्थकता है। ठीक इसी बातके ध्यानमें आजानेसे श्रावणज्ञान, व्याप्तिज्ञान, अनुमान और चाक्षुष या स्पार्शन सांव्यवहारिक प्रत्यक्षके विषयमें जो दोषोद्भावन हुआ वह निराकृत हो जाता है क्योंकि उन सब हो ज्ञानोंमें एकसा प्रतिभास नहीं है। 'कारणभेद नियमसे कार्यभेद कर देता है" अतः कारणभेद और प्रतिभास भेद समुपलब्ध होनेसे उन सबमें भेद है तथा जैसा श्रावण ज्ञान है ठीक वैसे ही दूसरे तीसरे-व्याप्तिज्ञान, अनुमान आदि नहीं। अतः अपूर्वार्थ विशेषणके ऊपर जो कलंक लगानेका अनुचित साहस किया गया वह अपने औचित्यके अभावमें स्वयं ही नहीं टिक सकता।

और न जैनियोंके माने हुए प्रमाणसंप्लववाद (किसी एक ही विषयमें अनेक प्रमाणोंकी प्रवृत्ति "प्रमाणसंप्लव" कहलाता है-इसे जैनाचार्योंने भी स्वीकृत किया है) में किसी व्याघात-आपत्ति या दोषकी ही सम्भावना हो सकती है-क्योंकि अपूर्वार्थ विशेषणका मुख्य प्रयोजन यही है कि "ज्योंका त्यों ही" विषय न होना चाहिये-किन्तु अर्थ ज्ञान विशेष होनेपर प्रमाणसंप्लव, अपूर्वार्थ विशेषणका विरोधी न होकर सहायक ही है।

प्रथम प्रमाणसे जानी हुई वस्तुमें आकारादि विशेषको जाननेवाला दूसरा प्रमाण भी अपूर्वार्थ (अपूर्व या नवीन अर्थ-विषय है जिसका) ही है। जैसे किसीने पहिले केवल इतना जान पाया था कि 'यह वृक्ष है" इस प्रमाणसे गृहीत वृक्षको पुनः "यह वट वृक्ष है" इस प्रकार जाननेवाला द्वितीय ज्ञान भी प्रमाण ही है क्योंकि वृक्षरूपसे उस वस्तुका ज्ञान हो जानेपर भी वटरूपसे पहिले ज्ञान नहीं हुआ था इसलिये आचार्यने स्वयं लिखा है कि 'अनिश्चितोऽपूर्वार्थः अर्थात् अपने स्पष्टरूपसे या आकारादि विशेष रूपसे नहीं जाना हुआ सम्पूर्ण पदार्थ समुदय "अपूर्वार्थ" ही है। तथा सिर्फ अनजान पदार्थ ही अपूर्वार्थ नहीं माना-किन्तु जाना हुआ भी समारोप या संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय आदिके सद्भावसे वैसा ही "अपूर्वार्थ" मान लिया जाता है। जैसे किसी व्यक्तिने अपने बचपनमें ग्रन्थका अध्ययन किया हो फिर उस ग्रन्थ या विषयका सम्पर्क-सम्बन्ध न रहा हो तो वृद्धावस्थामें उस व्यक्तिके

लिये वह ग्रन्थ या विषय बिल्कुल ही नवीन जचेगा मानना पड़ेगा क्योंकि कालादि व्यवधानमें अब वह व्यक्ति नहीं पढे हुएसे कुछ भी विशेष नहीं जानता। ठीक इसी प्रकार यदि किसी व्यक्तिको कभी और कहींपर किसी पदार्थका सम्यग्ज्ञान प्रमाण होगया और बादमें सशयादि व्यवधान पड गया तो उस व्यक्तिके लिये वह पदार्थ भी अपूर्व ही है अत ऐसे पदार्थोंमे भी जो निश्चयात्मक ज्ञान उत्पन्न होगा वह भी प्रमाण कोटिमें ही परिगणित समझा जायगा। "दृष्टोऽपि समारोपात्तादृगिति"।

इस भान्ति प्रमाण परिभाषामें दिये हुए सब शब्दों (पदों) की सार्थकता प्रदर्शन कर चुकने पर "स्व" शब्दकी सार्थकता प्रदर्शन करना भी आवश्यक मान कहना पडता है कि जिस तरह अन्य विशेषणोंमेंसे किसी एक विशेषणके हीन होनेसे प्रमाण लक्षण अपरपूर्ण रह जाता है उसी तरह यदि "स्व" शब्दकी अपेक्षा कर दी जाय तो भी प्रमाण परिभाषा सम्पूर्ण रीतिसे निर्दोष नहीं कहलाई जा सकती। यद्यपि कुछ दार्शनिकोंने कई स्वकल्पित कल्पनाओंके आधार "स्व" शब्दकी अनावश्यकता बताई है—उनमेंसे एकका कहना है कि "ज्ञान स्वव्यवसायी नहीं हो सकता—ज्ञान दूसरे पदार्थोंको तो जान सकता है—पर स्वय अपनेको नहीं, क्योंकि वह अचेतन है। और उसकी अचेतनता प्रधान या प्रकृतिकी पर्याय होनेसे सिद्ध ही हो जायगी अर्थात् ज्ञानको अस्वसवेदी अपने आपको नहीं जाननेवाले (साख्य)का कहना है कि जो चेतन होता है वह प्रधान प्रकृतिकी पर्याय नहीं होता जैसे आत्मा किन्तु यह ज्ञान, प्रकृतिकी पर्याय होनेसे अचेतन है और जब यह अचेतन है तब घट पट मठ आदि अन्य अचेतन पदार्थोंकी तरह स्वय अपनेको जाननेवाला कैसे हो सकता है? कितनीही तेज तलवार क्यों न हो स्वय अपनेको ही नहीं काट सकती, कितना ही शिक्षित नटबटु (कलाबाज़, नटका लडका) क्यों न हो अपने ही कन्धेपर नहीं बैठ सकता। ठीक इसी नियमके अनुसार ज्ञानको भी अपना जानना मान लेना उचित नहीं अत "स्व" शब्दकी कोई आवश्यकता नहीं है" तथापि इन कही हुई कल्पनापर थोडासा भी विचार करलेनेपर 'स्व' पद की आवश्यकता स्पष्ट झलकने लग जाती है—क्योंकि जिस आधारपर उक्त कल्पनाकी नींव रक्खी गई है वह ज्ञानको प्रकृति (पुद्गल) की पर्याय मान लेना ही है जोकि अनेकों प्रमाणोंद्वारा शीघ्र ही अ त य त हो जाती है—ज्ञान वास्तवमें आत्माकी पर्याय है—जानना और देखना आत्मामें ही होनेसे ज्ञान पर्यायवाला आत्मा ही हो सकता है। जो ज्ञान पर्यायवाला नहीं होता उसमें जानने और देखनेकी शक्ति भी नहीं होती जैसे पटादि वस्तु पर जब आत्मामें जानने और देखनेकी शक्ति उपलब्ध हो रही है तब उसे ज्ञान पर्यायवाला मानना ही पड़ेगा।

अगर प्रधान—प्रकृति (पुद्गल) को ज्ञानवान् माना जायगा तो फिर आत्माका अस्तित्व मानना भी कठिन पड जायगा—क्योंकि जब प्रधानमें ही जानने और देखनेकी शक्ति मान ली तब फिर

आत्माकी आवश्यक्ता ही क्या ? अथवा फिर किन हेतु के सहारे आत्माकी सिद्धि होगी ? और ऐसा होने पर 'चौबेजी चले छक्के बनने और मार्गमें ही दुबे रह गये" वाली कहावतके अनुसार उनका (सांख्योंका) यह मूल सिद्धान्त भी हाथसे निकल जायगा। "त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि, व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ॥"

अतः उन्हें भी स्वसिद्धान्तसंरक्षणार्थ तथा 'चेतनोहं-मैं चेतन हूं" इस अनुभवके बलसे जिस तरह आत्माके चेतन स्वभावकी स्वीकृति की है उसी तरह 'ज्ञाताहं-मैं ज्ञाता-जानने और देखनेवाला हूं" इस सर्वजन प्रसिद्ध अनुभवके बलसे ज्ञान स्वभावता भी निर्विवाद रूपसे स्वीकार करना ही पड़ेगी क्योंकि अनुभव दोनों स्थलोंमें समान है। तथा यह भी एक निर्विवाद एवं प्रमाणसिद्ध सिद्धान्त है कि जो ज्ञान स्व-वेदी नहीं होता वह प्रतिनियत-नियमित पदार्थोंकी व्यवस्थापक भी नहीं हो सकेगा क्योंकि पदार्थोंकी व्यवस्थाका भाव हो यह है कि नियमित देश, काल आदिकी अपेक्षासे नियमित पदार्थका अनुभव होना सो ज्ञानके अस्वसंवेदी होनेसे बन नहीं सकता। इसलिये अनुमान रूपमें कहना पड़ता है कि "ज्ञान स्वव्यवसायात्मक होता है। इन्द्रियादि कारणान्तरकी अपेक्षाके विना भी पदार्थोंका व्यवस्थापक होनेसे" और जो दर्पणादिकी तरह स्वव्यवसायी नहीं होता वह पदार्थोंकी व्यवस्था भी नहीं कर सकता है। अतएव स्वयं आचार्यने प्रतिपादन किया है कि "स्वोन्मुखतया प्रतिभासनं स्वस्य व्यवसाय, अर्थस्येव तदुन्मुखतयेति" अर्थात् जिस तरह घट, पट मठ आदि पदार्थोंकी उन्मुखता से ज्ञान निसंदेह निश्चयात्मक हो जाता है उसी तरह अपनी उन्मुखतासे अपना ज्ञान भी होता ही है। और जब स्व-अपना ज्ञान होना प्रमाणसिद्ध है तब स्वशब्द भी प्रमाण लक्षणमें आवश्यक ही है, अनावश्यक नहीं। विना स्वशब्दके प्रमाण लक्षण परिपूर्ण ही नहीं हो सकता। अस्तु।

अन्तमें हम अपने विचारशील पाठकोंसे साग्रह निवेदन किये विना न रहेंगे कि यदि आप हमारे इस निबंधका विचारपूर्वक अवलोकन कर कुछ लाभ उठाकर हमारे परिश्रमको सफल करेंगे तो सम्भव है कि ऐसे ही अन्य विषय भी आपके समक्ष उपस्थित करनेमें हम शीघ्र ही समर्थ होंगे। शुभमस्तु।

तिलक-शोक।

गज़ल।

भारतके प्राण प्यारे, प्यारे तिलक हमारे।
ऐसे समै में हमको, कहाँ छोड़कर सिधारे॥
भारत जो था गफलतमें ले रहाथा करवट।
तुमने जगा दिया था, दे दे इसे सहारे॥
इस फूटको हटाकर, रंग प्रेमका ये ऐसा।
हमपे चढ़ाया उतरे न जो कभी उतारे॥
इस देशका सुधार जो कुछ हुआ था अबतक।
तेरे प्रतापसे था, ऐ देशके दुलारे॥
बालक जवान बूढ़े, निर्धन धनी अमीरो।
अफसोस है निहायत ऐ लोकमान्य प्यारे।
तेरी जुदाई हमसे, होगी न दूर हरगिज॥
कहते रहेंगे हरदम आंसोंसे, अब पनारे॥
पुरकतमें अब कलम भी चलती नहीं अगाड़ी,।
करता हूं बंद इससे, आखिर यही पुकारे॥
"प्रियवर" हमारी विनती, स्वीकार इतनी करना।
भारतमें जन्म लेना, आकर यही दुबारे॥

'प्रिय' फुलेरा।

आदर्श जीवन।

लेखक-मास्टर छोटालाल जी० गांधी-सोनासण।

સંસારમા, એકેન્દ્રિયથી લઇ પંચેન્દ્રિય સુધીના જે જે જીવો આપણને દૃષ્ટિગોચર પડે છે, તેમા મનુષ્યને સારાસારનો વિચાર કરવાની શક્તિ અર્પેલી છે. જો તે ચાહે તો તે શક્તિદ્વારા પોતા; ના જીવનને અમુક અંશે આદર્શ બનાવવામા ફળીભૂત થઇ શકે તે નિર્વિવાદ છે; કારણકે પ્રાચીન તેમજ અર્વાચીન સમયનો ઇતિહાસ તેની સબળ સાક્ષી પુરે છે. પોતાના જીવનને ઉચ્ચતાની પરાકાષ્ઠાએ પહોંચાડવાને, રંક તેમજ રાજાને, પુરૂષ તેમજ સ્ત્રીને, બાળક તેમજ બાળિકાને, એક સરખો હક છે; અને તે હક ભોગવવાને, ગમે તે સ્થળ ઝુંપડી યા મહેલ, ઘર યા જંગલ, સ્થળ યા જળ, રણ યા મેદાન, વિદ્યાગૃહ યા કારાગૃહ અનુકૂળ છે.

આદર્શ જીવનને અનુભવો-મનુષ્ય, સર્વ સ્થિતિમા-ગરીબ યા સારી-દુઃખી યા સુખી-પોતાની કર્તવ્ય પરાયણતા, સત્ય નિષ્ઠા, પ્રમાણિકતા, અને શુદ્ધ વાસનાથી, સર્વ કોઇના ઉપર એક જાદુઇ અસર કરવાને સમર્થ થાય છે. તેના વચનો પર પૂર્ણ શ્રદ્ધા બેસે છે. અને તેનું અનુકરણ કરવાને વારંવાર ઇચ્છા પ્રાદુર્ભાવ થાય છે. તે નહિ કે એકલો પોતાનું આત્મ-કલ્યાણ કરે છે, પણ બીજાઓને તે કરવાને આડકતરી યા સીધી રીતે, પ્રત્યક્ષ યા પરોક્ષ રૂપે એક કારણ રૂપ થઇ પડે છે, અને ઐહિક તેમજ પારમાર્થિક સુખ સાધવાને સમર્થ થાય છે. તેની રગે રગ, वसुधैव कुटुम्बकम्-(વસુધા એજ મારૂં કુટુંબ છે)-એ સિદ્ધાંત પ્રસરી રહે છે, તેને જગત પ્રતિ નિઃસ્વાર્થ પ્રેમ, પોતાનું સર્વસ્વ-જ્ઞાન, ધન, બળ અને સત્તા-બીજાના હિતને માટે અર્પવાને તેને પ્રેરે છે, અને તેના હૃદયપટ પર, परोपकाराय सतां विभूतयः-(સન્ત પુરૂષોની વિભૂતિઓ બીજાના ભલાને વાસ્તેજ હોય છે)-અને "Inaction in an act of mercy, is an act in a deadly sin"—(દયાના કામમા ભાગ ન લેવો, તે ભયંકર પાપના કામમા ભાગ લેવા બરોબર છે)-એ બે અમૂલ્ય સૂત્રો ની ચિરસ્થાયી છાપ મારે છે, [illegible] છાપ તેના જીવનને સાર્થક બનાવવામાં પૂર્ણ અંશે સહાયભૂત થાય છે. તે દરેક પ્રતિ મૈત્રીભાવ, ભ્રાતૃભાવ, અને પ્રેમ વૃત્તિ દાખવે છે, અને સર્વને એક સરખી રીતે ચહાય છે, તેમના દુઃખ ટળે અને તેઓ સુખી થાય એવી ભાવના તેના દીલમા હમેશાં સ્ફુરણા કરે છે, અને તે દુઃખ દુર કરવાના ઉપાયો શોધી અમલમાં મૂકે છે. આવી ઉચ્ચ ભાવના, આવું ઉચ્ચ પ્રકારનું વર્તન, તેના મનને, રાગદ્વેષરૂપી મળથી દૂર કરી, નિર્મલ અને શાન્ત રાખે છે. આવા તેના નિર્મલ અને શાન્ત મન ઉપર આત્મમૂર્તિનો પ્રકાશ બરાબર રીતે પડે છે, અને તેને આત્મજ્ઞાનનું દિગ્દર્શન કરાવી આપે છે. આ આત્મજ્ઞાનથી તે શાશ્વત સુખને સાધી શકે છે અને અનુભવી શકે છે.

આદર્શ જીવનની ચમત્કૃતિથી ચકિત થઇ, વાંચકવર્ગને, તેની આવશ્યકતા જણાય એ સ્વાભાવિક છે, અને તેની પ્રાપ્તિના સાધનો જાણવા આતુર થાય તે દેખીતું છે. તે કદાચ પોતાની મેળે, તેની પ્રાપ્તિનાં સાધન તરીકે વિદ્યા-(જે સામાન્ય રીતે જ્ઞાન, ભણતર, બુદ્ધિકૌશલ્ય વગેરે નામોથી ઓળખાય છે તે)-અને દ્રવ્યને માની લે, પણ તે ક્યાંસુધી ન્યાયયુક્ત અને યુક્તિસંગત છે, તે જ્યાંસુધી તર્કસિદ્ધ થાય નહિ ત્યાંસુધી તેનો યથાર્થ નિર્ણય હોઇ શકે નહિ.

આધુનિક સ્કૂલો તેમજ કોલેજોમા જે શિક્ષણ આપવામાં આવે છે, તે ફક્ત સ્વાર્થપરાયણ બુદ્ધિ, આત્મશ્લાઘા, પરશ્લાઘા, સંકોચિત વૃત્તિ, ઇન્દ્રિય-

નિગ્રહમાં શિથિલતા વગેરે વગેરે અવગુણોનો પ્રાદુર્ભાવ થવાને ઉત્તેજન આપે છે, અને આપણને સ્વાશ્રયીને બદલે પરાશ્રયી બનાવી, મુક્તિને બદલે ભુક્તિને માટે તૈયાર કરે છે. તે, દુનિયાને ગમે તે પ્રકારે લુંટી, ઠગી, ભોળવી, સ્વાર્થ સાધવાને પ્રેરે છે. થોડા સમય ઉપર સમાપ્ત થએલી લડાઇમાં જેણે હજારો માણસોનું બલિદાન લીધું તે દુષ્ટ પિશાચણી વિદ્યા. ટુંકામાં આધુનિક શિક્ષણ આપણા ચારિત્રની શિથિલતાને લીધે યા આત્મબળની ખામીને લીધે, આત્મા ઉપર એવી સચોટ અસર કરે છે કે જાણે અમારો પણ આપણાં, મનબલ, વચનબલ અને કાયબલ, [illegible] પરિણમે છે. એક અંગ્રેજ વિદ્વાનના શબ્દોમાં કહીએ તો, "ચારિત્રની એક મુઠી વિદ્યાના એક મણની બરાબર છે." બંધુઓ, જ્યાં આવી કુટિલતા પોતાનું સામ્રાજ્ય ચલાવી રહી હોય, ત્યાં આદર્શતાના ચિન્હોની આશા કેમ રાખી શકાય? જો આધુનિક વિદ્યાને એક સદાચારનું સોપાન બનાવવામાં આવે, તો પછી જોઇશું કે તેની શક્તિ તે દિશામાં કેટલું કામ કરે છે. આ ઉપરથી સ્પષ્ટ છે કે જીવનની આદર્શતાનો આધાર, સામાન્ય રીતે કહેવાતી વિદ્યા ઉપર, સર્વથા હોવો સંભવતો નથી.

દ્રવ્યથીજ જો ચારિત્રનો ઇજારો રાખી શકાતો હોય, તો રાજા રજવાડાઓ અને ધનિકો એકલાજ, આદર્શ જીવન ગાળતા માલૂમ પડવા જોઇએ; પરંતુ તે તો પ્રત્યક્ષ બાધિત છે. જે દ્રવ્યવાન પુરુષ, 'परोपकाराय सतां विभूतयः' એ સૂત્રને હૃદયમાં રાખી, તદનુસાર વર્તન રાખે છે, તે અમુક અંશે જીવનને આદર્શ કરવામાં ફળીભૂત થાય છે, જે તેનાથી ઉલટું વર્તન રાખે છે તે અનીતિ, વિષયાસક્તિ, વ્યસન, વગેરે દુર્ગુણોનો ભોગ થઇ પડે છે, દુનિયાની ઇન્દ્રજાલમાં સપડાઇ જાય છે અને છેવટે દુઃખથી રીબાઇ રીબાઇ પંચત્વને આધીન થાય છે. ગરીબને ચારિત્ર સાથે સારો મેળ હોય છે. કારણકે દ્રવ્યનો દાસ બનવાનો પ્રસંગ આવતો નથી, અને તેના દુરુપયોગથી ઉદ્ભવતા દુષ્ટ પરિણામોનો ભોગી બનતો નથી. જો કે તેની પાસે ધન હોતું નથી છતાં જો ધારે તો તન અને મનથી પણ ઉપરોક્ત સૂત્રાનુસાર વર્તન રાખી શકે, અને ઉદ્યમ, કરકસર પ્રમાણિકતાથી, શુદ્ધ ચારિત્રવાળા મનુષ્યત્વનો અધિકારી બને.

આથી જણાયું કે વિદ્યા અને દ્રવ્યનો જો કે અભાવ વા સદ્ભાવ હોય, તો પણ જીવનની આદર્શતા પ્રાપ્ત કરી શકાય; કારણકે આદર્શતાનો–ઉત્કૃષ્ટતાનો શુદ્ધ ચારિત્રનો–આધાર કોમલ અને પ્રેમાળ હૃદય ઉપર છે હૃદયને દયાર્દ્રિત અને પ્રેમમય કરવું તે દરેક વ્યક્તિના હાથમાં છે. એક ઠેકાણે લખ્યું છે કે–"आत्मैवात्मनो बंधुरात्मैव रिपुः" આત્મનઃ-આત્માજ મનુષ્યનો બંધુ-મિત્ર-છે અને શત્રુ છે. આત્મા જ્યાં સુધી પોતાના જ્ઞાન દર્શન અને ચારિત્ર રૂપ ગુણોનું પાલન કરી, આત્મધર્મનું રક્ષણ કરે છે, ત્યાં સુધી કષાય-ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ-તેમજ રાગ દ્વેષ પોતાની સત્તા જમાવવાને અસમર્થ થાય છે. આથી આત્મા, બંધુની માફક હિતકર નીવડે છે; પણ જ્યારે આત્મા પોતાના ધર્મથી ભ્રષ્ટ થાય છે, ત્યારે ઉપરોક્ત રાગ દ્વેષ શત્રુઓ તેનામાં પ્રવેશ કરે છે, અને તેને, શત્રુની માફક આચરણ કરવાને પ્રેરે છે. દાખલા તરીકે, આપણી પાસે અગ્નિ જ્યાં સુધી પોતાનો ઉષ્ણ ધર્મ સાચવી રાખે છે ત્યાંસુધી સિંહ, વ્યાઘ્રાદિ ભયંકર પ્રાણીઓ આપણા ઉપર હુમલો કરતા અટકે છે; પણ જ્યારે અગ્નિ પોતાનું સ્વરૂપ ત્યજી દે છે–એટલે ઠંડો થઇ જાય છે, ત્યારે આપણી જીંદગી જોખમમાં નાખે છે. આપણે જરી આ બાબત વધુ સ્ફુટ કરીએ. અમુક ગુન્હાની શિક્ષામાં જ્યારે કુતરાને લાકડી મારવામાં આવે છે, ત્યારે તે મારનારને કરડવા નહિ જતાં લાકડીને કરડવા જાય છે. આ તેની અજ્ઞાનતા માનો યા ગમે તે માનો. આપણે પણ તેના જેવુંજ વર્તન ચલાવીએ છીએ; કારણ કે અમુક વ્યક્તિ, જ્યારે આપણું અહિત કરે છે, ત્યારે તેને આપણે તિરસ્કારની દૃષ્ટિએ જોઇએ છીએ. એ પ્રસંગે, આપ પણ જરા વિચાર કરવાને યોગ્ય

થી કે, જે વ્યક્તિદ્વારા દુઃખ પ્રાપ્ત થાય છે, તે વ્યક્તિ ખરી રીતે અહિત કર્તા નથી, તે તો એક નિમિત્ત કારણ છે. આપણું ખરું અહિત કરનાર તો આપણે પૂર્વ ભવમાં કરેલા અશુભ કૃત્યો છે એ કૃત્યો તેના કર્તાને (આત્માને) શિક્ષા આપવાને માટે તે વ્યક્તિને એક લાકડી રૂપ સાધન તરીકે વાપરે છે. માટે સ્પષ્ટ છે કે આપણો શત્રુ આપણો આત્માજ છે, અને આત્માનું રક્ષણ કરનાર પણ આત્માજ છે.

આત્મા જ્યારે નિર્મલ અને શાન્ત હોય ત્યારેજ તે સાચા સુખનો આપણને અનુભવ કરાવી, સાચા મિત્ર તરીકેની ફરજ અદા કરે છે; પરંતુ જ્યાંસુધી તે મલીન અને અશાન્ત હોય, ત્યાંસુધી તેનામાં, જીવનને આદર્શ બનાવવાની લાયકાતની અપેક્ષા રાખી શકાતી નથી. આત્મા અનાદિકાલથી, કર્મ-મલથકી લીપ્ત થઇ રહ્યો છે, અને તે મલથી તેને દૂર કરવો તેજ માનવ જીવનનો ઉચ્ચ આશય છે. આશયની સિદ્ધિજ જીવનને આદર્શ બનાવે છે

હવે પ્રશ્ન એ થાય છે કે આ આશયની સિદ્ધિને અર્થે કયા કયા મુખ્ય ગુણોની આવશ્યકતા છે? મારા ધારવા પ્રમાણે સત્યનિષ્ઠા, **પ્રમાણિકતા, આત્મસંયમ અને શુદ્ધ પ્રેમ**-એ ચાર ગુણો તેને માટે પુરતા છે. આ ગુણો આટલા અમૂલ્ય છે, છતાં તેને પાલન કરવાને નથી જરૂર પડતી આધુનિક મોંઘી કેળવણીની કે દ્રવ્યની, નથી જવું પડતું દેશ કે પરદેશ. તેનો નિત્ય વ્યવહારમાં ડગલે ડગલે અને પગલે પગલે આત્માને પોકારે છે કે, "આત્મન્. તારા હૃદયમાં મને એકવાર સ્થાન આપ, પછી જોઇશે કે તારો વ્યવહાર કેવો સરલ અને સુખમય થાય છે;" છતા આત્મા, વ્યવહારમાં એટલો લુબ્ધમોહિત થઇ ગયો હોય છે કે તેઓને સ્થાન આપવાનું તો શું, પરંતુ તેઓના પોકારને પણ ગણકારતો નથી. ઉપકાર કરવા ઇચ્છનારને અપમાન કરી અપકાર કરવો તેના જેવું બીજું કયું પાપ હોઈ શકે? અસ્તુ હવે વિચારીએ કે આ ગુણો પૈકી દરેક, નિત્ય વ્યવહારને કેવી રીતે સરલ અને સુખમય બનાવી જીવનને આદર્શ બનાવવાને, આપણને યોગ્યતા મેળવી આપે છે

સત્યનિષ્ઠા:-વિશ્વાસ પ્રાપ્ત કરવાની યોગ્યતા, અથવા બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો મન, વચ, કાયની એકતા એજ સત્યનિષ્ઠા. "કુશલતા ઘણાનામા હોય છે, તેમ બુદ્ધિ પણ કાંઈ અતિ વિરલ નથી; છતાં કુશલતા અથવા બુદ્ધિ ઉપર આપણને પૂર્ણ વિશ્વાસ આવે છે ? જો કુશલતા, બુદ્ધિ, ઉભય સત્યનિષ્ઠ હોય તોજ, નહિ તો નહિ. સત્યનિષ્ઠા એજ સર્વનું મન વશ કરે છે, સર્વમાં માનને પાત્ર કરે છે. માણસ સારો છે એમ તો તે સત્યનિષ્ઠ હોય ત્યારેજ કહેવાય છે."

સત્યનિષ્ઠ પુરૂષ તરફ સર્વ મનુષ્યો આકર્ષાય છે. તેને ખરા અંતઃકરણથી ચ્હાય છે અને તેની સાથેના વ્યવહારમા જોડાવાને પ્રેરાય છે. સર્વ મનુષ્યોનું તેના પ્રતિ આકર્ષણ, તેને સાચી આબરૂ પ્રતિષ્ઠા વા માન કે જેની પાછળ જનસમૂહનો મોટો ભાગ તલસી રહે છે તે સહેજે મેળવી આપેછે, તેઓની તેનાપર ચાહના, તેના સુખને વિધ્વંસ કરનાર ક્રોધાગ્નિને બુઝાવે છે, તેમનો તેની સાથેનો વ્યવહાર, તેને પૈસા ધન વા દોલત કે જેને માટે દુનિયા દીવાની બને છે, જેના લોભથી અંજાઇ જઇ પોતાના જીવને જોખમમાં નાખે છે, તે સુખેથી આણી આપે છે, જેથી તે પોતાની ઇચ્છાઓને તૃપ્ત કરવામાં સમર્થ થાયછે. ટુંકામા સત્યનિષ્ઠ પુરૂષ, ધર્મ અર્થ અને કામ એ ત્રણ પુરૂષાર્થને અનુક્રમે એક બીજાના વિરોધ રહિત સાધી પોતાની પુરૂષ સંજ્ઞા, (પુરી શેતે ઇતિ પુરૂષઃ ઉત્તમ ચૈતન્યગુણમા જે સ્વામી થઇ પ્રવર્તે છે તે પુરૂષ) સાર્થ કરી ઉત્તમોત્તમ સુખ-મોક્ષ એટલે અને છેલ્લો પુરૂષાર્થ પ્રાપ્ત કરવાને પરવાનો મેળવે છે.

સત્યનિષ્ઠ થવાને, પ્રથમ શું હોય છે તે હવે જરી વિચારીએ. સંસારમા કન્યાલીક, ગવાલીક, ક્ષ્માલીક એ ત્રણ જુઠ અત્યંત નિંદ્યરૂપે પ્રસિદ્ધ છે. બીજી જ્ઞાતિની અથવા બીજાની કન્યાને, પોતાની જ્ઞાતિની અથવા પોતાની કહેવી; અથવા પોતાની જ્ઞાતીની કન્યાને બીજાની અથવા બીજી જ્ઞાતીની બતાવવી તેને કન્યાલીક કહેવામાં આવે

છે. અહીંયાં કન્યા શબ્દથી, છોકરો, છોકરી; દાસ, દાસી, મનુષ્ય, સ્ત્રી વગેરે સમજી લેવા. તેવીજ રીતે ગાય ભેંસ આદિ પશુઓને, જે થોડું દૂધ દેતી હોય તેને બહુ દૂધ વાળી કહેવી; અને બહુ દૂધ દેતી હોય તેને થોડા દૂધ વાળી કહેવી, તેને ગવાલીક કહેવામાં આવે છે. અહીંયા ગાય શબ્દથી સર્વ પશુઓ સમજી લેવા. બીજાની ભુમિને પોતાની બતાવવી, અને પોતાની ભૂમિને બીજાની બતાવવી તે ક્ષ્માલીક કહેવાય છે. અહીંયા ભૂમિ શબ્દથી ઘર, મકાન આદિ સર્વ સ્થાવર (સ્થિર) ચીજો સમજી લેવી. સત્યનિંદાના ઉપાસકે, પ્રથમ એ ત્રણ પ્રકારના વચન જુઠ્ઠાથી દૂર રહેવું. પછી આપોઆપ જુઠી સાક્ષી કે જે ધર્મને કલુષિત કરવા વાળી છે, અને ન્યાસાપહાર કે જે દેખીતો અન્યાય છે, તેનાથી દૂર રહેવાશે; કારણકે ઉપરોક્ત ત્રણ પ્રકારનાં જુઠમાં તેઓનો સમાવેશ થઇ જાય છે;

સત્ય પણ બીજાને અપ્રિય હોય તેવા વચનથી પણ દૂર રહેવું. કોઇ મનુષ્યને પાપ આચરતો જોઇ તેને ધિક્કારના લાગણીથી પાપી કહેવો, તેથી શું તે પાપાચરણથી નિવૃત્ત થશે કે ? ઉલ્ટો આપણુ અહિત કરવાને તૈયાર થશે. સારીથી ખરડાએલા મુખવાળા મનુષ્યને કાળો કહેવો, તેના કરતા તેના મોં આગળ દર્પણ ધરવું એ બહુ તો સર્વોત્તમ માર્ગ છે. માટે અપ્રિય વચન બોલવા કરતા તેના આગળ સદ્ગુણોનો દર્પણરૂપ આદર્શ મુકવો કે જેથી તે પોતાની ભૂલ સમજી તેને સુધારવાનો પ્રયત્ન કરે, અને તમારાથી પોતાના આત્માને ઉપકૃત સમજે.

દ્વીઅર્થી બોલીથી પણ સાવધ રહેવું. કારણ કે તે સત્ય વાતને અન્તર્ભૂત રાખે છે અને અસત્યને પ્રગટ કરે છે. દાખલા તરીકે, મેં ખોટુ વચન આપ્યું એવુ સ્પષ્ટ બોલવાને બદલે, 'ખોટુ વચન આપ્યુ' એવા દ્વીઅર્થી ભાષામા બોલે છે. આ વાક્ય બે રીતે સમજાય છે-'મેં ખોટુ વચન આપ્યું', અથવા બીજા કોઇએ ખોટુ વચન આપ્યુ આથી સાંભળનારો છેતરાય છે,-ભોળવાય છે-ઠગાય છે, અને તેથી બોલનારને માયાચારી-છલકપટી-પ્રપંચીનું દૂષણ લાગે છે, "આજકાલ આપણામ જેને ડિપ્લોમેસી-'પોલીટીશીયન'-કહે તેમાં આવેદે, તે બધાની ચતુરાઇ, માત્ર દ્વીઅર્થી અને આડે માર્ગે દોરે તેવી વાર્તા કરી, જુઠ્ઠુ બોલવામાંજ રહેલી હોય છે"

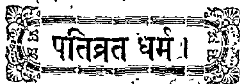
હવે સત્યનિષ્ઠને શું ઉપાદેય છે તે વિચારીએ. તેણે લોકવ્યવહારને અનુસરીને, સત્યાસત્ય, અસત્યાસત્ય, અને સત્યઅસત્ય એ ત્રણ પ્રકારના વચનો બોલવા જોઇએ. જે પદાર્થ જે દેશમાં, જે કાલમાં હોય તેનુ જે કંઇ પ્રમાણ વા સખ્યા હોય તથા તેનો જે કંઇ રંગ આકાર આદિ હોય તેને તેજ દેશનો, તેજ કાલનો કહેવો, તેજ પ્રમાણનો વા તેજ સંખ્યાનો કહેવો, તથા તેજ રંગ આકારાદિનો કહેવો, તેને સત્ય સત્ય કહે છે. ટુંકામા દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ, ભાવરૂપ ચતુષ્ટયનો વિચ્છેદ કર્યા સિવાય પદાર્થને કહેવો તેને સત્યસત્ય કહે છે દાખલા તરીકે, "કપડ વણુ" એ વાક્યમા વણવાની ક્રિયા કપડા પર હોતી નથી, કિંતુ સુતરના તાતણા પર હોય છે. સુતર વણાય છે નહિ કે કપડું. તેટલા માટે કપડા ઉપર વણવાની ક્રિયાનો પ્રયોગ કરવો યદ્યપિ અસત્ય છે, તથાપિ લોકવ્યવહારમા એવું વાક્ય બોલવામા આવે છે અને તે અસત્ય માનવામા આવતું નથી તેથી તેને અસત્ય સત્ય કહેવામા આવે છે. જે સત્ય વચન અમર્યાદિત હોય તેને સત્યાસત્ય કહે છે જેમકે "અમુક વસ્તુ હું તને દશ દિવસમા આપીશ." એવું કહી તે વસ્તુ નહિ મળવાથી અથવા કોઇ બીજા કારણથી, દશ દિવસમાં નહિ આપતા અહિને બે મહિને વા વર્ષ દહાડે આપે છે. આથી તેનુ બોલવું અસત્ય છે, કારણ કે તેણે જે વસ્તુ આપવાની કહી તે તેણે આપી તેથી એના બોલવામાં એટલુ સત્ય છે, અને દશ દિવસને બદલે મહિને વા વર્ષ દહાડે આપ્યું એટલું તેના બોલવામા અસત્ય છે

ઉપરોક્ત ત્રણ પ્રકારના વચનો કષાય રહિત હોય છે, અને તેથી તેઓ હિંસાના પાપ

આપણને બચાવે છે; કારણ કે જ્યાં કષાય છે ત્યાંજ હિંસા છે. સત્ય પણ કષાય યુક્ત હોય, તો તે પાપાશ્રવનું કારણ છે; અને વચન અસત્ય, પણ કષાય રહિત હોય, તો તે પુણ્યાશ્રવનું કારણ છે.

ટુંકામાં સત્યનિષ્ઠ થવાને કષાયયુક્ત વચનોથી દૂર રહેવાનો પ્રયત્ન કરવો, અને તે પ્રયત્નને પોષવાને અર્થે અવિચ્છિન્ન આત્મનિરીક્ષણ, આત્મશિક્ષણ અને આત્મસંયમ-એ ત્રણ વૃત્તિઓને અનુક્ષણ અમલમાં મૂકવી. આથી શેષ ગુણો-પ્રમાણિકતા, આત્મસંયમ અને શુદ્ધ પ્રેમ-કેળવાશે અને તેથી યથેષ્ટ સુખની પ્રાપ્તિ થશે, બીજાઓને તે પ્રાપ્ત કરવાને આદર્શ રૂપ થઈ પડશે, જીવનનું ઉચ્ચ લક્ષ્યબિંદુ સંધાશે, અને છેવટ મુક્તિપુરીમાં નિવાસ કરી શાશ્વત સુખને અનુભવાશે.

ૐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!



(ले० मोहनलाल मथुरादास, काणीसा ।)

સંસારમાં પતિવ્રત ધર્મની શ્રેષ્ઠતા જગજાહેર છે, પતિવ્રત ધર્મ દરેક સ્ત્રીએ ગ્રહણ કરવાની જરૂર છે.

એક પતિનુંજ ધ્યાન ધરવું-આખા જગતને એક પતિમય નિરખવું પતિના દુઃખે દુઃખી અને સુખે સુખી સ્થિતી મનોગત ધારણ કરવી-પોતાનું તન-મન-ધન પતિનેજ ગણવું-પતિને જોવાથી આનંદ માનવો-ઇત્યાદિ પતિવ્રતા સ્ત્રીના ઉચ્ચ લક્ષણો છે.

પતિવ્રત ધર્મને લીધે મન તૃપ્ત રહે છે, તેથી વિષય વાંચ્છા નિયમમાં રહી શકે છે, તેણે કરી આ લોકમાં યશ-અને પરલોકમાં સ્વર્ગીય સુખ ભોગવી શકાય છે.

પતિની શુદ્ધ દિલથી સેવા કરનાર સન્નારીઓની ઇચ્છાઓ સિદ્ધ થાય છે. તેના પ્રત્યક્ષ દાખલા આપણે સાંભળીયે છીએ. સતિનું શીલ તોડનાર પાપીઓ અંતે અંધ બની દુર્ગતિને પ્રાપ્ત થાય છે. કર્મ સંજોગે સતિને કષ્ટ ભોગવવું પડે, તો તે કષ્ટ તેને લાભદાયીજ નિવડે છે.

શીલનું ખંડન કરનાર સ્ત્રીજાતિ સર્વે જગ્યાએ તિરસ્કાર વેઠવો પડે છે. તેઓને લોકો શીલ ખંડિતા-કુલટા-વ્યભિચારિણી-કલંકિતા-દુર્ગુણી-આદિ નિંદ્ય પ્રત્યયોથી સંબોધન કરે છે-વારંવાર સતાવે છે-કોઇ વિશ્વાસ રાખતું નથી. કુટુંબમાં અણમાનીતી થાય છે. વળી તેમનો જીવ ઉદ્વિગ્ન અને ભયભીત રહ્યા કરે છે. તેનું મકાન સ્મશાન તુલ્ય દેખાય છે. તેમજ તેના શરીરમાં પ્રદર-સોમ. આદિ ભયંકર રોગો પ્રવેશ કરે છે.

જે સ્ત્રી પોતાના પતિના સહવાસથી તૃપ્ત થતી નથી તે સ્ત્રી કોઇના પણ સહવાસથી તૃપ્ત થતી નથી, જેથી તે ઘણા પુરૂષોનો સમાગમ કરવા લલચાય છે અને વધારે પાપની ભોક્તા થાય છે.

પાણીને વલોવવાથી તેલ નીકળતું નથી-રેતીને પીલવાથી સત્વ નીકળતું નથી-તેવીજ રીતે જે સ્ત્રી પતિનો ત્યાગ કરી-પર પુરૂષને સેવી-ધન ધાન્ય-પુત્ર અને વિષય તૃપ્તિની ઇચ્છા કરે છે, તે આખરે નિરાશ થઈ, પાપમાં સબ્યા કરે છે, લોકોથી તિરસ્કાર પામી પીયર અને સાસરીયામાં નીચ નજરથી જોવરાવે છે, માટે સમજુ સ્ત્રીઓએ પતિ સિવાય કોઇ પણ પરપુરૂષની સ્વપ્ને પણ ઇચ્છા કરવી નહિ.

કોઇ દુષ્ટ પુરૂષ શીલ ખંડન કરવા બળાત્કાર કરે, તો શીલ ખંડન થવા નહિ દેતાં તેની સ્હામે થઇ તેને નીતિને રસ્તે લઇ જવો એજ પતિવ્રતાનુ ભૂષણ છે.

જેને એકવાર શીલ ખંડન થાય-પરપુરૂષની ઇચ્છા થાય-તે પાતકીજ ગણાય છે, તેની ગણત્રી શીયલવંતની ગણનામાં આવી શકતી નથી, માટે મરણાંતે પણ શીલ ખંડન થવા દેવું નહિ અને પરપુરૂષની ઇચ્છા કરવી નહિ.

પૂર્વે સીતા, તારા, કૌશલ્યા, કુંતી, દમયંતી, અંજના, રાજુલ, આદિ સન્નારીઓએ અનેક સંકટો વેઠી શીલનું રક્ષણ કીધું છે. જેના ગુણો આપણે હોંશે હોંશે ગાઇએ છીએ ને આનંદ

પામીયે છીએ, તો ચાલુ સમયમાં ઉચ્ચ ગુણો ધારણ કરતી-સતિત્વ ભાવ દર્શાવતી-પતિપ્રિય અબળા પૂજ્ય ગણાય એમાં નવાઈ નથી.

સંસારમાં જીવવાનુ અલ્પ છે-મૃત્યુ આવવાનુંજ છે, તો પછી ક્ષણિક સુખના આનંદની ખાતર અપવિત્ર જીંદગી બનાવી-ધિક્કારની પદ્વિ પ્રાપ્ત કરવા કરતા ઉચ્ચ-ચારિત્રવાન-પતિવ્રતા બની-વિષય લાલસા ઓછી રાખી-ઉત્તમ જીંદગી ગાળી મરણ પછી સૌને સંભારવા લાયક અનુકરણ કરવા લાયક-બનવું તે વધારે શ્રેષ્ટ છે.

પતિ રોગી હોય-કાણો હોય-કુબડો હોય-દુર્ગુણી હોય-યા રૂપ હીણ હોય-યા દરકાર ન કરતો હોય, તોપણ પતિવ્રતા સ્ત્રીએ તેને પરમેશ્વર ગણી માન આપવું-તેની શુદ્ધ મનથી સેવા કરવી, એજ સ્વર્ગીય સુખ આપનાર વશીકરણ મંત્ર છે.

અન્ય રૂપવાન, ગુણવાન પુરૂષને જોઇ આસક્ત થનાર સ્ત્રીને પતંગીયાની માફક મરવાનોજ સમય પ્રાપ્ત થાય છે.

પતિવ્રત સાચવવા સરસ ઉપાય એ છે કે-

શીલ ભંગ થાય તેવી સ્થિતિ-તેવી જગ્યા-અને તેવા પુરૂષથી દૂર રહેવું-પરપુરૂષથી બોલવું હાસ્ય કરવું-જાહેર કે-એકાંતમા વિનોદ વાર્તા કરવી-એકાસને બેસવું-ઇત્યાદિ નિંદનીક અને શીલ ભંગ કરનાર બાબતોથી પતિવ્રતાએ દૂર રહેવું જોઇએ-

પતિવ્રતાનો પતિ રૂપ હીણ કે-ગુણ હીણ-હોય તો તે તેના ધર્મ પ્રભાવે સુધરી જાય છે. સુકન્યાનો પતિ ચ્યવન નેત્ર પામ્યો હતો. સાવિત્રીનો પતિ સત્યવાન સજીવન થયો હતો.

પતિ નંદા કરે-આળ ચઢાવે-લાંબા સમય સુધી વિરહાતુર રાખે છતાં પતિવ્રતા સ્ત્રી પતિનેજ પોતાનું સર્વસ્વ માને છે-તેનાથીજ પોતાનેજ કૃતકૃત્ય સમજે છે-તેના ભલામા પોતાનું ભલું સમજી, તેની ભક્તિ સ્મરણથીજ દિવસો વ્યતિત કરે છે. તેનું ખરું દૃષ્ટાંત અંજનાસુંદરી પુરું પાડે છે. તેનો લગનથી રોષ સિવાય તેના પતિ પવનંજયે ત્યાગ કર્યો હતો. વળી સહવાસ કરી પ્રેમમાં લુબ્ધ બન્યો હતો, છતાં અંજના પુર્વ કર્મના દોષે તેને વનવાસ વેઠવો પડયો હતો છતાં અંજના અનીતિ તરફ વળી નહોતી. તો તેજ પવનંજય અંજનાના સતિત્વથી લુબ્ધ થઇ બળી મરવા તૈયાર થયો પણ ફરી લગ્ન કરવા તૈયાર થયો નહોતો-આજના એક હયાતિમા બીજી કે ત્રીજી અને સ્ત્રીના મરણાંતે પુત્ર હોવા છતા લગ્ન કરવા ઉત્સુક બનતા પુરૂષો-પરસ્ત્રી વિહારી અને વેશ્યા વિહારી પુરૂષોને પવનંજયનું દ્રષ્ટાંત પૂર્ણ બોધ આપે છે કે-સંસારમા એક પતિથીજ સર્વ સુખના ભોક્તા થઇ શકાય છે. ચાલુ જમાનાની કુળાંગાર સ્ત્રીઓ કે-જેઓ પતિ નાનો હોય-વૃદ્ધ હોય-રૂપ હીણ હોય-દુર્ગુણી હોય-તો તેની નિંદા કરી તેનો ત્યાગ કરી પર પુરૂષને ચ્હાય છે. પરપુરૂષનેજ પોતાનું સર્વસ્વ અર્પે છે-અર્થાત્ પરપુરૂષથી વિષય-સુખ ભોગવે છે, તેવી સ્ત્રીઓને તેમજ થોડા વખત માટે ત્યજાએલી-પતિ પરદેશમાં હોય તેવી-અને વિધવા સ્ત્રીઓ કે જેઓ વિષયને ઇચ્છતી પર પુરૂષને શોધતી ફરે છે, તેમને અંજનાનું દ્રષ્ટાંત બોધ આપે છે કે પતિ ગમે તેટલી અવગણના કરતો હોય-છતાં તેનાથી વિમુખ થવું નહિ, પણ તેની ભક્તિમાં તત્પર રહેવું. વિધવાઓએ ધર્મ પૂર્વક *જીવન ગુજારી આ લોકમાં શ્રેષ્ઠ બની પરલોકનું* ભાથું બાંધતા જવું, પણ શીલ ખંડિતા થવું નહિ.

શીલ ખંડીતા સ્ત્રીઓને પર પુરૂષથી સહવાસ કરવા ગુપ્ત જગ્યાની જરૂર પડે છે. વળી તેનું તે કાર્ય કોઈ જોઈ જાય નહિ, તેવી ભયંકર સ્થિતિ તેને ધારણ કરવી પડે છે. જેથી તેને પૂર્ણતયઃ પ્રેમ *થતો નથી અને સંતાન પણ ઉત્પન્ન થઇ શકતા* નથી કેમકે પોતાના પતિસાથેના સહવાસમા પણ તે તેવીજ સ્થિતી ધારણ કરેછે તેથી પ્રેમની આપત્તે થઇ શકતી નથી, ને સંતાન પણ થઈ શકતાં નથી. સંસારમા તે વધ્યાના વિશેષણથી ઓળખાવાય છે, તે અપશુકનની પાત્ર ગણાય છે અર્થાત્ તેનાં શુકન કોઇ લેતું નથી. માટે સમજુ સ્ત્રીએ

કદાપિ શિયળખંડિતા થવું નહિ. પતિવ્રતા સ્ત્રીઓ સદા પુત્રવાળીજ હોય છે. તેમને કોઇનાથી ડરવાનું હોતું નથી. તેઓ પતિ તરફના પ્રેમને લીધે સંસારમાં સ્વર્ગીય સુખનો આસ્વાદ લઇ શકેછે ત્યારે કલંકિત સ્ત્રીઓનો સંસાર સદા કલેશમયજ પસાર થાય છે. તેને દિન દિન પતિથી કુટુંબીથી લડાલડ કરવાની ચાલુજ હોય છે.

સમજુ બહેનોને મારી એજ સલાહ છે કે—

તમો હવેથી પતિવિમુખ થશો નહિ તેમ તેવાની સોબત પણ કરશો નહિ. વખતે જો તમે ભુલ્યા હો તો "ભુલ્યા ત્યાંથી ફરી ગણો" પ્રમાણે હવેથી તમારા ચારિત્રને કલંક આવવા દેશો નહિ ને પતિ સેવામાં તત્પર રહેજો. એ પણ યાદમાં રાખજો કે પતિવ્રતાનું રક્ષણ કરવા દેવોને શુદ્ધાતને આવવું પડે છે. બહેનો, તમે જો પતિવ્રત ધારણ કરશો તો તમારી દેવપણ સેવા કરશે.

પતિપ્રેમ એજ સ્ત્રીઓનો શણગાર છે અને પતિ એજ અબળાઓનો પરમેશ્વર છે.

દરેક સમજુ પુરૂષોને વિનતી છે કે—

તમો પરનારીનો મોહ છોડી બીજી ત્રીજી કે ચોથીનો મોહ છોડી સ્વદારસંતોષીવ્રત ગ્રહણ કરો અર્થાત્ તમારીજ પત્નિ તરફ વિશુદ્ધ પ્રેમ રાખતા શીખો અને પત્નિના પ્રેમી બની સંસારમાં શ્રેષ્ઠત્વ પ્રાપ્ત કરો.

જો તમો પરનાર આસક્ત થશો, તો તમારી સ્ત્રી પરનર વિહારી થશેજ. પણ જો તમે શુદ્ધ ચારિત્રવાન બની સ્વદાર સંતોષી બનશો તો તમારી સ્ત્રીને મોમાં આગળી દઇને પણ પરનરનો મોહ છોડવો પડશે. તમે તેનામાં પ્રેમ રાખશો તો તે તમારામાં પ્રેમ રાખશે. તમો તેને સ્નેહની નજરથી જોશો તો તે સેવા કરવા ચુકશે નહિ એ નક્કી માનજો.

સ્ત્રીઓને કુમાર્ગે દોરવનારા દુષ્ટ પુરૂષોજ છે.

પુરૂષો જ્યારે શુદ્ધ પ્રેમી બનશે ત્યારેજ સ્ત્રીઓ પતિવ્રત ગુણુથી અલંકૃત થશે.

महात्मा गांधी और ब्रह्मचर्य ।

गांधीजीने अपने पत्रमें ब्रह्मचर्यपर बहुत जोर दिया है। वे इस तरह कहते हैं "ब्रह्मचर्य प्राचीन भारतका भाव है। हमारे शास्त्र हमें इंद्रिय व मनपर संयम साधनेकी आज्ञा देते हैं। मातापिताओंको चाहिये कि बच्चोंको ब्रह्मचर्यके रूप सिखावें। बालकोंकी शादी २५ वर्षसे नीचे न होनी चाहिये। मनमें शादी करनी है इस भावसेही स्त्रियां जल्दी रजस्वला होती व पुरुषोंके काम जग जाता है। सर्व ही सम्बन्धियोंको लडके लडकियोंसे यही कहना चाहिये कि बडी उमरमेंही व्याह होता है। हमें गुडियोंके समान बच्चोंको समझना न चाहिये। बच्चोंको सिखाना चाहिये कि वे निर्दोष व पवित्र रह सक्ते हैं। लोगोंको उत्तेजक तथा कामोद्दीपक पदार्थ न खाने चाहिये। पतिपत्नीको भिन्न २ कमरेमें अकेले सोना चाहिये। शरीर और मनको सदा स्वास्थ्य युक्त रखना चाहिये। जल्दी सोना व जल्दी उठना चाहिये। उन सर्व गंदे साहित्यको न पढना चाहिये जो पवित्र भावोंको बिगाडते हैं। थियेटर सिनेमा आदि न देखना चाहिये, ये भावोंको कामी बनाते हैं। स्वप्नदोषसे बचनेके लिये ठंडे पानीसे स्नान करना ही उपाय है। कभी २ विषय सेवन नहीं। पति पत्नीको भी परस्पर संयम पालना चाहिये। प्रति दिन पवित्र रहनेकी हर दिन भावना मनकी शुद्धि करती है। ये जितनी शिक्षाएं हैं वे सब जैन शास्त्रोंमें ब्रह्मचर्य व्रतकी पांच भावनाओंमें बताई गई हैं—

सूत्र—स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहरांगनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरण, वृष्येष्टरस, स्वशरीरसंस्कार त्यागाः पंच ॥ तत्त्वा० ७ अ०) जैनमित्र.

Duties of Jain Graduates.

(by-Manilal H. Udani, M A. LL B. F. L. L. C. Rajkot.)

Owing to the efforts of the educated Jains, the old idea of getting salvation only by building temples has totally vanished and the ideas of building Jain Boardings, schools and educational institutions have been inculcated into the minds of the wealthy Jains. As a result of which in most of the prominent cities of India Jain Boardings have been constructed by liberal-minded Jains and efforts are still apparent for encouraging the cause of education amongst the Jains.

About two or three decades ago, we had very few Jain Graduates amongst us, but now owing to these facilities, we can count a large number of Jain Graduates, who have made their names in different lines. The wealthy gentlemen of the Jain community who earned their riches by commerce, were ignorant of the benefaction they would do towards their communal brothers by giving charitable grants in the cause of the propagation of higher education in the community and when this necessity of changing the channel of their charities was explained to them they took up the noble idea and their liberal help, many students who would have been obliged to stop their studies for want of help or facilities, could take higher education and could derive great benefit to themselves and make their life happy. It is still essentially necessary that these liberal minded Jains should continue the flow of their charities in the same direction and should construct more Jain Boardings, should found scholarships for sending intelligent young students to the foreign countries for getting special training in industrial lines, should make more Jain High schools and should found a Jain college in India. We expect these gifts from the rich and benevolent gentlemen of our community in the name of the Holy religion and our expectations will not be dissatisfied if efforts will be made unitedly in the right direction and if the donors can be assured of the services that the educated class would render to the community and the holy religion.

Now when we expect these Jain gentlemen to do so much for helping the cause of education in the community in the name of the sacred duty, it is quite just and fair that we should expect some reciprocal duties from these educated persons of the community so that the donors may be convinced that their charities are not wasted and that their moneys are well spent in bettering the condition of the community and the Holy religion. The educated persons have a greater responsibility upon them and they should be

rightly expected to perform their part of the duty. However it is a pity that except a few leading graduates who have been well known for their continued work in the cause of the community, very few persons have come forward from amongst the graduates for performing their duties in the work of the elevation of the community and the sacred religion. Most of the graduates after passing their examinations, seek service or profession and on getting settled in life they hardly care to study the religion or look to the condition of their community or do any work for improving the condition of their communal brothers

Every person has an individual as well as a public life and if a person lives for himself only he lacks in the most sacred part of his life. The significance of individual and communal life is not properly understood in India and far less in the Jain community and for want of united work and co-operation we see that our community as well as our country has not made any remarkable progress in comparision with other nations. Every man owes a duty to himself, his community and his country and every educated man is much more expected to do these duties towards the public. For want of co-operation and a right appreciation of these duties, our graduates have not been able to do their duties towards the community and the public and hence we see no remarkable betterment in the condition of our peaple.

Jainism is a most liberal religion and if the educated persons would first take it into their minds to read the religious scriptures, they would find a very happy solution of life in them and they would understand the utility of life in the service of others. It is the quality of learning to create independent and high thinking and high thoughts result in benevolent actions. Thus every man who has acquired the real qualities of learning would not remain without doing his duty towards himself as well as others. The Jains being the followers of Lord Mahavir, they expected to do more good than anybody else.

Now let us see what our Jain graduates have done for serving the cause of Jainism? When the other communities and countries are found making progress by leaps and bounds, it is a matter of regret that we have hardly made any real progress. The Jain scriptures bear an ample proof of the ancient civilization and the researches of the Jains in the primitive times. Our community is being thinned from day to day and if our jain graduates will totally neglect the cause of the community we do not know what would be the condition of our sacred faith. It the first place we expect a cooperation of all the jain graduates leaving aside all sorts of differences. There are many societies but unless and untill all the societies work in the common goal, the community cannot achieve any real advantage. The Bharat Mahamandal has been working for a number of years for the welfare of the community and our jain graduates can find some duties to do by joining the Mahamandal. The graduates have many opportunities for doing work for the community if they have any desire to do so. They can start religious

finity of such beings But in our present stage of development these beings are beyond our ken, and in all the living beings with whom we are acquainted, karma is to be found And there was a time when karma was also in those who now have no karma in them There are no living beings anywhere in the universe in whom there never was any karma at any time But in those in whom there is now no karma, in those there never will again be any karma

Karma, then, is something in all those with whom we are acquainted, people, cats, dogs, trees, fish, birds insects And also in devils and angels, if we believe in such, and the Jains do The bodies of devils and angels, though of a substance not visible to our physical eye, are still material, of an astral or subtle kind of matter

Now as karma is only part of these living beings with whom we are acquainted it follows that there is in them some other part which is not karma. That is to say, living beings do not consist entirely of karma And that being the case, the question arises which part of the living being is karma and which is not ? Which part of me is karma and which is not

Now as karma is to be found in living beings, it follows that if we want to know what it is we have the opportunity of finding it in ourselves we can come to know what karma is by coming to know the karma that is in ourself And in this sense 'ourself' means the whole person just as he is here, with body, mind, and emotions

Which part, then, is and which part is not karma ? That part of the living being which is conscious and sentient is not karma, all the rest is karma or its result Or another way of putting it is to say that karma is that part of us by reason of which we are ignorant suffer pain and have pleasure, wrong ideas, false beliefs, and do wrong things, get born and die, have a body of a certain shape and size, with five or less organs of sense, eye, ear, nose tongue (for taste), and skin and an instrument for thinking This instrument for thinking is generally called the mind, but it is used in a technical sense in the Jain books (manas) Karma also is that part of us by reason of the operation of which we find ourselves in the particular social circumstances in which we are, among the wise or the foolish, the rich or the poor, etc, and karma is also that part of us by reason of which we are weak and powerless to whatever extent we are so Or to sum up those things, karma is that factor in the living being which cause all his troubles, his pains and miseries, disease old age, and death and which prevents him from living the kind of life that he would otherwise and should naturally live a life of limitless knowledge everlasting blissfulness, wave after wave making no mistaks always doing the right thing, in a continuous life, as the one individual that he is, in society of equals, in whom there is no weakness or wrong doing.

This part of us which is called karma is a real substance It cannot be seen by the eye, because, although its substance is matter, it is nevertheless of too fine a kind for our bodily



आनरेबल रायबहादुर लाला सुलतानसिंहजी-देहली।

(देहलीमें सुप्रसिद्ध राज्यमान्य, देशभक्त और लोकमान्य दि० जैन नररत्न)

"जैन विजय" प्रेस-सूरत



श्रीमान् सेठ वर्द्धमानैय्याजी–म्हैसुर।
(म्हैसुर जैन बोर्डिंगके स्थापक तथा म्हैसुर प्रान्तमें अग्रगण्य
दि० जैन दानी महाशय)

senses to discern But it can be known by the knower, the part of us which is not karma. That which knows is not karma We, knowers, are as different from the karma which is in us as is the gold different from the alloy in a ten-shilling piece The substance of the knower is not matter; it is an entirely different substance,-not perhaps *entirely* different, because there are natures common to it and to matter, but very different in its particular nature. There is no sentience or consciousness in matter, these are qualities of a different substance, a new substance if you like; but like matter it has always been in existence,-matter is not the only substance whose nature it is to exist.

The part of us, then, which is called karma, is matter. It is the nature of matter to attract and repel. And these natures are still operative when in the living being, and are felt by him as respectively attachment and aversion, causing him to be greedy and deceitful by reason of feelings of attachment, and proud and angry by reason of feelings of aversion And by reason of our anger, pride, deceitfulness, and greed we do all sorts of wrong things which bring upon us all kinds of misery and pain.

As far as the past is concerned karmas have always been in us. Not the particular ones which we now have, but nevertheless karmas of some sort or other. They are always coming in, operating, and so expending themselves, and falling away, giving place to new ones, and this goes on, has been going on, and will go on, unless we can do. Not only can we stop this continual inflow, but we can also work out before its natural time the karma which is already in us.

And in view of the kind of thing that karma is, a foreign element, an undesirable alloy, we naturally as soon as we come to understand it, set about stopping the inflow and working out what is in us. This getting rid of our karmas may be and generally is a long process, but when accomplished, and it is the only thing worth accomplishing, then we come to be actually the pure living soul that we ought to be leading the kind of life already mentioned, of unlimited knowledge, blissfulness, strength, goodness, and so forth; and this is the condition in which are now those living beings who are beyond our ken and in whom there are now no karmas

When we have come to know what karma is then naturally we want to know how to get rid of it. Before we can begin to get rid of scientifically we must first believe that there is such a thing as karma and that it can and should be got rid of; if we do not, then of course we shall not set about it The next thing would be to know what the method is by which it can be stopped and got rid of; and the next thing would be to follow the method, put it into practice. The method is given in the Jain books, it is the method of those who have themselves accomplished the work of stopping and removing their karmas. It is summed up in the maxim that non-injury to living beings is the highest religion, and if this method is followed we come in time to know what karma is, and to stop and get rid of it; karma is a force obscuring our natural godlike qualities. There are two kinds, those which help us to advance, and those which keep us in a backward condition; these should be

the first to be removed, and by practising non-injury accompanied by the feeling that injury is wrong we gradually get rid of and stop the inflow of these undesirable karmas, and come to know what karma is

So, to repeat the points :-

True descriptions of karma must be the same, be the describer a Jain or Buddhist

Karma is part of living beings, and is not a thing by itself

But not of all living beings only of some, the embodied,

The other part of the living being is not karma, but is something else.

The part which is not karma is the part which is sentient and conscious.

If we want to make a study of karma, the place to find our specimens is in ourselves.

Karma is that part of the living being which causes all his troubles, and obscures the qualities of the other part.

Karma is a real substance, but of a different kind from the substance of the other part of the living being.

The *nature of this substance, karma*, is such that by reason of its influence upon the other part of the living being does all kinds of things which bring upon him all kinds of troubles

As far as the past is concerned the living being has always consisted of these two parts, but he need not continue to be a compound being, he can remove the part which is not sentient or conscious.

The result of its removal is experience of a much more desirable kind than without its removal.

The way to remove it is by believing it to be removable and by being careful not to injure anybody or anything alive.

LONDON.] H. WARREN.

भूले कहींसे मिलना।

(लेखक-मास्टर दीपचदजी परवार, नरसिंहपुर।)

(१)

शरदऋतुकी उजेली रात्रिको जब कि चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कलाओंसे गगन मंडलकी शोभाको बढ़ा रहा था, और निर्मल आकाशमें जब तारागण विखरी हुई रत्नराशिकी उपमाको धारण कर रहे थे, हवाके ठंडे ठंडे झकोरोंसे वृक्ष अपनी डालियां हिला कर कृतज्ञता प्रगट कर रहे थे, ओस भी खेतोंमें पौधोंके पत्तों पर पड़ी हुई मोतियोंका आभास करा रही थी (जिनके भाग्यमें सच्चे मोती देखनेको नहीं लिखे हैं वे विचारे इन्हीं ओसकी बूदों परसे मोतियोंका अनुमान कर लेते हैं। वे जानते हैं कि इसके सिवाय मोती और कोई पदार्थ नहीं होते, केवल कल्पना मात्र कवियोंने नाम घड़ रक्खा है) पशु अपनी शालामें और पक्षी अपने २ घोसलोंमें निस्तब्ध हुवे विश्राम ले रहे थे, कितनेक गरीब लोग जिनके न घर ही हैं और न वस्त्र ही हैं, वे विचारे यत्र तत्र आगके सहारे अपना समय विता रहे हैं, यही ध्यान कर रहे हैं कि कब सुर्योदय हो और हम लोगोंका ठंडसे बचाव हो। कोई कह रहा है अभी रात्रि बहुत है, दबे दबाये पड़े रहो, कितनेक तो ठंडके डरसे आब दस्त (पेशाब पाखाना) भी भूल रहे थे, यदि इस रात्रिका पानी किसी तरह ज्येष्ठ मास तक इसी अवस्थामें रखा जा सक्ता तो क्या ही अच्छा होता, परन्तु आश्चर्य

है कि जो पानी गर्मियोंमें ढूंढे नहीं मिलता है इस समय उसमें उंगली डुबाना दुष्कर हो रहा था, जलपात्र छूते ही हाथ गला जाता था, नदियोंके किनारे कहीं कहीं बर्फ जमा हुवा मालूम पड़ता था, तात्पर्य–शर्दी इतने जोरकी पड़ रही थी, कि मानो वह उसकी युवावस्थाका अंतिम दिवस ही था, ऐसी ठंडी रात्रिमें जब कि अर्द्ध रात्रिसे भी कुछ समय अधिक हो चुका था, और चारों ओर सन्नाटा खिंचा हुवा था, एक तरुण पुरुष अपनी पत्नीको सोती हुई समझ कर चुपके उठा और धीरे धीरे दबे पांव चल कर दर्वाजा खोला। खड़खड़ाटसे दरवान जाग उठा और इकदम बोल उठा "कौन है"।

युवा–कोई नहीं, हल्ला मत करो, हम हैं मालिक मकान।

दर्बान–गरीब परवर इस समय कहां जा रहे हैं? हुक्म हो तो कोचवानको पुकार कर गाड़ी कसवा दूं।

युवा–कुछ आवश्यकता नहीं है, तुम सो जावो, किवाड़ बंद कर लो, मैं अपने एक मित्रको देखने जाता हूं, पास ही जाना है।

दर्बान–जो हुक्म कह कर किवाड बंद कर सो रहा और वह युवा भी चलता बना।

(२)

जिस युवाका वर्णन ऊपर कर आये हैं, उसीके मकानके बिल्कुल पिछवाड़े उत्तरकी ओर एक छोटासा बाग है जिसमें आम नारंगी नींबू आदिके थोड़ेसे झाड़ोंके सिवाय एक सुंदर पुष्प वाटिका लग रही है, रात्रिको गुलाबके फूल नवयौवना स्त्रीके कपोलोंके समान शोभा दे रहे थे और हरी हरी पत्तियां, मानो उस स्त्रीकी हरित साड़ी ही मालूम पड़ती थी, बागमें एक ओरको कुछ साग पात भी बोया गया था, बागमें न तो कोई आसपास दीवाल (चहार द्वाली) थी और न कोई पक्का फाटक ही था, केवल चारों ओर मेहदी लग रही व कहीं २ कांटोंसे रूंध दिया गया था इसीसे इस बागमें सेही व स्यालादि जंगली जानवरोंके सिवाय कभी कभी बैल गाय बकरी आदि भी घुस आया करते थे।

बागके दक्षिणकी ओर ठीक उस युवाके मकानके पीछे उत्तर दर्वाजेका एक छोटासा मकान है, यद्यपि मकान छोटासा है तथापि इसमें गृहस्थीका सब निस्तार भले प्रकार हो जाता है, मकानके नीचेके भागमें बैठक तथा रसोई आदिका स्थान है और ऊपरके भागमें शयन स्थान है। सयन गृहमें चारों दिशावोंमें खिड़की व उजालदान बने हुवे हैं जिनमेंसे उजेला बाहर निकल कर उस युवाकी हवेली और सामने बाग तक पहुंचता है। इस घरमें एक छोटा दर्वाजा दक्षिणकी ओरको भी है जो प्रायः बंदसा रहता है। यदि कभी आवश्यकता हो तो इस घरकी स्वामिनी ही इस दर्वाजेसे अपने किसी सम्बन्धी आदिसे मिलने आया करती हैं, इसीसे इसकी चाबी सदा स्वामिनी-जीके ही हस्तगत रहती है।

ठंडी रातमें जब कि जोरकी ठंड पड़ रही थी और सब लोग दबे दबाये सो रहे थे, शरीरका कोई अंग यदि ऐसे जाड़ेमें बाहर रह जाता तो वह भी बर्फकी सदृश ठंडा हो जाता था, ऐसे

समयमें इस घरकी स्वामिनी अपनी चारपाई पर पडी हुई करवटें बदल रही हैं, कभी उठती है, कभी टहलने लगती है, कभी खिडकियोंमें झाक कर देखती है फिर जाकर लेट जाती है, उसके शरीरसे उष्ण ज्वालाएं निकल रही हैं, नींद उसमे डर कर कि कहीं मैं जल न जाऊ कोसों दूर भाग गई है, न मालूम क्यों इसकी ऐसी विचित्र अवस्था हो रही है। उसके चेहरेसे विरह और भय दोनों झलक रहे है। आश्चर्य तो यह है कि जब उसका विवाहित पति ही उसके निकट उपस्थित है एक नन्हासा बच्चा भी गोदमें स्वस्थ शरीर सुशोभित हो रहा है तब वियोग किसका और भय क्या ?

जो कुछ हो श्रीजी जाने, प्रगटमें तो उसके मुंहसे कभी कभी दीर्घ निश्वासके साथ सीता राम सीताराम ही सुनाई देता है बस उसे इसी नामका आधार हो रहा है। घरकी स्वामीनीका नाम कमलावती है और उसके पतिका नाम पद्मचंद है।

(३)

रात्रिका तीसरा पहर वीतने पर था, इस समय योगीजन उठकर अपनी प्रातःकालीन संध्या (सामायिक) स्वाध्यायादिके लिये तत्पर हो जाते हैं, रास्तागीर अपने दड कमडलु तयार करके रास्ते पडते हैं, कुलवधुवें भी निद्रा छोडकर अपने दिन भरके कार्योंका विचार करके पच परमेष्टीका ध्यान करती हुई चुपकेसे उठतीं और शौचादि कार्योंमें लग जाती हैं (चुपकेसे उठनेका प्रयोजन यह है कि जिससे छोटे बच्चे न जाग उठें नहीं तो वे रोकर पतिकी निद्रामें भग डाल देंगे और ठडमें पीछे दौडे तो जिससे उन्हे ठड जुड हो जानेका भय है) आलसी पुरुष और कायर स्त्रिया ही ऐसे समयमें पडे २ चारपाई तोडा करते हैं। इसी समय एक सुकुमार कुलागना जिसकी वय अभी १७ वर्षसे अधिक न होगी, और रूप सौन्दर्यमे वह अपने समान किसी दूसरी स्त्रीको नहीं रखती थी, मानो प्रकृतिकी सम्पूर्ण सुन्दरता उसीमें समा गई हो, अपने शयनागारमें अचेत पडी हुई स्वप्न देख रही है कि उसका प्राणनाथ पति उसके पाससे कहीं बाहर जाना चाहता है और वह उसे हाथ पकड कर कह रही है, नहीं मै न जाने दूगी, मै तुम्हारा वियोग सहन नहीं कर सक्ती हूँ, तुम अभी कितने ही दिनोंमें आये हो और अब क्या फिर दासीको छोडकर जाते हो ? स्वामी, जिस मार्गमें आप जाते हो वह बडा भयकर दुखदाई है, इसमें रावण जैसे त्रिखडी और कीचक जैसे बली भी अपने किये हुवे फलको (नरकादि गतिको) प्राप्त हो चुके हैं और अयश हुवा सो अलग। आप दया करो, और दासीको अभय वचन दो, इत्यादि और युवा उससे हाथ छुडा कर कह रहा है, तुम व्यर्थ भ्रम मत करो, मुझे छोड दो, मैं बहुत जल्दी आऊँगा, इत्यादि, ऐसा कहते हुवे युवा (पति)ने हाथ छुडा कर ज्योंही जाना चाहा कि वह उसे पुनः पकडनेके लिये उठ खडी हुई, उठते ही नींद खुल गई, स्वप्न टूट गया, आश्चर्यान्वित होकर विचारने लगी यह मैं क्या कर रही थी ? ऐसा स्वप्न, इसका क्या अर्थ है ? चलो अपने पतिसे

[आ]ऊंगी, ऐसा विचार कर "अर्हंत सिद्ध, अर्हंत सिद्ध" कहती हुई तुरत पतिके पलंगकी ओर फिरी और धीरेसे रजाई खेंचकर कहने लगी, सुनते हो, ए, क्या नींद लगी है, सुनो तो हमको डर लगता है, कैसा भयानक स्वप्न देखा है, देखो तो कैसे चुपकी लगाये सो रहे हैं, कुछ देर चुप रह कर फिर–भई हमें तो नींद नहीं आती है, क्या करें उठनेका भी समय [न]आ है, अच्छी बात है लेवो सुब सो लेवो, ऐसा कह कर हास्य और भय सहित पतिकी रजाई जोरसे खींच दी।

अब क्या था, देखती है चारपाई खाली पडी है, उस पर उसका पति नहीं है, आश्चर्यसे यहां वहां देखने लगी, परंतु कहीं भी दिखाई न दिया, अनेक प्रकारकी तरंगें उसके मनमें उठने लगीं, कभी स्वप्नका विचार कर विह्वल होजाती और कभी यह सोचकर कि प्रातःकाल होनेवाला है, कदाचित् स्वामी चुप चाप उठकर बगीचेकी ओर संध्या इत्यादिके निमित्त चले गये होंगे, क्योंकि वे नित्य बहुत जल्दी उठ जाया करते हैं, परंतु अभी रात्रि अधिक मालूम पड़ती है, शर्दी भी बहुत पड़ रही है, भला ऐसे समयमें घर ही क्यों संध्या नहीं कर लेते हैं? कल अवश्य ही उन्हें घर हीमें संध्या करनेको कहूंगी। [स्वा]मियोंकी बात अलग रही, इत्यादि विचारोंमें निमग्न हुई, पड़ रही थी, कि उसे अपने पीछे [वा]ले मकानकी ओरसे कमलावतीके द्वारा कहा [हु]वा, निम्न लिखित दोहा सुनाई दिया।

[आ]धि रात गई पछि रात्रि भई अब हिरनी फेरा कर गईरे।
[ते]रे पथिका बर्धा डूटा दडा डारा मेरारे ॥ १ ॥

यह सुनते ही वह स्त्री (कृष्णकुमारी) उठ कर खिड़कीमेंसे कमलावतीके घरकी ओर देखने लगी, चांदनी रात होनेसे दूर तक स्पष्ट दिखाई देता था, फिर तिसपर कमलावतीके शयनगृहका प्रकाश दूर तक फैल रहा था, इसीसे कृष्णकुमारीको कुछ भी अड़चन न पड़ी और उसने तुरंत ही देख लिया कि कमलावतीके दक्षिण गुप्त द्वारपर एक तरुण विना सींग और पूंछका दाढ़ी मूछोंवाला बैल, अपने आपको छिपाता हुवा खड़ा है और किवाड खटखटा रहा है। कृष्णकुमारी इस द्विपद बैलको देखकर दुःख आश्चर्य भय और ग्लानिसे भर गई कुछ काल निस्तब्ध हो रही, कुछ भी न सूझ पडा परन्तु तत्काल ही वह स्वस्थ हो बैठी और अपनी बुद्धि चातुर्य्यसे निम्न लिखित दोहा बनाकर कहा और जाकर पीछे पलंग पर विचारोंमें निमग्न हो गई।

हाथदे हकायदे बिन सींगन बध हमारारी।
घरकी दाखचिरोंजी तजकर भुसा खान गयो तेरारी ॥१॥

(४)

कमलावती एक वयोवृद्ध स्त्री है, इसकी कुछ दिनसे अपने पड़ौसी रमानाथसे मित्रता हो गई है। रमानाथ नित्य चौथे पहरसे संध्या पूजादिके बहानेसे उठकर इसके यहां आता है, और प्रातः स्नानकर तिलक छापा लगा, भक्त बनकर घर पहुंच जाता है। इसीसे इसकी स्त्री कृष्णकुमारीको कुछ भी सन्देह नहीं होता था। आज रमानाथ कुछ जल्दीसे भी उठ गया था, और दरवानके छेड़ने पर उसने मित्रसे मिलनेकी बात कह कर चुप करदिया था। परन्तु वह यह नहीं जानता था कि प्रारंभमें ही अब

समयमें इस घरकी स्वामिनी अपनी चारपाई पर पडी हुई करवटें बदल रही है, कभी उठती है, कभी टहलने लगती है, कभी खिडकियोंमें आकर देखती है फिर जाकर लेट जाती है, उसके शरीरसे उष्ण ज्वालाए निकल रही हैं, नींद उसमे डर कर कि कहीं मैं जल न जाऊ कोसों दूर भाग गई है, न मालूम क्यों इसकी ऐसी विचित्र अवस्था हो रही है। उसके चेहरेसे विरह और भय दोनों झलक रहे हैं। आश्चर्य तो यह है कि जब उसका विवाहित पति ही उसके निकट उपस्थित है एक नन्हासा बच्चा भी गोदमें स्वस्थ शरीर सुशोभित हो रहा है तब वियोग किसका और भय क्या ?

जो कुछ हो श्रीजी जाने, प्रगटमें तो उसके मुहसे कभी कभी दीर्घ निश्वासके साथ सीता राम सीताराम ही सुनाई देता है बस उसे इसी नामका आधार हो रहा है। घरकी स्वामीनीका नाम कमलावती है और उसके पतिका नाम पद्मचद है।

(३)

रात्रिका तीसरा पहर बीतने पर था, इस समय योगीजन उठकर अपनी प्रात कालीन सध्या (सामायिक) स्वाध्यायादिके लिये तत्पर हो जाते हैं, रास्तागीर अपने दड कमडल तयार करके रास्ते पडते है, कुलवधुवें भी निद्रा छोडकर अपने दिन भरके कार्योंका विचार करके पच परमेष्टीका ध्यान करती हुई चुपकेसे उठतीं और शौचादि कार्योंमें लग जाती हैं (चुपकेसे उठनेका प्रयोजन यह है कि जिससे छोटे बच्चे न जाग उठें नहीं तो वे रोकर पतिकी निद्रामे भग डाल देंगे और ठडमें पीछे दौड तो जिससे उन्हे ठड जुड हो जानेका भय है) आलसी पुरुष और कायर स्त्रिया ही ऐसे समयमें पडे २ चारपाई तोडा करते है। इसी समय एक सुकुमार कुलागना जिसकी वय अभी १७ वर्षसे अधिक न होगी, और रूप सौन्दर्यमे वह अपने समान किसी दूसरी स्त्रीको नहीं रखती थी, मानो प्रकृतिकी सम्पूर्ण सुन्दरता उसीमें समा गई हो, अपने शयनागारमें अचेत पडी हुई स्वप्न देख रही है कि उसका प्राणनाथ पति उसके पाससे कहीं बाहर जाना चाहता है और वह उसे हाथ पकड कर कह रही है, नहीं मैं न जाने दूगी, म तुम्हारा वियोग सहन नहीं कर सक्ती हूँ, तुम अभी कितने ही दिनोंमें आये हो और अब क्या फिर दासीको छोडकर जाते हो? स्वामी, जिस मार्गमें आप जाते हो वह बडा भयकर दुखदाई है, इसमें रावण जैसे त्रिखडी और कीचक जैसे बली भी अपने किये हुवे फलको (नरकादि गतिको) प्राप्त हो चुके हैं और अयश हुवा सो अलग। आप दया करो, और दासीको अभय वचन दो, इत्यादि और युवा उससे हाथ छुडा कर कह रहा है, तुम व्यर्थ भ्रम मत करो, मुझे छोड दो, मैं बहुत जल्दी आऊँगा, इत्यादि, ऐसा कहते हुवे युवा (पति)ने हाथ छुडा कर ज्योंहीं जाना चाहा कि वह उसे पुन. पकडनेके लिये उठ खडी हुई, उठते ही नींद खुल गई, स्वप्न टूट गया, आश्चर्यान्वित होकर विचारने लगी यह मैं क्या कर रही थी ? ऐसा स्वप्न, इसका क्या अर्थ है ? क्या अपने पतिसे

पूछेगी, ऐसा विचार कर " अर्हंत सिद्ध, अर्हंत सिद्ध " कहती हुई तुरत पतिके पलंगकी ओर फिरी और धीरेसे रजाई खेंचकर कहने लगी, सुनते हो, ए, क्या नींद लगी है, सुनो तो हमको डर लगता है, कैसा भयानक स्वप्न देखा है, देखो तो कैसे चुपकी लगाये सो रहे हैं, कुछ देर चुप रह कर फिर–भई हमें तो नींद नहीं आती है, क्या करें उठनेका भी समय हुवा है, अच्छी बात है लेवो खब सो लेवो, ऐसा कह कर हास्य और भय सहित पतिकी रजाई जोरसे खींच दी।

अब क्या था, देखती है चारपाई खाली पड़ी है, उस पर उसका पति नहीं है, आश्चर्यसे यहां वहां देखने लगी, परंतु कहीं भी दिखाई न दिया, अनेक प्रकारकी तरंगें उसके मनमें उठने लगी, कभी स्वप्नका विचार कर विहल होजाती और कभी यह सोचकर कि प्रातःकाल होनेवाला है, कदाचित् स्वामी चुप चाप उठकर बगीचेकी ओर संध्या इत्यादिके निमित्त चले गये होंगे, क्योंकि वे नित्य बहुत जल्दी उठ जाया करते हैं, परंतु अभी रात्रि अधिक मालूम पड़ती है, शर्दी भी बहुत पड़ रही है, भला ऐसे समयमें घर ही क्यों संध्या नहीं कर लेते हैं? कल अवश्य ही उन्हें घर हीमें संध्या करनेको कहूंगी। गर्मियोंकी बात अलग रही, इत्यादि विचारोंमें निमग्न हुई, पड़ रही थी, कि उसे अपने पीछे वाले मकानकी ओरसे कमलावतीके द्वारा कहा हुवा, निम्न लिखित दोहा सुनाई दिया।

घि रात गई पछि रात्रि भई अब हिरनी फेरा कर गईरे।
ई सरिता वर्षा छूटा दहा टारा मेरारे ॥ १ ॥

यह सुनते ही वह स्त्री (कृष्णकुमारी) उठ कर खिड़कीमेंसे कमलावतीके घरकी ओर देखने लगी, चांदनी रात होनेसे दूर तक स्पष्ट दिखाई देता था, फिर तिसपर कमलावतीके शयनगृहका प्रकाश दूर तक फैल रहा था, इसीसे कृष्णकुमारीको कुछ भी अड़चन न पड़ी, और उसने तुरंत ही देख लिया कि कमलावतीके दक्षिण गुप्त द्वारपर एक तरुण बिना सींग और पूंछका दाढ़ी मूछोंवाला बैल, अपने आपको छिपाता हुवा खड़ा है और किवाड़ खटखटा रहा है। कृष्णकुमारी इस द्विपद बैलको देखकर दुःख आश्चर्य भय और ग्लानिसे भर गई कुछ काल निस्तब्ध हो रही, कुछ भी न सूझ पडा परन्तु तत्काल ही वह स्वस्थ हो बैठी और अपनी बुद्धि चातुर्य्यसे निम्न लिखित दोहा बनाकर कहा और जाकर पीछे पलंग पर विचारोंमें निमग्न हो गई।

हाऊदे हकायदे बिन सींगन यह हमारारी।
घरकी दाखचिरौंजी तजकर भुसा खान गयो तेरारी ॥१

(४)

कमलावती एक वयोवृद्ध स्त्री है, इसकी कुछ दिनसे अपने पड़ौसी रमानाथसे मित्रता हो गई है। रमानाथ नित्य चौथे पहरसे संध्या पूजादिके बहानेसे उठकर इसके यहां आता है, और प्रातः स्नानकर तिलक छापा लगा, भक्त बनकर घर पहुंच जाता है। इसीसे इसकी स्त्री कृष्णकुमारीको कुछ भी सन्देह नहीं होता था। आज रमानाथ कुछ जल्दीसे भी उठ गया था, और दरवानके छेड़ने पर उसने मित्रसे मिलनेकी बात कह कर चुप करदिया था। परन्तु वह यह नहीं जानता था कि प्रारंभमें ही जब

पूछ लिया जाय, व्यर्थ किसी अच्छे आदमी बदनाम करना ठीक नहीं है इत्यादि कह कर लोगोंके मुंह बांध देंगे।

ऐसा विचार कर वह चुपचाप पलंग पर जा लेटा और यह सोच कर कि मानलो मैंने लोगोंका मुंह भी बांध दिया और किसी प्रकार टेल टाल कर मान मर्यादा भी बचा रखी तो क्या हुवा? क्या मैं सर्वज्ञ परमात्माकी दिव्य दृष्टि भी बचासक्ता हूं। और क्या इस बचावसे मेरा मलिनात्मा भी उज्वल हो सक्ता है? हाय! एक तो व्यभिचार (परस्त्री सेवन) ही पाप है, फिर उसके छुपानेको झूठ बोलना, मायाचार करना, इत्यादि और भी कितने ही पाप करना पड़ने है, इत्यादि सोचकर पश्चाताप पूर्वक विलाप करने लगा, उसकी आखोंसे अश्रुधारा बहने लगी, गरम श्वास निकलने लगे, इतनेमें जोरकी हवा चली जिससे पासमें पडी हुई स्त्री की विचार मूर्छा दूर हुई। ज्यों ही उसने आंख खोल कर देखा तो उसका प्राणप्रिय पति रमानाथ पासमें पडा हुवा है, यह देख कर वह और भी विस्मय सागरमें गोते खाने लगी। सोचने लगी क्या मैं अभी तक स्वप्न ही स्वप्न देख रही थी? क्या कमलावतीके द्वार पर किवाड़ नहीं खटखटाते थे? क्या कमलावतीने उन्हें तिरस्कृत करके बैल नहीं बनाया था? हाय! मानलो कि उसने अपने पतिको ठगने हीके लिये उन्हें बैलकी उपाधि दी हो, परन्तु मैंने भी तो उन्हें बैल ही कह कर उसका समर्थन किया था, इससे प्राणनाथके चित्त पर कैसा आघात हुवा होगा? परन्तु प्राणनाथ तो पासमें पड़े हुवे हैं, सवेरा होनेको आया है, आज वे नित्यके अनुसार पूजा सामायिकके लिये नहीं गये हैं, कदाचित् उनको गहरी नींद लग गई है, उन्हें जगाना तो अनुचित है, परन्तु सवेरा होना चाहता है। और सन्ध्या पूजाका समय भी चला जायगा जो कि कोट यत्न करने पर भी हाथ आना कठिन है, सिवाय इसके मेरे मनकी शल्य मन हीमें रह जायगी और वह भी दिन भर कांटेके समान चुभा करेगी इस लिये उन्हें किसी प्रकार जगा देना ही उचित है, इससे मेरी शल्य भी निकल जावेगी और उनका नियम भी सध जावेगा। स्त्रियोंका कर्तव्य है कि अपने पतिसे कोई बात भी न छिपावें, पति ही उनका प्राण है, पति ही ईश्वर है इत्यादि सोच कर वह चुपसे उठी और पतिके पगचम्पी (पैर दाबना) करने लगी। स्त्रियोंको पतिके जगानेका सबसे अच्छा और सरल यही उपाय है।

रमानाथ जागते तो थे ही, अपनी स्त्रीके द्वारा पगचम्पी होने देख कर उनसे न रहा गया, वे समझ गये कि मेरी स्त्रीने अवश्य ही मुझे वहां देख लिया है, और वह मुझे लज्जित करने हीके लिये पैर दाब रही है। वे बड़े साहससे मनको रोककर बोले, प्रिये, अब मुझे अधिक लज्जित न करो, मैं तुम्हारा सहस्र बार अपराधी हूं, मैं बड़ा पापी हूं, यथार्थमें आज तुम्हारे उस दोहेने जो तुमने उस दुष्टा कमलावतीके दोहेके उत्तरमें कहा था, मेरे चित्तको बदल दिया है, मुझे सच्चा मार्ग दिखा दिया है, और भविष्य होनेवाले घोरगतिके दुःखोंसे बचालिया है, तुम कुलांगना हो, सच्ची गृहणी हो, मुझे


૭૦




૭૨


૭૩


૭૪



सिंतेर चित्रमां जतावेलां पापकर्म भोगववाना एकोत्तरमा अंकना

चित्रना दोहा·

लोहशंकुशय्या करी, लांबो करी सुवाडी ॥ परमाधामी देवतो, मारे असिने का-
टी ॥१॥ एकतरफ झालो रही, परमाधामी देव ॥ छाती मांहि दबावीने, झालो
न थावा देय ॥२॥ रीव करे छे आकरी, मार पडे ते वार ॥ नेमतेम मारे घणुं, कहेतां
नावे पार ॥३॥ कर्यां कर्मने भोगवे, तूं अज्ञानी जीव ॥ हसी हसीने जे कियां, रो-
ईरोई भोगव सदीव ॥४॥

सिंतेर चित्रमां बतावेलां पापकर्म भोगववाना एकोत्तरमा अंकना चित्रना

॥ दोहा.॥

लोहशंकु शय्या करी, लांबो करी सुवाडी ॥ परमाधामी देवतो, मारे असिने काटी
॥१॥ एकतरफ झालो रही, परमाधामी देव ॥ छाती मांहि दबावीने, झालो न थावा
देय ॥२॥ रीव करेछे आकरी, मार पडे तेवार ॥ नेमतेम मारे घणुं, कहेतां नावे पार
॥३॥ कर्यां कर्मने भोगवे, तूं अज्ञानी जीव ॥ हसी हसीने जे कियां, रोइरोइ भोगवसदीव ४

बहोत्तर अंकना चित्रमा दर्शावेलां पापकर्म भोगववाना तमोत्तर

अंकना चित्रना दोहा·

बंधे मस्तक राखीने, हाथ पग बांधी दोर ॥ परमाधामी तो वली, मारे मुद्गर घोर ॥
१॥ मुद्गर मारना दुःखथी, रीव करे अत्यंत ॥ छोडो छोडो मुजने, न करुं हुं
दुष्कृत्य ॥२॥

बहोत्तर अंकना चित्रमा दर्शावेलां पापकर्म भोगववाना तमोत्तर

अंकना चित्रना दोहा·

बंधे मस्तक राखीने, हाथ पग बाधी दोर ॥ परमाधामी तो वली, मारे मुद्गर घोर ॥१॥
मुद्गर मारना दुःखथी, रीय करे अत्यत ॥ छोडो छोडो मुजने, न करूं हुं दुष्कृत्य ॥२॥

चमोत्तर अंकना चित्रमां दर्शावेलां पापकर्म भोगववाना पंचोत्तर अंकना

चित्रना दोहा·

अग्नि चितामा नाखीने, परमाधामी देव ॥ स्त्रीने तो बहु दुःख दिये, त्रास पमाडे
अतीव ॥१॥ एकतरफ बेसी करी, शूल भोंके तस उर ॥ एकतरफ झालो रही, शिर मारे
कुंत भूरि ॥२॥ रीव करे ने तो घणुं, मूकी सर्व लाज ॥ कोई दिन तो करी शनहीं, हवे एवां हुं काज
॥३॥

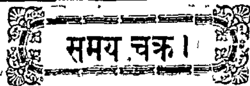
चमोत्तर अंकना चित्रमा दर्शा॰ पापकर्म भो॰ पंचोत्तर अं॰ चित्रना दोहा·

अग्नि चितामा नाखीने, परमाधामी देव ॥ स्त्रीने तो बहु दुःख दिये, त्रास पमाडे अती
व ॥१॥ एकतरफ बेसी करी, शूल भोंके तस क्रूर ॥ एकतरफ झालो रही, शिर मारे कुंत भू-
रि ॥२॥ रीव करे ने तो घणुं, मूकी सर्व लाज ॥ काई दिन नो करी शनहीं, हवे एवां हुं काज ॥३॥

क्षमा करो, मैं आजसे प्रतिज्ञा करता हूं कि अब फिर यावज्जीव कभी भी ऐसे दुष्कृत्यमें प्रवृत्त न होऊंगा, तुम दयालु नेक और उदार हृदय हो इस लिये तुमसे यह आशा नहीं है, कि इस पापीका पाप प्रसिद्ध करके उसे और भी दण्डित करोगी, क्योंकि मैं आपका घोर दण्ड पा चुका हूं इत्यादि।

कृष्णकुमारीकी शंका निवृत्त होगई, उसे स्वप्न साक्षात् हो गया, जान गई कि वे हमारे प्राणनाथ ही थे, और मैंने अवश्य ही उन्हें दुःख पहुंचाया है, इस लिये वह नम्र होकर बोली—स्वामी, दासीने जो अज्ञानता वश शब्दोंमें आपका अपमान किया है, उसे क्षमा कीजिये, अब मैं भ्रम ही में पड़ी थी, और समझती थी कि मैं स्वप्न ही देख रही हूं, परन्तु आपके द्वारा मुझे अपनी शंका सत्य प्रतीत हुई, परन्तु गई बातका पश्चाताप व्यर्थ है, बस, यदि मनुष्य पाप न करनेकी प्रतिज्ञा करले और पापसे भयभीत बना रहे तो ही सब कुछ है, भूले वहींसे गिनना प्रारंभ कर देना ही युक्त है। आप चाहे जो कहें और चाहे सो करें, परन्तु स्त्रियोंका कर्तव्य है, कि अपने मनमें बात न छिपावें और जो कुछ भी आपसे (पति) कहें तथा घरकी बात कभी बाहर न कहें, इस लिये आप भरोसा रखें दासी कभी अपने मुंहसे कुछ कहनेवाली नहीं है।

इस प्रकार दम्पति प्रतिज्ञाबद्ध होकर शयनागारसे निकले और भास्कर भी उदयाचलसे निकल आये, रमानाथका पाप रात्रिके अंधकारके साथ ही विलुप्त होगया, और यावज्जीव दम्पति सुखपूर्वक रहे।



(ले० मोहनलाल बड़जात्या, अजमेर।)

रात्रिका समय है। चंद्रदेव अपने प्रकाशमें छिप होकर आकाशमंडलको शोभायमान कर रहे हैं, तारागणोंके संसर्गसे आकाशमंडल महफिलके समान दृष्टिगत हो रहा है। घडीमें टनटन१२ बारह बज गये, अर्द्ध रात्रि हो चुकी है, निद्रादेवीने अपना राज्य चहुं ओर जमा लिया है, समस्त संसार निद्रादेवीकी गोदमें अचेत पड़ा हुआ है। मैं भी निद्रादेवीकी गोदमें विश्राम करनेके प्रति नेत्र मुंदे ही था कि अकस्मात् एक अद्भुत स्वप्नका निरीक्षण करने लगा। क्या दृष्टिगत होता है कि एक वीर गंभीर मनुष्य अपने चौड़े सीने पर दोनों हाथ धर कर उदासीन होकर नदीके तट पर घूम रहा है और लंबी लंबी स्वांसे भर कर बुलंद स्वर द्वारा कह रहा है, कि हे जैन जाति! तू तो प्राचीन समयमें सर्व जातियोंकी अपेक्षा उच्च एवं श्रेष्ठ गिनी जाती थी अब तू दुर्दशा रूपी क्षेत्रमें क्यों उतर रही है? जो कुकृत्योंका अवलंबन प्राचीन कालमें अधमसे अधम जाति भी नहीं करती थी उन्हीं कृत्योंको आज तू प्रसन्नता पूर्वक कर रही है। क्या पूर्व समयमें तुझ उच्च समाजमें बालविवाह, वृद्धविवाह, अनमेल विवाह, विधवाविवाह, व्यर्थ व्यय, कन्याविक्रय आदि जो महान पतित हैं ऐसे कृत्योंका अवलंबन होता था? नहीं नहीं, कदापि नहीं। हाय! जैन समाज इन्हीं कृत्योंके प्रभावसे तू अवश्यमेव अधोगतिकी ओर जायगी,

इतना कहते कहते उस वीर पुरुषका गला घुट गया।

पश्चात् उस पुरुषने स्नान करनेके निमित्त नदीमें पैर रक्खे ही थे कि संयोगसे एक कर्णगोचर शब्द आसमानकी ओरसे श्रवण करनेके प्रयोगमें आया कि रे वीर गंभीर पुरुष! तेरे हृदयमें जो महान उत्तम विचार उपस्थित हैं, कठिनसे कठिन आपत्ति उपस्थित होने पर भी ऐसे उच्च कोटिके विचारोंसे विमुख न होना। इन उत्तम विचारोंको अपने प्राणोंसे प्रिय समझोगे तो तुम्हारा कल्याण होगा। इस प्रकारके वाक्य श्रवण कर वह पुरुष आश्चर्यमें भर गया कि ऐसे असीम विकट स्थान पर यह वचन किसने कहे? यथार्थमें आश्चर्यकारी वाक्य है। उक्त वाक्योंको हृदयमें स्थान दे जिस ओरसे कि वे कर्णगोचर शब्द हुये थे उस ही ओर गमन कर गया।

२

प्रातःकालका समय है। चांद व तारे छिप चुके हैं। सुहावनी गुदगुदानेवाली पवन चल रही है। स्वच्छ तथा निर्मल आकाश है। चिड़िया चूं-चूं करने लग गई है। दिवाकरनाथकी भी सवारी धीमी धीमी चालसे चली आ रही है। रात्रि भरकी गरमीसे पसीजे हुये प्राणी जलमें क्रीड़ा करने चले गये हैं। इसी अवसर पर हम एक वीर पुरुषको कुछ वेगसे आते हुये देख रहे हैं। क्या इसे कुछ चिंता तो नहीं है? यह आगे विदित होगा। यह पुरुष सना-सन चला जा रहा है। कुछ दूर पर हम एक बालक जिसकी अवस्था हमारे अनुमानसे लगभग बारह वर्षकी होगी दर्शन कर रहे हैं। वह एक वृक्षके नीचे खड़ा हुवा है। उस गंभीर मनुष्यने उस लड़केकी ओर अपनी दृष्टि चलाई तो ज्ञात हुवा कि यह तो मेरा ही प्रिय बालक रविन्द्र है निश्चय पूर्वक उस बालकको चिन्ह कर उसके सन्मुख गया और प्रेमपूर्वक कहने लगा—

(पिता)—हे पुत्र रविन्द्र! तुम यहां ऐसे असीम स्थान पर क्यों कर आये? क्या तुम्हें आते हुये कुछ भी भय मालूम नहीं हुवा? तुम्हें ऐसा योग्य नहीं। क्या तुम्हारे साथ और कोई तुम्हारे मित्र महोदय भी हैं? या अकेले ही हो?

(पुत्र)—हे पिताजी! जबकि आप घरके द्वारके बाह्य निकले थे मैं भी आपके पीछे हो लिया, मैं अकेला ही आया हूं। मेरे संग कोई मित्रादिक नहीं है।

(पिता)—हे पुत्र! यदि तुम मेरे संग ही घरसे निकले थे तो इतने समय कहां थे? प्रकाशमें क्यों नहीं आये? गुप्त रीतिसे मेरे पीछे पीछे छुपे हुवे आना योग्य नहीं। यह एक प्रकारसे अपराध है।

(पुत्र)—पिताजी! इतने समय मैं आपके प्रकाशमें नहीं आया अतएव मैं अवश्य अपराधी हूं। अतः नम्रभावसे क्षमाप्रार्थी हूं। मैं इतने तक इस ही पेड़के नीचे खड़ा हुवा इस विकट समय बनका अवलोकन कर रहा था।

[पिता]—पुत्र! इस अपराधके प्रति पश्चात्ताप करो। आगामी ध्यान रखना।

[पुत्र]—अच्छा पिताजी, आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।

[पिता]—पुत्र! अब तो घरसे निकलेको

अपनको बहुत विलंब हो गया। तुम्हारी माता चिंता कर रही होंगी। घरकी भी सुध लेना प्रयोजनीय है। अतएव अब घर चलना चाहिये।

[पुत्र]–अच्छा पिताजी चलिये। विशेष वार्तालाप न कह कर दोनों वहांसे चल दिये।

३

पाठकगण, कुछ दिन चढ़ चुका है। सूर्यदेव आकाशमंडलमें भ्रमण करनेके प्रति उपस्थित हो गये हैं। रातभर मुर्झाये हुये कमलके फूल भी धीरे धीरे शिर उठा रहे हैं। गुलाब, केवड़ा, मोतिया, चमेली, हीनादिक फूलोंकी बहार ही निराली है। ठंडी ठंडी समीर बह रही है। मनुष्यगण शौचादिसे निश्चित होकर अपने अपने उद्योगोंमें लग गये। इसी समयमें हम एक पुरुष एव एक बालकके दर्शन बाजारमें कररहे हैं। संभव है कि हमारे प्रिय पाठक इनसे कुछ परिचित भी होंगे। पाठकवृंद, यह और कोई नहीं यह वही रविन्द्र एवं रविन्द्रके पिता हैं। मालूम होता है कि यह कहींसे सैर करते हुए चले आ रहे हैं। रविन्द्र और रविन्द्रका पिता परस्पर वार्तालाप करते हुवे अपने घरकी ओर आ रहे हैं।

(रविन्द्र)–पिताजी, आज आपका चित्त कुछ उदासीन प्रतीत होता है। किस चिंताने आपके ऊपर आक्रमण किया है? आपकी उदासीनताका क्या हेतु है? मेरे उपस्थित रहते हुये आपको चिंतित रहनेकी आवश्यकता नहीं, कृपा पूर्वक उदासीनताका हाल कहिये।

[पिता]–प्रिय पुत्र, मुझे कोई चिंता नहीं है, सिर्फ जातिकी दशाका अवलोकन हृदयको विदीर्ण कर रहा है। देखो, वर्तमानमें जैन समाजमें बालविवाह, टवलविवाह, वृद्धविवाह, विधवाविवाह, कन्याविक्रय, फजूल खर्चादि कैसे कैसे अत्याचार खड़े हो रहे हैं, जिनके प्रभावसे जाति समूल नष्ट हो रही है। सिर्फ यही एक दुःख हृदयको खेदित कर रहा है।

[पुत्र]–पिताजी, यह कुप्रथायें तो बहुत दिनोंसे समाजमें हो रही हैं। विचारे साहित्य पत्र भी अपना करुण क्रंदन रोर कर समाजको सुनाया करते हैं। आपने भी तो पहिले उपदेशादि दिये थे क्या कुछ फल नहीं हुवा? क्या हेतु है कि समाज इतने निष्ठुर हृदयकी बन रही है?

पित–पुत्र, भैंसके सन्मुख चाहे कितना ही मृदंग बजाया जाय अंतमें कुछ फल नहीं। उसी प्रकार जैन समाज....इस प्रकारकी वार्तालाप पिता व पुत्रके परस्पर हो रही थी कि अकस्मात् कुछ सरकारी प्यादे आ धमके और रविन्द्रके पिताके हाथमें लोहेकी जंजीरें डालके पकड़के लेगये। निराश्रित रविन्द्र व्याकुल हो कर विलख विलख करने लगा। देखनेवाले भी बड़े ही आश्चर्यमें डूब गये।

४

संसारचक्र अत्यंत विचित्र है। आज जिसको विश्राम करनेके प्रति मुलायम मखमलके गद्दे उपस्थित हैं कल वही एक फटे टूटे वस्त्रके प्रति भी दरिद्र हैं। आज जिसको क्षुधा लगने पर नाना प्रकारके उत्तमोत्तम स्वादिष्ट भोजन भक्षण करनेको मिलता है कल उसके प्रति सूखी रोटीका टुकड़ा भी महान दुर्लभ है। आज जिसको

प्यास लगने पर नाना प्रकारका अमृत दिया जाता है कल उसके होठोंपर फेफड़ी जमने पर भी तनिकसी जलकी बिन्दु भी मिलना महान कठिन है। आज जो नाना प्रकारकी वैभवके नशेमें चूर हो रहा है कल वही एक तांबेकी नाहरीके प्रति भी भिक्षुक है। इस असार संसारकी लीला अपार है। जो रविन्द्रके पिता बड़े ही मान्यवर बुद्धिमान एवं अनुभवी तात्विक समझे जाते थे आज वही समयचक्रके फंदेमें गिरते हुये हाथोंमें लोहेकी जंजीरें भूषित कर सरकारी प्यादोंके संग चले जा रहे हैं। इस समय उनको यह आश्चर्य उपस्थित हो रहा है कि मेरेसे ऐसा क्या अनिष्ट अपराध हो गया जिसके द्वारा मुझे बंदिगृहमें लेजा रहे हैं। वाचकवृंद उनके कुटुम्बिकजनोंको भी यह दुर्घटनाका वृत्त श्रवण कर बहुत खेद हो रहा है। व रविन्द्रकी माताको भी दुःख तो अवश्य है परन्तु वह जानती है कि मेरे पति बिलकुल निर्दोष हैं। यदि सरकार न्यायाधीश है तो न्यायपूर्वक मेरे पतिको अभी बंधनसे मुक्त कर देगी। क्योंकि सांचको कहीं आंच नहीं, एवं अपराध रहितको सजा नहीं। हमारे रविन्द्रकी इस समय क्या दशा होगी इसका अनुमान हमारे प्रिय पाठक लगा लेंगे—परन्तु इतना कहना तो मैं भी उचित समझता हूं कि रविन्द्रका हृदय सबसे अधिक चिंतित होगा। उन सरकारी सिपाहियोंने रविन्द्रके पिताको बिना न्याय सीधा ले जाके बंदिगृहमें डाल दिया। निराश्रित रविन्द्र बहुत व्याकुल हुआ। कुछ विलंबके पश्चात् रुदन करते हुये रविन्द्रको सरकारी नौकरोंने उस स्थानसे निकाल दिया। इस प्रकारके हालका अवलोकन मैं कर रहा था कि अकस्मात् मेरी माताने आके मुझे निद्रादेवीकी गोदमेंसे उठा लिया। फिर क्या था? देखते देखते सर्व दृष्टिसे छिप गया। अवगत हुआ अरे रे-यह तो स्वप्न था—

भगवान—यह हाल कभी भी आगामी किसीको न दिखावें। ऐसे नेत के बंधनसे हमारी समाजकी दुर्दशा है!

जातिकी उन्नति कैसे हो?

(लेखक-मुंशी केशरीमल मोतीलाल रांका ब्यावर।)

(१) प्यारे बन्धुओ, आजकल चारों ओरसे "कन्या विक्रय" व 'वृद्धविवाह" व "बेजोड़विवाह रोकनेके लिये और जाति उन्नति करनेके लिए बहुतसे धनाढ्य और बुद्धिवाले व जातिके मुखिया व जातिके प्रत्येक भाईकी इच्छा है।

(२) इनको मिटानेके लिये नेता व धनाढ्य सैकड़ों रुपैया खर्च करके सभा व पंचायतियां करते हैं। और इन्तजाम करनेके लिये कायदे बनाते हैं। और कायदेके विरुद्ध चलनेपर उनको जाति बाहिर निकालने तककी सजा कर देते हैं कि जिससे जातिमें एक घरकी और कमी हो जाती है। और अगर कमी न हुई तो जुत्था (धड़ा) बंध जाता है और कार्रवाई पंचायतमें खलल हो जाती है। और कायदेकी पाबंदीकी तामील नहीं होने पाती है।

(३) अब सवाल यह है कि "कन्याविक्रय" करनेवाले कौन हैं? और किस मतलबसे करते हैं।

(४) प्यारे जातिभाईयों, पक्ष और स्वार्थको

त्याग कर इस सवाल पर गौर करनेसे आपको मालूम हो जायगा कि जो ज्यादा पूंजीवाले हैं वह तो बेटीका पैसा लेते ही नहीं बल्कि बींटी डोरा, कंठी आदि जेवर दुल्हा (बींद)को देते हैं और विवाहमें दस बीस हजार रु. तक खर्च करते हैं। इससे मालूम हुआ कि बेटीका पैसा लेनेवाले बिना पूंजीवाले ही हैं।

(५) अब यह सवाल होता है कि बिना पूंजी-वाला पैसा क्यों लेता है ? नीचे लिखे कारण पैसा लेनेवाले मालूम हुए—

(१) बिना पूंजीवालेके लडके व लडकी दोनों ही होते हैं। वह समझता है कि अगर वगैर पैसा लिये लडकीका सगपण कर दूंगा तो तो लडका कंवारा ही रह जावेगा, और यों ही खानदान (कुटुम्ब) नष्ट होकर जातिसे एक घर कम हो जावेगा और नाम चला जावेगा क्योंकि इस समय ऐसा ही रिवाज जारी है—कि पूंजी-वाला तो बिना पूंजीवालेके खूबसूरत, हट्टे, कट्टे कमाऊ लड़केको अपनी लडकी देना चाहते ही नहीं है। बल्कि लडकी लेनेको तैयार रहते हैं और रुपैया देनेको भी तैयार हैं मानों बेटीका पैसा लेना पूंजी वालोंने ही सिखाया है।

(२) धनाढ्य जब विवाह मोसर वगैरः करते हैं तो जातिके सब भाईयोंको बुलाते हैं और जिमाते हैं। जब कोई कम पूंजीवाला भाई अपने घर काम पड़ने पर ज्यादा खर्च न कर सकनेके कारण नहीं बुलाता है तो पूंजीवाले महाशय उनको ताना मारते हैं और कहते हैं कि खा ही जानते हो इत्यादि, इस तानेके भयसे और दूसरा जरिया आमदनीका न देख कर अपनी लडकीका मजबूरन रुपया लेकर जिमाता है।

(३) बेटीके रुपये लेनेके ऐसे कई कारण हैं कि जिनको हरएक महाशय जानते हैं परन्तु भरम खुल जानेके भयसे जबान पर लाना नहीं चाहते हैं। लेख भी लेख विशेष बढ जानेके भयसे यहां पर दर्ज करनेसे मजबूर हैं।

४—नतीजा—१—पूंजीवालोंसे लडकी मिलनेकी उम्मेद न रही।
२—अगर काम पड़ने पर नहीं जिमाता है तो ताना सहन नहीं कर सकता।
३—लडका कंवारा रह जाता है।

(६) जातिमें अच्छी रीत व रिवाज व खोटे रीत व रिवाज चलानेवाले नेता पूंजीवाले ही हैं उनकी देखादेखी बिना पूंजीवालों व कम पूंजीवा-लोंको भी करनी पड़ती है।

(७) समयकी बलिहारी है कि इस समय बहुतसे जाति भाई कम पूंजीवाले जो पैसा नहीं लेते हैं, अपनी लड़की अपनेसे ज्यादा पूंजी-वालेको देते हैं। और शादीमें अपनी हैसियतसे ज्यादा खर्च करते हैं इस भयसे कि कहीं मेरा सम्बन्धी जो ज्यादा पूंजीवाला है नाराज न हो जाय या मेरा भरम न खुल जावे कि कम पूंजीवाला है। आयंदा लडकेकी सगाईमें बाधा न आवे, नाम हासिल हो जावे और आपसकी तानाबाजी न सहनी पड़े। इस भयसे ज्यादा खर्चा करके आनेको कर्जदार बना लेता है। क्या करे पूंजीवालोंकी देखादेखी करनी पड़ती है।

(८) धनाढ्य अपनी लड़की कम पूंजीवालोंको न देनेकी वजहसे बिना पूंजीवालोंके खूबसूरत, हट्टे, कट्टे होशियार व पढेलिखे लड़के कँवारे रह जाते हैं। और धनाढ्योंके गैले (पागल), गुगे, बहिरे लड़के भी कँवारे दिखाई नहीं पडते।

(९) मिसलें मशहूर है कि "लडकी वर हाण देनी, पर वर हाण देणी नहीं" प्रिय मित्रों यहा पर घरहाणसे मतलब निर्धनका है। कई उपकारी जातिका सच्चे दिलसे भला चाहनेवाले धनवानोंने जातिकी उन्नति करनेके लिये इस कहावतके मुजब ही किया है। उन्होंने अपनी लड़कियां अपनेसे बहुत कम पूंजीवालोंको दी और पूंजी व जायदाद व जागीर देकर अपने बराबरीका बना लिया।

(१०) अब आपको मालूम हो गया होगा कि इस समयमें वही रिवाज जारी है कि हरएक शख्स चाहे दु ख पावे या सुख पावे अपनी लड़की अपनेसे ज्यादा पूंजीवालेको देता है। ज्यादा पूंजीवालेको लड़की देनेमें जातिको जो नुकसान है उनमेंसे यहां पर कुछ दर्ज करते हैं किंतु लेख बढ़ जानेके भयसे कुछ नहीं बतला सक्ते।

(१) कम पूंजीवाला सगा कोई भी रुजन (कामकाज) पूंजीवाले सगेकी मर्जीके मुआफिक न करे तो शीघ्र ही अनबन हो जाती है। ज्यादा पूंजीवाले समधीजी उल्टी बुराईयां करते हैं और कहते हैं कि खटाव न था तो मुझसे क्यों भिड़ा।

२-कम पूंजीवाला अपनी हैसियतसे ज्यादा खर्च करता है तो भी उनके पसंद नहीं आता। गोया दिया हुआ धन योंही चला जाता है।

३-जियादा पूंजी वालेके यहां लडकी (सुख) आराम पावेगी इस खयालसे देते हैं। परन्तु यदि लड़कीके तकदीर सिकंदर हुवे तो सुख मिल सकता है। नहीं तो बिचारीके पीहरकी निंदा व उसके घरानेका बखान हर समय उसकी सासु व श्वसुर किया करते हैं। आदर करना तो अलग रहा परन्तु अनादर करनेको तैयार रहते हैं। अगर किसी तरह अनबन हो गई तो लौंडी, सोक तक लानेमें नहीं चूकते हैं इसी तरह लड़की सारी उमर दु.खी रहती है।

४-अगर ज्यादा पूंजीवाले सगेकी खातिर, तवज्जे बराबर न हो या सीक बाडी इत्यादिमें कुछ कम धन दिया तो अनबन हो जाती है। बोलना तक भी बंद हो जाता है। कम पूंजीवालेकी अपकीर्त्ति होती है। कई २ मर्तबा तो "बड़े घर बेटी दीनी, मिलवाका सांसा," यह कहने तकका अवसर मिल जाता है।

५-इधर लड़कीवालेका बाप भी ज्यादा खर्चा कर देनेकी वजहसे कर्जदार बन जाता है। अगर तकदीर अच्छी हुई और कमाई हो गई तो कर्जेके दुखसे मुक्त हो जाता है। अगर कमाई न हुई तो कमा खानेसे भी जाता रहता है। कहावत है कि "कर्ज जैसा दुख संसारमें दूसरा कोई नहीं है"। यह सब दुःख कम पूंजीवालोंको भोगना पड़ता है।

नेक सलाह।

प्यारे मालदार सेठों, जातिके नेताओं, मुखिया पचों, जाति सुधारका ढोंग न रख कर सच्चा सुधार चाहनेवालों, यदि आपको जातिसे सच्चा

प्रेम है और आप जातिकी सच्ची भलाई चाहते हैं, यदि आप सच्चे दिलसे "कन्याविक्रय" व "वृद्ध" व बेजोड़ विवाह बंद कराना चाहते हैं और ऊंचे शिखर पर ले जाना अपना कर्तव्य व धर्म समझते हैं और किसीको कँवारा नहीं रखना चाहते हैं तो अपनी लड़की अपनेसे कम पूंजीवालेके हट्टे, कट्टे, पढ़े लिखे, खूबसूरत, होशियार, और कमाऊ लड़केको दो। अपनेसे ज्यादा पूंजीवालेको देनेकी प्रथा (चाल) जो इस समय चालू है उसको उलट दी जावे। मनोभाव पलट दिये जावे तो वही प्रथा जारी हो जावेगी जो कि आप सच्चे दिलसे चाह रहे हैं। विवाहमें ज्यादा खर्च न कर उससे बचा हुआ धन बेटी, जंवाईके सुपुर्द करो। अपने जँवाईको व्यापारादिकमें मदद देकर अपने सम न बनालो। तो खानदान भी ऊंचे दर्जेमें आजावेगा और जातिकी उन्नति भी हो जावेगी। जब आप महाशय याने ज्यादा पूंजी-वाले कमपूंजीवालोंके लड़कोंको लड़कियाँ देना शुरू कर देवेंगे और अपनेसे ज्यादा पूंजीवालेको लड़की देनेका रिवाज उलट दिया जावेगा तो कम पूंजीवाला कभी अपनी लड़कीका पैसा लेनेका नाम ही न लेगा और यों "कन्याविक्रय" आप ही आप बंद हो जावेगा। और जाति-भाईको दंड देनेकी नीचे दरजेके गिननेकी जरूरत ही न रहेगी। न सगाईके रुपैये देने लेनेकी तादाद (संख्या) मुकर्रर करनी पडेगी। गीतोंमें गाया जाता है कि "राव उमरावकी होड न कीजे, जोड़ीका वर देखने दीजे," ऐसी प्रथा जारी करनेसे नीचे लिखे फायदे (लाभ) होंगे।

१—जब कम पूंजीवालेका यह भय जाता रहे कि मेरा लड़का कंवारा न रहेगा और विना पैसा दिये ही लड़केकी सगाई हो जावेगी तो वह भी अपनी लड़कीका विना पैसा लिये ही अच्छा लड़का, जोड़ीका वर देखकर विवाह कर देगा। जब अपने लड़केका पैसा उसे न लगेगा तो क्या उसे अपनी लड़कीका पैसा लेनेमें शर्म नहीं आवेगी और उसको पैसा कौन देगा? बस इस तरह "कन्याविक्रय" अपने आपही बंद हो जावेगा।

(२) जब लड़केको उम्मेद अपनी सगाईकी हो जावेगी तब वह विद्या पढ़ने व सदाचारी व्यापारी बननेकी इच्छा रक्खेगा कि जिससे जातिमें विद्या, कला, कौशल्य व व्यापार बढ़ेगा। जब लड़केको हट्टा कट्टा खूबसुरत होशियार पढ़ा लिखा देखकर सगाईयें होंगी तो "बालविवाह" व बेजोड़ विवाह आप ही रुक जावेगा।

(३) जब कि प्रत्येक जातिभाई अपनेसे कम पूंजीवालेके लड़केके साथ अपनी लड़कीकी सगाई करना शुरू कर देवेंगे तो उनको अपनी हैसि-यतसे ज्यादा खर्चा न करना पड़ेगा जिससे कर्ज-दार न होगा और न समधीजीकी बानाबामी सहनी पड़ेगी। बल्कि जियादा पूंजीवाले सम-धीजीका उपकार, यश और अहसान ही सुननेमें आवेगा।

(४) कम पूंजीवाला समधी ज्यादा पूंजीवाले समधीजीका ज्यादा आदर सत्कार करेंगे और थोड़ी रस्म, रीत देने पर भी राजी होकर लेगा और दुख सुखमें फौरन काम आवेगा।

(५) लड़का व उसकी औलाद तीन पीढ़ी तक अहसान मानते रहेंगे। जंवाई व लड़कीको कम दोगे तो भी ज्यादा मानेगा और तुम्हारी वाह वाह करेगा।

(६) ज्यादे पूंजी वालेकी लड़की जब सासरेमें आवेगी तब सासू, श्वसुर, पति वगैरः कुल खानदान उसका आदर करेंगे और सारी उमर सुख देंगे।

(७) ज्यादा पूंजीवाला यह खयाल न करे कि कम पूंजी वाला हमेशा ऐसा ही रहेगा। आप यह निश्चय समझिये कि किसीके दिन हमेशा एकसे नहीं रहते। जाईके नसीब बाईके साथ है, वह आपकर्मी है न कि बापकर्मी, कई निर्धन थे, लखपती हो गये और कई लखपति थे वह निर्धन हो गये।

(८) "कन्याविक्रय" न होनेसे "वृद्धविवाह" रुक जावेगा।

(९) फजूल खर्ची रुकनेसे वेश्यानृत्य इत्यादि रुक जावेंगे।

(१०) आयंदाकी संतान आप ही सदाचारी व कुलीन बनेगी।

(११) अपंग व नपुंसकका विवाह रुक जावेगा।

(१२) जब जाति धन न देख कर लड़के अच्छे देख कर सगाई व विवाह करेगी तो बेजोड़ विवाह न होगा।

(१३) जातिको किसी प्रकारके कायदे व रीत न बांधनी पड़ेगी।

(१४) बालविवाह, वृद्धविवाह, बेजोड़ विवाह जब बंद हो गये तब आयंदाकी संतान बलवान साहसी और आलसी पैदा होगी।

(१५) विधवाओंकी संख्या न बढ़ेगी।

(१६) पंचायतका झगड़ा न उठेगा इसलिये परस्पर प्रेम बढ़ेगा।

(१७) जब जातिमें विद्वानोंकी संख्या बढ़ जावेगी तो वह अपने आप ही कुरीतियोंको छोडते जावेंगे जिससे कुरीतिका जातिसे सदाके लिये काला मुंह हो जावेगा।

(१८) हट्टे कट्टे, कमाऊ, निर्धन कई भाई अपने विवाह न होनेसे अन्य धर्म व जातिमें चले जाते हैं इससे जातिमें कमी पड़ती है। जब उनके विवाह स्वजातिमें होने लग जावेंगे तो वह स्वजाति व धर्मको न छोड़ेंगे जिससे जाति न घटेगी बल्कि बढ़ेगी।

(१९) कुछ ही दिनोंमें जातिमे निर्धनताका नाश हो जावेगा।

(२०) जातिमें सर्व प्रकारकी उन्नति होजावेगी।

नारियलके गुण।

नारियलका बहुत बडा वृक्ष होता है, आकार खजूर और ताडके समान होता है, यह वृक्ष पूर्वकी ओर कलकत्ते और श्रीजगन्नाथजीमें और बम्बईमें बहुत होते हैं, विशेष करके नदी अथवा समुद्रके निकट अधिक उत्पन्न होते हैं। इसमें शाखा नहीं होती, इसमें ऊपरके भाग खजूरसे पत्ते होते हैं, उन्हीं पत्तोंके बीचमें नारियल लगते हैं। उस नारियलको फोडके निचोडनेसे जो रस निकलता है उसको नारियलका दूध कहते हैं, जब यह नारियल सूख जाते हैं तो उनके भीतरके भागको गोला अथवा खोपडा कहते हैं। ये फल मंगलादि कार्योंमें बहुत लिये जाते हैं।

नाम।

हिन्दी भाषामें नारियल, बंगला भाषामें नारकेल, मरहटीमें नरली, गुजरातीमें नाळिएर, फारसीमें जौज हिन्दी, अर्बीमें नारिजल, इंगलिशमें कोकोनट पाम, लैटिनमें कोकोसन्यु सिफेरा, संस्कृतमें नालिकेर, दृढफल, सदाफल, लांगली, कूर्चशीर्ष, तुंगस्कन्धफल, तृणराज, नारीकेली नारिकारी, नारिकेरि, नारिकेली सदापुष्प, श्रीफल, मृदुफल, पुटोदक, नारिकेर रसफल, सुतुंग, कूर्चशेखर, दृढनीर, नीलतरु, मंगल्य, उच्चतरु, स्कन्धतरु, दक्षिणात्य, दुरारुह, त्र्यम्बकफल, शिराफल, करकाम्भा, पयोधर, पुत्रकूण, कौशिकफल, फलमुण्ड, जटाफल, मुण्डफल, विश्वामित्रप्रिय, नालेर, सुभग, फलकेशर, वरफल, महाफल, श्रीफल, तोयगर्भ, और त्र्यक्षफल।

नारियलका फल, शीतल, दुर्जर, मूत्राशय शोधक, महापुष्टिकारक, बलदायक और वात पित्त रक्तविकार तथा दाह नाशक है।

कोमल नारियलका फल विशेष करके पित्त ज्वर तथा पित्तके दोषोंको नष्ट करता है। नारियल पुराना भारी पित्तकारक विदाही तथा विष्टम्भ कारक है।

नारियलका पानी शीतल हृदयको प्रिय, अग्निको दीपन करनेवाला, वीर्यवर्धक, हलका, तृषा तथा पित्तको नष्ट करने वाला, मधुर और मूत्राशयको शुद्ध करता है। नारियलकी शिरा कसैली, स्निग्ध, मधुर, पुष्टिकारक और भारी है।

प्रयोग।

१. नारियलकी गरी उत्तम, मुखरोगवाला पानकी तरह चबाय तो मुखरोग दूर हो।

२. गीला नारियल पानी भरे हुएके पेटमें भलीभांति नमक भरदे, पीछे कपडा मिट्टी कर सुखा कर बिनुआ कण्डा या जंगली उपलोंसे फूंक देवे भस्म हो जाये तब यह भस्म मात्रा ४ रत्ती पीपल १॥ मासेमें मिलाकर खाये तो इससे वायु सम्बन्धी परिणाम शूल दूर हो।

३. नारियलकी जटा १२ तोले, काला लोन ९ मासे, जल आधसेरमें चुरा, बफारा कुल बदनमें ले। बफारा लेनेकी विधि यह है कि हांडीमें भर आगपर धर वस्त्र ओढ बफारा ले तो खांसी बहुत जल्द अच्छी हो जाती है।

४ कच्चे नारियलके पेटमें फटकरी भर १ रात कीचडमें गाड दे सुबह रस सहित १ तोला खानेसे पुरातन प्रमेह दूर हो।

५ नारियल शाकमें पीस बच्चोंको मात्रा देश काल बलाबल देख कर दे तो बच्चोंको हुडका दूर हो।

६ नारियलके गोलामें तालमखाना, इसबगोल, एक एक छटांक पिस कर भरे फिर बरगद वृक्ष का दूध भर छायामें सुखा ४० छुहारा ले, गुठली निकल उनके भीतर उक्त दवा भर उन पर कच्चा सुत लपेट कर कडाहीमें गऊ दूध डाल कर छुहारा तल ले जब थोडा दूध रहे तब छुहारा निकाल कर रखले। १ छुहारा सुबहके वक्त खाकर ऊपरसे सहस्रमूली (गुर्भदस्ती,) घृत, इस तरह पर तैयार कर ले कि गुर्भदस्ती, १तोला बांस, कुशा एक तोला, बिदारी कंद १ तोला, ईखका रस, और खंवरा ये एक एक तोला ले, पीस एक सेर जलमें काढा करे, सो काढा आने, तिसमें एक पाव गऊ दूध तिसमें एक पाव घृत मिला अग्नि पर पका घृत सिद्ध कर ऊपर लिखी हुई दवाको खा कर एक तोले घृत खाले। इन दोनों किस्मकी दवा यानी छुहारा व घृतको सब अमीर व गरीबोंको सेवन करना चाहिये, यह राजा और रंक सबका हित साधने वाला है। इसके सेवन करनेसे वीर्य बढता है। बलको बढाता है, धातुको पुष्ट करता है, प्रमेहको खोता है, उदर रोग, अफरा, मूत्र गिरना, इन सब रोगोंको सिंहकी माफिक दपट कर भगाता है। नेत्र रोग, सातों धातोंको पुष्ट करता है, हमेशा सब ऋतुओंमें यही दवायें मंगलरूप हैं। प्रीतको बढाने वाला, स्नेहको बढाने वाला, शरीरको निरोग रखने वाला, अमोल रत्न, पुत्र देने वाला, सबमें श्रेष्ठ काम रूप ये दोनों दवा हैं। ये अग्निको बढाती है, कांति और शोभा बढाती है असाध्यस असाध्य प्रमेह (जियान मर्ना) अवश्य ही नष्ट हो जाती है। इन्हीं दवाओंके सहित और अनेक तरहकी जडी, बूटीसे महाशनमूली घृत बनता है जिसको थोडे दिन सेवनसे स्त्रियोंके सर्व रोगोंको कैसा भगाता है जैसे अग्नि समूलके भस्म करती है। इस महाशनमूली घृतके प्रतापसे लाल, सफेद, काला, नीला प्रदर ऋतु सबन्धी जितनी बिमारी हैं सबको तत्काल भगा देती है। स्त्रियोंको मनोवाछित फल देने वाला यह घृत है। इस घृतके प्रतापसे वीर और पराक्रमी शुद्ध बुद्धि वाला और सुंदर रूप वाला ऐसे २ पुत्रोंसे नारीकी गोद हमेशा हरी भरी रहती है, इसके सेवनसे कभी रोगकी शिकायत नहीं रहती। सन्तानके सर्वग्रह दोष भगे फिरते हैं। उनको बढाने वाला सब मनोकामना पूर्ण करने वाला, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, सबको देने वाला, यही घृत है।

७. नारियलके तेलमें किंचित चूनेका पानी मिला जली हुई जगह पर लगा दो तो जलन तुरन्त बंद हो जाती है।

८. नारियलके तेल एक सेरमें तेजपात आदि सुगंधित मसाला आध पाव, छारछबीला आध पाव, गुलाबके फूल आध पाव मिला कर १५ दिन तक शीशीमें रक्खो, फिर इस हिसा दो तोला, चदनका तेल २॥ तोले मिला दो तो खुशबूदार सुगंधित तेल बन जाता है। अगर आपको रंगीन करना हो तेलका तो अलकोनेट हट मिला कर विलाटिंगसे छानलो अत्यन्त उम्दा तेल बनता है।

९. नारियलका छिलका जला राखका बराबर शक्कर मिला कर ३-३ माशेकी मात्रा खा कर कुछ दिन सेवन करे तो बवासीर एक सालकी अच्छी हो, अगर असाध्य हो तो एक साल तक बवासीर नहीं उभरेगी। 'स्य मी प्रताप।'

આપણી પુત્રીઓ વિષે વિચાર.

(લે૦ માસ્તર નાનચંદ પુંજાભાઈ બી એ. વડોદરા)

જ્યારે કોઇને ઘેર છોકરાનો જન્મ થાય છે ત્યારે સગા વહાલાને ખબર આપવામાં આવે છે, વધામણીઓ ખવાય છે, સાકર પેંડા વેંહેચાય છે, ઘેર લાપસી રંધાય છે, પૂજન થાય છે વીગેરે અનેક રીતે આનંદ મનાય છે, પણ જ્યારે છોકરીનો જન્મ થાય છે ત્યારે આમાનું કંઇ પણ થતું નથી પણ એથી ઉલટું પુત્રીને ઘણી હલકી રૂપમા આપવામાં આવે છે. તેને પથરો ગણે છે, ઉકરડો ગણે છે અને તેને દરેક બાબતમાં હલકી ગણવામાં આવે છે. છોકરાની માતું માન વધે છે ત્યારે છોકરીની માતું માન ભંગ થાય છે. કુટુંબમાં તે હલકી લેખાય છે અને તેની સુવાવડ પણ બરોબર થતી નથી. છોકરાને સૌ કોઇ રમાડવા આવે છે અને છોકરીને બે પૈસાનો ઘુઘરો સરખો પણ મળતો નથી. છોકરાને બાપ સોનાની કડીઓ, કંદોરો વીગેરે કરાવે છે ત્યારે છોકરીને કીડીઆ મણકા પેહેરાવે છે.- છોકરાને દુધ માવો મીઠાઇ ફળ વીગેરે ખવરાવવામા આવે છે ત્યારે છોકરીને સુકો રોટલો આમળવો પડે છે. છોકરો જરા માંદો થાય તો મા કોઈ અછો અછો વાના કરે છે અને છોકરી માંદી પડે તો વૈદના ઘરની બે પૈસાની પડીકી પણ ન મળે, પણ ઉલટું બીજા જેરાં કહે છે કે છોડીની માટીને શા ઝટકા પડવાના છે. છોકરાને ભણાવવાને હજારો રૂપીઆનો ખર્ચ કરાય છે તો છોકરીને ભણાવવામા એક પૈસો પણ ખરચવો ઝેર જેવો લાગે છે.

આવી રીતે છોકરીઓ વિશે આપણો જે હલકો વિચાર બંધાયો છે તેનું કારણ સ્વાર્થ-પોતાનો સ્વાર્થ છે. છોકરો કમાઇને ખવરાવશે અને ઘડપણમા ચાકરી કરશે અને પોતાની ગીરાન સાચવશે. છોકરી પારકા ઘરની વસ્તી છે. છોકરો બાપને વહાલો છે અને છોકરી માને વહાલી છે.. છોકરીનું માને લાગે છે પણ બાપ છોડીને ન, રડાય તો મા લાચાર બને છે. આવો વિચાર ઢોર રાખનાર લોકોમા જોવામાં આવે છે. ભેંસને પાડી આવે તો તેની સંભાળ બરોબર લેવાય છે, પાડીને બરોબર ધવાડે છે, પુરી પાય છે અને પાડો આવે તો તેને રીબાવી રીબાવીને કેટલાક પાપી લોકો મારી નાખે છે અગર ગમે ત્યા હાંકી મૂકે છે. તેવુંજ આપણા અને ગાયની બાબતમા બને છે. પાડી ભેંસ થઇ દુધ આપે, વાછરડી ગાય થઇ દુધ આપે. આ ઉપરથી સમજાય છે કે જે વધારે ઉપયોગી હોય તેનું જતન કરવાનુ સારૂ લાગે છે અને જે પોતાને ઉપયોગી, નથી પણ પારકાને ઉપયોગી છે એવી આપણી, દીકરીની સંભાળ લેવી એ ઠીક લાગતું નથી.

શા માટે ભેદ રાખવાની જરૂર નથી ?

પુત્ર અને પુત્રી એ આપણાજ સંતાન છે. બંન્ને પોતપોતાની શક્તિ મુજબ ઘરડાં મા-બાપને કામ લાગે છે, ચાકરી કરે છે, છોકરો પૈસાનો વારસ થાય છે. છોકરીને ભાગ વહેંચી આપતા નથી પણ છોકરા અને છોકરી વચ્ચે ભેદ સમજવાની જરૂર નથી. પુત્ર અને પુત્રી એ આપણાં સંતાન છે. જન્મ્યા ત્યારથી તે આપણા બન્યા છે. જેવી કેળવણી, શીખામણ સોબત મળે તેવા તેમનામા ગુણ આવે છે. જેવું જુએ છે તેવુંજ શીખે છે. માટે બંન્નેને સમાન ભાવથી ઉછેરવા એ આપણી ધાર્મિક ફરજ છે.

પુત્ર એ સપુત નીકળે છે તો માબાપની સેવા ચાકરી કરે છે. કપુત નીકળે છે તો માબાપને તેનું મોંહું જોવાનું પણ ગમતું નથી. કેટલાક પુત્રો માબાપનું કહ્યું કરતા નથી. મરજીમાં આવે તેમ બોલે અને વખતે લાકડી પણ ઉગામે છે. આ પુત્ર ન કહેવાય પણ દુશ્મન સમજવા. આવા પુત્રને જન્મ આપી માબાપ પસ્તાવો કરે છે. સપુત હોય છે તે માબાપની સેવા ચાકરી કરે છે કેટલાક ખરા મનથી અને કેટલાક લોક લજ્જાથી પણ કરે છે. આજ પ્રમાણે પુત્રી સુપુત્રી હોય છે

તે પણ માબાપની ચાકરી કરે છે, માબાપનું કદી ઘસાતું બોલતી નથી, સાસરે રાજવૈભવ હોય અને કદી પીયેરીઆ ગરીબ હોય તોપણુ માબાપનું સારૂં દેખાય તેમજ બોલે ચાલે છે.

એવા ચાકરીની દૃષ્ટિએ જોતાં પણ પુત્ર અને પુત્રી પોતાના અધિકાર પ્રમાણે ચાકરી કરી શકે છે. જે માબાપને છોકરીના ઉપર બરોબર ભાવ, હેત હોતાં નથી તે છોકરીને પોતાના માબાપ ઉપર હેત નજ હોય અને તેવી છોકરી માબાપની ચાકરી નજ કરી શકે.

ધરમા અને ન્યાતમા સારી મજબુત સંતાન જોવા ઈચ્છા હોય તો છોકરા અને છોકરી વચ્ચેનો તફાવત કાઢી નાખવો જોઇએ. છોકરીની બરદાશ નાનપણમા બરોબર થતી નથી તેથી બાધો એકવડો અને બળહીણુ બને છે નાની ઉમરમા પરણાવે છે. જે વખત શીખવાનો, ફરવા ફરવાનો, શરીરની વૃદ્ધિ કરવાનો તેજ વખત તેને સાસરે વળાવે છે, નજરકેદમા રહેવું પડે છે અને કવખતે સુવાવડ આવવાથી પ્રજા નબળી પાકે છે અને ઉપરાઉપરી વર્ષે દોઢ વર્ષે સુવાવડ આવવાથી પાચ દશ વરસમા તો ધોળી પુણી જેવી થઈ જાય છે, વાયુ આવે છે, પ્રદર લાગુ પડે છે, ગોળો ચઢે છે અનેક રોગ થઇ જાય છે, અને નબળા શરીરે સુવાવડમાં ઘણી મરી પણ જાય છે. જેવી સામાને ત્યાં નબળી પ્રજા થાય છે તેવીજ આપણે ત્યા પાકે છે માટે જો આપણે શરીરે બળવાન. સાહસિક, ઉત્તમ ચારિત્રવાળી, ધર્મ ધુરંધર, દાનવીર પ્રજા જોઇતી હોય તો આ ભેદ ભુલી જવો જોઇએ.

છોકરીઓને શું શીખવાડીએ છીએ ?

આપણી છોકરીઓને ભણાવવાનો વહેમ ઓછો થયો છે. પહેલા તો કન્યાને ભણાવવા માટે ઘણા વિરૂદ્ધ હતા. હાલ ઘૈરા પણ કહે છે કે વાંચતાં લખતાં તો આવડવું જોઇએ. શ્રીમંત ગાયક્વાડના રાજ્યમાં ફરજીયાત કેળવણી થયાથી છોકરીઓને ત્રણ ચાર ચોપડીનું તો કંઇક જ્ઞાન થાય છે. દેખાદેખી બ્રીટીશ રાજ્યમાં પણ ઉચ્ચ કોમનાં માબાપ પોતાની પુત્રીઓને નીશાળે મોકલે છે, પણ હાલ છોકરી સાસરે જતા પહેલાં જે કંઇ ભણે છે તે એટલું થોડું સમજ્યા વગરનું અને ઉપરચોટીઉ હોય છે કે ભાંગ્યુ તુટ્યું લખતા અને શબ્દેશબ્દ છુટું વાંચતાં જાણી શકે છે. ઉચ્ચાર બરાબર આવડતા નથી. 'લ' તો સેંકડે નેવુ જણુતે બોલતાં નથી આવડતો. સહેલાં લેખા હોય તો હીસાબ કરી શકે. બહુ તો ચાર પાચ ચોપડીનો અભ્યાસ કરે છે. પરણી એટલે નીશાળે ન મોકલાય એવો વહેમ હોય છે તેથી નીશાળેથી ઉઠાડી લેવામા આવે છે. સાસરે જાય એટલે સાસુ એમ સમજે છે કે વહુ બહુ ભણેલાં ગણેલાં ડાહ્યાં છે. છોડીને મા રાધતાં દળતાં પાણી ભરતાં અને ચણિયો ઓઢણી કેમ પહેરવાં અને વખતે કેમ થીંગડાં દેવાં એટલુ શીખવાડે છે. મા જાણે કે મારી છોકરીને કામ આવડયુ એટલે ડાહી બની ગઈ પણ સાસરે સાસુ સસરા, જેઠ, દીયેર અને નણંદ સાથે કેમ બોલવું, તેમની સાથે કેમ વર્તવું, પડોશી સાથે કેવો સંબંધ રાખવો, દેવ દર્શન કરતાં શું બોલવું, ધર્મ એટલે શું, વીગેરેની તો કોઇને પડી નથી. બાપ તો એમજ સમજે છે કે દીકરીને કોઈપણ જાતની શીખામણ મારે તો દેવાનીજ નથી. બાપે કંઇ છોકરીને શીખવાડવાનુજ નથી. છોકરો હોય તો સરકારે છોકરા ભણાવા નીશાળો ઉઘાડી છે ત્યા જાય, ગમે ત્યા ખેલતો ફરે, મહીનો થયે બાપ ફીના પૈસા આપે, ખાવાનું આપે, કપડા આપે. આટલું કામ બાપે કર્યું એટલે તેમની ફરજ પુરી થઇ એમ સમજે છે. આટલું કામ તો કોઈ માબાપ વગરનો છોકરો હોય અને તેનો ટ્રસ્ટી કોઈ થયો હોય તો તે પણ કરી શકે, પણ બાપે જેણે છોકરાને પેદા કર્યો છે તેણે છોકરાને ઘણું શીખવવાનું છે. બાપ તો એમજ સમજે છે કે છોકરાને ભણાવવું એ સરકારનું કામ છે. નહિં ભણે ત્યારે દુકાને બેસશે, નોકરી કરશે. પણ આ સંસારના ઝઘડામાં ઉતરવા માટે શાશા સાધનની જરૂર છે તે છોકરાને પૂરા પાડવા એ બાપની પહેલી ફરજ છે એવું થોડાજ સમજે છે. આવી ગેર સમજ છોકરા પ્રત્યે થાય છે તો છોકરીને તો કશું શીખવાડવાનુંજ

રહેતું નથી એવી માન્યતા હોય એ સ્વાભાવિક છે, આવી અધુરી કેળવણી લઇને કન્યાઓ (રડતી) સાસરે નાનપણમા જાય છે તેમની જીંદગી કેવી જાય છે તે આપણને ખબર છે એટલે આમા વિશેષ લખવાની જરૂર નથી

છોકરીને શું શીખવાડવું જોઇએ ?

છોકરીની આ' નવ વરસની ઉમર થઇ એટલે મા કાયદો કરે કે તેણે ઘરમાથી પૂંજો કાઢવો, લોટા અજવાળવા અને ઘડે પાણી લાવવુ દશ અગીયાર વરસની થાય એટલે ખીચડી દાળભાત. બાજરીની ચાનકી ઘડતા શીખવાડે. ના આવડે ભય પડે કે મરજી ન હોય તો ગાલમા ચુટીઓ ખણે, હાથમા લાકડી મારે અને ગાળોનું તો પૂછવુંજ નહિં. સાસરે જઇને શુ કરશો, તારી સાસુ તો આવી છે ને તેવી છે, પેલી નણદ જોડે કેમ બનશે. તારામા શો ભલીઓ છે, તને શુ આવડે છે, બીચારી છોકરીને આ' નવ વરસમા દુનીઆદારીનુ જોખમનું ભાન કરાવે છે. આખમાથી આસુ પડતા જાય ને છોકરીને કામ કરવુ પડે.

દાળ, ખીચડી, રોટલા, રોટલી વીગેરે શીખવાનુ કામ છોડીનામા જરા સમજ આવે એટલે કે તેર ચૌદ વરસે સારૂં શીખી શકે. દાળમા મીઠું મરચું કેટલું નાખવુ તેમા બુદ્ધિનો ઉપયોગ કરવાનો છે. તે મોટી ઉમરે વધારે સારૂ સમજે. પૂંજો કાઢવાનો, લોટા અજવાળવા, શીવવા વીગેરેનુ કામ આ' નવ વરસની ઉમરમા શીખી શકે કારણકે તેમા બહુ બુદ્ધિનુ કામ નથી।

બારથી સોળ આ ચાર વરસ છોડીના ઘણા કામના છે. આ ચાર વરસમાં માબાપ ઘણુ શીખવાડી શકે બાર તેર વરસે લગ્ન થાય તે પહેલા ઘરનુ સાધારણ કામ શીખી ગઇ હોય અને પરણ્યા પછી કેટલીક જીંદગીમા ઉપયોગી થઇ પડે એવી વિદ્યા શીખવી જોઇએ દાખલા તરીકે આપણુ દેહની રચના, તેમા જુદા જુદા અવયવો, તે શુ કામ કરે છે વીગેરે દરેક સ્ત્રી પુરૂષે જાણવાની જરૂર છે. આ વિદ્યાને અંગ્રેજીમા (Physiology) કહે છે. ડાકતરો વૈદ્યો તેનો ઉંડો અભ્યાસ કરે છે, પણ સાધારણ માહિતી દરેકને લેવાની જરૂર છે,

આ દેહ ધર્મવિદ્યા નહી જાણનાર સ્ત્રી અને પુરૂષ પોતાનુ દરદ બરાબર પારખી શકતા નથી કે વૈદ્યને જણાવી શકતા નથી. ઝાડા થાય છે તો આમોહ ટળી છે એમ સમજી પેટને ખુબ રગડાવે છે, ચોળાવે છે અને બહુ દુખી થાયછે. પણ સમજવુ જોઇએ કે આમોહ જેવું કંઈ પેટમા નથી. જેને આમોહ કહે છે તે મોટા આતરડાનો ભાગ છે. તે કેટલીક વખતે મળથી ભરાઇ જાય છે ત્યારે જુલાબની દવાથી સારૂ થાય છે, વારો મુકવાથી સારૂ થાય છે, પણ ચોળાવવાથી દરદી બહુ પીડા પામે છે તે નસ ઢીલો પડી જવાથી બહુ નુકશાન થવા સંભવ છે. આ આતરડા બાર તેર હાથ લાબા ભુંગળા માફક પેડામા ગુંચળાના આકારમા ગોઠવાયેલા આવ્યા છે. મોઢાનુ થુંક બહુ કામનું છે. અનાજનો કોળીઓ થુંકના રસ સાથે મળી એકરસ થાય ત્યારે ગળેથી નીચે ઉતારવો અને પેટમા ગયા પછી જ આશયમા બાકીનો ભાગ પચે છે અને છેવટનો ભાગ આતરડામા પચે છે પચે છે એટલે ખોરાકનો એક રસ થાય છે કે જેથી તેનુ લોહી જલદી બની શકે. નાના છોકરાએ કંઇ પાઇ લખોટી ગળી તો તેને જુલાબ આપવો, કંઇ ખાવા આપવુ નહીં, આનુ જ્ઞાન ક્યારે આવે કે જ્યારે આની થોડી માહીતિ હોય તોજ. નાના છોકરા માંદા થઈ જાય અને મા કંઈ દવા જાણતી ન હોય તો કેડમા ઘાલી વૈદ્ય ડૉકતરને ત્યા દોડે છે. (કેટલાકની કેડમા છોકરૂ લેવા શરમ આવે છે) ડોશીઓ પહેલા ઘરડે, કરીઆતુ વીગેરે સુગીઆ વાપરી જાણતા અને ઝટ ઘસી પાઇ દેતા, બીલકુલ ગભરાતા નહિ. નાના છોકરાના સાધારણ રોગની દવા દરેક છોકરીને આપવાની હવે જરૂર છે કારણકે આ વિદ્યા દરેક જણ ભુલવા લાગ્યુ છે.

વળી અકસ્માત અને તાત્કાલિક ઉપાય એ વિશે પણ માહિતી આપવાની ખાસ જરૂર છે. સ્ત્રીઓને પાણી દેવતા વીગેરે સાથે કામ હોય છે અને અકસ્માત વેળા ભયંકર પરિણામ લાવી મુકે છે. ચુલા આગળ રાધતા એકાએક કપડા સળગે તો શુ કરવુ કે કુવે તળાવ ગયા અને

અંદર ડુબાયુ તો શું કરવું, પાણીમાંથી બહાર કાઢી તેની કેવી સારવાર કરવી, ઝેરી જાનવર સાપ વીછી વીગેરે કરડે તો શો ઉપાય કરવો, કંઈક ઝેરી વસ્તુ, તાબાનો કાટ, ધંતુરો, વછનાગ, અફીણ ખાવામાં આવે તો તરત શું કરવું, આ બધી માહીતિ અકસ્માત્ અને તાત્કાળિક ઉપાય નામના પુસ્તકમા છપેલી છે આવા બનાવોના તુરત જે ઉપાય કરવામા આવે છે તેના ઉપર મટવાનો ઘણો આધાર રહેલો છે નહિં તો વાટનુ વટેશ્વર થઇ જાય છે.

આરોગ્ય વિજ્ઞાનનો વિષય પણ સ્ત્રીઓને બહુ ઉપયોગી છે આપણું આરોગ્ય જાળવવા કેટલાએક નિયમ આપણે ખાસ જાળવવાના છે. કેટલાંએક તબીયત બગડે ત્યારે અસાતા વેદનીય કર્મનો વાંક કાઢે છે. પણ આરોગ્ય શાસ્ત્રનો નિયમ તોડ્યો છે કે ભજીયા દાકલા ખાઇને જે અપચો થયો તેનો ઝાડો થયો છે કે ટાઢું ખાઇને તળાવે નાહવા ધોવાથી શરદી થઈ છે ને તાવ આવ્યો છે તે સમજતા નથી જેવી રીતે સરકારંનો કાયદો તોડવાથી આપણને શિક્ષા થાય છે, તેવીજ રીતે કુદરતી નિયમ તોડવાથી આપણને દુઃખ ભોગવવું પડે છે. આપણે ગંધ મારતા ઓરડાની અંદર સુઇ રહીએ કે મચ્છર ડાંશ ખૂબ કરડે તો પણ દરકાર ના કરીએ તો જરૂર તાવ લાગુ પડેજ. એમાં નશીબનો વાંક નથી. ચોખ્ખી હવાની કીંમત સ્ત્રીઓ તો શું પણ ઘણા પુરૂષો સમજતા નથી તેથી ઘણું શોષવું પડે છે. જે ઓરડામાં એકે બારી કે જાળીઉં નહિં હોય ને ઓરડાને ખાસો પેટી જેવો ગણે છે. અને ત્યાંજ ઘરનો મુખ્ય માણસ સ્ત્રી કે પુરૂષ સુવાનું પસંદ કરે છે, પણ આપણે જે અંગાર વાયુ નાક વાટે બહાર કાઢીએ છીએ તે ઝેરી વાયુ ફરીથી શ્વાસમા લેવો પડે છે અને ગુગળાવા જેવું લાગે છે. તેની સમજ રાત દહાડો સુઇ રહેનાર માણસને પડતી નથી પણ તેની ખરાબ અસર તેના શરીર ઉપર થયા કરે છે. રોગરૂપી ચોર ધીમે ધીમે તેના શરીરમાં પેસે છે. સુવાવડ વખતે તો ચોખ્ખી હવાનો નિયમ તદન બાજુએ મુકાય છે અને તે ઓરડાનું વર્ણન ઘણું લાંબુ આપવું પડશે માટે અહીં એ વિશે વિશેષ કહીશું નહિં. આરોગ્ય શાસ્ત્ર સહેલું છે. અને તે દરેકે વાંચવા જેવું છે.

માંદા માણસની માવજત કેવી રીતે કરવી તે પણ ખાસ બેરાંએ જાણવા જેવું છે. આપણા હિંદુ સંસારમા માંદાની આગળ બેરાજ વિશેષ ઉપયોગી થઇ પડે છે, પણ જો આ બાબતનું જ્ઞાન ધરાવતાં હોત તો બહુ સારૂં કામ કરે. અત્યારે તો માંદાની તબીઅત કેમ જાળવવી, તેને શું કરવાથી સારૂં લાગશે તેનો કાઇ વિચારજ નથી. ફક્ત આપણી ભોળી સ્ત્રીઓ સાફ દીલની હોય તેથી જે દરદી માગે તે આપે છે. માંદાનો ખાટલો કે પથારી કયા આગળ કરવી જોઇએ, તેની સાથે ક્યારે વાત કરવી જોઇએ. તેનું તેને ભાગ્યેજ જ્ઞાન હોય છે. તાવ આવતો હોય તો પરાંણે પરાણે પણ બે કોળીઆ ખવરાવવા મથશે પણ તાવમાં વૈદ્ય લંગન કરાવે છે તે જાણે છે છતાં રહેવાતુ નથી. માંદા માણસ માટે દાક્તર એમ કહે કે હલકો પચે તેવો ખોરાક આપજો તો બેરી એમ સમજે કે હલકો ખોરાક કોને કહેવો. ઝટ દાળ ભાત આગળ લાવી ખડા કરે કે રોટલાની ચાનકી લાવે. માંદાને આવું ભાવે નહિં તેમ પચે પણ નહિં. વળી વધારે ડાહ્યાં શીરો કરી આપે છે, પણ મગની દાળનું ઓસામણ ને ભાત, સાબુ ચોખાની કાંજી, રાબડી, દુધ, ભડકી વીગેરે હલકા ઝટ પચે તેવા ખોરાક કેમ બનાવવા તે જાણવાની જરૂર છે, માંદા માણસને વખત પ્રમાણે બરાબર દવા તપાસી જોઇએ તેટલી કાઢીને આપવી તે ચતુર નારનું કામ છે, નહિં તો પીવાની દવા ચોળવામા અને ચોળવાની દવા પીવા આપીદે. માંદાની આગળ કેવી રીતે બોલવું, જોવા આવેલા નકામા ગરબડ કરી ધાંધલ મચાવી મૂકે છે. ભાઇ તમે તો બહુજ લેવાઇ ગયા, હા, શું શરીરમાં રહ્યુ છે, ફક્ત હાડકા ને ખાળો રહ્યો છે. દરદી બીચારો જાણે કે મારૂં હવે આવી બન્યું ખરેખર હવે જીવાશે નહિં. ચાર દહાડા મોડો મરતો હોય તો આવા લોકો વહેલો મારે ! દરદીને આખી રાતનો ઉજાગરો હોય ત્યારે તેના સગા ગામ પરગામથી

જોવા જાય છે, મ્હોડે ઘડીક આંખ મીંચાય ત્યારે આવી વ્હાલેશ્રી આની ખબર પૂછે છે કે કેમ બાઈ હવે ઠીક છે કેને ! દરદી પરાણે આંખ ઉંચી કરી જવાબ કંઇક દે કે વખતે ના પણ આપે. ઐરીથી પોતાનાં ગુજરાતના બંદોબસ્તની વ્યવસ્થા કરવાનું ભાદા ધણીને આખર વખત સુધી પણ પૂછાતું નથી. પછી વીધવા થયા પછી આખો જન્મારો દુઃખમાં ગુજારવો પડે છે. મોટી ઉમરની સ્ત્રીઓને દાયણ (midwife) ના કામની માહીતિ આપવાની જરૂર છે. ગામડામા તો ખાસ કરીને સારી દાયણની ખોટ હોય છે. ગામડામાં ગાયજણ દાયણ અને ગાંયજો દાક્તર Surgeon હોય છે. અભણ દાયણ મળવાથી માનો આખો જન્મારો વખતે દુખમા જાય છે. આવી દાયણોને કંઈ નથી હોતું શરીર રચનાનું જ્ઞાન કે નથી હોતું આરોગ્ય શાસ્ત્રનું ભાન. ડોશીની ડોશી જે પ્રમાણે કરતી હોય તેજ પ્રમાણે નવી ઉમેદવાર કરે છે. આવી સ્ત્રીઓ ઘણી વહેમી હોય છે અને દુરાગ્રહી હોય છે. ગામડામા જ્યારે કોઈને પ્રસુતી કાળ હોય ત્યારે ચાર પાંચ બૈરાં એકઠા થાય છે અને પ્રસવ થતા વાર લાગે તો કાછડા મારી તે બૈરીનો આરો કાઢી નાખે છે. પેટું ગુંદે છે. વખતે માથા પણ મારે છે, બુમ પડાવે છે. બાઇની પીડાની કોઇ પરવા કરતું નથી પણ શેહેરમાં ભણેલી દાયણ હાથમા પીચકારી દ્વારા દવા મુકે છે કે તરતજ છુટા છેડા થઇ જાય છે. સુવાવડના ઓરડાની હકીકત તથા ખાવાનો બંદોબસ્ત તો આગળ ઉપર આપણે કહીશુ. આવા તોફાનમા નાજુક બાંધાની છોકરીઓ તો રામશરણ થઇ જાય છે. આ બાબતમાં પુરૂષોએ વિશેષ લક્ષ આપવા જેવું છે. ગામડામાં તો કેટલીક વખત બીજે ગામથી દાયણને બોલાવવી પડે છે ત્યારે તો પુરૂષની મુશ્કેલીનો પાર રહેતો નથી, પણ ન્યાતમા મોટી ઉમરની સ્ત્રીઓ આ બાબતનું શિક્ષણ લે તો ઘણા મોત થતા અટકે અને હજારો જુવાન સ્ત્રીઓ આશી વાદ આપે. પ્રજા પણ સશક્ત થાય.

ब्रह्म-आग्नि।

(लिखक-के० पी० जैन, अलिगंज)

संसारमें एक समय अग्नि पूजाकी भी प्राधानता हो चुकी है। भारतवर्षके विषयमें कहा जाता है कि वेदादि ग्रन्थोंमें अग्नि पूजाका विधान है। एवं प्राचीन द्राविड जातीय भारतीय भी सूर्यकी पूजा किया करते थे। परन्तु देखना है यह अग्नि कौनसी अग्नि है ? क्या हम हमसे बाह्य वस्तु है ? यथार्थ है कि सूर्य एक अद्भुत पदार्थ है पर क्या इस कारण हम उसकी पूजा कर सके हैं ? बेशक हमारा सूर्य बड़ा है पर इस सूर्यसे भी बड़े सूर्य विद्यमान है। हॉलेन्डके प्रो० केपटेयन (Prof, Kapteyn) ने हाल हीमें खोज की है कि रिगल (Rigel) नामक तारा हमारे सूर्यसे १२००० गुणा प्रकाशवान है एवं १९००० गुणा उससे बड़ा है। सुतरां इस रिगल तारेसे भी बड़े २ अन्य सूर्य विद्यमान हैं ! और ये हैं भी विस्मयपूर्ण ! कहते हैं किसीर में जीवधारी भी रहते हैं। परन्तु 'मनुष्यकी' शक्तियां इनसे भी विलक्षण हैं। वह इन सूर्योंकी पूजा नहीं कर सक्ता। जिस अग्निका वेदादिमें वर्णन है वह अग्नि हमारे हृदयकी अग्नि है। उसका निवास स्थान मनुष्यका हृदय है। यही अग्न 'ब्रह्म अग्नि' है। और अनादिनिधन अनंत शक्तिधारी आत्माकी शक्ति रूप है। वेदमें भी एक स्थान पर कहा है-अमरलोकसे उतर मृत्युलोकमें मनुष्योंके घरोंमें मेहमान

वत आ रही । इस प्रकार भी हमारे हृदयमें ही वह ब्रह्म शक्ति विद्यमान है । परन्तु विचारिए कि क्या हम इस मेहमानकी ब्रह्म रूपवत् आवा प्राप्त करते हैं !—अन्य समस्त देशोंमें भी इस अग्नि शक्तिको पूज्य दृष्टिसे ब्रह्मरूप माना गया है । प्राचीन कालमें इटली देशके अग्नि मंदिरोंकी पूजादि अद्वितीय कुमारिकाएं Vestal virgins किया करती थी । जियू लोग Jews लड़ाईके समय अग्निको लेकर चलते थे। आज तक इनके मेले किसान अग्निकी प्रदक्षिणा दे उसका आह्वानन करते हैं । जेवोहा (Jehovah) ने मोजेज (Moses) से अग्नि द्वारा बातचीत की और प्रत्येक Moses—प्रत्येक वीरात्मा जीवनध्येय इस पवित्र अग्निकी ध्वनिसे अवणित कर स्वपरकल्याणी होगा।

अर्जुनने भी कृष्णको स्वप्नमें अग्नि सदृश देहधारी और धधकते हुए मुख सदृश देखा था। इन कारणोंवश हमें आवश्यक है कि हम इस अपूर्व ब्रह्म अग्निको अपने हृदयमें सदा सुलगए रक्खें । परन्तु यह किस तरह सुलगती रक्खी जा सक्ती है ? कौनसा ईंधन इसकी तस ज्वाल में झोंका जायगा ? कौन कौनसी वस्तुएं इस ब्रह्माग्निकी बलिस्वरूप हो मिल की जायगी ? प्रथम वस्तु द्रव्य है । गीताके अनुसार द्रव्यको ही इस अग्निकी जीवन्यताके लिए होमित करना आवश्यकीय है । द्रव्यके अर्थ धन सम्पदासे हैं। हम चांदीके साथ २ ब्रह्माग्निको भी अपनाना चाहते हैं परन्तु 'सेवा धर्म'की पवित्र वेदी पर इसकी आहुति देनेको हम तयार नहीं हैं । तो क्या विस्मय हमारे हृदय ठण्डे हो जांय—हमारी ब्रह्माग्नि धीमी पड़ जाय ? पर भाईसाहब ! दूसरी वस्तुका त्याग इस धन त्यागसे भी परम दुष्कर है और वह है इन्द्रियाहुति । हमें अपनी इन्द्रियोंको भी बलिरूप चढ़ाना होगा । पर कैसे ? केवल दृढ़ **संयमसे** । इन्द्रियोंके पीछे जितने हम भागेंगे—मरेंगे उतनी २ ही हमारे हृदयकी ब्रह्माग्नि कमती होती जायगी । यदि हम अपनी इन्द्रियों पर अपना अधिकार रक्खेंगे तो उतना ही हमारा हृदय बलवान होगा और तदफल स्वरूप ब्रह्माग्नि दृढ़ हो चमकेगी । तृतीय बलिदान इस ब्रह्माग्नि हेतु हमें विद्याका करना होगा । हां ! विद्याका। हमें यह विस्मय पूर्ण विदित होगी और कालेजों आदिकी हम व्याख्या पेश करेंगे पर तब भी विद्याकी आहुति देनी होगी पर यह कैसे हो सक्ती है ? यह मान्य है कि आधुनिक सभ्य समाजमें प्राचीन भारतवर्षसे विद्याका प्रचार अधिक है । अर्थात् शास्त्रीय, राजनैतिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक सब ही तरहकी आधुनिक विद्या उस प्राचीन समयसे उन्नतावस्थामें हम मानते हैं । पाठशालाएं और विश्वविद्यालय भी बहुत हैं । परन्तु क्या केवल विद्या उपार्जन करना ही जीवनका अंतिम ध्येय है ? आधुनिक विद्याका ज्ञान रूप होना आवश्यकीय है । उसका बुद्धिरूप होना ही उत्कृष्ट है । और इनमें प्राचीन भारतीय हमसे कहीं बढ़े चढ़े थे । केवल पाठ्य विद्या हमारी बुद्धिको तेज करती है जिसके फल स्वरूप हम अपने सदृश आर्य-भाइयोंका गला काटनेको सदैव तत्पर रहते हैं । और हमारा विज्ञान केवल संहारक मशीन बन



श्रीमान् ब्रह्मचारी–
नेमीसागरजी वर्णी–म्हैसुर।





श्रीमान् दानी सेठ घासीलालजी गोथा–उज्जैन,
(आजतक करीब १०००००) आप दान करचुके हैं)

'जैन विजय' प्रेस–सूरत



सिवनीमे नागपुर प्रां० खं० दि० जैन सभाके समयमे शास्त्रिय परिषद्का ग्रूप।

बैठे हुए-(१) प० ...लालजी शास्त्री, (२) प० पन्नालालजी सोनी, (३) प० ग्रपचन्दजी शास्त्री, (४) न्या० प० मक्खनलालजी शास्त्री, (५) सेठ गंभीरमलजी पाड्या, (६) ब. कु. भू. प धन्नालालजी, (७) प. पन्नालालजी बाकलीवाल, (८) न्या. पं. वंशीधरजी शास्त्री, (९) प० वासुदेवजी।

खड़े हुए-(१) सेठ ...शालचदजी, (२) उदयलालजी, (३) ब्र. हीरालालजी, (४) प. नन्दनलालजी (५) म. प. कस्तूरचंदजी, (६) पं. छेदालालजी, ... (८) ...के एक सज्जन (९) डालचदजी, (१०) केशरीचदजी।

रहा है। और इस सहारक सभ्यतासे संसारमें सुखका साम्राज्य कभी भी स्थापित नहीं हो सकता है। मान मदको बढ़ानेवाला साहित्य कभी भी राष्ट्रोंके दुःख दूर नहीं कर सकता है। आधुनिक विद्याका ज्ञानसे पूर्ण होना नितांत आवश्यकीय है। हमारा साहित्य जीवन प्राणी समुदायके लिए होना योग्य है। विद्या जितनी हम सीख सकें सीखें पर अंतमें अपने हृदयकी महाग्निको समर्पण करें जिससे प्रेमका संचार हो और एकता की शंखध्वनीसे सब मानमत्सर सुभट द्रवीभूत हो जांय।—हम सेवा धर्मकी भी बहुत उच्च पुकार किया करते हैं। पर देखना है कि कितने हममेंसे सेवाधर्मसे विषम मार्ग पर चलनेको तैयार हैं। श्रीकृष्णने सेवाधर्मके विषयमें कहा है कि 'सेवाधर्मके अनुयायियोंमें मुख्यता दो गुणोंकी आवश्यका है अर्थात प्राणीपति Reverence और परिप्रश्न Questioning) वर्तमानमें जो मानव राष्ट्रोंकी सेवा करने चाहते हैं उनमें इन गुणोंका होना परमावश्यकीय है। इन दोनों गुणोंका अविनाभावी सा संबंध है। और वास्तवमें है भी ठीक। एकके अभावमें एक अधूरा रह जाता है। परन्तु इनमेंसे एकका भी अभाव सेवाधर्ममें बाधक है। विज्ञान द्वारा, अन्यान्य देशोंके इतिहास द्वारा, और सभ्यताके विकास संबंधी तुलनात्मक अध्ययन द्वारा एवं देशपर्य्यटन व पाश्चमिक रीति रिवाजोंके अध्ययन द्वारा इन भावोंको अपनेमें उदय होने दीजिए। भारतवर्षके मनुष्य इस दुनियांमें क्यों पिछड़े हुए हैं? हममें क्या दोष हैं? किन बातोंकी कमी है? हमें अपनी असमर्थताको (Defects) अवश्य ही शुद्ध हृदयसे परमात्मा एवं जगतके निकट प्रगट करना योग्य है। अपनी वर्तमान अवस्था पर खूब विचार करिए। अपनी जातिमेंसे समस्त कपताइयोंको दूर करनेका प्रयत्न कीजिए। यह न कहिए कि अब भारतवर्षका ह्रास ही होना है। और जीनेकी आशा है तो 'केवल पाश्चात्य देशोंके सदृश जीवन वृत्ति धारण करनेमें। भारतवर्षकी उन्नति उसीके वास्तविक रूपमें ही विद्यमान् है। अन्यके अनुकरणमें नहीं। हमें उसकी आत्मिक शक्ति पर भरोसा करना चाहिए। और समस्त जगतको आत्मिक तत्व, एवं अहिंसा और 'दया' के अपूर्व मंत्रको बताना चाहिए।

नोटः-Devalya Review के लेखका भावानुवाद।

नैतिक–शिखामण.

પ્રીય બંધુરે સુણો શિખામણ સારી, વાત કહું હું વિચારી
આ જગમાંરે શીલ સદા તમે પાળો, નવવિષયમાં દિન ગાળો.

છે જન્મ મરણ જન માથેરે
પુન્ય કરો તમે નિજ હાથેરે
જીન આણા ચઢાવો માથેરે—

તથી થાશેરે કામ સરળ તમારા, નવ વિષયમાં દિન ગાળો.

લાખ હોય કે-એક પાઇરે
જુઠું બોલો ન મુજ ભાઇરે
કામ કરો જે એક આહીરે—

સત્ય બોલોરે હરએક કામની માંહી વાત કહું હું વિચારી

ક્રોધ ટરો હેતે કરાવેરે
માન વકર, સદા મુકાવેરે
માયા સંસાર ફેરા ફેરાવેરે

તેથી છોડોરે વીર વચન ઉર ધારી, વાત કહું હું વિચારી.

એક ——— હૃદય.

मुलांस मराठी शाळा, हायस्कूलें व कॉलेज इत्यादि मध्यें शिक्षण देऊन विद्या संपन्न कर ण्याचा, कोंडाभाकर खाऊन दिवसभर दुसऱ्यांचे इथें नकों नळ येईपर्यंत शारीरिक श्रम करणाऱ्या मजुरांचा; थंडीवारा, उन्हतान्ह यांत सारखे खपून वर्षभर शेतांत काम करणाऱ्या कृषीवळाचा; शास्त्रीय शोध लावण्यास्तव दिवसभर डोकें खाजवून शोध लावणाऱ्या शास्त्रज्ञांचा, जगांत वरचेवर घडून येणाऱ्या भयकर संग्रामाचा इतकेच नव्हेतर रानावनांत भटकणाऱ्या स्वैर-संचारी पश्वादिकांचा काय उद्देश असेल बरें ?

सुखार्थं सर्वभूताना मतः सर्वा प्रवृत्तय ॥

अशा प्रकारें सर्व प्राणी मात्रांचा सुख मिळावें हा मुख्य उद्देश आहे. आणि ते मिळणारे सुख शरीर द्वारें भोगावयाचे असल्याने—

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्य कारण यतः ॥

धर्मादि पुरुषार्थ साधण्यास, सुख मिळवून त्याचा उपभोग घेण्यास शरिराचे आरोग्य प्रथम प्राप्त व्हावयास पाहिजे. सद्यकालीन परन्तु जे भविष्यांत होणारे राष्ट्राचे आधारस्तमव ज्यांच्या पासुन समाज हिताचे कार्य करण्या लायक अशी परोपकारी, उदात्ती, सकस प्रजोत्पत्ति होणार ते विद्यार्थी आरोग्ययुक्त अवश्य असावयास पाहिजेत. परन्तु अति खेदाची गोष्ट ही कीं, सध्या जिकडे पाहवें तिकडे अशक्त, लप्पड चर्येचे अरुंद छातीचे असे रोगीच दिसुन येतात. म्हणूनच सद्यकालीं हीन स्थितीत असलेला विद्यार्थी वर्ग आरोग्य प्राप्त करुन देणाऱ्या नियमा पासुन कसा विमुख आहे हे आम्ह दाखविणें आहे.

विद्या आणि ब्रह्मचर्य यांचा निकट संबंध आहे. किंबहुना विद्यार्थी म्हणजेच ब्रह्मचारी. कारण प्राचीनकाळीं विद्यार्थ्यांचा वय च्या दोन तप इतका काळ अरण्यात गुरु गृहीं विद्यार्थ्यांना बरोबर ब्रह्मचर्य पाळण्यांत जात होता. त्यामुळें तो विद्यार्थी वयाच्या २४ वर्षे पावे तों ब्रह्मचारी या पदाला पात्र होत असे. परंतु सध्या तो मनू पलटला पूर्वीचा काळ विरक्तपणाचा होता. या उलट सध्याचा काळ म्हणजे स्वैरसंचारी शृंगारिक काळ बनला आहे. पौराणिक काळीं विद्यार्थी अरण्यांत गुरु आश्रमी विद्या संपादन करीत. त्यावेळचे विषय धार्मिक, आध्यात्मिक, व्यवहारिक, शारीरिक असे असत. विद्यार्थी या विषयाचे ज्ञाते झाल्याने व सदाचरण चा ठसा त्यांच्या मनावर चांगला उमटविला गेला कारणानें ते धैर्यवान, शक्तिवान, पूर्ण आरोग्यवान व कर्तृत्व-वान निपजत असत. आरोग्य रक्षणाचे जे आहार, निद्रा, व्यायाम, ब्रह्मचर्य इत्यादि नियम योग्य रीतिनें पाळले जात व शृंगारिक, कामविकार उत्पन्न होणाऱ्या अशा वस्तू पासुन त्यांना अलिप्त ठेवण्यांत येत असे. परंतु सद्यस्थिति त्या उलट आहे. ब्रह्मचर्य विघातक अशा शृंगारादि रसाने पूर्ण भरलेल्या शहरातून विद्यापीठें स्थापन झालेली आहेत. व होत आहेत. तसेच शिक्षण क्रमही बदलेला आहे. शारीरिक व मानसिक आरोग्याच्या रक्षणाचा व सद्वर्तनाचा ठसा विद्यार्थ्यांच्या मनावर उमटविला जात नाहीं त्यामुळें सुध्दां धैर्यवान्, शक्तिमान्, पूर्ण आरोग्यवान् व कर्तृत्ववान् विद्यार्थी विद्यापिठांतून निघालेले कचितच दृष्टोत्पत्तीस येतें. जर शारीरिक व मानसिक आरोग्याच्या रक्षणाचा व

सद्वर्तनाचा उत्तमसा ठसा विद्यापिठांतून व घरीं अज्ञ पालकांकडून विद्यार्थ्यांच्या मनावर उमठविला जात नाहीं, तर मग अव्यवस्थितींत असलेली विद्यार्थ्यांची मनें आरोग्य विघातक शृंगारादि रसानें पूर्ण भरलेलीं नाटकें पाहून व वाचून पवित्र विचाराची, धैर्यवान, नीतिमान कशी बणतील ?

नाटकानें आरोग्यचे नियम पाळले जात नाहीत म्हणून सध्याचे विद्यार्थी अशक्त, कमकुवत, धैर्य हीन असलेले दिसुन येतात असें वर दाखविण्णांत आले आहे. विद्यार्थीदशा म्हणजे ब्रह्मचर्यास्थेचा काल आहे. आणि कामविकार उत्पन्न करणाऱ्या अशा नाटक दि विषयांत त्याचे मन जर पांगेल तर मग ब्रह्मचर्य कसें टिकेल ? नाटक पाहणारे कित्येक विद्यार्थी नाटक पाही त्यानंतर नाटकी पार्टी प्रमाणें आपले स्वतःचे वर्तन ठेवण्याच्या नाहीं लगतात. व त्या मुळें नुकसान करून घेतात.

नाटकाचा शिक्षण देऊन मनोविचार जागृत करणें आणि मनोरंजन करणें हे जे उद्देश असतात त्यांपैकी मनोनिग्रही सुज्ञ असें थोडें विद्यार्थी शिक्षणाचा भाग घे। असतील परन्तु तसले विद्यार्थी सांपडणे मुष्कील. चवदा, पंधरा वर्षांच्या मुलांचें मुद्दा कामविकार लवकर जागृत होत आहेत. त्यामुळें जास्त काळ ब्रह्मचर्य पाळले जात नाहीं. अकालीच ब्रह्मचर्य बिघडते. मनानें कामविकार उत्पन्न करणाऱ्या शृंगारिक वस्तूंचें स्मरण किंवा वाचन व त्या वस्तूंचे दर्शन आणि मानसिक शृंगारिक चेष्टा यांचा त्याग हेच विद्यार्थ्यांचें ब्रह्मचर्य होय. ब्रह्मचर्य हे कायिक, वाचिक व मानसिक अशा तीन प्रकारानें पाळावें लागते. त्यांत मन स्वाधीन ठेवून ब्रह्मचर्य पाळणें मुख्य व कठिण आहे. वीर्याचा सांठा असणें हेच आरोग्याचे बीज आहे. परन्तु प्रणयी नाटक कादंबऱ्या व सिनेमे वरचेवर निघत आहेत. त्यांच्या वाचनाने व पाहण्यामुळे कोवळ्या व अल्पवयी मुलामुलींच्या मनावर या शृंगार रसाचा परिणाम झाल्यानें ब्रह्मचर्य आहीं नष्ट होऊं लागले आहे. सतरा आठरा वर्षाचे बालकमा तरुण पितृ पदास पोहचत आहेत व तेरा—चवदा वर्षांच्या बालीका कडेवर मूल घेऊन माता म्हणून फिरत आहेत परंतु सुशिक्षण किंवा दुःशिक्षण देण्याच्या हेतु मुळें कीं काय न कळे, कित्येक शाळा, हायस्कुले व कोलेजे मधून विद्यार्थ्यांना खीपार्ट देऊन शिक्षक वर्ग पुढें बसून विद्यार्थ्यांच्या तोंडून प्रेमी, कामविकार उत्पन्न करुन देणारी नाटकांतील प्रणयी भाषणें सध्यां ऐकण्यांत येत आहेत. सध्या जगांत शाळेंतील शिक्षण बरोबर कामी प्रेमविकार दर्शक करून देणांच्या विषयांचे (गोष्टींचें) शिक्षणही द्यावें लागते कीं काय ? अनेक सन्देह्या शृंगारिक रसाचे चटक लावणारे सिनेमा नाटका सारखें खेळ बाल बालीकांना मुद्दा कामवश करीत आहेत. ही शरमेची गोष्ट आहे कीं पंधरा सोळा वर्षाच्या मुलांना वीर्यपात होतो. व स्वप्नावस्ता होऊं लागते. अशा अनेक प्रकारे आयुष्यरूपी इमारतीचा वीर्यरुपी पाया ढासळला आहे. हे शिक्षित व सुधारक लोक सुद्धां जाणत आहेत. सध्यां अकाल मृत्युचे प्रमाण जास्त वाढत असल्याने त्यांत नवल ते काय ! अशा स्थितीला सुधारणा—शिक्षण समजत असतील

तर तुसती सुधारणा एवढेंच नांव न देतां अप मृत्यु येणाऱ्या रामबाण व यशस्वी उपायांची उन्नति अथवा सुधारणा असें नांव द्यावें. वरील प्रकारचा प्रश्न उठणें म्हणजे आमच्या राष्ट्राचा नाशच होय. 'कारण विद्यार्थ्यांना शारीरिक शिक्षण देऊन शूर, वीर बनवीण्याची इच्छा न होता स्त्री पार्टी बनविण्याची इच्छा व्हावी हे भावी राष्ट्रपीढीचे दुर्दैवच नाही तर दुसरें काय !

कोणत्याही देशाचे सद्वर्तन त्या देशांतिल लहान मुला मुलींच्या शारिरीक व नैतिक शिक्षणाच्या पूर्णत्वावर अवलंबून असते. परंतु नाटकांनी मुला मुलींचे शारीरिक व नैतिक शिक्षण पूर्ण होते काय ? कोंण्हाही नाहीं. उलट मात्र तोटाच होत आहे. सध्याची श्रृंगारिक •नाटकें व कादंबऱ्या वाचणाऱ्या किंबहुना त्यांचे अध्ययन करणाऱ्या व पाहणाऱ्या विद्यार्थ्यांचे मनात असें केव्हांतरी येते काय कीं, असें करण्यांत आपले हातून ब्रम्हचर्य पाळण्या संबंधीच्या एका महत्वाच्या नियमाचे उल्लंघन होत असून त्यामुळें आपण आपला सर्वस्वी नुकसान करून घेत आहो ! हल्लीची नाटकें म्हणजे संगीताचा बुरखा घेतलेले एक प्रकारचे तमाशेच असून लहान मुलांस विद्यार्थ्यांस एखाद्या वाईट गोष्टीचे ज्ञान नसेल तर ते करून देणारी आहेत. परंतु अशी पोचट व फाजील श्रृंगारांनी भरलेली नाटकें मोठ्या उत्सुकतेने पहात असतांना विद्यार्थी प्रेक्षकांस कधीतरी वाटते काय ? कीं असें करण्यात आपण शिमग्यातील फाजीलपणाचा एक सेलका धडा शिकत असून त्या पासून आपण आपल्या ब्रम्हचर्याची हानी करून घेत आहो ! नाहीं. कधीही नाहीं. काम हा प्रबल शत्रू आहे. त्यानेतर पूर्वीच्या महान तपस्वी लोकांची सर्वे भ्रष्ट केली आहेत. तर मग हल्लीच्या सुधारणेच्या स्वैरसंचारी काळांतील अज्ञ व अपक्व मनाच्या बाळबालीकांस तो कसा नीट राहूं देईल ? आपल्या देशापेक्षां इंग्लंड सारख्या देशांत गाणें बजावणें नाटक सीनेमे नृत्य इत्यादीचे प्रकार जास्त प्रमाणांत असल्याने त्यांच्यात वारंवार प्रेमांतर करण्याचे (काडीमोडण्याचे) प्रकार जास्त होतात. कारण श्रृंगाररसाने त्यांची मने प्रेमी बनतात व मग ते एक वस्तू (स्त्री किंवा पुरुष) सोडून दुसऱ्या वस्तुवर प्रेम करूं लागतात आणि शृंगारिक बनल्याने कोणत्याही सद्गुणाची चाड न राहिल्याने शील बिघडवून घेतात.

एकादा वाचक अशी ही शंका घेईल कीं, जर विद्यार्थ्यांनी नाटकें कादंबऱ्या सारखीं पुस्तकें वाचूं नयेत व नाटके पाहूं नयेत तर मग हीं नटकें किंवा काव्यें, चंपूजी पूर्वीच्या आचार्य, ऋषींनीं शृंगार इत्यादि रस भरून लिहली ती कशा करितां ? ते लोकका वेडे होते ? याचे उत्तर असें आहे कीं ते लोक वेडे नव्हते तर पुष्कळ शहाणे व धोरणी होते. त्यांनी लिहिलेली नाटक, काव्ये, चंपू इत्यादि विद्यार्थ्यांच्या हातीं वाचण्यास कादाचित पडत असतील विद्यार्थी वयाच्या २४ वर्षे पर्यंत तो अरण्यातील गुरु आश्रमीं विद्याध्ययन करीत त्यावेळ पावेतो त्यांच्या मनावर धार्मिक शिक्षणाचा परिणाम जबरदस्त झाल्याने सद्वर्तनाचा व शारीरिक आणि मानसिक आरोग्याच्या रक्षणाचा ठसा उत्तमरीत्या उमटविला जात असे. त्यामुळे त्यांची मने पक्क

होत व ह्या नाटकादि विद्यार्थ्यांना परिणाम मागे पडत असे-ब्रह्मचर्य विरत अशा गोष्टी पासून दूर ठेवण्यासाठीं धार्मिक शिक्षणाच्या परिणाम जबर्दस्त केला जात असे परन्तु तशा प्रकारचा धार्मिक शिक्षणाचा जबरदस्त परिणाम हल्लींच्या शाळेतून विद्यार्थ्यांच्या मनावर होत नाहीं. म्हणूनच वरील प्रकाची नाटकें विद्यार्थ्यांप वर्ग होत. पुष्कळ अंशी विद्यार्थ्यांस श्रृंगारिक नाटक कादंबऱ्या बिघडवीत आहेत. या कारणास्तव त्यां पासून त्यांनी अलिप्त राहिल्यास ब्रम्हचर्य पालन करण्यास बरे पडेल.

आता पर्यंत कामविकार उत्पन्न होऊन ब्रम्हचर्य बिघडेल अशीं नाटकें विद्यार्थ्यांनीं पाहून येत म्हणून सांगितले परंतु नाटकाचा शिक्षण देऊन उच्च व पवित्र मनोविचार जागृत करण्याच्या कामीं उपयोग होत असेल तर खास विद्यार्थी करितात म्हणून वरील कामविकार इत्यादि दोषांनीं व ही पार्ट याने रहीत आणि वीरभाव, उदारपणा, देशाभिमान इत्यादि उच्च गुणाने युक्त अशीं नाटकें तयार करून राष्ट्रीच्या ऐक्यी दिशा करवून विद्यार्थ्यांस दाखविल्यास बरे पडेल. परंतु वरील प्रकारचा नाटकें हल्लीं बोटावर मोजण्या इतकी सुद्धां नाहीत. तरी भविष्यां होणारी नाटकें पाहण्यास हरकत नाहीं असे समजून विद्यार्थ्यांनी दृष्यावी कामविकार उत्पन्न करणारी नाटकें पाहणे हिताचे होणार नाहीं म्हणून सध्या त्यानी नाटका पासुन दूर राहणें इष्ट आहे.

उपसंहार।

विद्या आणि ब्रह्मचर्य याचा निकट संबंध आहे म्हणुन मागे सांगण्यात आलेच आहे. विद्या संपादन करणारा जो विद्यार्थी 'वर्ग, तो ब्रह्मचारी असला पाहिजे. देशाचे सद्वर्तने त्यांतील विद्यार्थ्यांच्या शारीरिक व नैतिक शिक्षणाच्या पूर्णत्वावर अवलंबून आहे. तेव्हां विद्यार्थी वर्ग ज्या शिक्षणाचे योगे सद्वर्तनी बनेल असा शिक्षणक्रम असला पाहिजे. ज्याच्या योगाने शारीरिक व नैतिक शिक्षण मिळून मन उदार, देशाभिमानी, धर्माभिमानी बनेल अशाच गोष्टी विद्यार्थी वर्गा पुढें दरचेवर यावयास पाहिजेत. म्हणजे त्यांचे तो अनुकरण करूं लागेल. शरीर व मन ही परस्परावलंबी आहेत. ' निकोप शरिरांत जोमदार मन असतें व जोमदार मनाचे शरीर निकोप राहतें. वीर्याचा साठा असणे हेच आरोग्याचे बीज आहे. विद्येशिवाय ब्रह्मचर्य टिकणार नाहीं व ब्रह्मचर्या शिवाय विद्या (मग ती कोणतीही असो) साध्य होणार नाहीं.

या प्रमाणें जोमदार मन, निरोप शरीर, शारीरिक व मानसिक पूर्ण आरोग्य, सद्वर्तन हें प्राप्त होण्यास नाटकापासून हल्लीचा विद्यार्थी वर्गाने दूर असावयास पाहिजे म्हणजे त्याचे कल्याण होईल. इत्यलं विस्तरेण.

कुतर्कनाएँ और समाजका भविष्य।

यद्यपि यह निर्विवाद सिद्ध है कि जब विचारशील पुरुष ही नहीं किन्तु सर्व साधारण भी अमुक वस्तुके लिए अपनी गांठसे एक पैसा भी व्यय करते हैं तो स्वयं अमुक वस्तुकी परीक्षा करते हैं और यदि वे अमुक वस्तुकी परीक्षा करनेमें अशक्य एवं असमर्थ हों तो अन्य व्यक्तियोंसे परीक्षा करनेको अनुरोध करते हैं और अन्तमें अमुक वस्तुके संतोषजनक प्रमाणित हो जानेपर वे अमुक वस्तुका मूल्य अपने अपने पाससे देनेको उद्यत होते हैं। अन्यथा नहीं। तो भला जिस धर्मको हमें आजन्म नियम बद्ध होकर परिपालन करना हो, और जिस धर्मके आचार्योंको हमें अपने पूज्य पुरुष मानकर सदैव आदर एवं सम्मानकी दृष्टिसे देखना हो, जिस धर्मके प्रसादसे हमें सांसारिक और पारमार्थिक एवं उभय लौकिक सुखोपभोग करना हो, और चिरस्थाई सुयश लाभ करना हो, कहांतक कहें जिस धर्मके संरक्षणार्थ अपने तन, मन, धन एवं प्राणोंको भी न्यौछावर करना हो, उसकी परीक्षा करनेमें वे प्रमाणसे चेष्टा क्यों नहीं करें? अतः हमारे जैनाचार्योंने भी यही सोच विचार कर परीक्षा-प्रधानियोंको जिनागम प्रमाणके अन्ध श्रद्धालुओंसे उच्च श्रेणिमें स्थान दिया है। फलतः यह निवेदन करना अनुचित नहीं होगा कि ऐसी भीतोंको दाह देना चाहिए कि जिनकी नींव बालूरेतपर हो। यानि नीवका सुदृढ़ होना परमावश्यक है। अन्यथा न जाने किस दिन, किस अवसरपर किस क्षणमें वह भीत गिरकर अन्य निकटस्थ (समीपवर्ती) स्थानोंका अधःपतन करदे और उनसे कुछ दूरीके स्थानोंको भी विचलित करदे। अर्थात वह व्यक्ति जिसने अमुक धर्मको बिना परीक्षा किए ही ग्रहण कर लिया है कभी न कभी समाजको कलंकका टीका न लगा दे, यह भय समाजको प्रति क्षण चिंतित रखता है। अतएव जिस धर्मको अंगीकार करना हो, उसके वास्तविक तत्त्वोंका मनन और अनुभव श्रेयस्कर जान पड़ा, जिससे भविष्यमें सुमेरु पर्वतके सदृश अन्य कुमार्गोंकी वायुसे तनिक भी विचलित न हों किंतु उनसे सदैव सावधान एवं सचेत रहें। साथमें ही यह भी कतिपय अंशोंमें सत्य है कि सर्वसाधारणमें असाधारण बुद्धि, विलक्षण प्रतिभा और चातुर्यतादि सद्गुणोंका अभाव होनेके कारण ही, ऐसे कठिन कठिन, गहनगम्भीर विषयोंको हृदयङ्गम करनेमें आशङ्काएं और कुतर्कनाएं आ उपस्थित होती हैं और जिन शङ्काओंका समाधान होना आवश्यकीय समझ, कई सभ्य पुरुष दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रोंमें प्रगट करवा कर जनताके सम्मुख उपस्थित कर देते हैं। किन्तु प्यारे पाठक गण, उन सभ्य पुरुषोंको यह ज्ञान नहीं कि उन शङ्काओंका यथोचित समाधान न हो सकने पर, अन्य भोले भाइयोंका श्रद्धान भी उत्तरोत्तर ह्रास होता जायगा और वे ही पुरुष जो आज समाजके नेता कहलाते हैं कट्टर प्रतिपक्षी होनेमें (पूर्वमें जिस प्रथाको धर्मका अङ्ग मानते थे, उसी प्रथाका घोर विरोध

करनेमें) तनिक भी संकोच नहीं करेंगे। यह तो हुआ सो हुआ किन्तु प्यारे धर्मानुरागियो! यह जान कर आपको भी असीम कष्ट और हार्दिक वेदना होगी कि हमारी वर्त्तमान शङ्काएँ और कुतर्कनाएँ हमारे भविष्यमें भारी कुठाराघात होंगी यानि हमारी सन्ततिके उन्नत-पथमें भी वे ही बाधक हो कर उन्हें ऐसे २ अशुभ एवं निंद्य कर्मों और दुराचारोंमें रत कर देंगी जो इतिहास वेत्ताओंसे अविदित नहीं हैं। इतिहास-वेत्तासे मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि कोई वर्तमान समयानुकूल तवारीखोंको कण्ठस्थ याद रखनेवाला हो किन्तु जो अपनी सूक्ष्म दृष्टिसे यह जान सकता हो कि वर्तमानमें किस व्यक्तिविशेषके ... [illegible] यथेष्ट सिद्धि प्राप्त हो सकती है। ... [illegible] व्यक्तिके कार्याचरणसे भविष्यमें उन्नति या अवनति किस तादृशे होगी। सच तो यह है कि जबसे भारतमें अंग्रेजी शासन, अंग्रेजी सभ्यता और अंग्रेजी शिक्षाका प्रचार हुआ है, तबसे ही हम वर्तमान समयानुकूल सभ्यशिरोमणि कुतर्कनाओंमें सिद्धहस्त बन बैठे हैं क्योंकि [illegible] इसे तो आप भी सहमत हैं कि हमारे [illegible] सब शिक्षा विभागोंकी बागडोर [illegible] गवर्नमेन्टके हाथमें है और हम [illegible] उनके अधिकारमें हैं। मदर्सोंमें [illegible] और बीजगणित पढानेसे एवं [illegible] जिसे हमें, हमारी विशुद्ध विमल [illegible] मानसिक शक्तियोंसे भी हाथ धो [illegible] है, और जो कुछ थोड़ी बहुत बुद्धि [illegible] है, उससे भी हमें अन्य कारणोंसे [illegible] पड़ा है।

वर्तमान समयमें हमारी शांतिप्रिय जैन जातिमें विद्वज्जन जुगनुके सदृश हैं—वैसे तो प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको विद्वान् और बुद्धिमान समझता किन्तु यदि दिव्य दृष्टिसे देखा जाए तो विदित होगा कि जैन शास्त्रोंके सच्चे ज्ञेता इनेगिने दो चार यानि बहुत थोड़े हैं। हां, हैं अवश्य। अभी तक सर्वथा अभाव नहीं हुआ है। तो प्यारे पाठक! क्या यह कभी संभव है कि दो चार इने गिने समाजके विद्वान अन्य शेष सर्व व्यक्तियोंकी शंकाओंको दूर करनेमें समर्थ होंगे? बल्कि मेरी तो यह अनुमति है कि अंतमें वे दो चार सत वक्ता भी अन्य व्यक्तियोंका समर्थन एवं अनुमोदन न करने लगजांए। जहां ऐसा हुआ कि सम्यश्रद्धान बलाये ताक रख दिया जायगा। और जब श्रद्धान ही नहीं रहेगा तो सम्यक्त्वकी चर्चा कैसी! गरज यह है कि हम धर्मसे पराङ्मुख हो कर ऐसी ऐसी मिथ्या प्रवृत्तियोंमें रत हो जाएँगे कि फिर हमारा उद्धार होना दुःसाध्य होगा। अतः पाठकगण! आप इस लघु लेखका भाव यह न समझिए कि आप शङ्काएँ न करें किन्तु इतना तो मैं अवश्य कहूंगा--चाहे आप क्रोध करें -कि ऐसी साधारण निर्मूल शङ्काएँ व कुतर्कनाएँ न करें कि जिससे अन्य व्यक्तियोंको आपकी अधोवास्थाका ज्ञान हो और जिससे समाजके भविष्यमें सिवा हानि लाभ कुछ न हो। मैं यह नहीं कहता कि कोई विषय यदि समझमें नहीं आया हो तो भलीभांति नहीं समझा जाए बल्कि मेरे बार बार समय समय पर अनुरोध करनेका तात्पर्य यह है कि ऐसी शङ्काएँ जैन विषयमें नहीं होनी चाहिए जिनसे धर्मसे

अरुचि उत्पन्न हो जाए और हम "इधरके रहे न उधरके रहे" की कहावत चरितार्थ होने लगे।

प्यारे सहृदय पाठकगण! आप यह सुनकर मेरा हास्य न करें कि शङ्काओंसे भी समाजका भविष्य बिगड़ता है या वर्तमानमें भी समाजको अनेक प्रकारके असह्य दुःख भोगने पड़ते हैं। प्रथम तो समाज व्यक्तियोंका समूह है अतः व्यक्तिगत दुःखसे समाज दुःखित, व्यक्तिगत अश्रद्धाजनक शङ्काओंसे, समाज अश्रद्धानी, व्यक्तिगत उन्नतिसे समाज उन्नत और व्यक्तिगत अवनतिसे समाज अवनत होता है। अतः यह सिद्ध हुआ कि अश्रद्धाजनक शङ्काओंसे समाजका भविष्य बिगड़ता है। द्वितीय उदाहरणार्थ आपको भले प्रकार ज्ञात है कि अभी उदयपुरमें कुछ तेरहपंथी और बीस पंथियोंमें प्रतिमाजी पर केशर और पुष्प चढ़ानेके विषयमें ऐसी हृदयविदारक और करुणाजनक घटना हुई जिससे प्यारे पाठक! यदि आपके होंमें साथ रने हस्ताक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया और पंचायतोंके स्वत्व रनो कुतर्कनाओंके बदौलत छीने जा चुके हैं और रहे सहे भी छीने जा रहे हैं॥ सावधान॥ सचेत॥ अन्यथा फिर पश्चात्ताप करनेसे कुछ न बन पड़ेगा जब "चिड़िया चुग गई खेत" अलमिति विस्तरेण।

एक जातिसेवक।

कन्या पुकार।

क्या कहूँ किससे कहूँ सुनते नहीं फरियाद भी।
सख्त मुश्किल है महरवां हो गए जल्लाद भी॥
ऐ कौमके पंचों तुम्हें भी मौत आवेगी कभी।
या भूला दी है कहीं उसने तुम्हारी याद भी॥
जुल्म बरपा कर रहे हैं इस कदर ये वी[illegible]
रोकता कोई नहीं है ये बुरी दुनिया[illegible]
बांधते है [illegible] गर्दनमें बकरी हाय हाय।
हो रहे हैं इस तरह पर सैकड़ों बरबाद भी॥
होगा नहीं कुछ हकमें अच्छा, व[illegible] देखना।



चरित्र–

लाला रंजीतसिंह जैन अग्रवाल B. S. C. (U. S. A.)
('अग्रवाल बन्धु' आगरासे उद्धृत)

मिसेज एनी बेसण्ट जून सन् १९१९ में लंडनके सुप्रसिद्ध पत्र "डेली हेरल्ड"में लिखती हैं:–

"भारतके लगभग आधे आदमियोंको दिनभरमें केवल एक बेर रोटी मिलती है और वह भी अपर्याप्त।"

अमेरिकन सिनेटर मिस्टर फ्रांसने अपनी सिनेटमें भारतकी भयंकर दरिद्रताका चित्र इस प्रकार खींचा है.–

नाम देश	जातीयधन व व्यक्तिगत		जातीय आय, व्यक्तिगत	
यूनाइटेडस्टेट्स U.S.A.	२,१५४.००	डलर	३७२.००	डालर
ग्रेट ब्रिटेन	१,९१३.००	,,	२४२.००	,,
फ्रांस	१,२३८.००	,,	१८२.००	,,
जर्मनी	१,९१२.००	,,	१९६.००	,,
आस्ट्रिया–हंगरी	१,१२१.००	,,	११२.००	,,
इटेली	९९९.००	,,	१११.००	,,
हिन्दोस्तान	७०.००	,,	९.७५	,,

पक्षपाती लोग जो चाहे सो कहे परन्तु इन अङ्कोंको देख कर देशभक्त भारतियोंकी आँखे अश्रुपात किये बिना नहीं रह सकीं। देशमें बढ़ती हुई कंगालीको देख हमारे पूज्य नेता पुकार २ कर एक स्वासे कह रहे हैं कि "भारतका कल्याण केवल यहां शिल्प तथा कला कौशलकी वृद्धिसे ही हो सकता है"। किसीने कहा है "भूखे भजन नहीं होत गोपाला।"

हम आज एक ऐसे ही भारत सपूत नव-युवकका सचित्र जीवन चरित्र लिपिबद्ध करते हैं, जो भारतके कल्याणार्थ कला कौशलकी उच्चतर शिक्षा प्राप्तिके लिये सात वर्ष पर्यंत पाताल देश अर्थात् अमेरिका रह कर आये हैं।

हमारे चरित्रनायक **लाला रंजीतसिंहजी** जैनका जन्म ३ अक्टूबर सन १८९२ को दिल्लीके एक उच्च अग्रवाल घरानेमें हुआ। आपके पितामह बाबू प्यारेलालजी पब्लिक वर्कस डिपार्टमेंट P. W. D. में डिस्ट्रिक्ट इन्जिनियर थे और आपके पिता बाबू मोतीलालजी दिल्लीके सुप्रसिद्ध गनेश फ्लोर मिल्समें सहायक मिलर हैं। बालक रंजीतको शिशु अवस्थासे ही मशीनें देखनेका बहुत शौक था, उनका शोर इन्हें हारमोनियम जैसा मधुर और उनके पुर्जोंकी चाल इन्हें हंसकी चालसे भी अधिक सुतवाली मालूम हुआ करती थी। चुनांचि टाइपराइटर, सीनेकी कल, हारमोनियम, और घड़ी आदीकी छोटी मोटी मरम्मत करना बालक रंजीत बिना किसीके सिखाये ही सीख गये थे, और इसी इल्मसे विवश होकर सन् १९०९में एफ.ए. (F. A.) परीक्षामें उत्तीर्ण होनेके पश्चात् यह लंडनकी एक पत्र द्वारा सिखानेवाले विद्यालय (Corresponding Academy) से बिजलीकी एन्जिनियरिंग

(Electric Engineering) सीखने लगे। परन्तु विज्ञान विद्या तथा कौशलसे इन्हें जितना प्रेम था, अंग्रेजी आदि भाषायें सीखनेमें उन्हें उतनी ही कठिनाई प्रतीत होती थी और अन्तमें सन् १९११में बी.ए. परीक्षामें अनुत्तीर्ण होने पर उन्होंने स्पष्टतया अपने पिताजीसे कह दिया कि "अब मैं पंजाब यूनीवर्सिटीमें आगे नहीं पढ़ सकता, मुझे पढ़ाने ही की इच्छा है तो कहीं विदेश भेज दीजिये।"

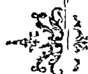
इकलौते पुत्रको सात समुद्र पार भेजनेका प्रस्ताव उनके पिताको पहले २ तो अवश्य कठिन प्रतीत हुआ परन्तु उनके परम मित्र अर्थात् वर्तमान सम्पादक "अग्रवाल बन्धु" और हमारे कालिजके प्रिन्सिपल परमपूज्य मिस्टर एस. के. रुद्राके एकमत होने पर लालाजीने शीघ्रही उन्हें अमेरिका भेजना स्वीकार कर लिया और १६ मई सन् १९१२ को प्रातःकाल हमारे चरित्रनायकने विदेशको प्रस्थान किया।

भारतीय सरकारी यूनिवर्सिटियोंकी शिक्षा-प्रणाली संसारके अन्य देशोंकी शिक्षाप्रणालियोंसे सर्वथा प्रथक् है। यहां विद्यार्थियोंको अपने व्यक्तित्वनुसार कार्य करने और शिक्षा प्राप्त करनेका कोई अवसर नहीं मिलता और न विद्यार्थियोंकी रुचि अरुचि पर ध्यान दिया जाता है। यही कारण है कि यहां परीक्षाओंके परिणाम इतने भयंकर होते हैं कि उन्हें विद्यार्थियोंका हत्याकाण्ड कहा जाय तो अनुचित न होगा। हमारे चरित्रनायक भी जो पंजाब युनीवर्सिटीमें नलायक बनकर भागे थे यूनीवर्सिटी ऑफ बर्कलेमें जाते ही क्रमसे कुछ हो गये। यहां वह १०० मेंसे ३३ नम्बर भी प्राप्त न कर सके थे, परन्तु उनकी प्रथम वर्षकी परीक्षाका फल जो युनीवर्सिटीसे उनके पिताके पास आया उसे देखकर हम सब चकित रह गये। दो मजमूनोंमें १०० मेंसे ९५ और १०० के बीचमें नम्बर आये थे, दोमें ८५ और ९५ के बीच और केवल एकमें ६९ और ८५ के बीचमें। सन् १९१३में हमारे चरित्रनायक (Berkeley) बर्कलेसे इल्लीनोय (Illinois) की यूनीवर्सिटीको चले गये और दो वर्ष बाद सन् १९१५ में वहींसे (Electrical Engineering) बिजलीके इन्जिनियरिंगमें ग्रेजुएट हो गये। इल्लीनोयमें मिस्टर जैनका कार्य बहुत ही संतोषजनक था और उनके शिक्षक उनसे बहुत ही प्रसन्न रहे।

तौभाग्यसे ग्रेजुएट होनेके थोड़े ही दिनों पीछे हमारे चरित्रनायक अमेरिका की एक जबरदस्त बिजलीके औजार बनानेवाली कम्पनीमें एन्जिनियर हो गये और वहां भी बहुत शीघ्र ही अपनी योग्यताका परिचय दिया। १८ फर्वरी सन १९१६ को उनके प्रोफेसर मिस्टर ऐलैरी बी. पेजने एक पत्र द्वारा उनके पिताको लिखा:—

"Judging from the reports which I received, your son is making splendid progress since I left the University last June. I might say however, that we had perfect confidence in the ability of your son to carry successfully such work, and we are not surprised to find that he is filling his position

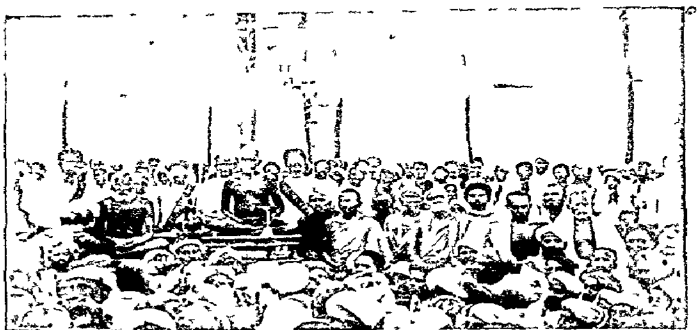






लाला रंजीतसिंह जैन अग्रवाल B S C (U S A) देहली।

('अग्रवाल बन्धु' आगरासे प्राप्त।)



वीर सं० २४४९में उदैपुरमें भारत० दि० जैन महासभाका नैमित्तिक अधिवेशन हुआथा
उस समय वहां अनेक त्यागी ब्रह्मचारीगण पधारेथे उनका ग्रूप।

with aparent success and satisfaction.

It may take several years for him, but we are sure that he will ltimatly develop into a man who will be the pride of all of us.

अर्थात जो रिपोर्ट मेरे पास आई है उनसे मालूम होता है कि गत जूनमें यूनीवर्सिटी छोड़नेके पश्चात् आपका पुत्र बहुत अच्छी उन्नति कर रहा है। परन्तु मैं यह भी कह दूं कि हमें आपके पुत्रकी योग्यतामें पूर्ण विश्वास था कि वह इस प्रकारका कार्य्य सफलतासे करेगा और हमको आश्चर्य नहीं है कि उसने अपनी जगह सफलता और संतोषजनक कार्यके साथ भरी है। उसे कई वर्ष भले ही लग जायें, परंतु हमें विश्वास है कि अन्तमें वह ऐसा मनुष्य बनेगा कि हम सबके लिए गौरवका कारण होगा।"

शनै शनै हमारे चरित्रनायकका वेतन और दर्जा कम्पनीमें बढ़ता गया और जब अमेरिकाने गत महानक संग्राममें प्रवेश किया तो उनकी कम्पनीके चीफ एन्जिनियर लड़ाई पर चले गये। उसी समय मिस्टर जैनने भी लड़ाई पर जानेका विचार प्रकट किया तो कम्पनीके प्रेसीडेन्टने उन्हें यह कह कर लड़ाई पर जानेसे रोका कि "यदि तुम भी लड़ाई पर चले गये तो कम्पनीका काम कैसे चलेगा" और चीफ एन्जिनियरकी अनुपस्थितिमें हमारे चरित्रनायक ही चीफ एन्जिनियर बनाये गये। देश आने पर वे लेखकसे कहते थे कि "चीफ एन्जिनियर होनेके बाद मैं बारह २ तेरह २ घंटे रोज काम करता था। और जब कभी कम्पनीके प्रेसीडेन्टने मुझसे आराम करनेको कहा तो मैंने यह उत्तर दिया कि 'आपने मुझे लड़ाई पर तो न जाने दिया जो मैं जालिम जर्मनोंको अपनी बन्दूकका निशाना बनाता, पर अब यहां बैठे बैठे तो अपना जी समझालूं कि अमेरिकाके जो जहाज जर्मनोंसे लड़ने जाते हैं, उनके लिये बढ़ियासे बढ़िया डाइनमो और मोटर बना बना कर मैंने जर्मनोंके कुचलनेमें कुछ तुच्छ सहायता तो दी" उनके इस परिश्रमका फल यह हुआ कि उनके आफिसर और प्रोफेसर उनसे बहुत ही प्रसन्न हुए। उनके प्रोफेसर मिस्टर ऐंडरी, बी, पैनने एक पत्रके द्वारा उन्हें लिखा:—

"*You will pardon me if I say frankly that I do not now think of our graduates in Electrical Engineering of recent years who have seemed to make better progress in actual Engineering work than has been the case with yourself.*"

आप मुझे क्षमा करेंगे यदि मैं स्पष्टतया यह कह दूं कि हमारे यहांके पिछले सालोंके ग्रेजुएट्समें कोई भी ऐसा दीख नहीं पड़ता कि जिसने बिजलीकी एन्जिनियरिंगके वास्तविक कार्य्यमें आपसे अधिक उन्नति की हो।" जब मिस्टर जैन अमेरिकासे "मातृ" जन्मभूमि आनेकी तैयारियां कर रहे थे तो इन्हीं प्रोफेसर साहिबने उन्हें एक सार्टिफिकेट भेजा जिसमें उन्होंने लिखा:—

This young man made an excellent scholastic record at the University. On graduation he accep-

पञ्चम कालका दुष्प्रभाव।

(ले० मीरचंद जैन, पिंडरा।)

प्रिय सज्जनो ! यह बात यथार्थमें बहुत ही ठीक है कि इस दुखदाई पंचम कालमे कुरीतियोंका इतना प्रबल जोर होरहा है कि इन कुरीतियोंके फंदमें फस कर यह संसारी जीव अनेक दुखमई संसाररूपी समुद्रमें ऐसा गोता खा रहा है कि जिसका थाह अगम्य है अर्थात् इस संसारसे पार होना मुश्किल है और यह भवरूपी सागर कैसा अगम्य है कि जन्म मरण रूपी व्याधि कर भरा हुआ है; परंतु क्या करें मनुष्य ऐसा बहुत ही उपाय करते हैं कि जिससे हम दुर्गतियोंसे बच कर अनंत सुखमई स्थानमें पहुंच जाएं परंतु पहुंचे क्यों ? इसका तो उपाय जानता ही नहीं अर्थात् मोहनी कर्मके उदयसे कुटुम्बादिमें लीन होकर निज स्वरूपको भूला हुआ है और इन्हींमें सुख और अपना कल्याण मानता है और देखो यह कैसी अचरजकी बात है कि इस पंचम कालमें सप्त व्यसन वा पंच पाप आदि दुर्गतियोंके कारणमें विशेष प्रीति होती है। इस निकृष्ट कालमें सप्त व्यसनका अंतिम व्यसन वा पंच पापका चौथा पाप जो परस्त्री सेवन है सो अब खेदके साथ कहना पडता है कि इस स्त्रीका शरीर मल, मूत्र, हाड रुधिर आदि अपवित्र निंदनीक वस्तुओं कर व्याप्त है। ऐसी दुर्गंध युक्त अपावन शरीरमें मूढ लोग कैसे लीन हो रहे हैं कि जैसे काग विष्टाके उपर बैठकर उसको ग्रहण करनेमें आनंद मानता है, अपना सौभाग्य समझता है, ठीक उसी प्रकार मिथ्यादृष्टी पाखंडी जीव परस्त्री सेवनमें अपना सौभाग्य समझता है। यह नहीं जानता कि ये विषय भोग दुर्गतियोंके लेजानेवाले है और कैसे हैं किंपाक फलके समान है जैसे कि किंपाक फल देखनेमें सुंदर परंतु खानेमें दुखदाई है। ठीक, इसी प्रकार ये विषय भोग सेवनेमें बहुत ही अच्छा मालूम होता है परंतु इसका जो फल मिलनेवाला है वह दुखदाई है अर्थात् अनेक दुःखोंसे व्याप्त नरकस्थान इसका फल है। इसका दृष्टांत भी आप लोगोंसे अपरिचित नहीं है। आप लोगोंको भली भांति ज्ञात है कि रावण तीन खंड पृथ्वीका राजा राक्षसवंशीमें श्रेष्ठ वह भी सती सीताके हरण मात्रसे कुल सहित नाश होकर नरकोंमें आज पर्यंत दुःखका पात्र बना है। विषय भोग दुःखका कारण जानकर इनसे चित्त हटाना सज्जनोंका मुख्य कार्य है। प्राय आज कल जहां नजर उठा कर देखो तहां हीं पापका प्रचार बढा हुआ है और धर्मकी ओर जरा भी ध्यान नहीं देते और कई पुण्यात्मा भाई धर्मकी ओर जरा ख्याल भी करते हैं तो इस पंचमकाल वा मोहनी कर्मका प्रबल उदयसे वह भी पूर्ण नहीं कर पाते। कालका प्रभाव ही विपरीत वर्तता है कि जिसमें संसारी जीव धर्मको छोडकर पापके उपर कमर कसते हैं। यह पाप कुयोनियोंमें ले जाकर जन्मरके उपार्जन किये हुए पुन्यको नाश करता है सो अब हम सबोंको दुर्गतिका पात्र जो पाप है सो उसके क्षय करनेका उद्यम करना चाहिये। यह उद्यम कैसा करें ? श्री जिनेन्द्र भगवानके स्याद्वाद रूपी परमागमका अध्ययन करके तथा कुगुरु कुदेव और कुधर्मकी संगति छोड़कर व सप्त व्यसन, पंच, पाप, पाच उदंबर, तीन मकार आदि इनका त्याग करो जिससे सच्चा सुख अविनाशी स्वयमेव प्राप्ति हो जाय।

छः लेश्याओंके परिणाम।

(क्षेमसागर कृत कर्मविपाक ग्रन्थसे)

पुण्य पाप बंध।

संसारियोंको पुण्य पापका बंध परिणामोंसे होता है-उनमें मुख्यतासे लेश्याओंका विचार है। लेश्या योगको कहते हैं जो कषायोंसे रंगा हुआ हो-इनका स्वरूप जानना जरूरी है इसीसे पाठकोंके लिये उपयोगी मान नीचे दिया जाता है—

छः लेश्याओंका स्वरूप।

चौपाई—छः पुरुष चाल्या परदेश।
थाका तरु अर बैठा हेठ॥
क्षुधा वस एक थयो अण मणो।
फल देखी बोले ते सुणो॥
अनमूलो एक बोल्यो आप।
एक कहे खंधे थूं काप॥
एक कहे डालां करो परां।
एक कहे झूंबां ल्यो अरां॥
एक कहे पाकां खाईए।
भुंये पड्यांछे ते लीजिए॥
एहवो भाव जे हईडे सही।
तेहनी तेवी लेश्या कही॥
शिष्य बोल्यो हईडे गह गही।
श्रीगुरु प्रते पूछे सही॥
जेह नर जे लेश्या केहवाये।
कुण लक्षण ते नर ओलखाये॥
तव गुरु बोला वचन रसाल।
सुणजो सउ को बाल गोपाल॥
रीस वसे त्यां राता थाये।
कंधे कलेश करे मनमाये॥
कर्कश वचन कातरणी समान।
रागद्वेष अंतर नहीं सांन॥
वैरेवडे दया नव होए।
लेश्या काली ते नर सोए॥१॥
दुहा—कृष्ण लेश्या लक्षण कहो।
सुणो चतुर मन लाये॥
अवगुण निली लेश्याको।
कहे सुनो मन लाय॥
चोपाई—धर्म करतां आलस करे।
सुख आपणुं व हईडे धरे॥
स्त्री सु मगन रहे दिन रात।
काम वसे नव जाणे जात॥
गान वसी मन मधू सुं भरो।
अमे खरच मोटको करो॥
हईया मांहि कातरणी फरे।
अमे करांछां पण ए नव करे॥
ते नर लेश्या नीली भर्यो।
पाप पंथमें ते संचर्यो॥
खांधेथी वढारे जेह।
नरनारी लक्षण छे एह॥ २॥
दोहा—नीली लेश्यामें कहो।
अंतरगतनी वार॥

समासदो णीललेसस्स ॥ ५०१ ॥

भा० जो नींद बहुत ले, दूसरोंको बहुत ठगे, धन धान्यादिमें तीव्र इच्छावान हो, सो नील-लेश्यावाला जानना।

कापोत लेश्या—

गाथा—रूसइणिंदइ अण्णो, दूसइ बहुसोय-सोय भयबहुलो

असुयइ परिभव परं, पसंसये अप्पयं बहुसो ॥ ५०२ ॥

णय पत्तियइ परं सो, अप्पाणं विपरंवि मण्णंतो। तूसइ अभित्थुवंतो, णय जाणइ हाणिवड्ढी वा ॥ ५०३ ॥

मरणं पत्थेइ्रणे, देह सुबहुंगंपि थुयमाणो दु। ण गणइ कज्जाकज्जं, लक्खणा मेयंतु काउस्स ॥ ५०४ ॥

भा०–दूसरे पर क्रोध करे, दूसरोंकी निंदा करे, बहुत तरह दूसरोंको दुखावे, बहुत शोक तथा भय करे, दूसरोंको देख न सके, औरोंका अपमान करे, अपनी बहुत प्रकार प्रशंसा बड़ाई करे। आपसमान पापी कपटी औरोंको मानता हुआ औरका विश्वास न करे, अपनी प्रशंसा होने पर बहुत संतुष्ट हो, अपनी व परकी हानि वृद्धिको न जाने। युद्धमें मरण चाहे, अपनी बड़ाई करनेवालेको बहुत धन दे, कार्य अकार्यको न गिनें, ऐसा कापोत लेश्यावान् होता है।

पीत लेश्या—

जाणइ कज्जाकज्जं सेयमसेयं च सव्व समपासी। दयदाण रदोय मिदू, लक्खणमेयंतु तेउस्स ॥५०५॥

भावार्थ—जो कार्य, अकार्य, सेवनेयोग्य, न सेवने योग्यको जाणे, सर्वमें समदर्शी हो, दया दानमें प्रीतिवान हो, मन वचन कायमें कोमल हो, सो पीत लेश्यावान है॥

पद्म लेश्या—

चागीभद्दो चोक्खो, उज्जुव कम्मोय खमदि बहुगंपि। साहु गुरु पूजणरदो, लक्खणमेयंतु पम्मस्स ॥५०६॥

भावार्थ—त्यागी हो, भद्र परिणामी हो, उत्तम कार्य करनेका जिसका स्वभाव हो, कष्ट व अनिष्ट उपद्रवको सहने वाला हो तथा मुनि और गुरुजनकी पूजामें लीन हो सो पद्म लेश्यावान है।

शुक्ल लेश्या—

णकुणइ पक्खवायं, णवियणिदाणं समोय सव्वेसिं। णत्थिय राय दोसा णेहो विय सुक्कलेसस्स ॥ ५०७ ॥

भा०—जो पक्षपात न करे, निंदा न करे, सर्व जीवमें समान भाव हो, इष्ट अनिष्टमें रागद्वेष न करे पुत्र कलत्रादिमें स्नेह रहित हो सो शुक्ल लेश्यावान है।

कर्मविपाकके लेखका भावार्थ—

इन लेश्याओंको समझनेके लिये एक दृष्टांत है कि छः पुरुष परदेशको जाते थे। मार्गमें भूख लगने पर उन्होंने एक फलदार वृक्षको देखा-तब कृष्ण लेश्यावालेके भाव यह हुए कि हम इसे जड़ मूलसे काट डाले, नील लेश्यावालेके भाव हुए, हम जड़ रहने देकर उसका ऊपर काट डाले, कापोत लेश्या वालेके भाव हुए कि हम शाखाएं काटें, पीतलेश्या वालेके भाव हुए कि हम फलोंके गुच्छे काटें, पद्मलेश्या वालेके भाव हुए केवल पके फल तोड़ डालें। शुक्ल लेश्यावालेके भाव हुए कि भूमिमें पड़े फलोंको ही खावें।

जो क्रोधसे लाल हो जाय, मनमें क्लेश करे, कर्कश वचन बोले, रागद्वेष अंतर्में भरा रहे, वैर करे, दया हीन हो सो काली लेश्यावाला है।

जो धर्म करते आलस्य करे, सूत्र तथा अर्थ दिलमें न धारे, दिन रात स्त्रियोंमें मगन रहे, कामी हो, जाति कुजाति न जाने, ऐसा मान करे कि मैंने बहुत मोटा खर्च किया है, हृदयमें विचारे मैं तो करता हूं पर दूसरा कुछ नहीं करता है सो नील लेश्यावाला है।

जो रात दिन शोकातुर दीखे, कभी सुखी न मालूम पडे, परकी निंदा हमेशा करे, धर्माचरण न करे, परधन देखईर्षा करे, धर्म करते हुए विचारे कि मुझे तो कुछ फल नहीं होता है, लडाई झगडा चुगल करे, कुटुम्बमें मगन रहे, जानबूझ कर झगडे मोलले, राजसे दंड करावे, वह विचारे कि हमारे घर बहुत खर्च है क्या करूं, सांच कहे तौभी झूठा मालूम पड़े सो कापोत लेश्यावान है।

जो जिनवाणीके अर्थको समझे, बुद्धिवान, दयावान व कार्य अकार्य विचारने वाला हो, धर्मध्यानमें मन रमावे, साधु संगति जिसे ज्यादा सुहावे, जो गुण देखकर स्तुति करे तथा औगुण देखकर उसे अंगीकार न करे सो पीत लेश्यावान है।

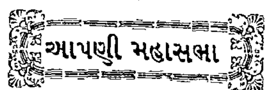
जो क्षमावान हो, शीतल स्वभाव हो, दिन रात शांत भाव रक्खे, भक्ष्य अभक्ष्यके त्यागका विचार करे, पांच इंद्रिय और मनको वश करे, आत्मा रूपी देव पर अपना मन लगावे, मनसे क्रोध लोम टाल उसे पवित्र करे, रातदिन आनंदमें मगन रहे, शास्त्रमें मन रमावे, धनधान्यादि तिणा समान जाने सो पद्म लेश्यावान है।

जो परलोकके काममें लीन हो, आत्मकल्याणमें प्रवीण हो, रात दिन अपनी निंदा करे, परके दोष न ग्रहण करे, शोक संताप विकल्प न करे, रागद्वेषको पुद्गलका काम जाने, स्त्री पुत्र धन धान्यादिको कालकूट विष समान जाने, अंतरंग आत्मामें लीन हो, शिव मार्गका ज्ञाता हो, सो शुक्ल लेश्यावान है।

फल।

कृष्ण लेश्यावान नर्क गतिको, नील लेश्यावान पंच स्थावरोंकी तिर्यंच गतिको, कपोतवान तिर्यंच गतिको, पीतवान मनुष्य गतिको, पद्मवान देव गतिको, तथा शुक्ल लेश्यावान मोक्षको प्राप्त होता है।

शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी।



(લિ૰ મા૰ નાનચંદ પુ૰ નભાઈ બી. એ. મંત્રી, ગુજરાત પ્રાંત, દિ૰ જૈન પ્રા. સભા, મુંબઈ.)

આવતી એપ્રીલ તા ૧-૨-૩ના રોજ ભારતવર્ષીય દિગંબર જૈન મહાસભાની બેઠક કાનપુરમાં જૈનસાહિત્ય પ્રદર્શન સહિત થવાની છે તે સર્વ કોઈના જાણવામાં આવ્યું હશે. આ મહાસભાની બેઠક વખતે કામ પણ મહાન થવા જોઇએ એમ સર્વ કોઇ નામ ઉપરથી આશા રાખશે. મહાસભાએ કેટલાંક સારા કામ કર્યા છે, પણ ગુજરાતમા ઘણા જણ મુંબાઈ દિ૰ જૈન પ્રાંતિક સભાને ઓળખતા નથી તો એની ઉપરની મહાસભાને ન ઓળખે એ સ્વાભાવિક છે. આમા દોષ જનસમુદાયનો નથી પણ કાર્ય કરવાનો દોષ મને લાગે છે. આજે મહાત્મા ગાંધીના નામથી થોડાજ અજાણ્યા હશે. એમનો સ્વરાજ્યનો મંત્ર એ પોતે હિંદુસ્તાનમા ગામે ગામ નગરેનગર ઘેર ઘેર

જાતે ફરી લોકોને સમજાવે છે તો પછી લોકો તેમને સારી પેઠે જાણે, તેમના મંત્રીની વાતો ઘેરેઘેર થાય અને પળાય, પણ છાપામા ફક્ત છાપી મહાત્મા સંતોષ માને તો થોડાજ તેમને ઓળખે. તેનીજ રીતે મહાસભાના નિયમો તેના ઉદ્દેશ, તેણે કરેલા કાર્યનુ પુસ્તક છપાવી દરેક ગામે મોકલવાની જરૂર છે.

કાનપુર ગેઠેરમા જ્યારે સભાની બેઠક થાય ત્યારે હિંદુસ્તાનના મોટાં શહેરોમાથી અમુક અમુક માણસોએ તો આવવુંજ જોઇએ એવો બ દોબસ્ત મહામંત્રી તરફથી થવો જોઇએ

એ આવનાર પૈકી કયા કયા ગૃહસ્થ હોવા જોઇએ તેનુ સમાલોચન અહીં કરવાની જરૂર છે. દરેક જ્ઞાતિના આગેવાનો, પ્રાંતિક સભાના મ ત્રીઓ, તે ઉપરાત કેટલાક શેઠીઆઓ, પંડિતો અને વિદ્વાનો, અને જ્ઞાતિના ગ્રેજ્યુએટોને ખાસ બોલાવવાની જરૂર છે. જૈન કોમના માસિકોના સપાદકો, છાપાના અધિપતિઓને પણ ખાસ બોલાવવાની જરૂર છે

મહાસભા કયાં કામ કરી શકે ?

મહાસભા સમસ્ત દિગંબર જૈન કોમને લગતા બધા કામો હાથ ધરી શકે જેવાકે કેળવણી-ધાર્મિક અને વ્યવહારિક, સામાજીક અને રાજકીય. ધાર્મિક કેળવણીમા પાઠશાળાઓ સ્થાપન કરાવે. ભટ્ટારક બ્રહ્મચારી વીગેરે ગુરૂઓની સભા બોલાવી ધર્મની ચર્ચા કરે, જૈનોમા જે સંસ્કાર અત્યારે તદ્દન ભુમાઈ ગયા છે તેવા સંસ્કાર ફરીથી કેમ દાખલ થાય તેનો વિચાર કરે. ભટ્ટારકો સપુજ સેવકો ભુલતા નથી પણ તેમના જૈનો મિથ્યાત્વી લગ્ન વીગેરે વિધિ કરે તે તેઓ જુએ છે, જાણે છે કે આ અનાચાર છે, પોતાના જૈનોને મિથ્યાતી દેવોને નમસ્કાર કરતાં જૂએ છે હાથ જોડે છે વીગેરે થતા અનાચાર તરફ આંખ આડા કાન કરે છે તે હાલના જમાનામા સહન થઇ શકે એવું નથી માટે મહાસભાનુ પણ આ એક અગત્યનું કામ છે. જ્યા જ્યા આવું અંધેર ચાલતુ હોય ત્યાથી દૂર કરવા સભા તરફથી પ્રયત્ન થવો જોઇએ, ગુરૂ, મઠાધિપતિ પાસે કેટલા પૈસા છે તેનો ઉપયોગ કેવી રીતે થાય છે તેની તપાસ પણ કરવી જોઇએ.

ગુજરાતમા હિંદી દરેક સ્ત્રી પુરૂષ વાચી શકે, સમજી શકે એવો પ્રયાસ પ્રાંતિક સભા તરફથી થવો જોઇએ પણ આ કામ ઉપર મહાસભાએ દેખરેખ રાખવી જોઇએ.

વ્યવહારિક કેળવણી મેળવવાના સાધન ઘણું જગ્યાએ મળી શકે છે, પણ હુન્નરકળા શીખવાની હાલ ઘણી જરૂર જણાઈ છે. કોલેજનુ ઉંચુ શિક્ષણ ઘણુ મોંઘુ થયું છે. તેના શિક્ષણ લેનારની સખ્યા ઘણી થોડી હોય છે, પણ માત્ર ભાષા અને ઇંગ્રેજી ચાર પાચ ચોપડી ભણનાર માટે હુન્નર ,કળા શીખવાડવા કલાભવનો (Industrial Schools) ખોલવાની જરૂર છે. આમા અલબત ઘણા પૈસાની જરૂર છે, પણ મહાસભા ધારે તો લાખો રૂપીઆ એકઠા કરી શકે. હિંદુસ્તાનમાં દિગંબર જૈનોનાં જો બે લાખ ઘર હોય અને ઘર દીઠ વાર્ષિક એક રૂપીઓ મહાસભા ઉઘરાવે તો બે લાખ રૂપીઆ એક વરસમા મેળવી શકે. આપણે **સમેદશીખરની** બાબતમા કચેરીમા લડવાને વીશ લાખ રૂપીઆ એકઠા કરવાની ઉમેદ રાખીએ છીએ તે રૂપીઆ આપણા સંતાનોને ધાર્મિક અને વ્યવહારિક કેળવણી આપવામા ખરચીએ તો અઘટિત કહેવાશે નહીં. શ્વેતાબરી ભાઇઓ સાથેનો ઝગડો ખાનગી રીતે મહાત્મા ગાંધી જેવા પુરૂષોને વચ્ચે રાખી સમાધાની પર લાવી શકાય તો ઘણું ઉત્તમ થાય; પણ તેને માટે આપણા કહેવાતા આગેવાનોએ ખંતથી મેહેનત ઉઠાવવી જોઇએ.

તે ઉપરાત એક **સામાન્ય ફંડ** એવું થવું જોઇએ કે તેમાથી ઉંચા અભ્યાસ માટે જાપાન, અમેરિકા, જર્મની વીગેરે દેશોમા આપણા જૈન યુવતોને મોકલી શકાય. આ ફંડની વ્યવસ્થા મહાસભાને હસ્તક રહેવી જોઇએ. પ્રાંતિક સભા પોતાના પ્રાંતના બુદ્ધિશાળી યુવાન વિદ્યાર્થી કોલેજમા ભણતા હોય તે પૈકી એકાદને ચુંટી કાઢી મહા

મા આગળ તેનું નામ રજુ કરે. પ્રાન્ત વાર એક વિદ્યાર્થી પરદેશ ખાતે મોકલી શકાય તો દર વરસે સાત આઠ ઉંચી પંક્તિનું જ્ઞાન ધરાવનારા આપણે મેળવી શકીએ. આવા ફંડની તો ખાસ જરૂર છે. જુઓ, બંગાળામાંથી દર વરસે કેટલાક બંગાળી યુવાનોને અમુક ફંડમાંથી મોકલવામાં આવે છે.

જૈન કોમમાં વિધવા ફંડની ખાસ જરૂર છે આ સવાલ મહા સભાએ ઉપાડી લેવો જોઇએ અને પ્રાંતિક સભાઓ દ્વારા તપાસ કરાવી વિધવાઓને મદદ આપવી જોઇએ. ગુજરાતમાં આવા ફંડની ખાસ જરૂર છે. આ બાબતમા પારસીઓનું અનુકરણ કરવું ઘટેછે. તેમનામાં ગરીબોને મદદ કરવા ફંડ છે તેવું ફંડ આપણા જૈનોમાં બીલકુલ નથી. પ્રથમ તો વિધવાઓને મદદ કરવાની જરૂર છે. પછી ધંધો રોજગાર કરવામા જેને નાણાની જરૂર પડે, અથવા જેનામા પોતાના કુટુંબનું ભરણપોષણ કરવા જેટલી શક્તિ ન હોય કે તેની એટલી કમાણી ન હોય તેવાને પણ મદદ કરી શકાય એવા સામાન્ય ફંડની જરૂર છે. આ સિવાય બીજા વિષયો પણ હાથ ધરી શકાય.

આશા છે કે મહામંત્રીજી આ લેખ ઉપર ખાસ ધ્યાન આપી આ વખતની બેઠક યથાર્થ સફલ કરશે. હજી વખત ઘણો છે. અત્યારથી આંદોલન કરવાની જરૂર છે.

मेवाडा कोमनो ईतिहास

(લેખક–એક દુઃખી હૃદય).

ગુજરાતી દિગંબર જૈન સમાજમાં અગ્રગણ્ય ગણાતી મેવાડા કોમ છે, તે કોમની ઉત્પત્તિ અત્રે બતાવવાની છે.

મેવાડા નામ ગુજરાતમા આવ્યા પછી ગુજરાતી પ્રજાના હસ્તે ટુંકાણ દર્શાવવા પડેલું છે. નહિ તો તેમની કોમ ભરેરા નામથી શાસ્ત્રમાં ઓળખાય છે.

મેવાડા અર્થાત્ ભરેરાની વસ્તી મારવાડ, માળવા, નિમાડમા પણ થોડા પ્રમાણમાં હયાતિ ધરાવે છે

૧. ઇતિહાસ લખતાં પહેલાં મારે જણાવવું પડે છે કે—' દિગંબર જૈન ' ના જુના વર્ષોમાં એક અંકમાં મી૦ છગનલાલે મેવાડા કોમનો ઇતિહાસ–નામે એક લેખ પ્રસિદ્ધ કરાવ્યો હતો, જેમા મેવાડાની ઉત્પત્તિ નહિ કિંતુ ગોત્રોત્પત્તિ બતાવવા પ્રયાસ કીધેલો હતો અને વળી તે પણ મેવાડાનાં નહિ પંતુ મેડતવાળ નામના વૈસ્યનાં હતા. વાંચક બંધુ પ્રશ્ન કરશે કે–મેડતવાળ અને મેવાડા એકજ હોવા જોઇએ. જવાબમાં મારેજ જણાવવું પડે છે કે–આપણામાં કહેવાતી બાર બંગડી જાતિમાજ મેવાડા અને મેડતવાળ જુદા બતાવેલા છે કે બારે જાતિની ઉત્પત્તિ એકજ આચાર્યના સમયમા થોડા થોડા સમયને અંતરે થએલી છે. જો મી૦ છગનલાલભાઇએ ભુલથી મેડતવાળને બદલે મેવાડા લખી દીધું હોય તો જુદી વાત છે.

ભરેરા અર્થાત્ મેવાડા ભરેપુર ગામમાથી થએલા હોઇ, મેડતવાળ, મેડંતા નામના ગ્રામમાથી બતાવેલા છે.

નીચેના કોઠા ઉપરથી જણાશે કે–મેવાડા અને મેડતવાળનો નંબર સાથે હોવાથીજ છગનલાલ ભુલી ગયા હશે.

ખંડેરવાળ	પોરવાળ	મેવાડા
અગરવાળ	રાયક્વાળ	મેડતરાળ
યસવાળ	પરવાર	સિંહપરા
બગેરવાળ	હુંબડ	નરસિંહપરા

વિક્રમ સંવત ૬૩૫ ની સાલમાં ભટ્ટારક શ્રી......ઉજ્જનમાં જૈનના ગુરૂ તરીકે વિહાર કરતા હતા. તેમના હાથ નીચે સાત શિષ્યો વિદ્યાધ્યયન કરતા હતા, આચાર્ય શ્રી......એ સંવત ૬૬૫ ની સાલમાં પોતાના મુખ્ય શિષ્ય શ્રી નેમીસેનજીને આચાર્ય પદ પર સ્થાપન કરી પોતે યોગારાધન કરવા લાગ્યા.

નવીન આચાર્યે ગુરૂ પાસે માગણી કરી કે હું ચાતુર્માસના ઉપવાસ કરૂં. વડીલ આચાર્ય બોલ્યા કે કળી કાળમાં એ તપ થઈ શકે નહિ. આચાર્યનું કહેવું માન્યું નહિ ને નવીન આચાર્યજીએ ઉપવાસ કરવા માંડયા.

ત્રણ માસ પુરા થયા ને આસો માસ આવ્યો. છેલ્લો વરસાદ થયો. આચાર્ય નદી કાંઠે ધ્યાનગ્રસ્ત થયેલા હતા. વરસાદથી નદીમા પુર આવ્યું. રાત્રિ અને વરસાદનાં સખત ઝાપટા અને તેમા વળી નદીતીરનાં પાણીના ઘુઘવાટાવાળો શીતળ પવન એમ ત્રણ આઘાતોથી આચાર્યજી હરી ગયા જીવ દશમે દ્વારે ચડી ગયો અને બેભાન બની ઢળી પડયા.

પ્રભાત થયુ, વરસાદ બંધ થયો, લોકોની આવજાવ શરૂ થઇ, લોકોએ આચાર્યને મૃત સરખા જોઇ શ્રાવકોને ખબર આપી, શ્રાવકો દિલગીર થયા, સુખડના લાકડાની ચેહ બનાવી આચાર્યને અગ્નિદાહ દીધો.

અગ્નિના જોરે કરી આચાર્યના શરીરમાથી ટાઢ ઉડી ગઇ અને આચાર્ય ચેહમાથી કુદીને બહાર પડ્યા, શ્રાવકો ભુત સમજી નાશી ગયા. અને વડીલ આચાર્યને ખબર આપી.

આચાર્યજીએ વિચાર કીધો કે-ક્ષુધાવાળું શરીર વરસાદના યોગે નદીની ઠંડીમા ઠરી ગએલું તે અગ્નિના યોગે સચેત થએલું છે. તેમણે હાસ્ય કરી શ્રાવકોને કહ્યું કે—તેમણે મારી આજ્ઞાનો અનાદર કીધો તેથીજ આ સ્થિતિ પ્રાપ્ત થઇ છે. હવેથી એ આજ્ઞાભંગી આચાર્યને કોઇ આહાર પાણી આપશો નહી એવું ઉપવાસ કરનાર આચાર્યના જાણવામા આવતા તેઓ દિલગીર થયા અને ક્રોધ કરી બોલ્યા કે- નવા શ્રાવક બનાવી પછીજ આહાર લેવો.

આચાર્ય ત્યાંથી નીકળી રાજસ્થાનમાં પ્રખ્યાત પામેલા ઉદેપુરના રાણાની સરહદમાં ઉદેપુરની પાસેજ **ભટેરા** નામના ગામમા ગયા તે વખતે ત્યાં ગોહીલ જાતના રજપુતોની વસ્તી છસોત્રીસ ઘરની હતી, જેઓ ઉદેપુરના આશ્રયે રહી ખેતીવાડી-કરી આજીવિકા ચલાવતા ને જરૂર પડે ઉદેપુરના રાણાને મદદ કરવા જતા હતા તેથી તેમની જાગીરો વંશપરંપરાની બાંધી આપેલી હતી.

આચાર્ય શ્રી તેમના મહોલ્લામાં જઇ વચ્ચે ચોકમા આસન નાખી ધ્યાનસ્થ થયા, વળી તેમણે આહાર પાણીનો ત્યાગ કરી દ્રઢ પદ્માસનથી ઇંદ્રિયનિગ્રહ કરવા માંડયો.

રજપુતો શૂરવીર હોવા છતાં તેમનામા સત્પાત્ર તરફ દયાનો ભાવ વિશેષ હોય છે, એ ભુલવું જોઇતું નથી.

પાચ દિવસ થયા એટલે રજપુત લોકો મહારાજ પાસે આવી વિનંતી કરવા લાગ્યા કે મહારાજ હમારે બારણે બેસી તમો લાંઘણ કરો અને અમો જમીએ, એ બની શકતું નથી માટે આપ આહાર લઇ પછી ખુશીથી અહી રહો.

આચાર્ય બોલ્યા કે-મારે મારા સંપ્રદાયમાં શ્રાવક નથી, માટે તમો મારા શ્રાવક બનો તો હું આહાર લઉં. રજપુતોએ કહ્યું-મહારાજ, એમ શ્રાવક માટે લાંઘણ થાય નહિ. તેમજ હમારાથી હમારો શૈવ ધર્મ છોડી શકાય નહિ. આચાર્યે કહ્યું. તમો જ્યા સુધી મારો ધર્મ સ્વીકાર કરશો નહિ. ત્યા સુધી હું અત્રેથી જવાનો નથી. તમો તમારા ધર્મની ને મારા ધર્મની પરીક્ષા કરો. જો તમને મારો જૈન ધર્મ શ્રેષ્ટ લાગે તોજ ધારણ કરજો

રજપુતોએ ધર્મ પરીક્ષા કરવાની હા પાડી પોતે પોતાને ઘેર ગયા. બીજે દિવસે તેઓ પોતાના કેટલાક પંડિતોને લઇ આચાર્ય પાસે આવ્યા.

અહી આચાર્યે પોતાની ઉપાસ્ય દેવતા લક્ષ્મી દેવીનુ આહ્વાન કર્યું. લક્ષ્મીએ આરી રજપુતવાડામા ચમત્કારો બતાવવા માડયા ચમત્કારો જોઈ કેટલીક રજપુતાણીઓ પુત્ર પુત્રીની ઇચ્છા કરતી આચાર્ય પાસે આવવા લાગી. આચાર્યે તેમને પોતાનો ધર્મ સ્વીકાર કરાવી યોગ્ય દવા આપવા માડી !

આ બાજુ રજપુતોએ પડિતો સાથે આચાર્ય પાસે વાદ કરાવવા માડ્યો, શાસ્ત્રવાદમા શૈવ ધર્મીની હાર થઇને આચાર્ય લક્ષ્મીદેવીની સહાયથી જય પામ્યા, રજપુતોએ જૈન ધર્મનો સ્વીકાર કીધો, ને આચાર્યે આહાર લીધો.

આચાર્યે બીજે દીવસે મોટો સમારંભ કરી જિનેન્દ્ર દેવનું મહાપૂજન કરી લક્ષ્મીદેવીને શાક્ષાત્ થવા વિનંતી કરી. લક્ષ્મીદેવી હાજર થયા, તેમની પાસે દરેકના મુખમાં અમૃત મુકાવી દરેકના શિરપર હાથ મુકાવી આશીર્વાદ આપ્યો દરેકને જૈન વિધિથી જનોઇનો સ્વીકાર કરાવ્યો ને લક્ષ્મીદેવીના મંદિરની સ્થાપના કરી, જૈન મંદિર બનાવવા આરંભ કર્યો.

રજપુતોનાજ વંશમાં ઉત્પન્ન થએલા પ્રાચીન મુનિઓના વંશજો બતાવવા અને જુદા જુદા કુટુંબના વિભાગ જુદા દેખાડવા ગોત્રની સ્થાપના કરી, દરેકની કુળદેવતા મુકરર કરી સર્વેને પોતપોતાના ભાયાતથી (ગોત્રથી) એકજ ઘરનાની માફક ચાલવા સુચવ્યુ. તેજ સપ્રદાયથી હાલ પણ ચાલ્યા આવીએ છીએ

કહેવત છે કે–પાચ પેઢી સુધી કુટુંબી, દશમી સુધી ભાયાત્. પચીસમી સુધી પિત્રાઇ અને પચાસથી ગોત્રી કહેવાય છે આચાર્ય શ્રી નેમીસેનજીએ ગોત્રની સ્થાપના કરી તેનો ઉલ્લેખ અત્રે આપવો ઠીક પડશે એમ ધારી નીચે આપુછું, તે અસ્થાને ગણાશે નહિ.

ગોત્ર દેવીસહિત.

ગોત્ર	દેવી	ગોત્ર	દેવી
શ્રીવત્સ	શાન્તિકાદેવી	બીડવ	આમેરીદેવી
જમદગ્નિ	જાજણીદેવી	હર	વાગેશ્વરીદેવી
કૌશીક	માતૃકાદેવી	સુવત્સ	માધવીદેવી
વશીષ્ટ	વાસુદેવી	કાશ્યપ	મહામનસીદેવી
ગોતમ	વિભ્રમણીદેવી	કુલસ્તવ	જશજંગાદેવી
કૌણ્ડપ	જયાદેવી	જામાતૃ	મોરીણીદેવી
ગર્ગ	ગૌરીણીદેવી	પારાશર	કાળીકાદેવી.
સોસયા	લખંયાદેવી	કૃપાચાર્ય	અંબીકાદેવી
ભૃગુ	મતમીસાદેવી	બ્રહ્મીગર્ગ	ગૌરીદેવી
ભારગવ	ચક્રેશ્વરી	વિજયમાન	સારીણીદેવી
પરકસિં	અમીતાદેવી	ગાસવર	નારાયણીદેવી
વિભવ	ગંધારીદેવી.	ચંદ્રભોગ.	નાયણીદેવી
સોમપા	માતરીદેવી	નાનાજન	નારીકાદેવી.
માડલ	સુરાશ્રીદેવી	મત્સ્યેન્દ્ર	સોમાદેવી
આત્રેય	પદ્માવતીદેવી	હરિસ	માર્યદેવી
નારાયણ	ભદ્રદેવી	કુકુપાણ.	લક્ષ્મીદેવી

ઉપર પ્રમાણે ગોત્રાદિ બધારણ બાધી તેમને શ્રાવકની ક્રિયા સમજાવવામાટે, પાચ વર્ષે તેઓ પુરા શ્રાવક થયા અર્થાત્ રજપુત મટી વૈશ્યત્વને પામ્યા અર્થાત્ ગોહીલ મટી, ભટેરા શ્રાવક થયા જે હાલ ક્ષત્રિય વટ ગુમાવી વૈશ્યત્વનેજ ધારણકર્તા દુનિયામા સર્વોપરિ ગણાતા સુર્યવંશી ક્ષત્રિય અધો દશાને પ્રાપ્ત થયા છે. ખેદ છે કે જેવી રીતે શ્રાવકો વીરત્વ ગુમાવી બેઠા છે, તેવીજ રીતે આચાર્ય (હાલના ભટ્ટારકો) પણ ધર્મત્વ ગુમાવી બેઠા છે. અરે, લક્ષ્મી (પૈસા) ના યાગી થઇ ગયા છે. આજથી પોણીચારસો વર્ષ પહેલા અર્થાત્ ઈસ્વીસન્ ૧૫૬૭ મા દિલ્હીના મોગલ બાદશાહ અકબરે ઉદેપુરના રાજ્યપર સ્વારી કરી, તે વખતે ઉદેપુરમા ભટેરા (ગોહીલ)ના સગાજ સીસોદીયા રજપુત રાજ્ય કરતા હતા.

અકબર શાહે સિસોદીયાને નમાવવા તેમની સ્થિતિ નષ્ટ ભ્રષ્ટ કરી દીધી ઉદેપુરના રાણાને મદદ કરવા ભટેરા શ્રાવક પૈકી ઘણાં જણુ ગયા હતા. જેમનો લડાઇમા અંત આવ્યો, તેમનાં સંતાનોને લઈ બીજા કેટલાક જે ઘર આગળ રહેલા તેઓ વારંવારના મોગલોના હુમલાથી-લુટથી ત્રાસી, ગરીબાવસ્થા ધારણ કરી ત્યાથી નાશી છુટ્યા.

તે વખતે હાલની માફક રેલ્વેનું સાધન હતું નહિ, જેથી તે લોકોને પગરસ્તે ચાલવામાં અનેક

લુટારૂના ભોગ થવું પડયું હતુ. એમ કરતા જ્યારે તે પહેલ વહેલા ગુજરાતમાં આવ્યા, ત્યારે તેમની સ્થિતિ તદ્દન શોચનીય થઈ ગઇ હતી.

ખેદ છે કે-અત્યારની માફક તે વખતે અન્ન જળની સામગ્રી પુરતા પ્રમાણમાં મળતી નહિ, જેથી તેમને સખત મજુરી કરવી પડતી.

શ્રાવકોના ન્હાસભાગના સમયે આચાર્યશ્રી દક્ષિણમાં ચાલ્યા ગયા હતા, તે ત્યાંજ પંચત્વને પામ્યા હતા. મેવાડા લોક ગુજરાતમાં પ્રથમ ભૃગુકચ્છ (ભરૂચ) મા ઉતર્યા હતા. કેમકે, તે વખતે ત્યાંનો વ્યાપાર ઠીક ચાલતો હતો. મહેનત-માથી થોડી થોડી રકમ બચાવી તેઓ વ્યાપાર કરવા લાગ્યા. તે હાલ પણ વ્યાપારી જીંદગીજ ગુજારે છે.

મેવાડા લોકે ગુજરાતમાં આવ્યા પછી સુરતની ગાદીના આચાર્યને પોતાના ગુરુ તરીકે માની લીધા. (બંન્ને ગચ્છને સરખા ભાગે માનવા લાગ્યા)

ઇસ્વી સન્ ૧૬૭૦ થી ૧૭૦૦ ની અંદરના મગાના સખત હુમલાથી ત્રાસી-કંટાળી મેવાડા લોકો ગુજરાતના પાદરા, અંકલેશ્વર, સોજીત્રા, ખેડા, વસો, ખંભાત વિગેરે સ્થળે વ્યાપારાર્થે રહેવા ગયા હોય તેમ જણાય છે.

ઉપરનાં સ્થળોમાં ચોક્કસ કયા સાલમાં આવ્યા તે જાણવા માટે આપણી પાસે એક પણ મંદિર મેવાડાનું પ્રતિષ્ઠિત નથી, તેમજ કોઇ પ્રબળ પુરાવો પણ નથી, છતા એટલું તો ચોક્કસ કહી શકાય કે-ભરૂચમાંથી નિકળવાને તેમને ખાસ ભયાનક કારણ અવશ્ય પ્રાપ્ત થએલુંજ.

વારંવારની ન્હાસ-ન્હાસથી તે લોકોની સ્થિતિ જોઇએ તેવી ઉચ્ચ થએલી નહિ, તેમજ **મુસલમાનોના ડરથી** બાળલગ્ન જેવી પ્રથા દાખલ થઈ ગએલી જેથી કન્યાએની અછતને લઇ તેમની સ્થીતિ નષ્ટપ્રાયઃ થતી ચાલી.

ઇસ્વીસન્ ૧૭૮૧ ની સાલમા ઘણાજણે વૈષ્ણવ ધર્મ (કન્યાની અછતને લઇ) ધારણ કરવા માંડયો. તે વખતે આચાર્ય શ્રીએ શ્રીમંત સરકાર ફતેસિંહરાવ ગાયકવાડના દરબારમા અરજી કરી તેમને મૂળ ધર્મમાં દઢ બનાવ્યા હતા, પણ જૈન સમાજના બુરા નસીબે તે આચાર્ય તેજ સાલમાં પરલોકવાસી થયા ને તે લોકોમાં ધર્મ બાબત મોટો ઝગડો ઉત્પન્ન થયો.

ફતેસિંહરાવ મહારાજે પાટણના જૈન શાસ્ત્ર ભંડારમાથી ૮૪ ન્યાતિનાં નામવાળા ગ્રંથો મંગાવી દરેકની ન્યાતિના ગોળ બાંધી આપ્યા, તે વખતે કેટલાક જણે જૈન ધર્મમા રહેવા સાફ ના પાડી અન્ય ધર્મ ગ્રહણ કર્યો હતો જે હાલ પણ તેજ ધર્મ પાળે છે.

જ્ઞાતિનાં તડ બંધાયા તે વખતે પાદરા, માલા-વાડા, સોજીત્રા, વસો, દેત્રી, ખંભાત, ખેડામાં થઇ. મેવાડા દિગંબરીનાં ઘર ૩૦૦૦ હતાં.

આજથી ૧૪૦ વર્ષ૫ ૩૦૦૦ ઘર દશા ને વીશા મેવાડાના હતાં. ખેદ છે કે અત્યારે ફકત વીસા મેવાડાનાંજ ઘર સોજીત્રા અને અંકલેશ્વર મળી ૮૦૦ ની સંખ્યામાં ભાગ્યેજ છે. વસ્તી ઘટવાનું ખરૂ કારણ કોઇ જાણવા ઇચ્છતું હોય તો તે **કુળવાનનો ખોટો આડંબરજ છે.**

હાલમા મેવાડા લોકોમા ૧૯ દિગમ્બર જૈન મંદિર હોઇ પાઠશાળા એકપણ નથી. વસ્તી ૭૦ ગામમા ગુજરાતમાં છે. આર્થિક સ્થિતિ મધ્યમ હોઇ ધર્મપ્રેમ ન્યુન છે.

હવે મોડિલવંશી બંટેરા લોકોના સમાજની વૃદ્ધિ થાઓ એજ મારી ભાવના છે.

પાઠકો, મારા કેટલાક ગ્રન્થના વાચન, કેટલાક મંદિરોના દર્શન અને કેટલાક જણથી પુછપાછથી ઉપર પ્રમાણે હકીકત મેવાડા લોકોના સંબંધમાં મળી આવી છે.

મારી " દિગમ્બર જૈન " ની જાહેર ખબરથી શ્રીયુત મોતીલાલ ત્રીકમદાસ માળવી બાકરોલ એમણે કેટલીક હકીકત લખી મોકલી હતી જેથી તેમનો ઉપકાર માનું છું.

મારા આ પ્રયાસમાં કેટલીક હકીકત અસ્પષ્ટ અને કપોલકલ્પિત લાગશે, પણ વિદ્વાન વાચકોને વિનતી છે કે તેથી નહિ કંટાળતા મારી હકીકતથી વધારાની હકીકત જાહેરમાં લાવવા પ્રયાસ કરશે.

જે બંધુ આથી પણ વિશેષ એટલે ક્યો પુરૂષ નિમાડમાથી ગુજરાતમા આવ્યો; ચોક્સ સાલ-વંશાવળી વિગેરે હકીકત સમાજમા બહાર પાડશે, તેને મારા તરફથી બહાર પડેલું ઇનામ અવશ્ય મળશે, માટે દરેક બધુઓને વિનંતી છે, કે દરેક હકીકત બહાર પાડવા પ્રયત્ન કરવો.

આ સ્થળે મારે કહેવાની જરૂર પડે છે કે-મેવાડા બધુઓ પોતાનુ ગોત્ર જાણતાજ નથી, જેથી લગ્નાદિ ક્રિયા વખતે તેઓને બહુજ વિમાસવું પડે છે એમ સાભળ્યુ છે, તો હું જણાવવાની રજા લઇશ કે-તેમણે એક વખતે સમગ્ર જ્ઞાતિએ એકત્ર થઈ, પોતપોતાના કુટુંબીએ એક જથામા રહી, પોતપોતાનું ગોત્ર અકેક માની લેવુ તેમ કરવાથી એકજ ગોત્રમા લગ્ન જોડાઈ જવાની ભીતિ નાશ પામશે. એકજ ગોત્રમા લગ્ન કરનાર અને કરાવનારે બંન્નેનું અકલ્યાણજ થાય છે. આ લેખકે એવા અનેક દાખલા નજરોનજર જોએલા છે, પરતુ સ્થાનાભાવથી તે પ્રકાશ કરી શકતો નથી.

છેવટે દરેક બંધુઓને મારી નમ્ર વિનતી છે કે—

अ પોતાના કુટુંબમાથી, ગામમાથી, નાતમાથી વૃદ્ધ લગ્ન, બાળ લગ્ન દૂર કરવા પ્રયાસ કરવો!

ब સૌથી પ્રથમ તમારી કોમના આગેવાનો નિસ્પૃહી ને ઠરેલ સ્વભાવના નિયત કરવા જોઇએ

क જ્યાં સુધી લાયક ઉમરના લગ્ન સંબધ જોડાશે નહિ ત્યા સુધી તમારી ઉન્નતિની વાત ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ માની લેવી.

ड જ્ઞાતિના ઉદય અર્થે તન મન ધન અર્પણ કરે એવા આઠ દશ કે વધારે માણસોથી એક મેવાડા સ્વયં સેવક મડળ નામની સંસ્થા ખોલી તેમાના આદર્શ પુરૂષોએ ચારિત્રવાન બની અન્યને ચારિત્રવાન બનાવવા પ્રયાસ કરવો.

સભાઓ ભરી મોટા મોટા ભાષણો કરી લાબા લાબા ઠરાવો પાસ કરી મોટાઇ મેળવ્યાથી સમાજ સુધારો થવાનો નથી, પણ ઠરાવ પાસ કરવા જનાર પ્રથમ સુધરી પછી પોતાના કુટુંબને સુધારી પોતાના ગામનાને સુધારી પછીજ સમાજ સુધારવા જાય તોજ કંઈક અસર થઇ સમાજ સુધરે?

ईडरकी गद्दीके भट्टारक विजयकीर्तिके नाम खुला पत्र।

श्रीमान् मित्र! इस पत्रको प्रकाशित कर मैं अपना कर्तव्य पूर्ण कर रहा हूं, मुझे आशा है कि, इस पत्रके प्रत्येक वाक्यका मनन करिये, और अपने जीवनको पवित्र, उत्तम और उपयोगी बनानेके लिये प्रयत्न कीजिये। मैं इस बातका स्मरण दिलाना चाहता हूं कि आपको अनेक वार चेताया है, सावधान किया है, मित्रके कर्तव्योंका पालन किया है, परन्तु आप इतने व्यामोहमें फंसे हुए हैं, कि आपको पूज्यपाद त्यागी पन्नालालजी ऐलक महाराजने कुछ प्रतिज्ञायें दिलाई थीं, पूज्य गुरुवर्य स्व० पं० गोपालदासजी बरैयाने प्रतिज्ञायें और मौलिक उपदेश दिया था, श्रीमान् जगतहितैषी गुरुजी पं० पन्नालालजी बाकलीवालसे भी आपने प्रतिज्ञायें ली थीं, इत्यादि महान पुरुषोंके समक्ष आपने अपने जीवनको पवित्र और उपयोगी बनानेके लिये भट्टारककी गादी बैठनेके प्रथम ही प्रतिज्ञायें ली थीं, अपने उदार विचार दिखलाये थे, अपनी भावनाको उच्च आदर्श रूप रखनेके लिये आपने बड़ी लंबी २ बातें प्रकाशित कीं, परन्तु वे सब बातें आपने अपने स्वयं सिद्धिके लिये ढोंग बना कर की थीं। आप भट्टारक बनकर मोज मजा मार अपनी आत्माको ठगना चाहते थे और पंचोंकी आंखोंमें धूल झोंकना चाहते थे। आप अपने मनमें समझ रहे थे कि इन

बातोंमें क्या रखा है, ये तो अपने मतलबको बनानेके लिये बहाना है, हृदयकी मायाचारीको कौन जानता है, इस विचारसे रायदेशके भोले धर्मात्मा भाइयोंको ठगा और धोखा दिया।

परन्तु मित्र! आपका यह जाल तत्काल ही कुछ दूरदर्शी विचारशील महानुभावोंके पवित्र हृदयमें जागृत हुआ था, आपको युवराज पद मिलनेके समयमें कतिपय सज्जनोंके पत्र आपके चालचलन बाबतके आये थे परन्तु आपकी मीठी बातों भोले रायदेशके भाई समझ नहीं सके इस लिये ऐसे पत्रोंपर कुछ भी ध्यान न देकर आपकी सराहना की और युवराजपद दिया, अस्तु। युवराजके समय भी आपने बहुत भारी डींग मारी थी कि (१) मैं अपने जीवनको पवित्र सदाचारी रक्खूंगा, (२) विद्याभ्यास कर अपने पदका गौरव बढ़ाऊंगा और सरस्वती भंडार का जीर्णोद्धार करूंगा (३) गुजरात बागड़ और मेवाड़में पाठशालायें खोल कर समाजका द्रव्य समाजसेवामें व्यय करूंगा, (४) अपव्यय घोड़ा गाड़ी सिपाई प्यादेमें न लगाऊंगा आदि।

परन्तु मित्र! यह कपटकी भरी डींग थी, आपको गादी विराजमान होकर कुमार्गमें धन व्यय करना, मौज मज़ा मारना, घोड़ा गाड़ी रखना, भांग आदि पीना, तेल फुलेल लगा कर शौकको पूरा करना, सोनेकी कंठा कंदोरे आदि आभूषण पहन कर ऐश आराममें रहना, सिपाई प्यादे रख कर धनका दुरुपयोग करना, आदि बाबतोंमें पांचसौ रुपया महीनाका खर्च कर समाजकी शक्तिको बिगाडना, और गादीको कलंकित करना है। आपकी इस दुर्नीतिसे धर्मकी हंसी होनेके सिवाय भट्टारक पदको भी लज्जा प्राप्त होती है।

मित्र! आपके आचरण ऐसे हैं कि समाजको देख कर पश्चाताप होता है। आपकी प्रतिज्ञा कहां पर गई? आपका पवित्र विचार किधर गया?

सच है कपट अधिक दिवस तक नहीं टहर सक्ता। युवराज पदके समाचार समाजमें प्रकाशित होते ही दूरदर्शी महानुभाव समाजोद्धारक सेठ साहब माणेकचंद हीराचंदजी बम्बई, लल्लुभाई लखमीचंद चोकसी बम्बई, मा० दीपचंदजी परवार, सेठ मूलचंद किसनदासजी कापड़िया संपादक 'दिगम्बर जैन' सूरत, और पं० नाथूरामजी प्रेमी आदि सज्जनोंने आपको गादी बैठा लेनेका पूर्ण विरोध किया, रायदेशके पंचोंको पत्र द्वारा समझाया, वर्तमान समाचार पत्रोंमें लेख निकाले तो भी रायदेशके पंचोंकी आंखें न खुलीं। टाकाटूकाकी प्रतिष्ठा महोत्सव पर आपने सन्मार्ग चलनेकी प्रतिज्ञा श्री जिनेन्द्र सन्मुख ली। उस प्रतिज्ञाके अनुसार यदि मित्र आप चलते तो मेरी तो यह धारणा है कि उस प्रतिज्ञा धर्मसे वैसा ही अधम मनुष्य क्यों न हो अल्प समयमें नरपुंगव हो सक्ता था। गत साल श्री पूज्य ब्र० भागीरथजी, ब्र० ठाकुरप्रसादजी, ब्र० ज्ञानानंदजी, ब्र० छोटेलालजी, भाई मूलचंदजी किसनदासजी आदि सज्जनोंने आपको किस प्रकार समझाया था जिससे मित्र मुझे पूर्ण आशा हो गई थी कि अब आप अवश्य सुधर जायंगे, परंतु पत्थर पर पानी बह गया।

रायदेशके पंचोंने आपका हिसाब गत साल मांगा था परंतु वह साफ नहीं होनेसे और गड़बड़ होनेसे आपको कितना शर्मिंदा होना पड़ा था। यह बात भी स्मरण होगी कि आपके ऊपर रायदेशने १८ कलम लगाई थी, और आपको अपना पद त्याग करनेका मौका हुआ था उस समय आप "अब मैं अपने, चारित्रको सुधारूंगा" ऐसी पंचके समक्ष प्रतिज्ञा कर पश्चात्ताप हो गये।

मित्र, इन बातों पर मुझे विश्वास नहीं है। और न मैं आपकी तरफसे शंकाशील हूं, परंतु सर्वत्र आपकी अपकीर्ति फैल रही है वह सहन नहीं होती है और न धर्मकी अवहेलना देखी जाती है। आप जैसे चतुर मनुष्यसे भट्टारक पदकी हंसी होना लज्जाकी बात है। मैं इन बातोंमें खूब बारीक विचार करता हूं तो श्रीमान् गुरुवर्य **पं० पन्नालालजी**ने 'दिगंबर जैन' वर्ष ८ अंक १० पत्र २७में आपका प्रतिज्ञा पत्र (आपके हस्ताक्षरका ब्लोक) छापा है उसकी सत्यता प्रतीत नहीं होती है। प्रतिज्ञापत्रमें आपने अपनी जो प्रतिज्ञायें लिखीं हैं उनका लेश मात्र पालन नहीं किया है।

यदि उन प्रतिज्ञाओंको जो आपने अपने हाथसे लिख दी थी उसका पालन किया होता तो मैं दावेके साथ कह सक्ता हूं कि आपके ऊपर १८ कलम स्वप्नमें भी नहीं लग सक्ती थी जिससे आपको इतना नीचा देखना पड़ा। अस्तु।

मित्र! वर्तमान वर्षमें भी आपने अपने आचरण नहीं सुधारे।

परन्तु मित्र! आपने तो ये प्रतिज्ञायें तथा वचनामृतोंको लोगोंको दिखानेके लिये लीं थीं, न कि आत्मचरित्रको सुधारनेके लिये। यदि आत्मा सुधार करनेकी आपकी प्रबल भावना होती तो आप समाजके नेता बन कर महान पुण्यके भागी नामांकित नररत्न बन सक्ते थे परन्तु यह बात नहीं थी। आपकी प्रतिज्ञा कोरी नाम मात्रकी प्रतिज्ञा थी। आपकी इस कुटल नीतिका जिसने विरोध किया था उसको आप शत्रु रूप समझने लगे। वयोवृद्ध पं० पन्नालालजी साहबने आपकी इस कुटल नीति पर आपकी प्रतिज्ञाओंकी नकल छपा कर खेद प्रकाशित किया तो आप ऐसे पवित्र मनुष्यको बुरी निगाहसे देखने लगे।

मित्र! उत्तम पद पाकर क्या किया? आत्मचरित्र आदर्श–उत्तम नहीं हो सक्ता अस्तु।

युवराज पदके समय आपने विद्याभ्यास करनेकी प्रतिज्ञा की थी। आज तक आपने क्या शिक्षा ली? आपमें एक साधारण मनुष्यके समान ज्ञानकी योग्यता नहीं है तो इस महान पदको आप किस प्रकार योग्यतासे चला सक्ते हैं। मित्र! वासुदेव उपाध्याय आपको शिक्षा देनेके लिये कितना प्रयत्नशील रहा, परन्तु खेद है कि आपने शिक्षा लेनेके बदले उस बिचारेको भांग पीनेके लिये दबाया और झूठी लिखा पढ़ी कर कंटकको दूर किया।

मित्र, आपको किसी प्रकारके आजीविकाकी चिंता नहीं, पुत्र मित्र कलित्रका मोह नहीं, आप शिक्षा प्राप्त करते तो आपको अवकाश बहुत था परन्तु आप कुछ न कर सके। दुःख है आप क्या सोचते थे और क्या कर रहे हैं। अस्तु।

मित्र, अधिक न पढ़ सके तो हानि नहीं, परन्तु ब्रह्मचारी बन कर चारित्रकी मात्रा अत्यंत पवित्र तो रखते। दुःख है कि आपका चारित्र आदर्श न रहा। माननीय पं० कुंजविहारीलालजीने आपको सन्मार्गपर चलानेकी पूर्ण कोशिश की परन्तु कौन सुनता है। सुना है ईडरमें आपकी यथेष्ट प्रतिष्ठा नहीं है। यह भी सुना है कि आपकी भावनायें ईडरमें नहीं होतीं। ऐसा है तो मुझे आपके ऊपर पूर्ण दया आती है। सचमुच आपने अपने जीवनको ऊंचे पदके लोभमें वहा दिया।

मित्र! आपमें प्रत्येक कार्य करनेकी पूर्ण शक्ति है। आपका पद महान है। आपका अधिकार सर्वोपरि है। आपकी सत्ता प्रबल है। आपका क्षेत्र विशाल है। शक्ति समुदायरूप होनेसे अनंत है व्यापक है परन्तु मित्र, आपसे कुछ भी परमार्थ कार्य न हो सका। आपका यश शुष्क है निर्जीव है। आपका गौरव आपको लज्जायमान करता है। आपका पद आपको नहीं शोभा देता है। वीतराग पदमें शृंगार कैसे निभ सक्ता है। सन्मार्गमें असदाचरण किस प्रकार शोभाको प्राप्त हो सके हैं, चारित्रकी धुरामें मलिन भेष कैसा बुरा मालूम पड़ता है। मित्र, क्या यह आपने कभी सोचा है?

सुना है कि डुंगरपुरकी पाठशाला भी बंद कर दी है, कदाचित् यह संभावना हो सकी है क्योंकि घोड़ा सिपाही आदिका ५००) रु. का खर्च आपके पीछे है। यह खर्च बिलकुल व्यर्थ है। अस्तु, मुझे लिखना बहुत है परन्तु शायद आप मुझसे रुष्ट हो जांय इस लिये मैं अपने लेखको पूर्ण करना चाहता हूं। हां, मंत्र तंत्रके ढोंगमें अपना जीवन नहीं गमा देना और न ऐसा कार्य कर बैठना जिससे धर्मकी हंसी हो।

मेरे इस लेखसे आप अवश्य बुरा मानेंगे परन्तु आपने अपनी प्रतिज्ञापत्रमें ऐसा लिखा है कि **'यदि मेरे वर्त्ताव धर्म विरुद्ध और नीति विरुद्ध हों तो विद्वज्जन और रायदेशके पंच योग्य दण्ड दे सके हैं'**। आपको भट्टारक हुए ८ वर्ष हो गये हैं, आज तकके कार्योंका विचार किया जाय तो आपने भट्टारक पदको लजाया है। इसी लिये गत साल ऐसा मौका उपस्थित हुआ था, परन्तु वह दैव कृपासे दूर हो गया, परन्तु सुना है कि हालमें आपसे रायदेश बहुत ही अप्रसन्न है और आपके कार्योंकी तीव्र आलोचना हो रही है।

आपको भट्टारक हुए ८ वर्ष हुए। यदि आप चाहते तो इतने विशाल समयमें ईडरके प्रसिद्ध **सरस्वती भंडारका जीर्णोद्धार** करा कर महान पुण्य और यशके भागी हो सक्ते थे। ग्रन्थालयके समान जैनियोंको अन्य निधी नहीं है। शास्त्र भंडार हमारे सर्वस्व हैं। उसकी रक्षा करना आपका प्रथम कर्तव्य था परन्तु दुःख है कि आज तक ग्रन्थोंका उद्धार करना अलग रहा धूप तक नहीं दी और न सूची पत्र बना कर प्रसिद्ध किया। आप अपना काल किस प्रकार व्यतीत करते हैं समझमें नहीं आता।

मित्र, मेरे इस लेखके कटुक शब्दोंसे आप गाली देंगे, परन्तु आप सावधानीसे कार्य करें यही क्षमाका उपहार चाहता हूं।

आपका सदैव हितैषी—

एक स्नेही।

रायदेशके पंचोंका कर्तव्य।

भट्टारक विनयकीर्तिके विरोधमें आज कितने वर्षोंसे आंदोलन हो रहा है इस बातको सब विद्वान और समाजनेता पुकार कर कहते हैं कि ये भट्टारकके योग्य नहीं है, तो फिर इस बातका आप क्यों नहीं विचार करते हैं। यदि भट्टारक विनयकीर्ति इस पदके सर्वथा अयोग्य है तो उनको गादीसे उठा देना चाहिये, जिससे धर्मकी हंसी न हो! और यदि भट्टारक पदके योग्य आपमें योग्यता है तो इनके विरुद्ध लेखोंका प्रत्युत्तर देकर समाजको शांत कीजिये। समाज कह रही है कि भट्टारकजी महाजन ५००) मासिक पेदा आदि व्यर्थ खर्चमें उड़ा रहे हैं। इतने खर्चसे एक एक गांवमें पाठशाला खुल सक्ती है। रायदेशके भाई इस बातका विचार कर खुलासा 'दिगम्बर जैन'में छापेंगे ऐसी आशा है। भाईयोंका दास—

जीवनलाल आत्माराम।

प्रेमोपहार ग्रन्थ।

प्रेम-पुष्पांजली ।।) शान्ति धर्म ।=
प्रेम-कली १) वैसा अंधेर ।) प्रेम-धर्म ।)
प्रेम-शतक =) निबन्ध रत्न-माला ।।)
सौभाग्य रत्नमाला ।।) उपदेश रत्नमाला ।।)
बालिका विनय =) प्रेमांजलि =) हितशिक्षा ।=)
मेरी भावना –) सच्चा विश्वास =)
भावना लहरी =) प्रेम परंपरा =)
त्रिवेणी =) मैत्री धर्म =) मोहिनी ।।)

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सूरत।

चतुर्विंशति स्तोत्रम्।

देवेंद्र भृंग मालाभिः सेवितं सत्पदांबुजम्।
वृष लांछन संयुक्तं वंदे श्री वृषभं जिनम्॥
मिथ्यामत महारण्ये यो जिन कंद मकेसरी।
कुंजरांक समायुक्त स्तुवेऽजित जिनेश्वरम्॥
योऽज्ञानध्वांतमार्तंडो ज्ञानसिंधु सुधाकरः।
तुरगांक समापन्नं यजे तं शंभवं जिनम्॥
यद् गमाब्धे विबुधैं गृहीतं ज्ञानपीयुषम्।
कपिलांछन संयुक्तं अभिनंदनमाश्रये॥
संसारोदधिमग्नानां यः सदा तारणीयते।
चक्रांक धर्मचक्रेशं भजे तं सुमतिं वरम्॥
नीतं कर्मानलं शांतिं येन ध्यानांबु धारया।
पद्मांकं तापहर्तारं नौमि पद्मप्रभ प्रभुम्॥
मत्तस्मर भुजंगस्य यः सदा गरुडायते।
स्वस्तिकांक समायुक्तं न सुपार्श्व नमाम्यहम्॥
मत्कुमुनिमानानां यद्धर्मो व्यजुवत् सदा।
चंद्रांकं चंद्रगौरं तं सेवे चंद्रप्रभं जिनम्॥
यत्तत्त्वौषधि मंत्रेण भवरोगच्छिदो नराः।
मकरांक समायुक्त पुष्पदंत समाश्रयेऽहम्॥
संसारजलधेस्तार जितकर्मरिपु व्रजम्।
मंदरांकं गणाधीशं भाये शीतलं जिनम्॥
अत्र रत्नत्रयं लब्ध्वा त्रिलोके श्रीयुतोऽभवत्।
गरुडांक समायुक्तः सोऽस्तु श्रेयन् हिताय मे॥
मनोज्ञा मुक्ति तरुणी स्वीकृता येन धीमता।
महिषांक समापन्नं वासुपूज्यं नमाम्यहम्॥
यज्ज्ञान मध्य माणिक्यं विद्वत्कंठे प्रकाशते।
वराहांक जिनाधीशं विमलं प्रणमामि तम्॥
सचकरा मुदं याति यदास्य–विधु–दर्शने।
सैरिभांक–समायुक्तं अनंतं प्रणमामि तम्॥
नृसुरासुर संपूज्यो धर्मतीर्थप्रवर्तकः।
वज्रांक पूज्यपादो यो धर्मं तं प्रार्थये जिनम्॥

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

 दिगंबर जैन. 

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभि ।
सबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मात्रम् ॥

वर्ष १४ वाँ.	वीर सवत् २४४७. पौष. विक्रम स० १९७७.	अंक ३ रा

भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा
की
पचीसवीं वार्षिक बैठक-कानपुरमें
श्रीमान् साहू सलेखचंदजी जैन रईस नजीबाबादके
सभापतित्वमें

आगामी ता० १-२-३ अप्रैल १९२१ अर्थात् चैत्र (गुजराती फाल्गुन) वदी ९-१०-१० को अतीव समारोहके साथ होगी।

विशेषता-

इस वार विशेषता यह है कि इसके साथमें बडा भारी

" प्राचीन जैन साहित्य प्रदर्शन "

किया जायगा और सारे हिन्दका प्राचीन जैन साहित्य बताया जायगा।

साथमें महिला परिषद् और विद्वत् परिषद् भी होगी।

सब भाई अवश्य पधारें।

पधारनेकी स्वीकारता स्वागत स० मंत्री बाबू रूपचंदजी जैन, मूलगज, कानपुर अथवा हमें भेजें। पेश होने योग्य प्रस्ताव भी शीघ्र ही हमें भेजें। प्रतिनिधि फोर्म भी मंगा लेवे।

समाज सेवक-लाला भगवानदास
महामंत्री, महासभा, बडनगर (मालवा)



जैसे सारे हिन्दकी बडी सभा इंडियन नेशनल कोंग्रेस है इसी तरह सारे हिन्दके दिगंबर जैनोंकी एक बडी सभा भारतवर्षीय दिगंबरजैन महासभा है जो पचीस वर्षसे कार्य कर रही है।

कानपुरमें महासभा।

इसने प्रथमके वर्षोंमें कुछ अच्छा कार्य किया था परन्तु बीचमें बहुत शिथिल हो गई थी परन्तु हर्ष है कि तीन वर्षसे महासभामें नवीन जीवन आया है। जबसे इसके महामंत्री लाला भगवानदासजी और सहायक महामंत्री पं० अमोलकचन्दजी हुए हैं इसकी कार्य प्रणालीमें बहुत कुछ सुधार हुआ है और ये महानुभाव महासभाको सर्वव्यापी बनानेके लिये अतीव परिश्रम कर रहे हैं।

इस महासभाका गत वार्षिक अधिवेशन रा० बा० सेठ टीकमचन्दजीके सभापतित्वमें सफलतासे हुआ था और इस वर्ष **पचीसवां अधिवेशन कानपुरमें** आगामी ता. १-२-३ अप्रैल १९२१ अर्थात् मिती चैत्र वदी (गुजराती फाल्गुन वदी) ९-१०-१०को होनेवाला है। इसके सभापति नजीबाबाद निवासी साहू **सलेखचंदजी रईस** होंगे। आप श्रीमान्, विद्वान, वयोवृद्ध, अनुभवी और पूज्य प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके सुपौत्र साहू जुगमन्दरदासजी वर्षोंसे महासभाकी सेवा कर रहे हैं। आपके सभापतित्वमें यह अधिवेशन अपूर्व सफलता प्राप्त कर सकेगा इसमें संदेह नहीं है।

इसवारकी महासभामें बड़ी भारी **विशेषता** यह है कि कभी भी नहीं हुआ था ऐसा एक बडा भारी **प्राचीन जैन साहित्य प्रदर्शन** होगा जो कि ता० ११-३-२१ से ६-४-२१ तक खुला रहेगा। प्रदर्शनीके नियम हमने इस अंकके अन्तमें प्रकट किये हैं जिससे पाठकोंको मालुम होगा कि इसमें मूर्ति विभाग, ग्रन्थ विभाग, उपकरण विभाग, शिल्प विभाग आदि कई विभाग होंगे और बड़ी खोजके साथ सारे हिन्दसे लाकर अनेक प्राचीन जैन साहित्य इसमें दिखाया जायगा। प्रदर्शनके लिये खास कमेटी बनी है जिसके मंत्री वैद्यरत्न पं० कन्हैयालालजी नई सडक कानपुर हैं। प्रदर्शनीमें ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि कोई भी सामान न चुराया जा सकेगा न बिगड़ेगा। इस लिये जहां २ प्राचीन जैन ग्रन्थ, चित्र, नक्शे, शीला लेख, ताम्रपत्र, प्राचीन उपकरण आदि हों वहांके भाई उनको इस प्रदर्शनीमें अवश्य ता० १९ मार्च तक भेज देवें। इससे हमारा साहित्य बहुत प्रकाशमें आ जावेगा और कई अप्रकट ग्रन्थोंकी प्राप्ति हो जावेगी तथा दिगंबर जैन धर्मका प्राचीनत्व प्रकाशमें आजावेगा। दूसरा कार्य यह है कि महासभामें पेश होने योग्य प्रस्ताव लिखकर १९ दिनके भीतर महामंत्रीजीके पास बड़नगर भेजने चाहिये और अपने यहां पंचायत करके अपनी तरफसे प्रतिनिधि भेजनेका निश्चित करके उनके नाम भी महासभाके दफ्तरमें बडनगर भेजने चाहिये। और अंतिम कर्तव्य यह है कि

दिगंबर जैनियोंकी इस महासभामें हिन्दके हरएक ग्राम और शहरके भाई बहिनोंको सामिल होनेके लिये अभीसे तैयार हो जाना चाहिये। इसमें कोई सनेह नहीं है कि इस वारकी महासभा अपूर्व ही होगी।

* * *

अष्टानिका पर्व। अष्टानिका पर्व वर्षमें तीनवार आता है उसमें दुसरा अष्टानिका पर्व फाल्गुन सुदी ८से १५ तक समीप ही है। इस समय दूसरा हिंसामय मिथ्यात्वी पर्व होली (हुताशणी) भी आता है जिसमें सिवाय अनेक प्रकारकी हिंसाके और कुछ नहीं होता है। हमारे कई जैनी भाई अब भी अष्टानिका जैसे महान् पर्वमें होलीको मानते हैं, उसमें श्रीफल चडाते हैं, कृत्रिम चीजोंकी बलि करते हैं, आपसमें विभत्स व्यवहार करते हैं यहां तक कि अतीव लज्जाजनक दृश्य करके अहिंसा प्रतिपालक जैन नामको लजाते हैं। उनको उचित है कि अष्टानिका पर्वको व्रत उपवास पूजन स्वाध्याय उपदेश आदिसे व्यतीत करे और होली पर्वमें लेश मात्र भी शामिल न होवे। इससे तो जैन नामको धब्बा लगता है और अन्यमती भाई कहते हैं कि देखो जैनी हमारे पर्व कैसे मानते हैं!

* * *

तीर्थोंके झघडे। श्री शिखरजी, सोनागिरीजी, अंतरीक्षजी, मक्षीजी, तारंगाजी आदि तीर्थोंमें दिगंबरी श्वेतांबरी जैनोंके परस्पर झघडे वर्षोंसे चल रहे हैं और जिनमें हजारों तो क्या लाखो रुपये जैनियोंके स्वाहा हो रहे हैं उनको आपसमें निपटानेके लिये कलकत्तेमें माघ सुदी ११-१२-१३को इकत्र कोन्फ्रेंस होनेवाली थी परंतु अहमदाबादवालेने अपने नगरसेठकी अनुपस्थिति होनेसे उसको तार करके रुकवा दी है। कौन जाने कि अब वह कब होगी! 'जैन' पत्रसे मालुम होता है कि सब तीर्थोंके झघडे सरपंच होकर निबट जावे ऐसी पक्की व्यवस्था होनेके लिये ही मीटिंग मुल्तवी की गई है। यदि ऐसा हो तो ठीक है। अभी 'अहिंसा' पत्रसे मालुम हुआ है कि ब्र० ज्ञानानन्दजी बनारसमें **महात्मा गांधीजीको** खुद मिले थे और आपसे बातचीत करने पर गांधीजीने अपने झघडे निपटानेके लिये सरपंच होना स्वीकार किया है। यह बड़ी खुशीकी बात है। अब हमारे नेताओंको विलम्ब न करके जहां तक हो शीघ्र ही इकत्र कोन्फरेंस बुलाकर दोनो पक्षकी कमेटी नियत कर देनी चाहिये। हम समझते हैं कि दिगम्बरी अपनी ओरसे ऐसी कमेटी कानपुर महासभामें नियत कर सकते हैं और श्वेतांबरी भाईयोंको भी कोशिश करके अपनी तरफसे एक कमेटी नियत करदेनी चाहिये।

* * *

मनुष्य गणना। प्रत्येक दस वर्षके बाद सरकारकी ओरसे सारे हिंदके मनुष्योंकी गणना एक ही दिन होती है। अंतिम गणना सन् १९११में हुई थी और अब फिर दस वर्ष बाद इसी वर्ष (१९२१)में आगामी ता. ३१ मार्चको मनुष्य गणना होनेवाली है। इसके लिये

प्रथमसे सरकारी आदमी आ २ कर फार्म भर जाते हैं और अंतिम दिन फिर आकर उसको मिला जाते हैं। कई वर्षोंसे प्रयत्न करने पर जैनियोंकी गणना ठीक २ नहीं होती इसमें हमारा ही दोष है क्योंकि हम ही बराबर लिखाते नहीं है। जैनियोंमें भी दिगंबरी श्वेतांबरी स्थानकवासी अलग २ नहीं मालूम पडते इसका कारण खास तो यही है कि बहुत करके सब जैन ही लिखा देते हैं। यदि हम जैनी ठीक २ लिखावे तो आसानीसे तीनों संप्रदायकी संख्या अलग २ मालूम हो जावे। ऐसे ही जाति लिखानेमें गडबड होती है। अपनी जाति भी लोग बराबर नहीं लिखाते हैं इसलिये इसवार हम सभी दिगंबर जैन भाइयों और बहिनोंसे आग्रहपूर्वक निवेदन करते हैं कि जब आपकी पास सेन्सस (मनुष्य गणना)के आदमी आपका नाम लिखनेके लिये आवे तब आपको जब धर्म पूछे तो **"दिगम्बर जैन"** लिखावे और **जाति** पूछे तो आप अपनी जाति अग्रवाल, खंडेलवाल, हुमड, नृसिंहपुरा, मेवाडा, परवार, जैसवाल, जो भी अपनी जाति हो ठीक २ लिखावे। खयाल रहे कि श्रावगी या सरावगी कोई जाति नहीं है। श्रावगी खंडेलवालको ही कहते हैं इसलिये अपनेको श्रावगी कहनेवाले खंडेलवाल ही लिखावे।

* * *

सस्ती हिन्दी ग्रन्थमाला। बम्बईमें अभी देहलीका जैन संघ पधारा था तब उसमें महान् जैन साहित्य प्रेमी अमृतसर-निवासी लाला उम्मेदसिंह मुसद्दीलालजी भी थे। पाठकोंको याद होगा कि आपने ही प्रथम १००१) देकर ब्र० शीतलप्रसादजीको उत्साहित किये थे कि वे माणिकचंद्र संस्कृत ग्रंथमालाके लिये १००००)का फंड कर देवे इससे ब्रह्मचारीजीने कोशिश करके कमसे कम सौ २ रुपये भरवाकर ये १००००) बहुत अल्प समयमें इकट्ठे कर दिये थे जिससे माणिकचंद्र ग्रंथमालाका कार्य तो अब उत्तरोत्तर वृद्धिरूप चल रहा है परन्तु हिंदी भाषाके ग्रंथ भी सस्ते मूल्यमें सबको मिल सके इसलिये लाला मुसद्दीलालजीका ब्रह्मचारीजीको कहना था कि एक लाख रुपयेका फंड करके एक सस्ती हिन्दी ग्रंथमाला स्थापन कर देना चाहिये और बंबईसे प्रगट करनेका प्रबंध कराना चाहिये, मैं इसमें भी ११०१) देना स्वीकार करता हूं आदि। इस निवेदन परसे बंबईमें इस बातकी अभी कोशिश की गई और सेठ सुखानंदजी आदिकी सलाह हुई कि मुनि अनंतकीर्तिजीके नामकी ग्रन्थमाला ११००)से स्थापित हुई है उसीका एक लाखका फंड करके इसी नामसे हिंदी (दि० जैन) ग्रन्थमाला प्रगट की जावे। इससे उसी वक्त बंबईमें चंदा भरा गया तो ११०१) सेठ सुखानंदजीने और दिये तथा और भी कई रकमें भर कर करीब ६०००) भरे गये हैं। इसके सभापति सेठ सुखानंदजी और मंत्री बाबू माणेकचंदजी बैनाडा और सेठ रतनमल बडजात्या हुए हैं। आफिस हीराबागमें ही रक्खी गई है। यदि बंबईवाले कटिबद्ध होकर प्रयास करे तो एक लाख रुपयेका फंड होना कुछ बडी बात नहीं है। हमारे श्वेतांबरी भाइयोंमें देवचंद

लालभाईका ऐसा ही फंड है और वे अनेक सस्ते ग्रंथ प्रकट करते हैं उसी प्रकार इस ग्रंथमाला द्वारा लागतके मूल्यसे हिंदी भाषाके ग्रंथ प्रकट होनेकी बड़ी भारी आवश्यक्ता है। यह भी निश्चित हुआ है कि जो भाई इस फंडमें १००) देंगे उनको प्रकट होनेवाले सब ग्रंथ विना मूल्य मिलेंगे। हम हमारे पाठकोंको आग्रह करते हैं कि वे इस ग्रन्थमालामें कमसेकम सौ२ रुपये भेजकर अपना स्थायी नाम लिखा देवे।





इकत्र कोन्फरन्स नहीं हुई—दिगम्बरी तथा श्वेतांबरी भाईयोंके श्री शिखरजी सोनागिरीजी आदि तीर्थोंके झगड़े आपसमें निबटानेका विचार करनेके लिये पटनामें गत पौस सुदी ११को महाराज बहादुरसिंहजीके सभापतित्वमें दोनों पक्षके मुखियाओंकी मीटिंग हुई थी जिसमें दिगम्बरी—लाला जम्बूप्रसादजी, लाला देवीसहायजी, बा० बल्देवदासजी, सेठ हरसुखदासजी, और बाबू हरनारायणजी, तथा श्वेतांबरी—महाराज बहादुरसिंहजी, राय कुमारसिंहजी, बाबू लक्ष्मीचंदजी सिंघनी, बा० मोतीचंदजी और बा० कुशलचंदजी कुआरी उपस्थित थे और उसमें इसी कार्यके लिये इकत्र कोन्फ्रेन्स माघ सुदी ११-१२-१३को बुलानेका निश्चित हुआ था और वह होनेवाली भी थी, सब तैयारियां हो भी चुकी थीं परन्तु अहमदाबाद वालोंने तार भेजे कि हमारे नगरसेठ कस्तुरभाई इग्लांडमें हैं और उनकी अनुपस्थितिमें हम राय नहीं दे सकते, वे आवे वहांतक यह कार्य स्थगित रखे आदि इससे यह कान्फ्रेंस करनेवालेको बंद रखनी पड़ी अर्थात गत माघ सुदी ११को कलकत्तेमें यह इकत्र कान्फ्रेन्स नहीं हो सकी थी। क्या जाने अब कब मुहुर्त आता है?

गजपंथाजी—और श्री पावागढमें माघ सुदी १३ को वार्षिक मेला हो गया।

दाहोद जैन पाठशाला—का दूसरा वार्षिक अधिवेशन गत ता० ९को हुआ था जिसमें पं० दीपचंदजी परवार और वीर कालूरामजी खास पधारे थे। पांच बालिकाओंने स्त्री शिक्षा पर एक संवाद ऐसा उत्तम सुनाया कि एक ब्राह्मण महाशयने उसी वक्त कहा कि मैं अपनी कन्याको कलसे इस पाठशालामें भेजूंगा। बालकोंको रुमाल पुस्तकें मिठाई आदि वितरण किये गये थे। जैन अजैन संख्या १००० से भी अधिक थी उनका भी इलायची सुपारीसे सत्कार किया गया था तथा उस दिन नगरकीर्तन भी हुआ था। पं० फूलचन्दजी पाठशालाका कार्य उत्तमतासे चला रहे हैं।

विहार उड़ीसा—प्रा० दि०जैन खंडेलवाल सभाकी प्रथम बैठक श्री सम्मेदशिखरजीमें फाल्गुन सुदी १३-१४-१५ को (अष्टानिका पर्वमें) होगी। स्वागत मंत्री रामचंदजी सेठी मु० गिरीडी (हजारीबाग) हैं।

कारंजा—महावीर ब्रह्मचर्याश्रमको सेठ तलकचंद सखाराम जौहरी बम्बईने १५००) दान किये।

रींवांके जैन मित्र मंडलने निम्न लिखित अनुकरणीय १४ प्रस्ताव पास किये हैं—विलायती दवा न खाना, मधु (शहद) नहीं खाना, परस्त्री सेवन नहीं करना, वेश्या गमन नहीं करना, आतशबाजी नहीं चलवाना, बिना छना पानी नहीं पीना, बाजारकी पूडी आदि अन्नके पदार्थ न खाना, सोडावोटर लिमलिट न पीना, तमोलीकी दूकानका पान न खाना, कसाईके हाथ लेन देन व्यापार न करना, जहां जिनमंदिर हो बिना दर्शन भोजन नहीं करना, जैन विधिसे विवाह करना तथा भांग तमाखू बीडी आदि मादक वस्तु सेवन नहीं करना।

सूचना—महासभाके महामंत्री लाला भगवानदासजी बडनगर (मालवा) सुचित करते हैं कि कानपुरमें होनेवाले अधिवेशनमें पेश करनेके लिये प्रस्ताव हमें १९ मार्च तक भेजने चाहिये, पाछको जो प्रस्ताव आवेंगे उन्हें यदि हम नियम नं. ६९के अनुसार पेश न कर सकें तो प्रस्तावकको किसी प्रकारकी शिकायतका स्थान नहीं मिलेगा।

इन्दौर—में सेठ हुकमचंदजी महाविद्यालयमें पारितोषिक वितरणका उत्सव गत ता. २० को होम मिनिस्टर मि० बापनाके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें उत्तीर्ण छात्रोंको नगद रुपये इनाममें दिये गये थे। का ास और प्रीति भोजन भी हुआ था।

माणिकचन्द्र-संस्कृत ग्रन्थमालामें जिन २ धनिकोंने सौ २ रुपये दिये हैं उनको आजतक प्रकाशित सभी १६ ग्रन्थ भेटमें भेजे गये हैं और अब भी जो भाई सौ २ रुपये सहायता करेंगे उनको ग्रंथमालाके सब ग्रन्थ भेटमें मिलेंगे। इस विषयमें मंत्री नाथूराम प्रेमी हीराबाग, बम्बईसे पत्रव्यवहार करें।

बम्बई दि०जैन प्रा० सभा—का अधिवेशन सोलापुरमें करनेका निमंत्रण भी मिला था परन्तु सोलापुरवाले अब कहते हैं कि इस साल दुष्काल आदिके कारण हम अधिवेशन नहीं करा सकते आदि। इससे सोलापुरमें तो अधिवेशन होनेकी उम्मेद नहीं है।

बड़वानी—का मेला गत ता. १९ से २२ तक हो गया। बड़वानी पाठशालाका जल्सा भी हुआ था। इड़नगर अनाथालयको (११००) सहायता मिली तथा बावनगजाजीके लिये एक आना सैंकडा निकालनेका प्रस्ताव हुआ था उसकी वसूली हुई थी।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाकी वार्षिक बैठक स्तवनिधिमें पौष सुदी १९ को मि० चौगुलेके सभापतित्वमें हो गई।

माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके लिये निम्न हस्तलिखित ग्रन्थोंकी आवश्यकता है—रत्नकरण्ड श्रावकाचार प्रभाचन्द्रकी सं० टीका, नीतिवाक्यामृत, न्यायकुमुदचन्द्रोदय, न्यायविनिश्चयालंकार, प्राकृत व्याकरण शुभचन्द्रकृत, पंचसंग्रह अमितगतिकृत, वर्द्धमान नीति अमितगतिकृत और आदिपुराण पुष्पदंत कविकृत। पत्र व्यवहार-पं० नाथूरामप्रेमी मंत्री, हीराबाग, बम्बई।

कौंसिलमें जैनी—असहयोगके कारण नई कौंसिलका बहिष्कार हो रहा है तब नई कौंसिलमें निम्न लिखित दि० जैन भाई चुने गये हैं—मि० लट्ठे बेलगांव, और प्यारेलाल बेरिस्टर मेरठ

वाइसरोयकी कौंसिलमें, बा० शिवचरणलाल इलाहाबाद युक्तप्रांतकी कौंसिलमें और चौगुले वकील बम्बई प्रांतिक कौंसिलमें।

उपाधियां–नये वर्षमें दि० जैनोंमें बा० सखीचंदजी सुप्रि० पुलिसको कैसरे हिन्दका सुवर्णपदक, तथा दीवानचंद जैन गुरुदासपुर, ला० पारसदास खजान्ची दिहली, बा० हजारीलालजी दानापुर, बाबूरामजी ठेकेदार एबटाबादको **रायसाहब**की उपाधि मिली है।

वडनगरके जैन अनाथालयकी दशा उत्तरोत्तर वृद्धिरूप है। अभी ६२ अनाथ हैं। परन्तु आमदनी कम है इस लिये दातारोंको मदद देनी चाहिये। सौ २ रुपयेके १०००) शेर धनिकोंको भर देने चाहिये।

केशलोंच उत्सव–हुबली (धारवाड) में शिवरात्रिका मेला जिसमें कि करीब दो लाख आदमी जमा होते हैं उस मौकेपर फाल्गुन वदी १४ को श्रीमान् त्यागी ऐलक **पन्नालालजी महाराज** केशलोंच करेंगे। यहां शिवचरणलाल लिंगायत स्थ गीजांके प म भक्त हुए हैं और अपने मठमें ही बड़ा भारी उत्सव करके महाराजका आप केशलोंच करावेंगे।

नकशा जीवदया–महासभा के जीवदया विभागके मंत्री मास्टर दीपचंदजी, जैन बोर्डिंग रतलामने जीवदयाका एक बहुत उपयोगी नकशा बनाकर प्रगट किया है उसमें हिंसाके अनेक भेदोंका खुलासा है। यह विना मूल्य मंगाकर जीवदयाका प्रचार करना चाहिये।

भारत जैन महामंडल–नागपुरकी बैठकमें निश्चित हुआ है कि जैन पब्लिक हाउस आराकी मददके लिये १००००)का फंड एकत्र करना तथा दिगम्बर ग्रंथ ब्र० शीतलप्रसादजीको और श्वेतांबर ग्रंथ धर्मविजयसूरिको दिखाकर प्रकाशित करना।

प्राचीन तीर्थ खंडगीरी–यदि आप शिखरजीकी यात्राको जावे तो वहांसे भुवनेश्वर स्टेशनकी टिकट लेकर श्री उदयगिरि खंडगिरि तीर्थको अवश्य २ जावें। यह तीर्थ भुवनेश्वरसे ४ मील ही है। इस क्षेत्रमें प्राचीन चौवीस भगवानके दर्शन करके चतुर्थ कालकी याद आपको आवेगी। महाराज खारवेल एक जैनी राजा हुए थे, उनका १६ गज लम्बा और ६ गज चौडा शिलालेख देखकर आप मुग्ध हो जावेंगे। हजारों प्राचीन खोजी इस लेखको २१०० वर्षका बताते है। नई धर्मशाला और जीर्णोद्धारका कार्य भी पूर्ण होने आया है। मुनीम नौकर आदिका भी उत्तम प्रबंध है।

तनसुखलाल पांड्या।

उड़ेसर–(मैनपुरी) में फिर जैन सम्मेलन आगामी चैत्र सुदी ११से १९ तक ला० मुन्नी लालजीकी ओरसे होनेवाला है इस अवसर पर **पद्मावती परिषद्**का अधिवेशन बड़े समारोहके साथ होगा।

वडनगरके जैन अनाथालयका सेठ आनंदीलालजी मंदसौरने निरीक्षण करके अतीव संतोष प्रकट करते हुए १५ दिन तक सब अनाथोंको अपनी तरफसे भोजन कराना स्वीकार किया। तथा सेठ मदनमोहनलालजी उज्जैन बालकोंके लिये युनिफोर्म ड्रेस बनवा रहे हैं।

बम्बईमें जैन स्वयं सेवक—बम्बईकी दि० जैन धर्मवर्द्धिनी सभाके उत्साही नवयुवकोंने २ महीनेसे दि० जैन स्वयंसेवक मंडल स्थापित कर दिया है जिसमें ४० मेम्बर हैं। इसके मंत्री निरंजनलाल जैन (ठिकाना हरनामसिंह मंगतराय ३८७ कालकादेवी बम्बई) प्रकट करते हैं कि कोई संघ तीर्थयात्रा आदिका बम्बई पधारे तो कमसे कम आठ दिन पहले हमको खबर कर देंगे तो ठहरने आदिके लिये सब प्रबन्ध करवा देंगे और यथाशक्ति संघकी सेवा करेंगे।

बुंदी—के सेठ दौलतराम कुन्दनमलजीका गत ता. १३को स्वर्गवास होगया। क्या आपके कुटुंबीगण सेठजीके स्मारकमें बड़ा भारी स्थायी विद्यादान नहीं करेंगे!

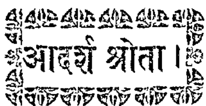
છાણીમાં ત્રિલોકસાર પૂજન—છાણી (વડોદરા)મા શા. નરસીદાસ લખમીચંદ તરફથી મેઠ નરોતમદાસના પૂણ્યાર્થે શ્રી ત્રિલોકસારનું બૃહત્ પૂજન માહ વદ ૨ થી ફાગણ સુદ ૩ સુધી મોટા ઠાઠમાઠથી થનાર છે. ફાગણ સુદ ૧ સ્વામીવત્સલ, સુદ ૨ જલયાત્રાનો વરઘોડો તથા સુદ ૩ ને દિને મદિર પર ધ્વજારોહણ, પૂજન પૂર્ણાહુતિ અને સ્વામી વત્સલ થશે. સર્વે ભાઇઓએ દર્શને પધારવું જોઇએ. છાણી વડોદરાની પાસે બાજવા સ્ટેશનથી નાની લાઇનમા સ્ટેશન છે તેમજ ગોધરા લાઇનમા છાયાપુરી સ્ટેશનથી જવાય છે.

ब्रह्मचर्याश्रममें उचित प्रस्ताव—श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमके ब्रह्मचारियोंकी एक बाग्वर्द्धिनी सभा है जिसकी एक मीटिंगमें प्रस्ताव पास हुए हैं कि (१) विदेशी कपड़ेका बहिष्कार करना अर्थात आगेसे जो कपड़े पहनेंगे देशी ही पहनेंगे और उसमें भी खास गाढेका प्रयोग अधिक किया जायगा, (२) तारीखका बहिष्कार करना अर्थात् लिखनेमें तिथियोंसे ही काम लेना, (३) मेज कुर्सी आदि अंगरेजी ढंगका बहिष्कार करना क्योंकि इसमें खर्च बहुत होता है।

छिंदवाडा—में नागपुर प्रांतिय दि० जैन खंडेलवाल सभाका पंचम 'अधिवेशन माघ सुदी १से ७ तक श्रीमान् रा. ब. सेठ टीकमचंदजी सोनी अजमेरके सभापतित्वमें बड़े समारोहके साथ होगया। इसमें न्या० पं० मक्खनलालजी शास्त्री, ब्र० शीतलप्रसादजी, कुंवर दिग्विजयसिंहजी, पं० तुलसीरामजी काव्यतीर्थ आदि विद्वान् भी पधारे थे। असहयोग और जैनोंकी फर्जपर बहुत जोशीले व्याख्यान हुये थे। (८९१) में सेठ हजारीलालजी छिंदवाड़ाने कलशकी बोली ली थी। बडनगर अनाथालयके छात्रके उपदेशी भजन और ड्रामासे अच्छा आनन्द आता था। कुल २२ प्रस्ताव हुए जिसमें महत्वके ये हैं—मारवाडमें कुरीतियोंको बन्द करनेके लिये एक डेप्युटेशन भेजना, बानपुर महासभामें १५ प्रतिनिधि भेजे जावें, आगामी अधिवेशन वर्धामें किया जाय, नागपुरमें एक विद्यालय और छात्रालय सभाकी ओरसे खोला जाय, जिसमें संस्कृत धार्मिक और औद्योगिक शिक्षा खास दी जाय आदि। औषधालय खोलनेके लिये ५०१) सेठ मोहनलालजी रायपुरने दिये।

खण्डेलवाल जैन हितै—नामक पाक्षिक पत्र हरएक पंचमीको माघ सुदी ५ से पुस्तकाकार प्रकट होने लगा है। संपादक पं० पन्नालालजी सोनी हैं। वार्षिक मूल्य सिर्फ २) है। हीराबाग, बंबईसे मिल सकती है।





(ले० मास्टर दीपचन्दजी परवार, नरसिंहपुर।)

सन् १९१९ ई० मे बनारस नगरीमें श्री भागीरथीके तटपर जब हिन्दू विश्वविद्यालयका प्रारंभिक महुर्त था, उस अवसरपर भारतहितैषी अनेकों राजा महाराजा और नेतागण पधारे थे उस समय दर्शकके रूप इन पंक्तियोंका लेखक भी गया था। और श्री स्याद्वाद् महाविद्यालय में ही ठहरा था, उन दिनों उक्त विद्यालयके सुपरिन्टेन्डेन्टके पदपर पं० उमरावसिंहजी (ब्रह्मचारी ज्ञानानंदजी) प्रतिष्ठित थे, और आपहीके प्रयत्नसे एक दिन स्याद्वाद विद्यालय में महात्मा मोहनचंद करमचंद गांधीका भी स्वागत किया गया था।

जब गांधीजी पधारे और उनका स्वागत हुवा, तब उन्होंने संक्षिप्त रूपसे अपना भाषण इस प्रकार किया था, कि भाईयों, मुझे लोग जैनी समझते हैं, परन्तु मैं जैन नहीं हूं, मैं वल्लभ सम्प्रदायको माननेवाला वैष्णव हूं। परन्तु जैन धर्मको उत्तम मानता हूं क्योंकि जिस अवस्थाको मैं पहुंच सका हूं तथा जो कुछ भी टूटा फूटा कार्य अपने देश भाइयोंके लिये मैं कर सका हूं व कर रहा हूं, तथा उसमें जो सफलता प्राप्त हुई है और भविष्यमें भी होनेकी सम्भावना है इस सबका श्रेय जैनधर्म ही को है। क्योंकि जब मैं विलायत बेरिष्टरी पढ़नेके लिये जाने लगा, तो मेरी माता मेरेको एक जैन गुरु (श्रीमद्राजचंद्रजी) के पास लिया ले गई और उनसे कहने लगीं कि महाराज, यह बालक नहीं मानता और परदेश जाता है, आप इसको कुछ बोध दीजिये, इसपर उन विशालहृदय साधुजीने कहा कि तुम जाते हो तो प्रसन्नतासे जावो परन्तु देखो, एक. तो किसी भी प्राणीको मत सताना (अहिंसाणुव्रत पालना), दूसरे असत्य भाषण नहीं करना (सत्यपर दृढ़ रहना), तीसरे किसीका धन हरण नहीं करना, (न्याय पूर्वक आजीविका करना); चौथा स्वस्त्रीके सिवाय अन्य समस्त स्त्रियों मात्रकों माता बहिन तथा बेटीवत् समझना, पांचवें अतिशय लोभमें न पड़ना इस प्रकार सम्बोधन पाकर मैंने साधुजीको नमस्कार किया और उद्देशित कार्यमें लग गया। यद्यपि मैं विदेशोमें रहा तो भी गुरु शिक्षाका यथाशक्ति पालन करता रहा, और जब दक्षिण आफ्रिकामें अपने भाइयोंके साथ वहांकी सर्कारने अत्याचार करना प्रारंभ कर दिया, तब मुझको अहिंसापूर्वक सत्याग्रह करना पड़ा, और इसी सत्याग्रहके साम्हने वहांकी सर्कारको शिर झुकाना पड़ा। मैं दृढ़तापूर्वक कह सक्ता हूं कि सदैव सत्यकी ही जय होती है और जय प्राप्त करनेके लिये किसी स्थूल शस्त्रकी आवश्यक्ता नहीं है। इसके लिये केवल एक अहिंसा (None Injury) ही शस्त्र बस है। आत्मबल ही इन सबमें मुख्य है। इसलिये मनुष्य मात्रको स्वात्मबल पर स्थिर होना चाहिये। इसीके आधार पर बड़ेसे बड़े अलौकिक कार्य भी सरल और सफल हो सके हैं।

आप लोग जैनी हैं और आप लोगोंने मुझको मान दिया है, इसके लिये मैं आप लोगोंका आभारी हूं। मैं इसीके साथ एक बात और भी कह देना चाहता हूं कि आप लोग वैश्य बंधु हैं और वैश्योंका व्यवसाय वाणिज्य है, इसलिये देशका वाणिज्य बढ़ाना आपका मुख्य कार्य है। विशेष बात है कि शायद बहुतसे जैनी खेती करें तो बहुत कुछ जीवोंकी रक्षा हो सक्ती है क्योंकि जैनी लोग अहिंसा धर्मके जानकार होनेसे बहुत यत्नपूर्वक कार्य कर सक्ते हैं, जब कि अजान मनुष्य यत्नाचार रहित जोतने बोने काटने गाहने आदिके समय अधिक हिंसा करता है। अब मुझे अन्य कार्यकी चिंता है इस लिये जानेकी रजा लेता हूं।

मान्यवर बन्धुवो, आज ९ वर्षोंके पश्चात् यह बात आपके उपस्थित करके यह बताना चाहता हूं कि हमारे शास्त्रोंमें हंसमृतका घड़ा चालनी पाषाण गौ आदि अनेक जातिके श्रोता बताये हैं उनमेंसे गौ जातिके श्रोता यदि प्रत्यक्ष दृष्टिगत हुवे तो इस समय वे एक महात्मा मो० क० गांधीजी हैं, कि जिन्होंने केवल एक बार ही एक साधु महात्माका प्रशाद (शिक्षा) प्राप्त करके उसे केवल आजन्म पालन ही नहीं किया, किंतु जगतका उपकार करते हुवे अपने शिक्षकका महात्मा पद भी इह लोकमें प्राप्त किया। अहा! धन्य है ऐसे श्रोताको जो एकवार मे ही उपदेशका श्रवण कर तदनुसार आचरण करने लगते हैं। वास्तवमें इसीका फल है कि वे श्रेय और सफलता पाते हैं, जब कि हम लोगोंको नित्य प्रति जी महाराजकी आवाजें लगाते लगाते प्रायः जीवनका भी अंत आगया, तो भी अक्षरका न तो बोध ही हुवा, और न हमारी अंतरङ्ग तथा बाह्य प्रवृत्ति (आचरण, चारित्र)में फेर पड़ा। सत्य ही कहा है—

जलमें पथरी युग रहे, मिटे न तनकी आग।
संगतमें सुधरे नहीं, तिनके बड़े अभाग॥

क्या हुवा जो अनेकों शास्त्र सुनें, नित्य देवदर्शन किये, समस्त तीर्थोंकी रज मस्तक चढाई, तिलक छापा लगाये, पंथ और सम्प्रदायोंके फेरमें पड़ पड़ कर झगड़े उठाये, परन्तु इस सबसे क्या कमाया जो परभवमें साथ जायगा, और मोक्ष मार्गमें काम आयगा। हाय! आपका और तो क्या बाह्य मिथ्यात्व (मिथ्या देव, धर्म, गुरुकी प्रतीति) भी तो न छूटा, जो कि धर्मका मूल पाया है फिर व्यसनोंसे भी विरक्ति (अरुचि) न हुई, पाप (पंच) तो छूटना दर किनारे रहा। जब कि हमारी यह दशा है तो हम किस प्रकारसे अपने धर्मकी प्रतिमा लोगों पर डाल सक्ते हैं? हमारी बुद्धि तो लड़ने झगडनेमें ही इति हो गई, हमारे साम्प्रदायिक झगड़े, तीर्थोंके झगड़े, छापेके झगड़े, आम्नायके झगडे, देव-द्रव्यके झगड़े, मंदिरोंके झगड़े, कौटुम्बिक झगड़े, कहां तक कहें? झगडोंका अंत ही नहीं आता, फिर भी तुर्रा यह कि नित्य पाठ पढ़ते सुनते सुनाते हैं यह कि "आतमके अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परिणति न जाय"। कहां यह शांति स्तवन! कहां यह परम शांति मुद्राकी दर्शानेवाली श्री

परम दिगम्बर शांति मूर्ति ? कहां वह विषय कषायोंसे विरक्ति उत्पन्न करानेवाला जिन शासनका उपदेश और सो भी नित्य प्रति दिनमें अनेकवार। और हाय! कहां यह हठ, पक्षपात, तीव्र कषाय, कलह, वैर विरोध ? यह आश्चर्य नहीं तो क्या है? वास्तवमें सत्य ही कहा है–

एक अचभा में सुना, जलमें लागी लाय ।
जैन धमको पाय कर, सेवे विषय कषाय ॥

सुज्ञ विज्ञ बन्धुवो, अब केवल जी महाराज, सारु, वाह वाह धन्य है, क्या बात है, जी, इत्यादि आवाजें लगानेकी बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। इन पाषाण तुल्य, भैंसे तुल्य, चालनी तुल्य और चिकने घड़ेके तुल्य श्रोतावोंसे न समाजका, न धर्मका और न उनही विचारोंका कुछ भी हित हो सक्ता है, किन्तु हमको चाहिये श्रोता श्रीयुक्त महात्मा गांधी जैसे कि थोड़ा भी सुने, एक वार भी सुने परंतु उस पर अमल करें, और संसारको अपने आचरणसे यह बता देवें कि उपदेश सुनना इसे कहते हैं। यह अमुक महात्माका या अमुक शास्त्र वा धर्मका उपदेश है। गिरधर कविकी स्त्रीने कहा है–

कह गिरधर कविराय बात चतुरनके ताई ।
करतूती कह देत आप कहिये नहिं सांई ॥

वास्तवमें कोई भी पुरुष कहनेसे बातें बनानेसे बड़ा नहीं होता है किन्तु बडा होता है अपने कर्तव्योंसे, क्योंकि–

बड़े बडाई न करें, बड़े न बोलें बोल ।
हीरा मुखसे ना कहे, बडो हमारो मोल ॥

यहां मैं यह भी जता देना आवश्यक समझता हूं कि कहीं कोई यह न समझ लेवे कि नित्य प्रति सुनना, पूजा, दर्शन, जाप्य करना, इत्यादिसे कुछ लाभ नहीं है, इस लिये इसे छोड देना चाहिये। नहीं, मेरा ऐसा आशय भी नहीं है और न ऐसा करना ही चाहिये, क्योंकि इस उक्तिके अनुसार कि 'रसरी आवत जाततें सिल पर परत निशान" न जाने किस समय किसको कुछ बोध लग जावे, इस लिये यह अभ्यास व नियम रूपसे जो होता है सो तो ठीक है, परंतु इससे संतोषित हो जाना उचित नहीं है किन्तु इसमें सुधार (धारणा)की आवश्यकता है उस ओर ही ध्यान आकर्षित किया है। आशा है कि कुछ भी आदर्श ग्रहण कीजियेगा।

नवीन ग्रन्थ–

चौसठ ऋद्धि पूजा–

तैयार है ऐसी सूचना प्रकाशकने कई महिनोंसे प्रगट कर रक्खी थी। परंतु यह अब तैयार हुआ है। इसमें यति श्री स्वरूपचंदजी विरचित चोसठ ऋद्धि पूजा–अर्थात् वृहत् गुर्वावली पूजा, गणधर पूजा, बुद्धि ऋद्धि धारक मुनि पूजा, चारण ऋद्धि मुनि पूजा, विक्रिया ऋद्धि मुनि पूजा, तपोतिशय ऋद्धि धारक मुनि पूजा, बल ऋद्धि धारक मुनि पूजा, औषध ऋद्धि धारक मुनि पूजा, आदि पूजाएं हिन्दी पद्य में हैं। बडे टाईप, ग्रआकार, पृ० १२० और मूल्य बारह आने।

मगानेका पता–

मैनेजर–दि० जैन पुस्तकालय–सूरत।

एकता।

Union is power.

"एकता! वास्तवमे देखा जाय तो तू ही सर्व शक्तिमान है। तू ही स्वतंत्रता-सुखका घर, का मूल कारण है। तेरे विना स्वाधीनताका सुख स्वप्नमें भी नहिं मिलता है। तू ही तो सच्चे सुखकी जननी है। तू ही प्रशंसा और गौरवका स्थान है। तेरी महिमा अपरम्पार है। तेरा प्रताप अखंड-अक्षुण्य और सर्वव्यापी है। तेरा महात्म्य समस्त ससारको विदित है। तू ससारके दु.खोंको दूर करनेके लिये मूल मंत्रके समान है। तू अन्याय और अत्याचारको दूर करनेके अर्थ एक अमोघ अस्त्रकी तरह है। तू सभ्यताकी जड़ है। जब निर्बल लोग अन्याय और दु.खोंसे पिस जाते हैं तब वे तेरी ही सहायतासे सुखको प्राप्त करते हैं। तू निर्बलोंके हकोंकी रक्षा करनेवाली और व्यापारियोंको ईच्छित सुख देनेवाली है। जिस देशने, जिस जातिने तुझे अपनाया वह आज उन्नति-शिखर पर बैठे हुए आनन्दसागरमें गोते लगा रहे हैं। जिस देशने-जिस जातिने तेरा अनादर किया, तेरी महिमाको नहि जाना, उनका ससारमें कुछ भी आदर नहीं है-वे तेरे उपासकोंकी गुलामगिरी करके जीवन बिता रहे हैं। बहुतसी जातियोंका तो तेरे कृपापात्र न बननेके कारण अस्तित्व ही मिट गया है। इसी लिए तो तू भयकर बदला लेनेवाली भी कहाती है। देख, जब तक भारतवर्षके मनुष्य तुझे अपने हृदयमें स्थान देते रहे तब तक वे समृद्धिशाली, बलवान और सुखी रहे परन्तु जबसे तुझसे नाता छोडा तबहीसे उनपर घनघोर विपत्तियां आने लगी। बेचारोंका धन लूटा, धर्म लूटा, स्वाधीनता लूटी, यहां तक कि सर्वस्व ही लूट गया। देख, आज इंगलेन्डका मजदूर दल तेरे ही बलके सहारे गर्ज रहा है। जगतमें उत्पन्न हुए बडे २ वीरोंके यशस्वी और विजयी होनेका मूल कारण तू ही है। जब तक नेपोलियनकी सेनामें एकता रही तब तक वह अजेय रहा परन्तु ज्यों ही तू उसकी सेनासे विदा हुई कि बेचारे नेपोलियनका ही नहीं, सारे फ्रांस देशका सत्यानाश हो गया। देख, कौरव पांडवोंमें तेरे न रहनेसे कितना भीषण परिणाम हुआ। इसी कारण तो लोग कहा करते हैं कि "फूटका हो सत्यानाश"। तू ही उन्नतिकी जड है। तेरे विना राजनैतिक, सामाजिक, किसी भी प्रकारकी उन्नति न तो कभी हुई और न कभी होवेगी॥

भारतवर्ष शताब्दियोंसे, तेरे महात्म्यको हृदयसे विसार देनेके कारण, असह्य दु:ख भोग रहा था। उसे इस दु:खसे मुक्त होनेकी कोई आशा नहीं थी। परन्तु उसे, ईश्वरकी ईच्छा और शुभ भाग्योदयसे, इस अधकारमय जीवनमें एक प्रकाश दीख पडा-उसने तेरी महिमाको जान लिया, तुझे अपने हृदयमें फिर स्थान दे दिया। यह सब- इसीका फल है कि आज हिंदू मुसलमान एक होकर उन्नति शिखरकी ओर शीघ्रतासे बढे जा रहे हैं।

जैन समाजमें भी इधर कुछ दिनोंसे 'उन्नति' 'उन्नतिका' मधुर स्वर सुनाई पड रहा है। परन्तु भला तेरे विना उन्नति कहां ? यहां तो अभी तक तेरी वैरिणी फूटका साम्राज्य छाया हुआ है। जांति-पांतिके झगडे पडे हुए हैं जिधर तिधर "ढाई चांवलकी अलग२ खिचडी पक रही है"। यही सब देखकर यह भय हो रहा है कि कहीं ऐसा न हो कि तू जैन जातिसे कोई भयंकर बदला ले ले अर्थात् इसका अस्तित्व ही मिटा दे। परन्तु हम तो तुझसे यही प्रार्थना करते हैं कि तू जैनियोंको उनको नष्ट करनेके बदले निम्नलिखित उपदेश देकर उनको जगा कर, उनकी रक्षा करनेका यश प्राप्त करे—' जैनियों ! यह समय सोनेका नहीं है। संसारकी वर्तमान अवस्था पर विचार करो और उसीके अनुसार अपनेको बनावे। यदि तुम्हें संसारकी उन्नतिशील जातियोंमें स्थान पानेकी ईच्छा हो, यदि तुम गुलामगिरि कर जीवन बितानेको पसंद नहिं करते हो तो आलस्यको छोड़ो—सुशिक्षा पर ध्यान दो—मेरा आदर करो, तीर्थोंके झगडे मिटालो, स्वार्थको भस्म कर दो—हृदयकी संकुचितताको दूर कर दो, दिगम्बर—श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायोंके अनुयायी परस्पर गले लग कर कहो कि हम दोनोंका धर्म एकसा है—हम दोनों ही एक ही ईश्वरकी आराधना करते हैं, फिर हमारा तुमारा झगड़ा कैसा ? " आवो अपन दोनों स्वधर्मनिष्ठ होकर उन्नतिकी ओर अग्रसर हों और एक दफे फिर सारे संसारमें जैन धर्मकी दुंदुभी बजा दें। " वस्तु।

जैन धर्म पर आघात
और
हमारी अनभिज्ञता।

हमको 'सुधारक' आगरा ता० १७ जनवरी १९२१ ई० में निम्नलिखित समाचार पढ़ कर अत्यंत खेद हुवा है, कि गत दिसम्बर मासकी ता: १४-१५-१६ और १७ को झांसी जिलेकी महरौनी तहसीलमें वहांके कमिश्नर कलेक्टर साहबोंके दौरे हुवे, उस समय मु० महरौनी पडाव क्षेत्रपाल पर (जहां पर कोटेके बीचमें एक बडा जैन मंदिर और धर्मशाला है) ऊपर फाटकके मुकाम किये इतना ही नहीं किंतु उस परम पवित्र देवस्थानको जहां अहिंसा परमो धर्मकी ध्वजा फहराती थी, इनके कर्मचारियों द्वारा काफी तादादमें बकरे और मुर्गियोंकी बलि (हिंसा) करके लांछित किया गया। जहां पर दशांग सुगंधित धूपादि पवित्र द्रव्योंसे हवन होता था, वहां पर इनकी हत्यारी डेगोंमेंसे खौलते हुवे मांस और अंडोंकी बदबू गूंज रही थी। खेद है कि यह अत्याचार, यह घोर अन्याय, उस न्यायकी घोषणा करनेवाली, शांतिप्रिय करनेवाली बृटिश सरकारके प्रधान२ कर्मचारियोंके द्वारा जैन धर्म पर किये जाते हैं, और सारी जैन समाज हीके नहीं किंतु भारतके सभी धर्म समाजोंके दिल दुखाये जाते हैं। जिस महारानी विक्टोरियाने सन् ५७ की घोषणामें यह घोषित किया था कि किसीके धर्म पर कोई आघात किसी प्रकार नहीं पहुंचना चाहिये, इत्यादि। आज उसी महारानीकी आज्ञाको भंग

करनेवाले ये आफिसर लोग इस प्रकार धर्म पर आक्रमण करें, और वहांके जैनी मारे डरके चुपकी लगाये बैठ रहें, यह दु:खकी बात है, यह कार्रवाई कर्मचारियोंने खास कर जैनियोंके दिल दुखाने हीके लिये की है। यदि ऐसा न होता तो बैशन बागमें जहां प्रायः पहिले साहब लोगोंके मुकाम हुवा करते थे और जो मुकाम खास करके इस समय भी साफ कराया गया था, वहांकी सड़कें बेगारी दीन चमारोंसे सुधराई थी, क्यों नहीं मुकाम कराये गये? और यही देवस्थान ही क्यों पसंद किया गया? क्या इछ कर्मचारी आफिसरोंके दो दिनके आराम व पसंदगीके लिये सारी जैन समाजके हृदयोंको दुखाना और उनके धर्म पर आघात पहुंचाना ही न्याय है? इसके सिवाय रसद आदिमें भी वहांके वैश्यों तथा अन्यान्य प्रजा वर्ग पर अत्याचारोंकी खबर है। हम अपने जैनी भाइयोंको सूचित कर निवेदन करते हैं कि वे सभाओं व पंचायतियों द्वारा, इस घृणित धर्मघातक कार्रवाईका घोर विरोध करें, और इसकी घोषणा सब ओर कर देवें, कि इस प्रकारसे अब धर्मपर भी आघात होने लगे हैं। यह अन्याय जैनियो पर अभी हुवा तो कल हिन्दुवो और मुसलमानो पर भी वार होगा इससे सावधान रहना चाहिये। ए. मान्यवर जैन पोलिटिकल कानफरेन्सका विरोध करने वाले सज्जनो, विचारो, यह क्या है! क्या यह केवल आपकी राजनैतिक निर्बलताका ही परिणाम नहीं है? क्या अब भी आपलोगोंको चेत नहीं आवेगी?

नोट-(१) यह समाचार समस्त जैन पंचोंको प्रगट कर देना और उक्त कार्रवाईका विरोध करना चाहिये।

(२) यह समाचार "सुधारक" आगरा १७-१-२१ में दुःखित हृदय एक दर्शक मतापके नामसे छपा है। उसमें सम्पूर्ण लेख अवश्य ही पढ़ना चाहिये।

हिंसा और धर्मघातसे पीडित-

दीपचन्द परवार, मंत्री,

जीवदया विभाग भा० दि० जैन महासभा।



(ले०-कामताप्रसाद जैन, अलीगंज)

"हिज्रमें किसको बुलाऊँ, न बुलाऊँ किसको।
मौत अच्छी है इलाही! कि कयामत अच्छी॥"

"हाय! मैं ऐसा जानती तो सखियोंसे भी क्यों कहती! पर मुझे क्या मालूम था कि मेरी साथकी संगीन सहेलियां ही मेरी दुश्मन बन जायगी। मेरे अस्तीनमें ही काला सांप निकल आयगा यह कौन देख आया था। पर किसीसे क्या? उन सबको मालूम हो गई हो जाने दो। मैं तो ऐसा अन्याय कभी नहीं सहनेकी!....भला क्यों सहूं? मातापको तो अपनी नाक रखनेकी पड़ी है फिर उन्हें क्या?....उनके जिगरका टुकड़ा, इतने दिनोंके कष्ट सह यह बड़ा किया हुआ चांदसा मुखड़ा,

चाहे मरे चाहे जीए, चाहे दुःखी रहे चाहे सुखी, चाहे चूल्हेमें गिरे चाहे भाड़में !....हां जी ! उन्हें क्या ? स्वार्थके सामने किसीकी नहीं चलती। और फिर भला जब बातपै बात अटकी है तब मेरी ओर कौन देखनेवाला ! चाहे मैं रो रो मरूं, चाहे खाऊँ या न खाऊँ यहां तो नाक रखनी है ! ...कहां मेरी उमर ! कहां उस बालककी उमर ! मेरे सामने तो वह बालक ही है। जैसे लल्ला वैसे वह है। मैंने अपनी मन्शा भी दर्शा दी। पर हाय ! उन पत्थरके कलेजों पर क्या असर ! वे तो अपनीपै डटे हैं। और यहां जीवन ही 'नष्ट' हुआ जाता है।... बस अब मैं नहीं सहनेकी। लोग बुरा कहेंगे कहने दो। मेरे पढ़नेको बुरा बताऐंगे, बताने दो ! पर मैं तो यह नहीं सहूंगी। हां ! उन्हें क्या? अपनी बातोंसे मतलब। चाहे न्याय हो चाहे अन्याय।..इसमें बुराई काहेकी ? सत्यमें डर ही किसका ? फिर पहिले तो विवाहकी यही रीति थोड़ी थी ! पहिले तो स्वयंवर भी होते थे। जितनी सती साध्वी सीता द्रौपदी हुईं उन सबने स्वयंवरमें ही तो अपना 'जीवनसखा' ढूंढ निकाला था। हां ! स्वयं राजमतीने भी तो नेमप्रभुके सिवा दूसरेसे पाणि ग्रहण न करनेका दृढ़ प्रण ठान लिया था जिसके आगे उनके पिता उग्रसेनकी भी कुछ नहीं चली थी ! हांजी ! इसमें क्या ? मैं भी उस नन्हेंसे बालकके साथ पाणि ग्रहण कभी नहीं करूंगी। या जानबूझ कर अपने पैरमें कुल्हाड़ी मारूंगी। वाह ! फिर दरद भी मैं भुगतूंगी !....वाह जी वाह ! यह खूब, मैं तो नहीं करनेकी। पर हाय ! मैं अब करूं क्या ? "कौन सुनता है कहानी मेरी, और फिर भी जबानी मेरी।" वह तो मेरे पढ़ने पर खीज रहे हैं। चाहते हैं चुपचाप यह अपनी गरदन कटा दे।..गला कटाना नहीं तो क्या है ? पर देखो तो चारों ओरसे मेरी ओर आंख लग रही है। आंखोंसे ओझल नहीं होने देते। सब मेरे पीछे पड़े हुए हैं। सखियों और देखो पंचोंको भी कुछ तरस नहीं, कुछ डर नहीं। अरे पगली ! डर और तरस काहेका ? वहां तो उन्हें लड्डू और बालूसाई खानेको मिलेगी। फिर उनके नाते कुछ भी हो। चाहे हिंसा हो चाहे पाप। उन्होंका तो पेट भरता है। देखा जायगा। सबके दिन कट जाते हैं। .अच्छा ! कुछ हर्ज नहीं। मुझे बाहर नहीं निकल जाने देंगे, मत जाने दें। पर मैं विवाह नहीं करूंगी। ..हाय ! अब मौत आजाय तो कैसी अच्छी हो। पर वह भी बुलाएसे नहीं आती। वे बुलाए हजारों घर झांकती फिरती है। न आवेगी मत आ। भला अब तो इस कोठड़ीमें ही अपनेको बन्द किए लेती हूं। बस अब चाहे कुछ हो जाय कदापि न खोलूंगी। भूखों मरना पड़े मर जाऊंगी। पर यह अन्याय तो नहीं सहा जायगा। हरे राम. ..।

(२)

"जान तुम पर निसार करता हूं।
नहीं जानता हुआ क्या है॥
अशरते कतरा है दरियामें फना हो जाना।
दरदका हदसे गुजरना है दवा हो जाना॥"

१ न्यौछावर २ पानीकी बूंद ३ समुद्र ४ नष्ट।

हाय! कहां तो मैं कैसा पक्का भरोसा किए बैठी थी कि जो कुछ मैंने कहा है उसीपे दृढ़ रहूंगी। एक इंच पीछे न हटूंगी। कुछ भी हो जाय पर विवाह न करूंगी। पर न जाने अब वे सब बातें कहां चली गई? वह जोशी कहां हवा हो गई। वह दृढ़ता कहां भाग गई। मैं क्यों फिसली पडती हूं। क्या मुझमें कुछ जान नहीं रही? ...इसमें मेरी क्या भलाई है। मेरे लिए तो दुःख ही दुःख हैं।....पर हाय! उधर पिताजीका भी तो यह विलाप–यह आर्तनाद नहीं सुना जाता। कैसी चुमती हुई भिक्ते हैं। मेरी बातोंको भी सब सच मानते जाते हैं। अपने किएको भी पछताते जाते हैं....अब बाल-विवाहका परिणाम मालूम हुआ। जब लड़के और लड़की दोनों सयाने हो जाया करेंगे तब लग्न और विवाह साथ ही साथ किया करेंगे। पर इन बातोंसे मेरा क्या मरता है। मेरा तो सिर फटा ही जाता है। मैं अपने दिन कैसे बिताऊंगी। साल डेढ़ सालमें लो पूरी युवती हो जाऊंगी! जी। ऐसी हालतमें मैं विवाह करूं? अगर करूंगी तो मुझसी पगली और और दुनियामें कौन मिलनेकी।. बेशरम बन मैंने पिताजीसे सब बातें साफ साफ शब्दोंमें कह दीं। पर हाय, इन बातोंका कुछ भी ख्याल नहीं हुआ। मेरा बनमें चिल्लाना ही हुआ।.... अब वे मेरी ही विनती कर रहे हैं? हाय! मैं क्या करूं? मैं तो अपने आपेमें ही नहीं हूं। अगर कहना माने लेती हूं तो मेरे लिए जीवन पै चलना तलवारपे चलना हुआ जाता है। और न मानूं तो उनका जीवन मुश्किल है। हाय! उनकी लाज मेरे हाथमें कैसे है? ....हां! उनका कहना भी ठीक है। दुनियामें इज्जत भी एक चीज है। मान भी कोई वस्तु है। और यहां इस बातकी बड़ी कट्टरता है। तो क्या मैं कहना मान लूं? कहना मानना क्या होगा? समाजमें ऐसी प्रतिष्ठा रखानेके लिए **मेरा बलिदान** होगा। पर उनकी बात रह जायगी। मैं समझूंगी यह ही वेद–वर्णित–यज्ञका जमाना है। मनुष्य समाजकी भी आंखें खुल जायंगी कि निरीह अबलाएं भी उनके कृत्योंसे कैसे २ कष्ट सह उनके अत्याचार सहनेको सदैव तत्पर रहती हैं। फिर चाहे उनके प्राण ही क्यों न चले जाय। देखो ना भारत–नारी–मुख–उज्वलकारिणी, वीर-अबला अहल्याबाईने अपने पिताकी बात रखनेको हलाहल विषका भरा प्याला गटागट पी लिया था। तो कोई क्या मैं अन्य हूं जो अपने संबंधियोंके काम न आऊं? परवा नहीं यदि जीवन कष्टमय बनता है। सत्य भी कोई वस्तु है। संयमकी तलवार हाथमें ले मैं अब जीवन कठिनाइयोंका सामना करूंगी। पर यह अकर्मण्यताका टीका न लगाऊंगी। हजारों ही मुझसी अबलाएं नित्य ही यातनाएं सहती हैं और मैं भी उन्हींमेंसे एक हूं। पर किसी दिवस इन अबलाओंकी मुर्दा आवाजकी सुनवाई अवश्य होगी और उसी दिन समाजकी अधम दशाका अन्त होगा। ऐ समाज! देख ले मैं तेरे ही लिए अपने सुखमय जीवनको जलाञ्जिली दे रही हूं, मेरे भाग्य फूट रहे हैं, फटने दो पर तेरी आंखोंमें तो मैं बर्छी घुसेड़ रही हूं। क्या अब भी कुछ ध्यान आयगा।........।'

'जिसे हम हार समझे थे गला अपने सजानेको।
वही अब नाग बन बैठे हमारे काट खानेको॥'

इति शुभम्।

मेवाडा कोमने सुधारवाना प्रयत्नो.

ગુજરાતમાં દિગંબર જૈન ધર્મ પાળતી કોમો મેવાડા, નરસિંહપુરા, હુમડ, રાયકવાળ આદિ છે, જેમાં મુખ્ય ભાગ લેતી કોમ મેવાડા (ભેરેવરા) ની છે, જેઓ ઉદેપુરના રાણાના વંશજ સુર્યવંશી ક્ષત્રિયોથી લક્ષ્મીદેવીના પ્રસાદે કરી વૈશ્યત્વને પામેલા છે. તેમની વસ્તી ગુજરાતમા ચરોતર અને કાનમ એ બે વિભાગોમાં વહેંચાએલી છે. તેમનાં મુખ્ય સ્થાનો અંકલેશ્વર અને સોજીત્રા કહેવાય છે, પણ વસ્તી તો ગામડાઓમા વહેં-ચાએલી છે.

અસલથી દાનવંત ગણાતી મેવાડા કોમના ઘર ગુજરાતમાં ૮૦૦ ને આશરે છે, તેમાં પણ પહેલાના મિથ્યાભિમાનથી બે તડ અર્થાત્ બે શંભા પડેલા છે. અંકલેશ્વર અને સોજીત્રા, તેમાં પણ કુળા-ભિમાનથી અને પાપી પિતાની પિશાચી વૃત્તિ તૃપ્ત કરવાના આશયથી અર્થાત્ કન્યા વિક્રયથી બન્ને ભેદ પડેલા છે.

આ સ્થળે આપણે ફક્ત સોજીત્રા સંભા તરફજ દ્રષ્ટિપાત કરવાનો છે; જેથી તેની વસ્તી ગણત્રીનું કામ તે કોમના આગેવાનોને સોંપી આપણે આપણા વિષય તરફ વળીશું.

વહાલા બંધુઓ???

આપણા પૂર્વજો જ્યારે સોજીત્રામાં પ્રથમ પહેલા આવ્યા હતા, ત્યારે આપણે અને અંક-લેશ્વરના બંધુઓ એકત્ર હતા. વળી વધારામાં ભરૂચ અને ખંભાતના કેટલાક બંધુઓ હતા એમ શાસ્ત્રાધારથી મળી આવે છે (અત્યારે તેમાના એક સ્થળે એક પણ ઘરની વસ્તી નથી.)

ત્યારે જે વખતે આપણે સર્વે એકત્ર હતા તે વખતે આપણે એકમેકથી કન્યા વ્યવહારની છુટ રાખતા હતા એટલે આપણામા વૃદ્ધ લગ્ન થવા પામતાજ નહિ, એટલે જ્ઞાતિમા વિધવાઓની કમીના રહેતી, અત્યારની હાલની આપણી કોમની નિરાધાર બાળ વિધવા તરફ દ્રષ્ટિપાત કરતાં કહ્યા સિવાય રહેવાતું નથી કે—

પિશાચ વૃત્તિના તેમના પિતાઓ નાશ પામો, કે-જેમણે પોતાની પુત્રીઓને વૈધવ્યતામાં હડસેલી દીધી છે.

વહાલા બધુઓ,

ઇસ્વીસન્ ૧૭૮૧ ની સનમા આપણી દશા—વીશા મેવાડા દિગંબર ધર્મ પાળતની વસ્તી સોજીત્રા, વસો, પાદરા, માથાવાડા, દેત્રો, ખેડા, ખંભાત, અંકલેશ્વર વિગેરે સ્થળે મળી ત્રણ હજાર ઘરની હતી, ખેદ કે છે ત્રણસો પાંત્રીસ વર્ષમાં આપણે એક તૃતીયાંશ ભાગ જેટલા પણ રહ્યા નથી. ક્યા હાલના જુદા જુદા તડ થઈને થનાં આઠસો ઘર ને ક્યા એકજ બંધારણથી બંધાએલાં ત્રણ હજાર ઘર. બધુઓ? આપણી વસ્તી ક્યા મજબુત કારણથી ઘટવા લાગી છે તે આપણે તપાસવું જોઇએ અને ત્યાર બાદજ તેને સુધારવા કંઇક કરી શકાય.

સોજીત્રા સંભાના કન્યા વ્યવહારથી જોડાએલાં પાચસો ઘર હાલમા અન્યોન્યથી સગાઇના સંબંધથી જોડાઇ ગયેલા છે, વળી તેમાના કેટલાક અન્યોન્ય કટુંબી અને એકજ ગોત્રી છે, જેથી તેમને પોતાના સંતાનોના સંબધ બાધનાં બહુજ સંકડામણ વેઠવી પડે છે. એવી વખતે કેટલાક ઉતાવળા અને નીચ બુદ્ધિના મનુષ્ય પોતાની પુત્રીને પીસ્તાળીશ કે તેથી વધુ ઉમ્મરના વૃદ્ધ જાનવર! સાથે પરણાવવા તૈયાર થાય છે અને કેટલાક તો વળી બાર વર્ષની બાળકીને આઠ વર્ષના લાડકા સાથે લટકવી દે છે? કેવો ઉમદા સંબધ?!! આ જગ્યાએ એક કવિનાં વચન યાદ આવે છે કે—

સાખી.

નવકી નારી આપીએ, નેવું વરસકે હાથ.
નવના ને વળી આપીએ, સોળ વર્ષની હાથ.
એવા રૂડા જોડાં જોડાએ આ જાતિમાંહે—
જેનો મહિમા મારી કને કહી ન શકાય—
બંધુ આવોને મુજ જ્ઞાતિ તણું દુઃખ કાપવારે,

બંધુઓ,

આપણી એ સંકડામણને દૂર કરવા આપણે

નીચેની બાબતો પર ખાસ લક્ષ દઈ તે પાળવા ધર્મ પૂર્વક બધાઇ પોતાનાં સંતાનનું ભાવિ સુધારવું જોઇએ.

ખાસ મનુભગવાને પણ કહ્યું છે કે—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

અર્થાત્ જ્યા સ્ત્રીઓનું સન્માન થાય છે તેના લાભાલાભને જોવાય છે, ત્યાજ દેવતાઓનો વાસ થઇ ધનધાન્યની વૃદ્ધિ થાય છે, માટે ઓ વહાલા બંધુઓ! તમે તમારી પુત્રીના ભલાને ખાતર-તમારા પોતાના ભલાને ખાતર-દુહિતાના શ્રાપથી બચવાને ખાતર-જન સમાજમાં હલકા ન પડવાને ખાતર-તમારી કોમને વધારવાને ખાતર નીચેની બાબતોનો હાલજ અમલ કરો કેમકે-લગ્ન કરવાનો ઉદ્દેશ્ય-અન્યોન્યથી ધર્મસાધના કરવા ઉપરાત સંતાન ઉત્પન્ન કરવાનો છે. તે ઉદ્દેશ્ય બાળકને મોટી કન્યા આપવાથી ને વૃદ્ધને કન્યા આપવાથી સધાઈ શકતો નથી. જેવી રીતે વૃદ્ધ વૃક્ષ યોગ્ય ફળ આપી શકતા નથી, તેવીજ રીતે વૃદ્ધ પુરૂષથી સંતાનની આશા રાખી શકાતી નથી. વળી વૃદ્ધ લગ્નથી સ્ત્રીઓ અતીતિવાન બને છે, તે પણ ભુલવું જોઇતું નથી.

ધ્યાન દેવા યોગ્ય બાબતો.

વ્યવહારિક ઉન્નતિ.

અ. વિવાહ સંબંધ જોડતી વખતે પડતી સંકુચિતા દૂર કરવા સંભાને વધારે ઘરનો બનાવવો જોઇએ.

મારી સમજ મુજબ સોજીત્રા અને અંકલેશ્વરના સંભાઓ એકત્ર કરવા-કે-જેથી કન્યાઓની આપ લે છુટથી થઇ શકે?

વ ચાલુ કાળે આપણા કેટલાક બંધુઓ 'ભુખના માર્યા કોદરા ખાય' એ કહેવત પ્રમાણે કન્યા નહિ મળવાથી કાઠીયાવાડ-વાગડ-દક્ષિણ વિગેરે સ્થળેથી દ્રવ્ય ખરચી કન્યાઓ લાવી ઘર સંસાર ચલાવે છે, જેને આપણે છુટથી જ્ઞાતિમા સ્વીકાર કરીએ છીએ, તેમજ તેમના સંતાનોને પણ કન્યા આપીએ છીએ ને તેમની કન્યા પણ લઇએ છીએ, તો પછી મહાવીર સ્વામીના ૪રમાન શ્રાવક માત્રને સરખાજ છે. ને તે સરખા હોવાથી ધર્મની એકતા સચવાઇ રહે છે. તે પ્રમાણે આપણે આપણને ભાણે ખપતી કોમમાંથી કન્યા લેવ છુટ કરવી જોઇએ. અર્થાત્ રોટીવ્યવહાર કરવં પ્રયત્ન કરવો જોઇએ. આ લેખક ભુલતો ન હોય તો તેણે આપણી કોમમાં રાયકવાળ શ્રીમાળી પંચમ હુમડ વિગેરે કોમમાંથી કન્યા આણેલ જોઈ છે ને તેને આખી કોગે સ્વીકારેલી છે તે પછી રોટી વહેવાર ત્યા બેટી વહેવાર કરવામ અડચણ નથી એ વાત નિઃસંશય છે.

ક લોકપ્રિય મહારાજા શ્રીમંત સયાજીરાવ ગાયકવાડે એમના વૃદ્ધ પ્રતિબંધક કાયદાને માન આપી કોમમાથી વૃદ્ધ લગ્ન બધ કરવાં જોઇએ બલ્કે જ્ઞાતિના દરેક જણે તેવાં લગ્ન કરવાં નહિ તેમજ તેમાં ભાગ લેવો નહિ, એવી દૃઢ પ્રતિજ્ઞા લેવી જોઇએ, તે છતાં કોઈ નીચ મનુષ્ય તે તરફ ઝુકાય તો તેને સરકારને સ્વાધીન કરવા જ્ઞાતિ પંચે ચુકવું નહિ. તેમજ તેનાથી દરેક જણે સંબંધમા આવતાં દૂર રહેવું-કેમકે વૃદ્ધ લગ્ન કરનાર અને કરાવનાર બંન્નેનું અનાજ અધમ ગુણવાળું ગણાય છે.

ડ દરેક જણે એવી પ્રતિજ્ઞા લેવી જોઇએ કે-હું ચાળીશ વર્ષની ઉમર પછી લગ્ન કરીશ નહિ. તેમજ હું મારી કન્યાને તેટલી ઉમરના સાથે પરણાવીશ નહિ અને તેવા લગ્નમા ભાગ પણ લઇશ નહિ.

ગ અને ત્રણ સંતાન હયાત હશે તો હું ચાલીસથી પણ નાની ઉમરે લગ્ન કરીશ નહિ તેમ તેવી જગ્યાએ મારી કન્યા દઇશ નહિ

ણ ગાયકવાડ સરકારના બાળ લગ્ન પ્રતિબંધક કાયદાને માન આપવા દરેક જણે પ્રયત્ન કરવો જોઇએ. સાભળવા પ્રમાણે આપણી કોમમાં બાળ લગ્ન થતાજ નથી-પણ કેટલાંક લગ્નો એવાં બને છે કે-જેમા વર કરતાં કન્યાની ઉમર બહુજ મોટી હોય છે. તેવાં લગ્ન બંધ કરવાં જોઇએ તેની સાથેજ સોળ વર્ષથી વધારે અંતર વાળાં લગ્ન કાયદા વિરૂદ્ધ ગણી તેને બંધ કરવા

જોઇએ. સ્વાભાવિક રીતે વર કન્યામાં પાંચ વર્ષનો તફાવત રાખવો જોઇએ એટલે કે-વર કરતાં કન્યાની ઉમર ૫ વર્ષે નાની હોવી જોઇએ. મેં એવા એવા સંબંધ આગેવાનોને ત્યાં થયેલાં જોયા છે કે—જેમાં સવા વર્ષની છોકરી ને તેર માસનો છોકરો. વળી ત્રણ માસનો છોકરો ને બે માસની છોડી-એવા સબંધ બાંધવા એ સમાજને પડતીમાં લાવી મુકવા જેવું છે.

બંધુઓ, આવી નાની ઉમરમાં અંતર સિવાયના સંબંધ બાંધી દેવા તે મુર્ખાઇ નહિ તો બીજું શું હોઇ શકે ?

આવા સંબંધો બાળ લગ્નના માથામાં ચુકે તેવા છે. તે તેનાથી ભવિષ્યમાં તે દંપતિ ભવિષ્યમાં તે ભાગ્યેજ સુખી નિવડવાના એ નક્કી સમજવું કેમકે-એક કાદવનો ઘડો લેવો હોય તો આપણે તેની ફેરવી ફેરવી પરીક્ષા કરીએ છીએ કે જે એક પૈસાની કીંમતનો છે, પણ હજારો રૂપીયા આપવા છતાં આ મનુષ્ય દેહ મળવાનો નથી. તેમાં પોતાની કન્યા જે પોતાનાજ શરીરથી ઉત્પન્ન થએલી છે. તેને આખી જીંદગીના ખલાસીની પરીક્ષા કર્યા સિવાય લાકડે માકડું વળગાડવા જેવું કરી દો છો. ધિક્કાર છે. તે કુળાભિમાનને, ધિક્કાર છે તે અક્કલને કે જે પોતાનાં સંતાનોનું સત્યાનાશ વાળવા તૈયાર થાય છે.

અપક્વ ઉમરનાં જોડાંના સંસર્ગથી સંતતિની આશા રાખી શકાતી નથી. વખતે સંતતિ થાય તો તે નબળી થઇ થોડા વખતમાંજ નાશ પામે છે એટલે આપણને નિર્વંશ કરનાર દુષ્ટ બાળ લગ્નજ છે. નાની ઉમરમાં સંબંધ જોડવા બંધ થવાથી હાલ લગ્ન યોગ્ય ઉમરના કેળવાયલા પુરૂષો જે રહી ગયેલા છે તેઓને કન્યા મળી શકશે. વળી તેમ થવાથી કાઠીયાવાડ આદિ દેશમાંથી દ્રવ્ય ખરચી કન્યા લાવવાની જરૂર રહેશે નહિ. એટલે દર સાલ નાતને રૂપીયા ચાળીસ હજારનો ફાયદો થશે જે દ્રવ્ય કન્યાના બદલે આપવું-જાય છે. વ્યવહારિક બાબતો સુધારી નીચે પ્રમાણે ધાર્મિક ઉન્નતિ કરવા પ્રયત્ન કરવો જોઇએ કે જેથી કહેવાતા શ્રાવક મટી ખરા શ્રાવક બની શકાય અને પરલોકમાં સુખી થવાનો રસ્તો મેળવી શકાય.

ધાર્મિક ઉન્નતિ.

જ્ઞાતિના પાટનગર સોજીત્રામાં નથી કોમ તરફથી એક પાઠશાળા કે નથી કોમના વિદ્યાર્થીને રહેવાની બોર્ડિંગ!

બોર્ડિંગને ખોલવાની જગ્યા નથી તો પછી બોર્ડિંગની આશા રાખી શકાયજ કેમ?

એ વાત તો જગજાહેર છે કે-મેવાડા કોમ દર ત્રણ વર્ષે લગ્ન કરવા સોજીત્રામાં ભરાય છે, છતાં ત્યાં હજુ સુધી તેમના તરફથી એક મકાન જમવા બેસવાની સગવડવાળું થયેલું જણાતું નથી. ખેદ છે કે-ગરીબમાં ગરીબ કોમ વાલંદ, મોચી, આદિ પણ પોતાના જ્ઞાતિભોજનની પંક્તિ બેસાડવા મકાન ધરાવે છે, પણ ધનિક ગણાતી મેવાડા કોમ તેથી રહિતજ છે.

બંધુઓ,-ઘર આગળ આપણે નાહી ધોઇ પવિત્ર થઇ રસોઇ જમીએ છીએ, જમવાની જગા ઉપર ચંદરવા બંધાવીએ છીએ, દરરોજ ચુલે-રસોડાના વર્તન સાફ કરીએ છીએ, પણ તમારી નાતિ જમણની પંક્તિ જોતાંજ ધૃણા ઉત્પન્ન થાય છે કે—કુતરાં, બિલ્લાંના સ્પાર્શાસ્પર્શ સહિત-નાના બાળકોના મળમૂત્રના ત્યાગ કરવાના સ્થળે-ભંગી અને બીજી અસ્પર્શ્ય કોમની નજર આગળ જમવા કરતાં ન જમવું હજાર દરજ્જે સારૂં છે. એવી અસ્પર્શ વસ્તુઓમાં જમવા બેસાડવા કરતાં જમણ કરનારે ન કરવું તે હજાર દરજ્જે સારૂં છે.

બંધુઓ, ધર્મશાળા જેવું મકાન કંઇ જમવાના એકલાજ ઉપયોગમાં આવતું નથી, પણ તેને અંગે કોમ તરફથી અનેક ખાના પીવાના પણ કામમાં આવે છે, માટે આપણે આપણી જ્ઞાતિના પ્રમાણમાં ધર્મશાળા હાલ તર્ત બનાવવી જરૂરી છે. નવા વિચારના મનુષ્યોને તમારા

જ્ઞાતિ ભોજન તરફ ઘૃણા ઉત્પન્ન થવાનું કારણ ફક્ત અવિવેકી અને અયોગ્ય સ્થળે જમવા બેસવું એજ છે, માટે જો તમો તેમને ધર્મશાળા બનાવી મોકળાશ કરી આપશો તો તેજ મનુષ્યો તમારા જ્ઞાતિ ભોજનને મુક્ત કંઠે વખાણ્યા સિવાય રહી શકશે નહિ. કેમકે-જ્ઞાતિભોજનથી અન્યોન્ય પિછાણ અને સાથે ભોજનથી કંઈક ઐક્યતા પ્રવેશ કરે છે, એમ એ સારી રીતે સમજે છે.

હવે કોઈ પ્રશ્ન કરશે કે-હમારે કેવા સ્વરૂપમાં ધર્મશાળા બાંધવી. અને તેની વ્યવસ્થા કેમ કરવી તો જણાવવાનું કે—

अ. સોજીત્રામાં સ્ટેશનરોડ પર સો ગજ ચોરસ જમીન લઇ તે પર મકાન બાંધવું. આગળનો ભાગ બે માળનો બનાવવો કે જેથી દુકાનોનું ભાડું મેળવી શકાય. !

ब. ધર્મશાળા બનાવવાના ખર્ચમાં જ્ઞાતિનું ધ્રુવ ફંડ નાખવા ઉપરાંત મંદિરોના ઉછામણીના પૈસા નાખી દેવા. કેમકે-ધર્મશાળાને અંગે મંદિરની સ્થાપના કરવાની હોઈ, તેનો ખર્ચ તેમાજ થવાનો છે.

क. ધર્મશાળામાં એક સંસ્કૃત વિદ્યાલયની સ્થાપના કરવી. કે જેમાં સંસ્કૃત વિદ્યાની સાથે ધર્મશાસ્ત્રનો અભ્યાસ કરાવી શકાય.

બંધુઓ! આપણા ગુજરાત પ્રાંતમાં એક પણ દિગંબર જૈન સંસ્કૃતનું ભાષાંતર કરી શકે એવો ગુજરાતનો વતની મારા જોવામાં કે સાંભળવામાં આવ્યો નથી. ખેદ છે કે-આપણને તેનાથી પાઠશાળા સિવાય જીંદગી ગુજારવી પડે છે. કદાચ કોઇ પાઠશાળા સ્થાપક કરે તો પંડિત હિંદુસ્થાનીજ લાવવો પડે છે, જેથી વિદ્યાર્થી આવતાં અચકાઇ તે પાઠશાળા મૃતપ્રાયઃ થઈ જાય છે.

આપણે સોજીત્રામાં સંસ્કૃત વિદ્યાલય ખોલી ગુજરાતમાં ગુજરાતના વતની દિગંબર જૈન પંડિતો ઉત્પન્ન કરી તેમના દ્વારા જ્ઞાતિમાં જ્ઞાનનો ઉપદેશ કરાવવાનો છે અને ગામેગામ પાઠશાળા ખોલવાની છે.

વળી સર્વજ્ઞપ્રણીત ધર્મની આબાદીને અર્થે તે વિદ્વાનોને ઇતર દેશોમાં મોકલી ત્યાં જૈન શાસ્ત્રનો પ્રચાર કરી લોકોને તત્વજ્ઞાની બનાવી જૈનના અભ્યાસી બનાવવાના છે,

ड. આપણી પાછળ ગાદીનાં બહાને પડયા પાથર્યા રહેનાર ભગવા ગૃહસ્થાચાર્યોને તે વિદ્યાલયમાં ભણવાની ફરજ પાડવી.

च. ભંડારોમાં સડયા કરતા ગ્રંથોને કાઢી તેનું વિદ્વાનો પાસે ચાલુ ભાષામાં ભાષાંતર કરાવી તેનો જુજ કીમતે પ્રસાર કરવો જોઇએ.

ज. જ્ઞાતિમાંથી કોઈ બંધુ કોઇ ઉપયોગી પુસ્તક તૈયાર કરે તો તેને યોગ્ય પારિતોષીક આપવું જોઇએ. વળી તેને છપાવરાવી દરેક જણે મદદ કરવી. કે-જેથી અન્યજનને પુસ્તક, પ્રચારવાનો મોહ થાય.

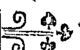
न. ભટ્ટારકોને પંચની દેખરેખ નીચે રાખી તેમને નિયમિત રીતે અગિઆર પ્રતિમામાંથી સાતમી પ્રતિમા સુધીની ક્રિયા પળાવવા ફરજ પાડવી. કે-જેથી તે અયોગ્ય પંદલો રાખી ચોરી કરાવે નહિ યા સટ્ટા વેપારમાં ઉતરે નહિ.

म. મંદિરનો હિસાબ ચોખો બનાવી તેનાથી જૈન. ધર્મનો મહિમા વધે તેવા કાર્ય કરાવવાં જોઇએ. જેવાં કે-જીર્ણોદ્ધારફંડ-અનાથાલયફંડ પાંજરાપોળ-ઔષધાશ્રમ-આદિ ખોલી શ્રાવકના દ્રવ્યનો સદુપયોગે વ્યય કરાવવા ચુકવું નહિ.

व. સંભાના સાઠ ગામોના પંચને ફરજ પાડી દરેક ગામનો એકેક બંધુ સંસ્કૃત વિદ્યાલયમાં રાખી તેને પૂજન કરાવવાની વિધિ પૂર્ણ રીતે શીખવાડવી. કે-જેથી આપણે પુજનાદિ ક્રિયા અન્ય ધર્મી પાસે કરાવવી પડે નહિ.

ગત જેઠ માસના "દિગંબર જૈન"ના અંકમાં મારા વાંચવામાં આવ્યું હતું કે-ઉદેપુર (મેવાડ) તરફ ભોજક પ્રતિષ્ઠા કરાવે છે, તેમજ ત્યાગીના કેશ લોચ પણ કરાવે છે. ખેદ છે કે-આપણા ભટ્ટારકો તો પોતાની ગાદીને સાચવી રહેલા છે.

મારાજ વતનમાં એક વખત શાંતિ વિધાનની પૂજા કરાવવા અન્ય ધર્મીને આણવામાં આવ્યો હતો, પણ એક દિગંબર જૈન બંધુ તે કાર્ય

કરાવવા હીંમત ધરાવી શક્યો નહોતો. તેમ આચાર્યશ્રીએ પણ પોતાના પંડિત સરખાને મોકલ્યો નહોતો. બંધુઓ! ખેદ છે કે-જે મંદિરો આપણા પૂર્વજોએ બંધાવેલા છે, જેની પૂજા પરિપાટીથી આપણે કરતા આવ્યા છીએ, તેની પૂજા કરાવવા અન્ય ધર્મીને આણવો પડે? તે મંદિરો શું કામનાં કે-જેની પૂજાની વિધિ આપણે જાણી શકતા નથી?

તે દ્રવ્ય શું કામનું કે-જે વિદ્યાધ્યયનમાં ખરચાતું નથી? તે મનુષ્ય શું કામનાં કે-જેને ધાર્મિક જ્ઞાન છેજ નહિ!

-માટે હાલજ ધર્મશાળા બનાવી સંસ્કૃત વિદ્યાલય ખોલવા પ્રયત્ન કરવા મારી દરેક જ્ઞાતિ બંધુને નમ્ર સુચના છે. જ્યાં સુધી તમારા બાળકો જૈન દર્શનના યથાર્થ રહસ્યને સારી રીતે સમજી શકશે નહિ, ત્યા સુધી તમારી ધાર્મિક ઉન્નતિ થઇ શકવાની નથી.

૫. દરેક જણે જૈન વિધિથી લગ્ન કરાવવા પ્રતિજ્ઞા કરવી કે-હું મારે ઘેર કોઈ પણ ક્રિયા અન્યધર્મી વિધિથી કરાવીશ નહિ, લગ્નની હકીકત લખવાનો આ સમય નથી, નહિ તો તમારાં દરેક લગ્નો કોળી લોકના નાતરાની માફકજ થાય છે. ધિક્કાર છે તે ગાડરીયા રૂઢિને કે-જેના ગુલામ થઇ તમો તમારાં સંતાનોનું સત્યાનાશ કાઢી નાખો છો.

ણ. લોકોના સંભામા પાંચ છ ગ્રેજ્યુએટ ખ્યાતિ ધરાવે છે તો એક ગ્રેજ્યુએટના હાથ નીચે 'મેવાડા મિત્ર' નામક માસિક પત્ર કાઢવાની વ્યવસ્થા થવી જોઇએ.

૬. ધી મેવાડા દિગંબર જૈન કોન્ફરન્સ નામે એક સભા સ્થાપન કરી તેના સભાસદ દરેક જણે થવું જોઇએ અને તેના ઠરાવ દરેક ઠરાવો પાસ કરી તદનુસાર વર્તવા દરેક જણે કાળજી રાખવી.

જ્યાં સુધી અગેવાનો બગલબાતી છોડી દૂર કરી ધર્મ પૂર્વક મેળાપ લઇ ઉન્નતિ અર્થે બહાર પડશે નહિ ત્યા સુધી તમારી ઉન્નતિ "ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ" માની લેવાની છે. કેમકે પહેલા આપણી કોમમાં એક સભા સ્થાપન થઇ હતી પણ તેના અગેવાનોની પોલને લીધે તેને જ્ઞાતિ તરફથી આશ્રય નહિ મળવાથી તે પડી ભાંગી. હવે મેવાડા યુવક મંડળની સ્થાપના થઇ છે પણ તેણે આજ સુધી કોઇપણ કાર્ય કરેલું સાંભળ્યું નથી.

મારી રાય પ્રમાણે ઉપરની બંને સભાઓને દૂર રાખી મેવાડા કોન્ફરન્સની સ્થાપના કરવી જોઇએ.

જ્યા સુધી તમો કોન્ફરન્સથી ઠરાવોનો અમલ કરી કોમને સુધારશો નહિ ત્યાં સુધી તમો તમારી ઘટતી જતી વસ્તીને વધારી શકવાના નથી એ વાત નિશ્ચય છે.

આવતા લગ્નગાળા પહેલા જો મેવાડા કોન્ફરન્સની સ્થાપના નહિ થાય તો હું એમજ માની લઇશ કે-આજના મેવાડા બધુ યથાર્થમા વીર પુત્રોની જગ્યાને લાયકજ નથી તેમ તેઓ ઉચ્ચ ગતિમાં ચડવાને યોગ્ય નથી એમ માની મારી કોમમા કાંઇ જ્ઞાતિની લાગણી વાળો છે નહિ એમ સમજી જ્ઞાતિ સંબંધી લખાણ લખવાં-ચર્ચા કરવી આદિ બંધ કરીશ!

વડીલ વર્ગ તથા યુવાન વર્ગની એક કમેટી, નીમી મેવાડા કોન્ફરન્સની સ્થાપના કરવાનું કામ, જો નીચેના સભ્યો ઉપાડી લે, તો તેમનો ઉપકાર જ્ઞાતિ વીસરી જશે નહિ.

૧-જેસંગભાઈ ગુલાબચંદ મવીપાતજ
૨-રણછોડદાસ જગજીવનદાસ કરમસદ.
૫-કાળીદાસ જેસંગભાઈ બોરસદ.
૩-ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ મોડાસા.
૪-લલ્લુભાઇ હરગોવનદાસ કાણીસા.

ઉપરના ગૃહસ્થોના ફરમાન મુજબ લખવાનું કામ બાકરોલ નિવાસી ઉત્સાહી-યુવક શ્રીયુત મોતીલાલ ત્રીકમદાસ કરશે તો ઉપકાર થશે.

એ વાત નક્કી સમજજો કે કોન્ફરંસ સ્થાપ્યા સિવાય મેવાડા કોમનો ઉદય થવાનોજ નથી. તો હાલજ તે માટે ગોઠવણ કરી તમારી કોમના ઉદયને અર્થે જીંદગીનો થોડો હિસ્સો અર્પણ કરો?

પરમાત્મા આપસર્વેના હૃદયમા મારા વિચારો ઠસાવી આપને હાલજ તે કાર્ય કરાવવા ફરજ પાડે. એ ઇચ્છા રાખનો લખનાર હું છુ. આપ સર્વેનો સેવક- એક દુઃખી હૃદય.

आपणी पुत्रीओ विषे विचार.

(લેખક—શા. નાનચંદ પુંજાભાઇ-વડોદરા.)

સૌથી અગત્યનો વિષય ધર્મ અને નીતિ છે. નીતિ વગરનો ધર્મ હોય નહિં એટલે ધર્મમાંજ નીતિ સમાએલી છે, પણ નીતિના તત્વો છૂટાં પાડી શીખવાડી શકાય ધર્મનાં કેટલાંક તત્વો સમજવા ઘણા કઠણ છે તે નાનપણમા ન સમજી શકાય પણ મુળ અને સાદા તત્વોનુ જ્ઞાન સારી પેઠે આપી શકાય. છોડીઓને ધર્મના જ્ઞાનની જરૂર છે તોપણ મા બાપ તે જ્ઞાન આપવાની તસ્દી લેતા નથી. ધર્મ શીખવાડવો તે તો ગુરૂનું કામ છે. છોડી મોટી થશે ત્યારે ઘણો ધર્મ કરશે અને પાળશે, પણ સમજવું જોઇએ કે પાકી કોઠીએ કાના ન ચઢે. ઝાડ મોટું થયા પછી ન વળે. કેટલાક ગુરૂ પણ સ્ત્રીઓને ધર્મ શીખવાડતા નથી. ગામમા જ્યારે પધારે ત્યારે ભાવના લે, સંપુજ લે, શાસ્ત્ર વાચે તો કથા પુરાણ વાચે કે જેથી સ્ત્રીઓની શ્રદ્ધા સારી ચોટે. પણ આધ્યાત્મિક જ્ઞાનનો છાંટો પણ કોઇ સમજાવતું નથી અને તેથીજ સ્ત્રીઓ ઘણી વહેમવાળી માલુમ પડે છે. શરીર અને જીવને શો સબંધ છે, પરમેશ્વર કેવા છે, પાપ પુણ્ય શું છે, કેવીરીતે બંધાય છે, મોક્ષ અને સ્વર્ગ એટલે શું, સ્ત્રી પર્યાય કેવી રીતે ટળે, જ્યાં સુધી સ્ત્રીઓને આ બાબતોનું જ્ઞાન નથી આપ્યું ત્યા સુધી તેમનું કલ્યાણ કેવી રીતે થવાનું છે સ્ત્રીઓ ઘણી બેદરકારીમા ઉછરે છે, તેમના શરીરના બાંધા માટે કંઇપણ ખાસ સંભાળ રાખવામા આવતી નથી તેથી શરીર એકંદરે તો મજબુત હોતું નથી, પણ અધુરામા પૂરૂં પોતે જ્યારે સ્વતંત્ર થાય છે જ્યારે ખાવામા પોતે બહુ ઝીગુરક કરે છે, કોઇ વખત એકલા ટેભરા ઉપર રહેશે, કોઇ વખત ગોટ્યાં ભળ્યાં ખાશે પોતે પાછળથી જશે તો રસોઇ ટાઢી થઇ ગઇ હોય છે, ચાક ખૂટી પડે છે, દૂધ તો હોયજ શાનું? આવી અધૂરી રસોઇથી શરીરને જોઇતી પુષ્ટિ મળતી નથી.

જાતિ ટેવો.

આજ સીતા, રાજુલ, ચંદનબાલા, અંજના સુંદરી, ચેલના જેવી ધર્મપરાયણ અને સદા ચારિણી સ્ત્રીઓ દેખાતી નથી તેનું કારણ આપણે સ્ત્રીઓને ઘણી બાબતમા વિસારી મુકી છે. નીતિનુ શિક્ષણ નહિં મળવાથી તેઓ ડગલે ડગલે જૂઠું બોલે છે. ટાઢું ખાવુ, જૂઠુ બોલવું, અને નવસ્ત્રા નહાવું એ ત્રણ ટેવો બૈરાને સૌથી ખરાબ હોય છે. મોટાઓની લાજ ન કાઢવી, બહુ ઝીણાં કપડા પહેરવા કે મોહક કપડા પહેરવા, મોટાઓની આગળ થઇને જવું, ગમે તેમ તાણાથી જવાબ આપવો તે મલાજાથી વિરૂદ્ધ છે. અજ્ઞાન સ્ત્રીઓ બહુ વેહેમી હોય છે ઘરમાં છોકરૂ જો પાટલો ઉભો મૂકે કે તેને ખૂબ ખીજે અને મારે, સાવરણી ઉભી મૂકી હોય તો પણ એવીજ દશા થાય.

હાથોહાથ મીઠું આપીએ તો વઢવાડ થાય, સળગેલું લાકડું બીજે છેડે સળગાવીએ તો સાપણનો અવતાર આવે, ધણી પહેલાં જમે તો વાગોળનો અવતાર આવે, આવા નકામા વેહેમ રાખવામા કશો ફાયદો નથી. પાણી ગાળતી વખતે ઝાડુ કઢાય નહિં તે વાત ખરી કારણકે ધૂળ ઉડી પાણીમા પડે પણ જોડેના ખંડમાં પણ પુંજો કઢાય નહિં એ વેહેમ છે.

ધણી પ્રત્યે વર્તાવ.

સ્ત્રીઓ ધણી પહેલા ન ખાવું એ સારી પેઠે સમજે છે પણ ખાતી વખતે કંકાશની વાતો કાઢે, ધણીનું લોહી ઉકાળે તો પછી ઉપલો ધર્મ પાળવાથી શો ફાયદો થવાનો છે! આપણામાં પરમેશ્વર કેવા માન્યા છે, શરીર અને આત્માનો કેવો સંબંધ છે વીગેરે નહિં જાણનાર સ્ત્રી ઘણા અનાચાર કરે છે. કોઈ મૂર્ખ સ્ત્રી ધણીને વશ કરવા જતાં ગાંડો બનાવી દે છે, તેથી વખતે મરી પણ જાય છે. સાસરે જ્યારે જોઇતી વસ્તુ ન મળે કે કામનો બોજો વધારે લાગે કે તરત રીસામણા મનામણાં શરૂ થાય. તે જ્યારે સસરા જેઠથી જૂદી રહે ત્યારે રીસાવાનું મૂકે. આમ થવાથી મઝીઆરા કુટુંબમા જે લાભ છે તે

મળતો નથી. આમા વાક તદ્દન વહુનો છે એમ તો કહેવાયજ નહિં. ઘરમાં વહુ આવે છે કે સાસુને રાજવૈભવ મળ્યો હોય તેમ ખાટલેથી પાટલે અને પાટલેથી ખાટલે કરશે. ઘરનો તમામ બોજો નાની બાળા ઉપર નાખી દેશે અને પોતાની દીકરી અને પારકાની દીકરીને એક આંખે જોતી નથી તેથી આ પરિણામ આવે છે.

સસરા જેઠ પ્રત્યે વર્તાવ.

પોતાના સસરા જેઠ આવે ત્યારે એક હાથ લાંબી ખેંચીને લાજ કાઢશે પણ જરા વાંધો પડ્યો કે તરતજ ઘાટો પાડશે, માન નહીં રાખે, ડોળા કાઢશે, આવી સ્ત્રીઓને લાજ કાઢવાથી શો લાભ થતો હશે? સસરા કે જેઠ પ્રત્યે જે માન આદર ધરે તે સ્ત્રીએ કદી ભૂલવું જોઇએ નહિં. પણ નાની સરખી બાળા કંઇ આવી ટેવો પીએરથી શીખીને આવે છે? અલબત નહિં પણ જ્યારે સસરા જેઠ દયાથી ન જુએ, હેત ન રાખે, સમજાવી કામ ન લે તો આગળ જના ભાર ભાગી જાય છે અને પછી વહુનો વાક કાઢે છે. સસરા અને જેઠ પોતાના પિતા અને મોટા ભાઇની જગ્યાએ છે. એ પ્રમાણે અરસપરસ એક બીજાએ વર્તવું જોઇએ.

કેટલીક અજ્ઞાન સ્ત્રીઓને સીમંત મોડું આવે કે પ્રજા ન થતી હોય તો કંઇ કુડ કપટ કર્યા કરે છે, બાધા આખડી રાખે છે, પારકાંના છોકરાના વાળ કાપે છે, બેરાના સાદના કાપે છે. ઘણાં બીજા કુડ કરે છે।

દેવ પ્રત્યે વર્તાવ

આપણા દેવ પૈસો આપે છે, છોકરા આપે છે, છોકરાને વહુ આણી આપે છે, રોગ મટાડે છે, દરેક જાતનું સુખ આપે છે. જે સ્ત્રીને પરમેશ્વર સંબંધી આવો વિચાર હોય તે જૈન ધર્મ જાણતી નથી એમ કહીએ તો ખોટું નહિં. પોતાના દેવથી કંઈ લાભ ન દેખે તો પીર તાબુતને નરસે જાય ત્યાંથી ખસી માના મહાદેવ કરે તેમ કરતાંય આખરે તો જે થવાનું હોય છે તેજ થાય છે માટે પ્રજા સબંધી શંકા હોય તો હુશીઆર ડૉક્ટરની સલાહ લેવી એજ સારૂ છે

ધર્મનું ખરૂં સ્વરૂપ જાણનાર સ્ત્રી અભિમાન કરતી નથી, જગતની મિથ્યા વસ્તુ ઉપર મોહ રાખતી નથી, દુખ આવ્યે અસાતા વેદનીય કર્મનો ઉદય થયો છે ને પૂરૂ સુખ મળશે એમ સમજે છે, પરમેશ્વરનો વાક કાઢતી નથી પોતાના આત્માનુ કલ્યાણ પોતાનાજ હાથમાં છે તેમ સમજી ધર્મપરાયણ રહે છે

નીતિ નહી સમજનાર સ્ત્રી પોતાના બચ્ચાને નીતિ શીખવી શક્તી નથી. છોકરૂં પડોશીની વસ્તુ છાનુ માનુ લાવે તો કહેશેકે જા જા આપી ઘરમા સંતાડી દે નહી તો લઇ જશે, એવું કહી ચોરી કરવાનો પાયો નાખે છે, પણ આની અજ્ઞાન માતાને ખબર પડતી નથી. બાળ ઉછેરવાના વિદ્યા કઠણ છે, પણ આપણા બૈરાંને તો એવો ખ્યાલ છે કે છોકરૂ ઉછેરવું એટલે કે મોટું થતા સુધી માર ન પડે એટલે કે એના શરીર રક્ષણ પૂરૂ ધ્યાન આપવુ, પણ છોકરાને નીતિ-ભાત, વિવેક કે ઉપયોગ નાગ ગુણો તેનામા દાખલ કરવા તેનુ જ્ઞાન નથી.

લગ્ન.

બાર તેર વરસની ઉમરમા લગ્ન હાલમા થાય છે લગ્નનુ મુહૂર્ત પરમની ખાતર ફેરવાય છે. એવો પ્રસંગ ન આવે તેને માટે સૌએ એકઠા મળી વિચાર કરવાની જરૂર છે કારણ પોતાની પુત્રીનુ ભલુ મા કોઈ તાકે છે. જૈન વિધિથી લગ્ન નહી થતુ હોવાથી મિથ્યાત્વી ધર્મના દેવોને નમસ્કાર કરવા પડે છે. લગ્ન જેવા પવિત્ર અને માંગલિક પ્રસંગે પોતાના ઇષ્ટદેવ તીર્થંકર ભગવાનનું નામ પણ લેવાતું નથી એ શું ઓછુ શરમાવા જેવુ છે! માટે ત્યાંના ગોરને જૈન વિધિ માટે તઇયાર ન્હેકાને તાલીમ આપવી, નહીં તો કોઇ પણ ગૃહસ્થી જૈન વિધિથી લગ્ન કરાવી શકે છે, પણ ત્યાંના ભાઇઓએ આ બાબતનો ગંભીરપણે વિચાર કરવાની જરૂર છે. કારણકે આપણા સમ્યક્ત્વમા ખામી લાગે છે.

લગ્ન થયા પછી બાર તેર વરસની ઉમરમાં સાસરે દીકરીઓને કન્યાને વળાવે છે, પણ આ ઉમર બહુ નાની છે. તેર વરસની બાળા રીત ભાત વિવેક કંઈ સમજતી નથી. સાસરે મોકલતી વખતે સારૂ મુહૂર્ત જોવાય છે પણ બિચારી બાળાની આંખે ચોધારે આંસુ પડે છે. સાસરામાં નજરકેદ જેવું અહબસર રહેવું પડે છે. સસરા જેઠ જેવા વડીલો સાથે કેવો વિવેક ભર્યો જવાબ આપવો તે સમજતી નથી. ઘરનું કામ બરોબર આવડતું નથી તેથી ઠપકો મળે છે. બાળા અકળાઈ જઈ એકાંતમા રડે છે. પહેલી વખત તો સાચો જવાબ ન આપે, પણ બીજી વખતે સાચોજ જવાબ આપે છે ત્યારે મોટાઓનુ માન રહેતું નથી અને શરૂઆતથી જો કન્યા હલકી પડી જાય છે તો બહુ દુખી થાય છે અને સસરા જેઠનો પણ જો ભાર ભાગી જાય છે તો તેમને પણ સુખ પડતુ નથી. છોકરાને પરણાવવાનો લ્હાવો થોડા વખતમાં અકારો થઈ જાય છે. નાની ઉમરમા ગર્ભ ધારણ કરવાથી શરીર ખરાબ થાય છે. પ્રજા નબળી પાકે છે. ગર્ભ ઉપર જે સારી છાપ પડવી જોઈએ તે ચૌદ પંદર વરસની અભણ અને અજ્ઞાન બાળા શું પાડી શકે! અને પ્રજા ધર્મધુરંધર, શરીર અને બુદ્ધિશાળી ક્યાંથી થાય!! ઉપરાઉપરી સુવાવડ કસુવાવડ ચાલવાથી આખરે શરીર ધોળી પૂણી જેવું થઈ જાય છે અને આપણામા ઘણી જુવાન સ્ત્રીઓ સુવાવડમા ગડતા છોકરાને મૂકી મરી જાય છે, ન્યાતની વસ્તી ઘટતી જાય છે, માટે આપણે છોકરીઓને વળાવતા પહેલા બહુ વિચાર કરવો ઘટે છે. આ બાબતમા ઘેરા જાણે છે પણ દીકરીને તાબે થઈ પુરૂષને તાબે કરી નજરે દુઃખ જોવાનો વખત લાવે છે. હવે આગળ આપણે સુવાવડના ઓરડાનો વિચાર કરીશું.

આ બાબતોમાં કોઈ ગૃહસ્થ પોતાના ધ્યાનમાંની નવી બાબત લખી મોકલશે તો સ્ત્રી વર્ગ ઉપર ઉપકાર થશે.

(અપૂર્ણ)

स्व० पं० सुंदरलालजी वैनाड़ा।

लिखते दुःख होता है कि झालरापाटनके सुयोग्य विद्वान् पं० सुंदरलालजी वैनाड़ाका मिती पौष कृष्ण १२को ४८ वर्षकी अवस्थामें स्वर्गवास हो गया। हाल हीमें आप भारतवर्षीय दिगंबर जैन खंडेलवाल महासभाके अधिवेशनमें सभापति महोदय श्रीमान् सेठ लालचन्दजीके साथ कलकत्ते गये थे और वहांसे पुरी, खंडगिरि सम्मेदशिखरजी होते हुए यहां आये थे। पुत्रीकी अस्वस्थताके समाचार एकाएक आपको सम्मेदशिखरजीमें मिले तो आप सबको छोडकर बहुत जल्द घर पर आये; मानो निर्दयी मौत ही आपको एकदम यहां घसीट लाई हो। आनेके समय आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था, मगर घर आने पर आपको बुखार आ गई। बहुत इलाज किये, मगर १०-११ रोज़में वह उनको ले ही गई।

आपका जन्म सम्वत् १९३० के श्रावण वदी ६ को ग्राम मैनपुर रियासत जैपुरमें मन्नालालजीके घर हुआ था। यह गरीब घराना था। यहां वैनाड़ाजीके लिखने पढ़नेका कोई माकूल इंतज़ाम नहीं था, तिस पर भी पिताकी यह ताकीद रहती थी कि पढ़नेमें समय नष्ट न करो और परचूनीकी दूकान पर सौदा वेचकर कुछ कमाओ। इधर तो पिताका डर, उधर विद्याध्ययन करनेकी लगन और तीसरे साधनोंकी असुविधा! इतनी कठिनाइयाँ आपकी उस अवस्थाके सामने

थी कि जब आप इन कठिनाइयोंसे तंग आकर मजे उड़ानेमें वक्त उड़ा सकते थे। मगर नहीं, आपको एक होनहार बनना था। संयोगवश उन्हीं दिनों आपको जैपुर आना पड़ा। वहां पिताकी इच्छाके विरुद्ध, पढ़ने-लिखनेका अच्छा साधन देख आप वहीं ठहर गये। वहां आपने सड़कोंकी रोशनीके सहारे और लिखने पढ़नेकी सामग्री मांग २ कर विद्याध्ययन किया। परिश्रम करनेमें कमी नहीं की। परिश्रमी होनेके कारण उस्तादोंकी भी आप पर पूर्ण कृपा रहती थी और आपके पढ़ने लिखनेमें उस्तादोंने भी आपको हर तरहसे सहायता दी थी।

वैनाड़ाजीने बाइबिल और मेट्रिकमें इम्तिहान दिया और पास हुए जो उस जमानेके लिये बड़ी बात थी। इस तरह पढ़ने लिखनेके बाद आप झालरापाटनमें सोनजी सोलाके यहां गोद आये। यहां दुर्भाग्यवश रोजगारमें घाटा लगा और घरकी पूंजी नष्ट करके आप स्वयं कर्जदार बन गये जिसे आपने स्वत के परिश्रमसे कमा कर चुकाया।

कुछ दिनोंके बाद आपके परिश्रमका नतीजा यह निकला कि आप एक खासे विद्वान बन गये। जैन शास्त्रोंका खूब मनन किया, संस्कृत अच्छी सीख ली, उर्दू, अंगरेजी, गुजरातीमें भी अच्छा काम करने लगे। इसके बाद भी मरते दम तक लिखने पढ़ने और ज्ञान प्राप्त करनेका आपने बराबर सिलसिला जारी रक्खा।

आपको अपने जैन धर्ममें बड़ी श्रद्धा थी। हर कामको श्री शांतिनाथ स्वामीका स्मरण कर किया करते थे और इस तरह उन्हें सफलता भी पूरी होती थी। आप सच्चरित्र, सदाचारी और सच्चे स्वामीभक्त थे। मिलनसार कर मरी हुई थी। दूसरेके दु:खोंमें-दूसरोंकी आपत्तियोंमें, जो आनसे लग जाते थे। सार्वजनिक कामोंमें, सार्वजनिक उत्सवोंमें, राजकीय जल्सोंमें, चंदा संग्रह करनेकी सभाओंमें सबसे प्रथम आप अग्रसर होते थे-खूब भाग लेते थे और सबके पहले आप बड़ी खुशीसे चंदा देते थे। ऐसे अवसरों पर आपकी बड़ी ओजस्विनी और प्रभावशालीनी वक्तृताएँ होती थीं जिनमें अध्यात्मज्ञान कूट २ कर भरा होता था, आपकी वक्तृताओंकी यहांके महाराज राणा बहादुर भी तारीफ करते थे।

संसार गुणकी कद्र करता है-मनुष्यकी नहीं। अतएव आपके ऐसे सद्गुणोंको देखकर लोग आपको बहुत चाहने लगे। आपने भी धीरे २ अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाया। कई काम अपने हाथमें लिये। झालरापाटनके जैन शास्त्र जो बरसोंसे भंडारोंमें पड़े थे उनकी बड़े परिश्रमसे सूची तैयार करके उनको सुरक्षित रूपमें रखनेकी व्यवस्था की। शामको मंदिरजीमें नियमित रूपसे जाकर दर्शकोंको शास्त्र सुनाना उनका नित्यनेम था। आपके शास्त्र पढ़नेकी शैली सरल, मृदु और प्रभावशालिनी थी।

आप बड़े शान्त स्वभाव और कवि थे। आप स्वधर्मके सच्चे प्रचारक थे। और कवि भी मामूली दर्जेके ऐसे थे जिनको 'शीघ्र कवि' कहना चाहिये। किसी भी विषयके दोहे चौपाई आप फौरन ही बना देते थे। सैकडों उपदेश भरे वचन आपको जबानी याद थे। अपने मालिक (सेठ विनोदीरामजी बालचन्दजी) के हरेक कामको बड़ी ईमानदारी और वफादारीके साथ ... आप गेष समयका बड़ा

अच्छा सदुपयोग करते थे। इस समयमें आप अपने घरपर कई लड़के लड़कियोंको मुफ्तमें पढ़ाया करते थे। शिक्षाका प्रचार आपका ध्येय था। धार्मिक शिक्षाके साथ आप सदाचार और नैतिकशिक्षा इस ढंगसे देते थे कि थोड़े ही दिनोंमें शिक्षार्थी होशियार हो जाता था। इस तरह आपने कितने ही लड़के लड़कियोंको पढ़ा कर होशियार कर दिया। आपके पढ़ाये लड़के अभी बहुत अच्छी तरहसे अपना जीवन बिता रहे हैं और कई लड़कियाँ अपनी सुसरालमें 'गृहलक्ष्मी' का कार्य अच्छी योग्यतासे सम्पादन कर रही हैं। इतना ही नहीं, यहाँकी जैन पाठशालाकी स्थापनामें भी आपका बहुत कुछ प्रयत्न हुआ है। कई दिनों तक तो पाठशालामें अध्ययनका काम आपने ही चलाया और अब भी आप पाठशालाके उपमंत्री थे। इसके सिवा श्री शांतिनाथ दानशाला, मंदिरके प्रबंधादि आदि बहुतसे काम आपकी सिपुर्दगीमें थे। सारे कामोंको आप बड़े उत्साहके साथ चलाते थे। यहांके प्रतिभाशाली कवि श्रीमान् पं० गिरधर शर्मा नवरत्नकी चुनी हुई कविताओंको आप सुन्दर २ अक्षरोंमें लिखकर बांटते थे और विद्यार्थियोंको कंठस्थ कराते थे। इनमेंसे कितनी ही कविताएं आपको जबानी याद थीं और समय २ पर आप उन्हें कहा करते थे। अपनी पत्नीको पढ़ा लिखा कर सुयोग्य बनाना भी आपका प्रधान और प्रशंसाके योग्य काम है।

आपके अक्षर बड़े सुन्दर थे। बंबईमें कई दिनों तक स्वर्गीय सेठ माणिकचन्दजीके साथ रहकर तीर्थक्षेत्र कमेटीका कार्य आपने बड़ी योग्यतासे चलाया था जिसकी प्रशंसा स्वयम् सेठ साहबने कई दफे की थी। आप "दिगम्बर जैन" "जैनगजट" आदि जैन पत्रोंमें भी लिखा करते थे।

ऐसे समाज सेवक और सद्गुणी व्यक्तिके एकाएक संसारसे उठ जानेसे वास्तवमें समाजको बड़ा धक्का पहुंचा है। और झालावाड़के बहुतसे सामाजिक तथा धार्मिक कार्य लूले हो गये हैं। आपकी मृत्युसे हमें अत्यन्त दुःख है और ज्यादे दुःख है आपकी पत्नी और २ वर्षकी बच्चीकी असहाय अवस्थाका जिन्हें आप शोकसागरमें छोड़ कर हमेशाके लिये चल बसे हैं। ईश्वरसे प्रार्थना है कि वे आपकी आत्माको सद्गति प्रदान करते हुए कुटुंबियोंको धैर्य प्रदान करें। **कृष्णगोपाल माथुर।**

दो मित्रोंका वार्तालाप।

फाल्गुणका महीना शुरू हो गया है। तब वसंतकी हवा चल रही है। इसी समय एक पुष्पोद्यानमें जिसमें कि बहुत घने वृक्ष लगे हुए हैं स्थान स्थान पर सफेद, लाल, नीले, पीले, फूल वृक्षों पर लदे हुए हैं जिनके ऊपर मधुमक्खियां भिन्न भिन्न करके ईधर उधर उड़ रही हैं अर्थात् मनुष्य चारित्रके सदृश एक फूलको छोड़ कर दूसरे पर बैठ कर रस लेती फिरती हैं। अनेक प्रकारके पक्षीगण फूलोंके गुच्छों पर कलकी सदृश बैठे हुए फूलोंका रस–पान कर रहे हैं। प्रातःकालकी धीमी धीमी हवाके झोकोंसे पुष्पोंसे लदी हुई शाखायें हिल रही हैं, कोकिल आमके वृक्षों परसे 'कुहू' 'कुहू' शब्द करके सबके चित्तको प्रसन्न कर रही हैं ऐसे रमणीक

पुष्पोद्यानके बीचमें तख्त पर बैठे हुए कुंन बाबू सबेरेके सूर्यकी सुनहरी धूपमें रंग बिरंगी उडती हुई तितिलियोंको देख रहे थे कि यकायक किसीके पैरकी आवाज मालूम हुई। शिर घुमा कर देखा तो हाथमें छोटा डोर लिये हुए रुद्र बाबू आ रहे हैं। पास आने पर जयजिनेंद्र हुई और रुद्र बाबू भी तख्त पर बैठ गये। आपसे कुछ वार्तालाप होने लगा। चलिये पाठको हम और आप भी इनकी वार्तालाप पर ध्यान दें।

रुद्र—बाबूजी, आज तो आप बहुत तडके ही स्नानादि क्रियाओंसे निवृत्य हो गये।

कुंन—हां साहब, इसका कारण यह है कि मैं अब प्रतिदिनके नियमसे घंटे डेढ घंटे पहले निवृत्य होकर इस समयको धर्म-ध्यानमें विशेष लगाऊंगा। अब अष्टान्हिका पर्वके केवल ८ दिन ही शेष रह गये हैं।

रुद्र—यह अष्टान्हिका पर्व कबसे शुरू होता है और इसको सब जैनी भाई क्यों मनाते हैं?

कुंन—फाल्गुण मास बडा ही रमणीक समय है, अन्न खेतोंमें चारों तरफ हरियाली छा जाती है, आकाश निर्मल होकर फटिकमणिके समान होता है तब वसंतकी सुगन्धित पवन चलती है, कोकिलें अपना आनंदमई राग गाकर सब मनुष्योंके चित्तको प्रफुल्लित करती हैं उसी फाल्गुण मासके अंतमें अर्थात् फाल्गुण शुक्ल अष्टमीसे फाल्गुण शुक्ल पूर्णमासी तक इन आठ दिनोंमें अष्टान्हिका पर्व होता है इसी समय इन्द्रादिक देव आठवें महाद्वीप नंदीश्वरमें जा करके ५२ अकृत्रिम महा मंदिरोंमें विराजित जिन भगवानके प्रतिबिम्बोंकी बडी ही भाव भक्तिसे पूजन करते हैं प्रायः इसी प्रथानुसार सर्व जैन मंदिरोंमें नरनारी तथा बालकगण मिलकर बडी भाव-भक्तिसे पूजन करते हैं। अष्ट द्रव्य चढाते हैं, अनेक व्रत उपवासादि करते हैं।

रुद्र—भाई साहब, अष्टान्हिका पर्वके मनानेका कारण तो मुझे मालूम हो गया पर यह बतलाइये कि मनुष्यको किस नियमके अनुसार कार्य करना चाहिये।

कुंन—इस अष्टान्हिका पर्वके मनानेका कारण तथा नियम भी विगत वर्षोंके जैनमित्रादि पत्रोंमें निकल चुका है खैर अगर आपको नहीं मालूम है तो सुनो—

इन दिनों प्रत्येक स्त्री पुरुषको चाहिये कि प्रातःकाल ४ बजे उठकर हाथ मुँह धोकर प्रातःकालकी सामायक करे। सामायक भी ऐसी न करे कि—

माला तो करमें फिरे, जीभ फिरे मुख माँहि।
मनुआं फिरे बजारमें, यह तो सुमिरन नाँहि॥

सामायकके लिये जिन मंदिर या शून्य गृह, गुफा, वन, बगीचा, मनुष्य स्त्री पशु बालक रहित स्थान होना चाहिये, उस समय पद्मासन या खड्गासनसे एकाग्र चित्त होकर णमोकारादि जाप जपे। बादको शौच आदि क्रियाओंसे निवृत्य होकर स्नान करके तत्व सम्बन्धी किसी शास्त्रका स्वाध्याय करे जिससे आत्माका हित हो। फिर दो एक पुस्तकोंका पाठ करके ८ या ९ बजे अष्ट द्रव्यको शुद्ध प्रकारसे बनाकर श्री जिनेन्द्रदेवका पूजन करे। पूजन करते वक्त जो कुछ पढे उसको खूब समझता जावे, बिना समझे पूजाका उतना फल नहीं होता है जितना समझ कर पूजा करनेका होता है। बहुतेरे लोग रूढीके अनुसार बहुतसी पूजा करते हैं और उनका भाव कुछ भी नहीं समझते हैं। उनको ऐसा नहीं

करना चाहिये। बल्कि भक्ति श्रद्धापूर्वक पूजा करना चाहिये। पूजनके बाद उपवास न कर सके तो १ या २ वक्त जैसा भोजनका नियम रख सके उसके अनुसार दोपहरको शुद्ध भोजन करे। भोजनके पीछे पुनः पूजनका विधान करे, स्वाध्याय करे। अहिंसा सत्य अस्तेय शीलव्रत संतोष आदि व्रतोंका पालन करे, संयम व नियमसे रहे, स्वाध्याय तथा ज्ञानचर्चा अधिक करे। परिणामोंमें शांति रक्खे। आठो रोज हिंसा झूठ कुशील चोरी परिग्रह इन पंच पापोंसे तथा क्रोध मान माया लोभ इन चारों कषायोंसे दूर रहे सबसे मिष्ट वचन बोले, सायंकाल होने पर सामायक करे तथा शास्त्र श्रवण करे। इस प्रकार प्रातःकालसे सायंकाल तक उपरोक्त नियम पर चलकर ९½ या १० बजे पर तख्त या चटाई पर आत्म चिंतवन करता हुआ सो जावे। अगर दान करनेकी शक्ति हो तो यथायोग्य विद्यालय ब्रह्मचर्याश्रम विधवाश्रम, अनाथाश्रम आदिमें दान देवे। सारांश यह है कि कषाय और विषयोंको मंद करे, अपने अमूल्य समयको धर्मध्यानमें लगावे इसी लिये यह पर्वके दिन विशेष धर्मध्यानके अभ्यास करनेके लिये नियत किये गये हैं।

रुद्र—यह बातें तो आज आपने खूब बतलाई, मैं भी प्रतिज्ञा करता हूं कि आपके साथ ही मैं भी पूजन तथा स्वाध्याय आदि करूंगा लेकिन भाई साहब यह तो बतलाइये कि यह होली—

कुंन—यह होली आजकल नीच तरहसे मनाई जाती है उसको बिल्कुल न करना चाहिये, न होलीमें बुरे शब्द बकना चाहिये और न होलीको जलाना चाहिये, न उसे पूजना चाहिये, न कीचड़ आदि किसीके मारना चाहिये। हां, अगर अपनी अर्द्धांगिनी तथा मित्रोंके साथ प्रेम बढ़ाना हो तो प्राचीन प्रथानुसार, जैसा राजा अपनी रानीसे, सेठादि अपनी धर्मपत्नियोंसे प्रेम बढ़ानेके लिये सुगंधित जल छिड़कते थे तथा अबीर गुलाल लगाते थे वैसा ही—प्रत्येक मनुष्य कर सकता है इसी क्रीडाका नाम वास्तवमें होली है।

रुद्र—तो यह होलीकी महा नीच क्रिया कैसे भारतवर्षमें प्रचलित हो गई?

कुंन—भाई, अब समय बहुत हो गया है। यह बात फिर बताऊंगा। अब जाता हूं। जय जिनेश।

रुद्र—अच्छा भाई, जयजिनेश। कल मैं यहीं मिलूंगा। जयजिनेश। कुंन लोटा डोर और धोती लेकर अपने घरको चले गये और रुद्रबाबू लोटेमें पानी भरके शौच क्रियाके लिये चले गये और हम भी अब स्नानके लिये चले। जयजिनेश।

रतनलाल जैन करावली [मैनपुरी]

एक विचित्र स्वप्न।

(ले० ताराचन्द्र जैन, झालरापाटन सिटी।)

ग्रीष्म ऋतुका मध्यान्ह काल है। सूर्य्य अपनी प्रचंड किरणोंके द्वारा जगतको तप्त कर रहे हैं। वायु भी सूर्यके सहायतार्थ लूका रूप धारण कर "सामर्थवानके सब ही सहायक है" वाली उक्तिको चरितार्थ करनेके हेतु जीवोंके शरीरोंको जला रही हैं। सब जगह सन्नाटा छाया हुआ है। ऐसे ही समयमें एक नवयुवक जिसकी अवस्था १२ वर्षके लगभग प्रतीत होती है एक मनोहर उद्यानमें बैठा हुआ कुछ सोच रहा है। उद्यानके समस्त वृक्ष कुसुमित और पल्लवित होरहे हैं। गुलाब चमेली आदिकी सुगंधि चारों ओर

फैल रही है। मधुप पुष्पों पर भ्रमण कर रहे हैं। वृक्षोंकी शाखाएं इतनी लम्बी छतनार हैं कि मानों गगनमंडलको नापनेको हाथ फैलाये हो। मयूर अपने नृत्यसे और पक्षी अपने गानसे मनको लुभा रहे हैं। बागके एक ओर निर्मल जलसे भरा हुआ एक सुन्दर सरोवर पथिकोंको आनंद दे रहा है। वृक्षों और तालावके कारण बाग इतना शीतल है कि मानों शीतलता सूर्यके भयसे इसी स्थानमें छिप गई हो।

परन्तु ये सर्व प्राकृतिक सुन्दरताएं उस उदास और चिन्तित नवयुवकको किंचित भी शान्ति नहीं प्रदान कर सकी। कोई मनुष्य नहीं बतला सक्ता है कि वह किस विचारचक्रमें फंसा है। किन्तु एकाएक उसके मुखसे कुछ ऐसे शब्द बाहिर निकल पड़े जिनसे उसके विचारोंका आभास ज्ञात हो सकता है। वे शब्द ये हैं—

हा भारत ! तेरी ऐसी अवस्था कैसे हो गई ! हा ! क्या कारण है कि तेरी गोदमें जो पूर्वमें परोपकारी और ज्ञानी मनुष्योंका क्रीड़ास्थान था आज स्वार्थी—मूर्ख और झगड़ालू मनुष्योंका राज्य है ! हा ! जिस देशमें पहले अपने साहस, धैर्य, वीरता और पराक्रमसे समस्त भूमंडलको कम्पा देनेवाले—देवताओं तकको भयभीत कर देनेवाले पुरुष उत्पन्न हुआ करते थे वही देश आज निरुद्योगी—कायर—निर्बल और धैर्यशून्य मनुष्योंकी लीलाभूमि बना हुआ है ! जहां कभी ब्रह्मचर्य और स्त्री शिक्षाका खूब प्रचार था, ब्राह्मी और लीलावती जैसी अनेकानेक स्त्रियें जन्म लिया करती थीं, हा ! वहीं आज बालविवाह सौभाग्यका चिन्ह गिना जाता है—वृद्धव्याह स्वर्गका द्वार माना जाता है—स्त्रियोंको सुशिक्षा न देना और उन्हें मोल ली हुई बांदीके समान गिनना धर्मका एक मुख्य अंग समझा जाता है। हा भारत ! आज तेरे बच्चोंको दुर्भिक्ष और भयंकर रोगोंने सता रक्खा है। जिधर देखो उधर ही फूटका साम्राज्य छाया हुआ है। यहां तक कि एक ही धर्मके अनुयायियोंमें भी एकता नहीं है। हा ! सर्वज्ञ ये जो ऐसे महात्माओंकी संतानोंकी शिक्षाका आज सुप्रबन्ध नहीं है। उसे मानसिक और शारिरिक शक्तिको नष्ट कर देनेवाली—जीवन तकको नष्ट कर देने वाली कुशिक्षा दी जाती है। हा भारत ! आज तेरी संतान गुलाम है वह अन्यायोंके मारसे दबी हुई है और उसका सब कहीं देश विदेशमें अपमान होता है। हा ! कहां तक तेरे दुःखोंको सुनाऊं। तेरी दुर्दशाको देख कर मेरी छाती फटती है—कलेजा टूक २ हुए जाता है। हा ! मुझे कोई उपाय नहिं सूझता है। हे ईश्वर ! मुझे शक्ति दे और उपाय बता ताकि मैं अपनी प्यारी माता-भारत माताका दुःख दूर कर सकूं। इसके पश्चात् उसके शब्द—भ्रमर पुनः उसके मुख-पद्ममें विलीन हो गये। तथापि चिन्तासे वह मुक्त न हो सका। कुछ समयके अनंतर निद्रादेवीने उस पर अपना प्रभाव जमाना आरंभ किया। युवकने इसका प्रतिकार किया परन्तु अन्तमें विफल होकर उसने देवीकी अधिनता स्वीकार कर ली। परन्तु खेद की बात है कि निद्रा भी उसे पूर्ण शान्ति नहीं प्रदान कर सकी। वह एक स्वप्न देखने लगा। जो कुछ उसने देखा उसका संपूर्ण विवरण देनेमें यह क्षुद्र लेखनी असमर्थ है इस वास्ते उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

नवयुवक भयंकर जीवोंसे व्याप्त एक निर्जन बनमें खड़ा हुआ था कि उसे पूर्व दिशासे

आता हुआ एक बाजे या वादित्रका मनोहर शब्द सुनाई पड़ा। वह आश्चर्यन्वित हो कर उसी दिशाकी ओर चल पड़ा। चलते चलते वह एक मनोहर वाटिकाके निकट आया जिसके बाहिर शस्त्रोंसे सज्जित कुछ मनुष्य पहिरा दे रहे थे और जिसके भीतर एक बड़ा जलसा हो रहा था। पहेरेदारोंसे पूछने पर विदित हुआ कि यह जलसा सेठ दुलीचंदजीके विवाहकी खुशीमें, जो कि अभी होनेवाला है, हो रहा है। इसके पश्चात वह युवक वाटिकाके अंदर गया। जो कुछ घटना वहां हो रही या घट रही थी उसे देख कर उसकी आंखोंमें आंसू आगये। उसने देखा कि एक ८० वर्षका वृद्ध वरकी पोशाक पहने हुए बैठा है और उसका व्याह अभी एक दशवर्षीया बालासे होनेवाला है। चारों ओर पंच लोग चुपचाप बैठे हुए तमाशा देख रहे हैं। इस भयानक दृश्यको देख कर और कन्याके भविष्यको विचार कर हमारे युवकका हृदय कांप उठा, शरीर थरथराने लग गया और उससे पसीनेकी धारायें छूटने लगीं। वह अपने विचारोंको नहिं रोक सका और पंचोंको सम्बोधित कर बोला—

"पंचों! आप दया–धर्मको पालनेवाले हो। आप अपने सामने एक कीड़ीकी भी हत्या नहीं सह सकते हैं। परन्तु मुझे यह देख कर अत्यंत आश्चर्य हो रहा है कि आपके समक्ष एक जीते जागते पंचेंद्रिय मनुष्यकी प्रत्यक्ष हत्या हो रही है और आप चुपचाप ही नहीं है परन्तु इस महान पातकीय कार्यमें योग भी दे रहे हैं। इस ८० वर्षके विषयलम्पट लज्जा हीन–मूर्ख–कायर और पापी बुड्ढेको देखो और इस दश वर्षीया अनजान, सुकुमारी बालाकी ओर निहारो। यह गुड़ गुड़ियोंका व्याह है या मनुष्योंका व्याह है! प्रत्यक्ष–मनुष्य हत्या हो रही है। बुड्ढे बाबासे तो मुझे कुछ भी नहिं कहना है क्योंकि उनकी तो बुद्धि भ्रष्ट हो गई है परन्तु आप तो पंचलोग हो आपको कन्याके भविष्यका भी विचार है या नहीं? हा! क्या सबकी बुद्धि पर पानी फिर गया—सबके सब वज्र हृदय हो गये—संसारसे दयाका लोप हो गया। अफसोस! सद अफसोस! इस पर एक मनुष्य बोला—अरे यह कौन है जो व्याहमें अमंगलीक शब्दोंका व्यवहार करता है।

तब दूसरा मनुष्य बोला—हां यह तो वर और पंचोंको साफ २ गाली दे रहा है। तब तीसरे मनुष्यने युवकसे वहांसे चले जानेको कहा। युवकने इस पर ऐतराज किया। तब सब मनुष्योंने मिल कर उसे मारनेकी ठानी। इतनेमें ही आकाशमें सरररकी ध्वनि सुनाई पड़ी। लोगोंने ऊपर सिर उठा कर देखा फिर एक पुरुष जिसका तेज सूर्यके समान है बड़ी शीघ्रतासे उनकी तरफ नीचे उतर रहा है। उसे देखते ही सिवाय नवयुवकके और सब मनुष्य भयभीत होकर इधर उधर भाग गये। आकाशवाला पुरुष जितना २ नीचे आता जाता था उतना ही उतना उसका प्रकाश बढ़ता जाता था। अन्तमें युवककी आंखें चकाचौंध हो गई। उसने अपना मुख नीचे कर लिया। इतनेमें उस महा बलवान पुरुषने युवककी बांहे पकड़ कर क्षणभरमें उसको एक अज्ञात अत्यन्त सुन्दर और विशाल मंदिरमें ले जाकर रख दिया और आप अंतर्ध्यान हो गया।

आश्चर्यान्वित और भयभीत युवकने इधर उधर घूमकर देखा कि यह मंदिर पारिजातादि स्वर्गीय पुष्पोंके सौरभसे सुगंधित, रोदसीके पक्षियोंके गानसे गुंजित, कल्पतरु अशोकादि वृक्षोंसे शोभित, सुधासे पूरित एक स्वर्ण-पद्मवाले सरोवरसे शोभित और संगमर्मरकी भूमिवाले एक अनुपम उद्यानसे परिवेष्ठित है। पाठकगण! मैं, मंदिरकी अद्वितीय शोभाका, जो कि युवकने देखी, वर्णन करके आपके अमूल्य समयको बिगाड़ना नहीं चाहता। बागकी सुन्दरता परसे आप स्वयं मंदिरकी शोभा और सुन्दरताका अनुमान कर सकते हैं। बस इतनाही कहना काफी होगा कि यह सारा मन्दिर रत्नोंकी भूमिवाला था।

इस मंदिरमें बहुतसे कमरे थे जिनमेंसे एक कमरेमें चारों ओर स्वर्ण-निर्मित सिंहासन पड़े हुए थे जिन पर इन्द्रादि सर्व देव बैठे हुए थे। इन सबके मध्यमें सबसे श्रेष्ठ और ऊंचे सिंहासन पर एक देवी जिसकी सुन्दरता और तेज कोटि चन्द्रमाओंको जीतनेवाला था, विराजमान थी। यह देवी ऐसे ऐश्वर्यके होनेपर भी उदास प्रतीत होती थी। हमारे युवकने इसको देखते ही साष्टांग प्रणाम किया। तब देवीने युवकसे कहा—वत्स! इधर आवो और [उंगलीसे दिखाकर] इस सिंहासन पर बैठ जाओ। डरो मत। मैं तुम्हारी माता—भारतमाता हूं। नवयुवकने पुनः नमस्कार किया और तब देवीके बताये हुए सिंहासन पर [जो कि खाली पड़ा हुआ था] बैठ कर डरते डरते बोला—माता! आप कुछ उदाससी दिखती हो, सो आपकी उदासीका क्या कारण है। साथ हीमें वे उपाय भी बतावो जिनसे कि आपका दुःख दूर हो सकता हो।

इसके उत्तरमें देवी बोली—देखो वत्स! यह तो तुम भलीभांति जानते हो कि माता अपनी सन्तानको प्राणसे भी अधिक प्यार करती है। माता अपनी सन्तानके दुःखमें दुःखी और सुखमें सुखी हुआ करती है। अब देखो आजकल मेरी संतान बड़ी दुःखी है। हाय! उसके तन पर कपड़ा नहिं—खानेको घरमें अन्न नहिं। हाय! वह शिक्षासे हीन है—अज्ञान है। वह अनेक रोगोंसे जकड़ी हुई है—निर्बल है। यह कहते हुए देवीके कमल नेत्रोंमें आंसु आगये। अब फिर तुम्हीं कहो कि अब मेरे प्रारम्भसे प्यारे बच्चे कष्टमें हैं तो क्या मैं दुःखी न होऊंगी? बस मेरी उदासीका यही कारण है। तुम भी मेरी एक सन्तान हो। इसलिये यदि तुम मेरे दुःखको दूर कर अपना कर्तव्य पालन करना चाहते हो तो निम्नलिखित उपाय काममें लावो जिससे तुम्हारे भाइयोंका दुःख दूर हो और मैं भी सुखी होऊं।

तुम्हारा सबसे पहला कर्तव्य यह है कि तुम मेरी संतानको शिक्षित बनावो। इस कामके अर्थ तुम प्रत्येक ग्राम और नगरमें पाठशालायें स्थापित करो जिनमें विज्ञान-शिल्प-राजनीति-वैद्यक-कृषि विद्यादि उपयोगी विषयोंको मातृभाषा द्वारा पढ़ानेका सुप्रबन्ध हो। स्थान स्थान पर छात्राश्रम और श्राविकाश्रम खोलो जिनमें धार्मिक शिक्षाका भी प्रबन्ध हो। कन्याओंकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दो। स्त्रियोंकी प्रतिष्ठा करना और उन्हें शिक्षा देना अपना परम कर्तव्य समझो। स्थान स्थान पर गुरुकुल खोलकर लोगोंमें ब्रह्मचर्यका प्रचार करो। संस्था-

ओंको अच्छी तरह चलानेके अर्थ लोगोंसे चन्दे वसूल करो। व्याह और समाज प्रणालीमें भी समयानुसार उचित सुधार करो। बाल और वृद्ध व्याहको एकदम् बन्द कर दो। मिलजुल कर रहना और काम करना सीखो। समान धर्मके अनुयायियोंमें रोटी–बेटीका व्यवहार होने दो। देशके व्यापारकी उन्नति करो। देशके बाहिर कच्चा माल बिलकुल मत भेजो–उसे पक्का बनाने का यहीं प्रबन्ध करो। सदा स्वदेशी वस्तुयें व्यवहारमें लावो। अभी तो इतना ही कहना बहुत है। यदि तुम उन्नति करनेका दृढ संकल्प कर लो और इस काममें जुट जावो तो तुम्हें सहस्रों उपाय दृष्टिगोचर हो जायगें। तब युवक बोला–माता! मैं, आपने जो उपाय बताये हैं उन्हींको मस्तक काममें लानेकी प्रतिज्ञा करता हू। मुझे आशिर्वाद दो कि मैं अपने कार्यमें सफल होऊँ। देवीने कहा–एवमस्तु॥

इतने हीमें युवककी निद्रा भग हो गई। उसने उठकर कहा–अरे यह तो स्वप्न है!

॥ इति शुभम्॥

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके २५वें अधिवेशनके साथ कानपुरमें होनेवाले प्रथम जैन साहित्य प्रदर्शनके नियम।

१–इस प्रदर्शनका नाम जैनसाहित्य प्रदर्शन होगा।

२–इसका मुख्य उद्देश्य जैनोंको जैनसाहित्य तथा जैनधर्मका महत्व और प्राचीनत्व दिखाकर उसकी उन्नतिके लिये उत्साही और कटिबद्ध करना है, तथा अन्य बंधुओंमें जैनसाहित्य विषयक श्रद्धा तथा उसका प्रभाव उत्पन्न करना है।

३–यह प्रदर्शन ता० ३१–३–२१ मिती चैत्र कृष्ण ८ वीर सम्वत् २४४७ विक्रम सम्वत १९७७ तक खुला रहेगा।

४–इस प्रदर्शनमें निम्न लिखित विभाग होंगे।

जैन–मूर्ति विभाग।

क–भूगर्भ (जमीनके अंदर)से प्राप्त या अन्य दुर्गमस्थानोंसे प्राप्त प्राचीन [खंडित] जैन मूर्तियां।

ख–जैनमूर्तियोंके चित्र अर्थात तीर्थस्थानों, प्राचीन गुफाओं, अजायब घरों, शिला लेखोंसे प्राप्त हस्त लिखित चित्र तथा उनके फोटो।

ग–प्रसिद्ध २ तीर्थस्थानोंके चित्र, पर्वतकंदराओं और भारतवर्षके प्रत्येक प्रांतके प्रसिद्ध २ दर्शनीय मंदिरोंके हस्त लिखित चित्र तथा फोटो।

घ–षोडश स्वप्न, लेश्या, आहार, उपसर्ग आदि भावोंके हस्तलिखित चित्र तथा फोटो।

ङ–प्राचीन२ आचार्य, मुनि, साधु, गृह–त्यागी, तथा धर्मोपदेष्टाओंके चित्र तथा फोटो।

च–प्राचीन तथा अर्वाचीन जैनराजाओंके चित्र फोटो, तथा चिन्ह, सिक्के, राज्यकाल, राजस्थान आदिके चित्र तथा फोटो।

छ–प्राचीन दानवीर, परोपकारी, धर्मात्मा, पंडित, उपदेशक, सेठ, साहूकार, कवि तथा भक्त सज्जनोंके चित्र, और फोटो।

ग्रन्थविभाग।

क–इतिहास, न्याय, व्याकरण, पुराण, काव्य, कोष, नाटक, धर्मशास्त्र, पूजा, प्रतिष्ठा विधि, कथा आदि २ सब विषयोंके प्राचीन २ दुष्प्राप्य तथा मनोज्ञ ग्रन्थ, भोजपत्र, ताम्रपत्र, पत्र, कागज आदि पर लिखे हुए तथा प्राकृत, देवनागरी, कर्णाटिकी, द्राविड गुज॰ आदि आर्य भाषाओंके।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

 दिगंबर जैन. 

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततामू, दैगम्बर जैन समाज मात्रम् ॥

वर्ष १४ वाँ. || वीर संवत् २४४७. माघ विक्रम स० १९७७. || अंक ४ था



मूडबिद्रीमें सिद्धान्त शास्त्र।

बारकलके उत्सवके बाद देहलीका संघ ब्र० शीतलप्रसादजी तथा पं० झम्मनलालजीके साथ मूडबिद्री पहुंचा था जहां कि रत्नोंके बिम्ब, धवलादि सिद्धान्त ग्रन्थ तथा अनेक प्राचीन मूर्तियोंके १८ मंदिर हैं। जैनमित्रसे मालूम होता है कि जैसी कोशिश सिद्धान्त शास्त्रकी नकल लेनेके लिये इस वार हुई है वैसी कभी भी नहीं हुई थी। सबसे बड़ा श्रीचंद्रप्रभुका मन्दिर जिसको दो कोट और १००० स्तंभ है तथा करोड़ोंकी लागतका बतलाते है उसीमें श्री सिद्धान्त शास्त्र-धवल, जयधवल और महाधवल ग्रन्थ ताड़पत्र पर विराजमान हैं तथा इसीमें ही ६२ अनेक रंगोंके रत्नोंके बिम्ब हैं। तथा ५६ स्फटिककी प्रतिमाएं हैं। इस परका मूडबिद्री जैन पंचान और भ० चारुकीर्ति 'पट्टाचार्यका' है जो कि विद्वान् और वयोवृद्ध हैं। धवल और जयधवलकी बालबोध लिपिमें एक २ नकल सेठ हीराचंद नेमचंद दोशीके प्रयत्नसे हुई है। तथा महाधवलके १७ पृष्ठकी नकल होकर इसकी लिपि होना बाकी है। कई वर्षोंसे प्रयत्न हो रहा है कि इन सिद्धान्त ग्रन्थोंकी एक २ नकल बड़े २ शहरोंमें होनेके लिये ये लोग नकल करने दें परन्तु कुछ भी सफलता नहीं हुई तब कारकलमें इसके लिये डेप्युटेशन नियुक्त हुआ था उस डेप्युटेशनने वहां बड़ी सभा की- और पंचान तथा भट्टारकजीको बुला कर कारकलकी सभाका हाल सुनाया और सिद्धान्त ग्रन्थोंकी नकल करने देनेके लिये स्वीकारता मागी तब पंचों और भट्टारकजीसे उत्तर मिला कि नकल देनेमें हमें उजर नहीं है परन्तु यहां पर दक्षिण कनडा प्रान्तके कुछ भाई उपस्थित नहीं हैं उनकी सम्मति विना स्वीकारता नहीं दी जा सकती। यह उत्तर ठीक नहीं था क्योंकि कारकलमें प्रान्तके बहुतसे भाई इकट्ठे हुए थे। और उन्होंने ही प्रस्तावमें सम्मति दी थी तब भी यह बहाना बनाया गया। बादमें ब्रह्मचारीजीने पंच और भट्टारकजीको बहुत कुछ समझाया तब यह कहा कि आगामी वर्षमें मूडबिद्रीमें उत्सव होनेवाला है तब प्रान्तके सबभाई

मिलकर विचार करेंगे आदि। ब्रह्मचारीजीने कहा कि यह तो कहनेवाली है। फिर आपने दो दिन विचार करनेके लिये दिये और आपने दो उपवास भी किये तौ भी कुछ फल नहीं हुआ। अन्तमें फिर सभा ला० हुकमचन्दजी देहलीके सभापतित्वमें की गई और उसमें प्रस्ताव किया गया कि—" दि० जैन सभा जो आज मिती फाल्गुण कृष्ण ६ रवीवार वीर २४४७को श्री चन्द्रप्रभु जैन मंदिर मूडबिद्रीमें एकत्र हुई जिसमें स्थानीय भाइयोंके अतिरिक्त दिहली संघके व इन्दोर, जैपुर, सुजानगढ, बम्बई, कलकत्ता, आसाम, आदि कई स्थानोंके भाई एकत्र थे श्री धवल, जयधवल, महाधवल ग्रंथ जिनमें जीव और कर्म बंधादिका विस्तार पूर्वक वर्णन बहुत उपयोगी है उनकी केवल एक एक ही प्रतिमात्र मूडबिद्रीहीमें देखकर ऐसा प्रस्ताव करती है कि इनकी रक्षा व इनका पठन पाटन विद्वानों द्वारा किया जाय इसलिये इनकी नकलें अन्य बडे२ नगरोंकी पंचायतियोंमें भी विराजमान की जाय तथा ग्रंथोंके रक्षकोंसे प्रार्थना करती है कि इस प्रस्तावका प्रबंध आगामी वर्ष जो उत्सव मूडबिद्री में होनेका है उस समय तक कर लिया जाय। इसके बाद करीब १०००) देहली संघने भंडारमें दिये तथा लाला भोंदूमल कागजी देहलीने प्रकट किया कि धवलादि तीनों ग्रंथोंकी दो २ प्रतियोंकी नकल होनेमें जितना कागज कलम स्याही केशर आदि लगेगा वह सब हम देंगे तथा १००) नकल होनेके लिये पंचानको नकद दिये तथा लाला चिरंजीलालजी पानीपतने तीनोंकी एक २ प्रति करनेका कुल खर्च देकर प्रतिज्ञा लेनेका वचन दिया जो बात वहांकी भंडारवहीमें लिख दी गई है।

अब विचार यह करना है कि मूडबिद्रीके पंचान और भट्टारकजी नकल देनेको-इन्कार क्यों करते हैं? वे समझते हैं कि यदि नकल चली गई तो फिर यहां कौन आवेंगे और भंडारमें उपज वहांसे होगी और हमारा तथ मंदिरोंका खर्च कैसे चलेगा आदि परंतु उनके ये खयाल ठीक नहीं है। यात्रीलोग ताडपत्रकी असल कापी, रत्नबिम्ब तथा प्राचीन बडे२ मंदिरोंके दर्शन करनेको जैसे आते हैं वैसेही आवेंगे और उसमें कुछ भी कमी नहीं होगी। आशा है पंचान और भट्टारकजी अब तो अपना विचार बदलेंगे और शीघ्र ही नकल देनेके लिये स्वीकारता देंगे। महासभाकी गत बैठक में अजमेरमें इसके लिये प्रस्ताव हुआ था और इसबार कानपुरमें भी अभीकी कार्रवाईको जानकर फिर जोरदार प्रस्ताव होना चाहिये और महासभाकी ओरसे इसके लिये एक डेप्युटेशन नियत होना चाहिये।

* * *

कानपुर प्रदर्शन और तीन आक्षेप।

यह तो सारा जैन समाज अच्छी तरहसे जान गया होगा कि भारत० दि० जैन **महासभा**का २६ वां अधिवेशन कानपुरमें आगामी चैत्र वदी ९-१०-११ ता० १२-३ अप्रेलको होनेवाला है जिस अवसर पर ता० ३१ मार्चसे ६ अप्रेल तक **जैन साहित्य प्रदर्शन** होनेवाला है जिसके नियम जो प्रदर्शन कमेटीकी ओरसे प्रकट हुए हैं। हम गतांकमें प्रकट कर चुके हैं। चारों ओरसे खबरें आ रही

है कि प्रदर्शनके लिये बहुतसे लिखित मुद्रित ग्रन्थ चित्र, फोटो आदि भेजे जा रहे हैं और प्रदर्शन-की तैयारी हो रही है तब महासभाके उपसभा-पति **ला० जम्बूप्रसादजी रईस सहारनपुरने** एक नई चर्चा 'जैनगजट'में खडी कर दी है जिसका फल हम समझते हैं महासभाकी सर्वव्यापकतामें बडा ही बाधा रूप होगा। स्वागत कमेटीकी ओरसे **प्रदर्शन कमेटी** नियत हुई थी और उसीने प्रदर्शनके नियम बनाये थे। अब लालाजीने इसपर **तीन आक्षेप** किये हैं और तीनों प्रकारकी कार्रवाईको तुर्त रोकनेके लिये सुचना निकाली है इसपर ही हमें कुछ निवेदन करना है।

पहिला आक्षेप यह है कि **प्राचीन खंडित मूर्ति** रखी जायगी इससे अविनय होगी सो न रखनी चाहिये। इसका उत्तर यह है कि अनेक अजायबघरोंमें, प्राचीन खंडित मूर्तियें रखी हुई हैं ही और हम अंगोपांग खंडित मूर्तिकी प्रक्षाल पूजन न करके उसको भौरे-में या अलग रख छोडते हैं। तो वे अपूज्य प्राचीन खंडित मूर्तिको इस प्रदर्शनमें रखनेसे कोई हानि नहीं है।

दूसरा आक्षेप–चित्रों और फोटोके विषयमें है। हमारे **तीर्थंकरोंके चित्र फोटो** आदि लेनेसे अविनय होती है इसलिये ऐसे चित्र फोटो प्रदर्शनमें नहीं रक्खे जावे ऐसा लालाजी कहते हैं और आस्ट्रियासे बटनमें जैन मूर्तिके चित्र आये थे उस बटनके प्रस्तावकी नकल भी प्रकट की है यह प्रस्ताव तो ठीक है परन्तु प्राचीन अर्वाचीन परिस्थितिको बताने‌के लिये तो जो २ चित्र फोटो प्रकट हुए हैं उनको प्रदर्शनमें बताने ही चाहिये और उसमेंसे कोई अनुचित लगे तो उस पर महासभामें विचार हो सकेगा। ऐसे चित्र फोटो प्रदर्शनमें लाने ही नहीं और एकत्रित करने ही नहीं यह ठीक नहीं है।

अब तीसरा आक्षेप–सारे जैन समाजमें बडी खलबली मचानेवाला है जिसको बांच कर हमें तो यह ही मालूम पडा कि महासभाके ये अगुए निंदासे इकदम जागृत हुए हैं! आक्षेप यह है कि प्रदर्शनमें **मुद्रित ग्रन्थ विभाग** भी रखा गया है और आपका कहना है कि "महासभाका दृढ नियम है कि मुद्रित ग्रंथ न छापे जाय न छापे हुए खरीदे जाय तो फिर यह नियमविरुद्ध कार्रवाई क्यों? आज महासभा मुद्रित ग्रन्थोंकी प्रदर्शनी खोल कर स्वयं उसके प्रचारमें सहायक बनती है यह कहां तक उचित है? क्या महासभा अपने **दृढ नियमोंका उल्लंघन** करके अपने दृढ नियमोंकी मर्यादाको तोडना चाहती है इस विषयमें हम कार्तिक वदी ७ सं० १९५३में पास हुए प्रस्ताव नं० ८की नकल उद्धृत करते हैं–सम्वत १९५० की महासभामें जो प्रस्ताव स्वीकार हुआ था कि **छापेकी पुस्तक** धर्म सम्बन्धी व चार अनुयोग सम्बन्धी **न छापी जावे और न छापी हुई खरीदी जावे और न पाठशालाओंमें पढाई जावे** वह पुनः पुष्ट किया गया और यह प्रस्ताव हमेशाके वास्ते दृढ नियम किया गया" आगे आप लिखते हैं कि "महासभाके कार्यकर्ता और प्रबन्धक कमेटीके

मेम्बर शीघ्र ध्यान दे और इस नियम विरुद्ध कार्रवाईको रोके। महामंत्री तथा स्वागत कमेटीको भी हम लिख चुके है आदि।"

मान्यवर पाठकगण! महासभाका यह २५ **वर्षका पुराना प्रस्ताव** हमें तो मालूम ही नहीं था और शायद आपमेंसे बहुत भाईको और बहुतसे सभासदोंको भी मालूम न होगा। हां इतना हमें मालूम है कि कई वर्षोंपर छापेकी चर्चा चली थी और ग्रंथ छापनेका विरोध करने वाले इनेगिने पुराने विचारवाले ही थें। कैसा भी हो परंतु हमें तो यहा यह विचार करना है कि महासभाने खुद ही इस दृढ नियमका पालन किया है या नहीं? 'जैन गजट'में यद्यपि छपे ग्रंथोंका विज्ञापन नहीं छपता है तो भी जैन शास्त्रके अनेक श्लोक आदि, लेखोंके प्रमाणोंमें छपते हैं कईवार ऐसे दवाईयोंके सुची पत्र भी बांटे गये थे जिनमें भी जैन ग्रंथोंका विज्ञापन था तथा महासभाके आधीन दूसरी पाठशालाओंकी बात जाने दीजिये खुद महासभाके **मथुरा विद्यालयमें भी दो तीन वर्षसे छपी पुस्तकसे ही पढाई** (हो रही है–यह क्या आपलोगोंको मालूम नहीं है? आज तो घर २ में छापेका प्रचार हो रहा है। जैनोंका शायद एक घर भी ऐसा नहीं होगा कि जिसके यहां कोई छपी पुस्तक नहीं पहुंच गई हो।

हम समझते हैं महासभाका यह हमेशाका दृढ नियम कहा तक पाला गया है उसका हाल बतानेके लिये और भविष्यमें इस नियमको बदलनेकी महासभाको आवश्यकता है या नहीं उस पर विचार करनेके लिये इस प्रदर्शनमें **आज तकके मुद्रित सभी ग्रन्थ प्रदर्शनमें ला २ कर रखने चाहिये** जिससे मालूम होसके कि कितने वर्षमें कितने ग्रंथ कितनी संख्यामें प्रकट हुए और इससे जैन समाजमें उन्नति हुई या अवनति?

प्रदर्शन कमेटीने नियम प्रकट किये थे उससे मुद्रित ग्रन्थ आये ही होंगे और उनका पूर्ण कर्तव्य है कि उनको प्रदर्शनमें रखें। अन्यथा कमेटी और भेजनेवालोंका अपमान ही होगा। महासभा सभी प्रान्तिक सभाओं, जातीय सभाओं, संस्थाओं, तीर्थों, मंदिरों आदिको अपने आधीन रखनेका दावा करती है परन्तु बहुतसी सभा और संस्था इसका आधिपत्य स्वीकार नहीं करती इसका कारण यही है कि महासभाका काम उनके नामके अनुसार नहीं है यद्यपि एक दो वर्षसे लाला भगवानदासजी इसके लिये प्रयत्न कर रहे हैं।

इस चर्चासे इसवारकी महासभामें **छापेकी चर्चा** अवश्य होगी ही और ऐसा एक प्रस्ताव भी कलकत्ताकी दि० जैन युवक समितिने भेजा है कि "जैन समाजमें ज्ञानका अधिक प्रचार करनेके लिये एक शुद्ध छापाखाना द्वारा जैन धर्मके ग्रन्थोंका प्रचार किया जाय और उसके लिये दो लाख रुपयेकी लिमिटेड कम्पनी खोल कर शेयर बेच दिये जांय" सबजेक्ट कमेटीमें यह प्रस्ताव उपस्थित होगा ही। देखें इसका क्या निर्णय होता है। हमें जहा तक अनुमान है इस बारकी महासभामें छापेकी चर्चाका विषय खास उपस्थित होगा इसलिये सभी प्रान्तके भा-

योंको महासभामें शामिल हो कर अपने २ विचार प्रकट करने चाहिये।

हमारा अनुमान है कि इसवार इस चर्चासे फल यह होगा कि महासभाका संगठन दृढ़ होगा अथवा तो महासभाका बल छिन्नभिन्न होजायगा परंतु पुराने विचारवालोंसे हमारा साग्रह निवेदन है कि समयकी परिस्थितिको देखिये और उसके अनुसार ही चलनेके लिये विचार कीजिये। आशा है इसवारके वयोवृद्ध अनुभवी और विचारशील सभापति श्रीमान् साहू सलेखचंदजी बहुत विचारपूर्वक ही महासभाका कार्य करेंगे।

कानपुरमें रथोत्सव और महासभा।

अपूर्व प्रदर्शन।

कानपुरमें महासभाके लिये अब इनेगिने दिन ही रह गये हैं। वहां रथोत्सव, महासभा, प्रदर्शन, महिला परिषद, शास्त्रीय परिषद आदिके लिये अनेक प्रकारकी तैयारियां हो रही हैं। महासभाके लिये अलग मंडप बन रहा है। जैन साहित्य प्रदर्शनके लिये बड़ा भारी मकान ले लिया गया है। ठहरनेके लिये सब प्रकारका इन्तजाम हो रहा है। प्रदर्शनको सफल बनानेके लिये इसके मंत्री पं० कन्हैयालालजी राजवैद्य इतना परिश्रम कर रहे हैं कि आप खुद प्रदर्शनके लिये सामान एकत्रित करनेके लिये ता० २४ फर्वरीसे ता० १६ मार्च तक भ्रमण करनेको निकले थे जिसमें आप अलीगढ़, हाथरस, आगरा, मथुरा, देहली, जयपुर, जोधपुर, अहमदाबाद, ईडर, वड़ौदा, सुरत, और अजमेर गये थे जहांसे अनेक प्राचीन ग्रंथ, चित्र आदि आपको प्राप्त हुये हैं और करमसद (गुजरात)में जो 'यशोधर चरित्र' ग्रन्थ सुनहरी अक्षरोंसे लिखित, कथाके भावके रंगीन, सुनहरी चित्रोंसे सुशोभित तथा मोती नीलमसे जड़ित गत्तेवाला है उसको देनेके लिये करमसदकी पंचायतसे हमने स्वीकारता ले ली है और वह अपूर्व ग्रंथ भी वहांसे लाकर इस प्रदर्शनीमें हम लेजाकर रखनेवाले हैं। जयपुरसे पंडितजीको दीवान अमरचंदजीका रंगीन चित्र, पं० मोतीलालजी तथा बाबा दुलीचंदजीका चित्र मिल गया है तथा राना महिपालका एक सिक्का मिला है। ऐसी कई अपूर्व प्राचीन वस्तुएँ तथा ताड़पत्रके अनेक ग्रन्थ प्रदर्शनके लिये आ चुके हैं। आराके जैन सिद्धांत भवनका कुछ प्राचीन जैन साहित्य भी वहां प्रदर्शित करनेका प्रबंध हो चुका है। सारांश कि यह प्रदर्शन जैन समाजमें प्रथम और अपूर्व ही होगा।

उत्सवका प्रोग्राम इस प्रकार है

चैत्र वदी ७	ता० ३० मार्च	—	सभापति श्रीमान साहू सलेखचंदजी का स्वागत।
,, ,, ८	,, ३१	,,	रथोत्सव तथा जैन साहित्य प्रदर्शनका उद्घाटन
,, ,, ९	,, १ अप्रैल		महासभाकी प्रथम बैठक, शास्त्रसभा
,, ,, १०	,, २	,,	महासभाकी दूसरी बैठक, शास्त्रसभा, महिला परिषद्।

" " ११ " ३ " महासभाकी तृतीय बैठक, शास्त्रसभा महिला परिषद

" " १२ " ४ " रथोत्सवका मेला

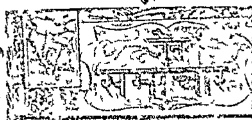
प्रदर्शन ता० ६ अप्रैल तक खुला रहेगा।

शास्त्रीय परिषदका प्रोग्राम अभी तक मालूम नहीं हुआ है न उसके सभापति नियत हुए हैं परन्तु भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिला परिषद्के १० वे वार्षिक अधिवेशनके लिये श्रीमती मगनबाई, कंकुबाई आदि बहुत परिश्रम कर रहे हैं। परिषद्की अध्यक्षाका स्थान श्रीमती पंडिता चंदाबाईजी आरा निवासी ग्रहण करेंगे। यह पहला ही अवसर महिला परिषद्के लिये है कि परिषद्को इस बार बहुत विद्वान् और अतीव योग्य सभापतिकी प्राप्ति हो गई है। स्त्रियोंके हाथकी कारीगिरिका प्रदर्शन भी होनेवाला है।

महासभाका दफ्तर ता० २७ को कानपुर चला जावेगा तथा महामंत्री सहायक महामंत्री आदि कार्यकर्ता भी ता० २९ मार्च तक पहुंच जावेंगे।

सब प्रकारके पत्र व्यवहारका पता—रूपचंद जैन मंत्री, स्वागत कमेटी ६५ मूलगंज—कानपुर है तथा तारका पता भी रजिस्टर्ड हो चुका है इस लिये तार भेजनेवाले सिर्फ 'सभा' कानपुर Sabha Cawnpore ही लिखे।

सब भाइयों और बहिनोंको कानपुर पहुंचनेकी सूचना प्रथमसे पत्र या तार द्वारा भेजनी चाहिये। समय अल्प रहा गया है इसलिये हरएक प्रांतके भाई बहिन आनेकी शीघ्र ही तैयारी करें।



हुबली—में गत ता; ६को बडा भारी उत्सव और श्री० त्यागी ऐलक पन्नालालजीका केशलोंच हुआ था। हजारों आदमी एकत्रित हुए थे। सोलापुरसे पं० बंशीधरजी शास्त्री तथा बम्बईसे मंगतरायजी आदि पहुंचे थे। पं० वंशीधरजीके अनेक प्रभावशाली व्याख्यान हुए थे। यहांके दि० जैन बोर्डिंगका मकान बढाया जा रहा है तथा उसमें चैत्यालय भी बन रहा है।

कम्पिलजी—क्षेत्रमें वार्षिक मेला चैत्र वदी ११ से ०)) ता० ४ से ८ अप्रैल तक होगा। तथा चैत्र सुदी १ से ३ तक बघेरवाल सभाका भी उत्सव होनावाला है। यह तीर्थ कायमगंज (फरुखाबाद) स्टेशनसे ९ मील पर है।

सुनपत—(रोहतक) में भी चैत्र सुदी ११ को रथयात्राका मेला होगा।

बृहत् दान—आगरामें बाबू हरप्रसादजीका स्वर्गवास हो गया। आप अपनी कई लक्षकी जायदादमेंसे पांच सात गांवकी उपज धर्म और देश सेवाके लिये स्थायी रूपसे निकाल गये हैं। इससे लाखो रुपियेका दान होगा। प्रबंधके लिये १९ जैन अजैनोंकी कमेटी नियत की है। ६००००) तो आरा कालेजके लिये हैं।

करहल—में रथयात्राका मेला चैत्र वदी ९ को होगा।

वडासण-(गुजरात) ना दिगंबर जैन मंदिरमां माह सुदी ९ ने दिने **चोरी** थई हती अने ८प्रतिमा, उपकरण, वासणो वगेरे चोरायुछे

मोरेना-विद्यालयका वार्षिकोत्सव सोनागिरजी क्षेत्रपर मेलेके समयमें चैत्र वदी ३-४ ता० २६-२७ मार्चको होगा। साथ २ जैसवाल जैन सभाका उत्सव भी होनेवाला है।

'अहिंसा'-पत्र जो काशीसे ब० ज्ञानानंदजी द्वारा प्रकट हो रहा है उसके लिये 'अहिंसा' नामक प्रेस खोला जा रहा है इस लिये 'अहिंसा' पत्रका १९ वा अंक देरसे प्रगट होगा।

श्वे० अगुओंका निवेदन-कलकत्तेके श्वे० अगुए महाराज बहादुरसिंह, कुमारसिंह और मोतीचंद नखतने निवेदन पत्र प्रगट किया है कि समय कम होनेके कारण ही तीर्थोंके झगडे निपटानेकी मीटिंग स्थगित की गई है। सभी तीर्थों पर जहा २ झगडे हैं उनको स्थायी रूपसे निपटानेके लिये पक्का प्रबंध हो और सर्व साधारणकी सम्मति तथा प्रतिनिधि आसकें इसलिये इकत कान्फरेन्स चार मासके लिये स्थगित रक्खी जाय जिससे पूरी सफलता हो। हम यही चहते हैं कि समाजमें प्रेम और शांतिकी वृद्धि होकर तीर्थोंकी असातना मिटे आदि।

चिरोर-(मैनपुरी)में चैत्र वदी ४-५ ता० २७-२८ मार्चको मेला होगा।

अहिक्षेत्र-पर भी चैत्र वदी ८से १२ तक वार्षिक मेला है। यह क्षेत्र पूर्वकी तरफ आमला स्टेशनसे और दक्षिण पश्चिमकी तरफसे बदोयी स्टेशनसे आया जाता है। स्टेशनसे सिर्फ २-२ कोस ही है।

अंकलेश्वर-मा भाई सुराभाईना प्रयासथी फरीथी पाठशाळा चालु थई छे.

देहली शास्त्रार्थ-नामक पुस्तक अभी मिलती है। मूल्य चार आना। पता-श्यामलाल जैन लायब्रेरी पीपलवाली गली धरमपुरा देहली।

शिकार नहीं खेलने देंगे-हस्तिनापुरमें मंदिरजीके पास अभी तीन अंगरेज और एक मेम शिकार खेलना चाहते थे। आश्रमके विद्यार्थियों, मास्टर आदिने मना किया और कहा कि कलेक्टरका यह हुक्म है कि यहा शिकार न खेला जाय इस पर उन्होंने बंदूकोंका मुह लडकोंकी तरफ करके डराया। ब्रह्मचारियोंने कहा कि मरनेसे हम नहीं डरते, धर्मके मामलेमें जान देदेंगे। हमको मारे बिना शिकार नहीं खेलने देंगे। इससे शिकार पार्टी सिर नीचा करके भाग गई।

लाडनूं-में नियास सभा स्थापित हुई है जिसका उद्देश सुशिक्षाका प्रचार करना स्त्रियों द्वारा देशको मूर्खता और कुरीतिको रोकना है।

हीरालाल जैनहाईस्कूल-देहलीमें अब व्यापारी शिक्षा, महाजनी हुंडी, पत्री, साइन्स, ड्रोइंग आदिका काम भी सिखाया जाता है। मेट्रिक क्लास भी खुल चुका है।

गजपंथाजी-में वार्षिक मेला होगा।। इसवार सेठ श्यामलालजी चादवड के सभापतित्वमें सभा हुई थी। जिसमें सेठ जीवराज गौतमचंद गांधीने व्याख्यान देकर क्षेत्रके सुधारकी आवश्यकता बताई जिससे नवीन प्रबंधक कमेटी स्थापित हुई। मंत्री जीवराजभाई नियुक्त हुए हैं। अमनगिरिमें ठहरनेके लिये कोठडियां

बनानेका ७००) की मंजूरी दी गई तथा भंडार आदिमें ९९१।) की आय हुई थी ।

अजमेर–में मुनि श्री चन्द्रसागरजीका केशलोंच चैत्र वदी १२ को होगा इस अवसरपर वदी ९ से १२ तक विमानोत्सव तथा जैन कुमार सभाका अधिवेशन भी होगा।

परीक्षालयकी परीक्षा होगी–दानवीर माणेकचंद दि० जैन परिक्षालयकी तरफसे इस वर्षकी परीक्षा ता, १ मई १९२१ मिती वैशाख वदी ९ (गुजराती चैत्र वदी ९) को प्रारंभ होगी (सब पाठशालाओंको फोर्म भेजे गये हैं। जिन्हें न मिले हों वे हमसे मगालेवें। प्रवेशिका विशारद, शास्त्री विषयोंके सभी विषयोंसे परीक्षा जुदी २ होगी। बालबोध परीक्षामें छ ढाला, बालबोध जैन धर्म ४ था भाग, भाषा रत्नकरंड और पूर्ण, श्रावक प्रतिक्रमण सार्थ इस विषयोंमें परीक्षा लेंगे। बालबोध जैन धर्म भाग १-२-३ की परीक्षा न हो सकेगी। रावजी सखारामदोशी मंत्री, परिक्षालय, सोलापुर।

सिवनी–में परवार सभाका अधिवेशन रा० ब० श्रीमंत सेठ मोहनलालजी खुरईके सभापतित्वमें होगा। तिथि अभी तक निश्चित नहीं हुई है।

सिद्धचक्रोत्सव–महमूदाबादमें फाल्गुण सुदी १४ से चैत्र वदी २ तक सिद्धचक्रोत्सव बहुत धूमधामसे होगा।

सावधान–तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्री सूचित करते हैं कि सोनगिरिक्षेत्रके भट्टारकके शिष्य हरिश्चंद्र वहांके मंदिरोंके जीर्णोद्धारके लिये बागड मेवाड और अन्य प्रांतोंसे रुपये वसूल करते फिरते हैं, साथमें छडी, भट्टारक मुद्र-खाली चिट्ठी और तीन आदमी हैं! वहां जीर्णोद्धारकी आवश्यकता तो है परन्तु ये लोक कुछ कार्य नहीं करते और खाली यों जुठ जीर्णोद्धारके नामसे चंदा उगाह कर समाजको ठगते हैं। इनको कोई भी भाई चंदा न देवे। यदि किसीको तीर्थ या जीर्णोद्धारके लिये चंदा देना हो तो भारत० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग–बम्बईको भेजे।

दाहोद–में पं० फूलचन्दजी, कन्हैयालालजी पानाचंदजी आदिने अमलोद ग्राम जाकर ५०० भीलोंको उपदेश दिया जिससे उन्होंने अनेक प्रकारके सुधारके ७ प्रस्ताव किये। वहां तालाब पर एक प्राचीन जैन मंदिर मालूम पड़ा है।

बम्बई–से एक भाई लिखते हैं कि महासभाका अधिवेशन चैत्र वदीमें कानपुरमें है इस लिये अजमेरमें उत्सव चैत्र सुदीमें होना चाहिये। अजमेरके भाईयोंको अवश्य इसपर ख्याल करना चाहिये।

कारकलमें मस्तकाभिषेक उत्सव–कारकल (दक्षिण कनडा)में श्री बाहुबलस्वामी (गोम्मटस्वामी)का मस्तकाभिषेक उत्सव माह सुदी ५ से फा० वदी १ तक सानंद पूर्ण हो गया। इस बार देहलीका संघ व ब्र० शीतलप्रसादजीके पधारनेसे बहुत सफलता और धर्म प्रभावना हुई थी। उत्सवमें आसाम, कलकत्ता, आरा, इन्दौर, सुजानगढ, जैपुर, पंजाब, ललितपुर, बम्बई, सोलापुर, सूरत, म्हैसूर, कोल्हापुर, मदरास आदिके १५००० जैनी तथा १९००० अजैनियोंने भाग लिया

(शेष टाईटल पृ० २ पर)

सत छोड़े पति जाय!

(ले० श्रीमान् बाबू झूमनलाल जैन, एम० ए० सहारनपुर)

पाठको! किसी शेख साहबने एक वेश्यासे उनके दुष्कर्मके ऊपर लांछन लगाते हुए कहा कि सत्पथसे बिल्कुल विमुख हो गई है और बुराईमें पड़ गई है परन्तु वेश्याने उन्हें आड़े हाथों लिया। वेश्या बोली कि मैं जो यथार्थमें हूं वही बाहरसे भी दीखती हूं परन्तु क्या आप भी उसी तरह सर्व बाह्य दृश्योंमें विदित होते हैं! सारांशतः इस संसारसे पुन्य और पाप, सत्य और असत्यके साम्राज्यका अभाव कभी भी देखनेमें नहीं आसक्ता, हां यह संभव है समयके अनुसार कभी पुन्यका पलड़ा ऊंचा हो तो कभी पापका। वर्तमानमें तो पापकी ऐसी धाक जमी हुई है कि हर ओर कपटका गरम बाजार है। उस कपट का झण्डा ही चारो ओर लहरा रहा है! उसका मुख्य कारण भी है। प्राचीन कालसे कुछ काल पूर्व तक हमारा व्यवहार इस वाक्य पर निर्भर था कि 'धन दे तनको राखिए, तन दे रखिए लाज, धनदे तनदे लाज दे, एक धरमके काज अर्थात् धर्मकी मुख्यता थी। उसके उपरान्त लाज एवं तन और जघन्य धन समझा जाता था। पर समयने पलटा खाया और अब उसके विपरीत समझा ही नहीं जाने लगा बल्कि वर्तन भी होने लगा है। टके के सामने अब धरमकी कौड़ी नहीं उठती है। धरमको अब जघन्यताकी पदवी देदी गई है। [यहां धरमका अर्थ मुख्य कर्तव्य अथवा सत्य समझना चाहिए। अंग्रेजीमें character शब्द उसके लिए उपयुक्त है।] यदि हम उस विपरीतताको खुल्लमखुल्ला मान लेते तो हमारे ऊपरसे कपटका टीका हट जाता। अवश्य! उस कारण हम पथभ्रष्ट कहलाते परन्तु असत्यके पंजेसे छुटकारा पा जाते! हम पथहीन पथिकसे सादृश्यता रखते कि जाना चाहते हैं एक स्थानको, पर अज्ञानमें चल रहेहों उसके विपरीत! और पथ प्रदर्शक मिलने पर अपने सत्पथ पर आरूढ़ हो अपने निश्चित स्थानपर पहुंच जाते। विश्वासके दीपवान प्रभावके सामने अज्ञानतम नष्ट होजाता। परन्तु हमारी आत्मा वाह्य धर्मके ढकोसलोंसे इतनी पतित हो गई है कि हम अपने मन्तव्यको बदलनेका नाम तक नहीं ले सक्ते हैं। सुतरां धरमकी डींग पहिलेसे भी अधिक मारते हैं और धर्म पर अपने पुरखों से अधिक ध्यान रखनेका दावा भरते हैं। परन्तु किसका धर्म और किसकी लाज, धन और तन है तो जिन्दगी है। कहां तो यह मन्तव्य कि जाओ लाख, रहो साख, और कहां अब यह बात कि लाख तो लाख, एक पैसेके लिये साखको खाकमें मिला देनेको तत्पर हैं। बस! यही कपटकी जड़ है कारण जब मनुष्यका मन्तव्य और होता है और मन्सा कुछ और तो व्यवहार भी कपटको लिए होताहै। हम वर्तमानमें उस पथिकके समान है जो जाना तो चाहता है एक मुख्य स्थानको, पर जाहिर नहीं करता बल्कि जब कोई उससे उसका जानेका स्थान पूछता है तो अपने अगाड़ीके गांवका नाम बतला देता है। यही कपट है। ऐसे मनुष्यका सत्पथ पर लाना कठिनसाध्य है। फलतः हमारा जीवन आदिसे अन्त तक एक बहुरूपधारी

सदृश वीतता है। हम भेष पर भेष बदलते हैं। एक कपटके वास्ते दस झूठ और बोलते हैं। न्यायदिवाकर पं० पन्नालालजी अपने व्याख्यानमें एक दृष्टांत दिया करते हैं कि एक बहुरुपिया एक बादशाहके पास इनामके वास्ते गया। बादशाहने कहा हमें अपने बहु रूपसे धोका दो तो इनाम मिलेगा। बहुरुपियेने अनेक रूप धारण कर बादशाहको धोका देना चाहा पर बादशाहने उसे पहचान २ लिया। अन्ततः बादशाह यात्रा कर रहे थे कि एक पहाड़ी उनके मार्गमें पड़ी। बहुरुपिया उसी पहाड़ पर योगासन माड पूरे योगीका रूप धारण कर बैठ गया। बादशाहके राव उमराव वगैरह इनकी वंदना करने गए और इन्हें खूब चढ़ाया पर यह अपने ध्यानमें मग्न रहे। बादशाह भी को खबर पड़ी। वह भी भेंट ले पहुंचा और इनकी नम्रता पूर्वक विनती करने लगा पर इनने आंख न खोली। बादशाह दूसरे पड़ावको चलता बना। वहां बहुरुपिएने जा अपना इनाम मांगा और सब वृत्तांत कहा। बादशाहने कहा कि वहां मैंने तुझे बड़ी मूल्यवान पारतोषिक अर्पण की पर वह स्वीकार न कर यहां अल्प मूल्यके ईनामके लिए मांगता आया। बहुरुपिएने कहा यदि मैं उस योग स्वरूपमें भेंट स्वीकार करता तो उस स्वरूपको लांछन लगता। इस कारण यह अल्प मूल्यका इनाम ही यथेष्ट है। परन्तु पाठको! जरा विचारिए कि वर्तमानमें एसे कौनसे मनुष्य हैं जो अपने भेषको नहीं लजाते। विरले ही ऐसे बहादुर मिलेंगे जो स्वार्थको लात मार अपने भेष पर दृढ़ होंगे। तिस पर यह दृढ़ता जिनको कि आजकल अनपढ़ वा गंवार कहा जाता है उनमें तो शायद पाई भी जाय पर जो पढ़े लिखे कहाए जाते हैं उनमें इसकी गतिका परिणाम ही नहीं है। हम अपने कपटमें इतने सने हुए हैं कि जो कार्य दूसरोंके बहकानेके लिया किया था उसीको सत्कार्य और यथार्थ समझ बैठे हैं। और उसीसे अपने कर्तव्यकी सिद्धिकी भी आशा लगाए हुए हैं। परन्तु झूठ झूठ ही है और सच सच। सत्कार्यका फल यथार्थ ही हुआ। पर इस अयथार्थ कपटके मार्ग और दिखावेके कार्योंसे हमारे मन्तव्यकी सिद्धि नहीं हो सक्ती। हमारा विश्वास इसी बाह्य मार्ग पर था इस कारण अवनतिका सामना उठाना पड़ा। हम दुःख और क्लेश मानते हैं। अपने कर्मोंको दोष देते हैं, पर यह नहीं समझते कि यह तो हमारा ही कसूर है कि बनाउटी कार्योंसे यथार्थकी आशा रखते हैं। अब कुछ दृष्टान्तोंसे दिखाया जायगा कि हमारे प्रत्येक कार्योंमें तन और धनकी मान्यताकी प्रधानता है। परन्तु दिखावेमें हम धान और धर्मकी आड़ लेकर काम करते हैं। इस कारण फल आधा तितर आधा वितर आता है। वह हिसाब हो जाता है कि दुविधामें दोनों गए, माया मिली न राम।

आजकल भारत वर्षमें राज्यनैतिक विषयकी भरमार ज्यादा मच रही है इस कारण इसी विषय पर विचार किया जाता है। सबसे ब्रिटिश राज्य यहां स्थापित हुआ जो कि महान बलवान राज्य है एवं धनकी पूजाकी प्रधानता जिसमें है बल्कि जिनका ईमान, जिनका धर्म

रुपया है और जो रुपएके खातिर हिन्दुस्तानमें आए और राज्य स्थापित किया है–उसने अपने छुद्रुपतावश एक बड़ा मैदान अपने लालच (हिंस) के घोडे दौडानेका यहां पाया। बस! दोनों तरफसे खेंचातानी प्रारम्भ होगई। इधरसे प्रारम्भमें विनय और प्रार्थनाएं की गई और न्याय और सत्यका रूप सुझाया गया। परन्तु जब मनुष्यमें स्वार्थका अंध भूत घर कर जाता है तब न्याय और सत्यकी बात कुछ नहीं गलती। बस उधरसे उन चिकने चुपडे कपटपूर्ण शब्दोंमें ढाढस बंधाया गया जिन्हें पालसी या डिपलॉमसीके नामसे पुकारते हैं। विदित रहे कि आजकलकी सभ्य समाजमें आवश्यक्तानुसार असत्यको सत्य ठहरानेके लिए उन नामोंका आविष्कार किया गया है। वहीं सिकन्दर और डाकूवाली कहानी है कि यदि कोई छोटा आदमी किसीके मकान पर चढ़कर उसे लूट खसोट ले तो वह डाकू और लुटेरा–और यदि राजा किसीके मुल्क पर चढ़ाई करके उसको लूट ले तो वह विजयी कहलाता है। इसी प्रकार साधारण मनुष्य झूठ बोले तो वह झूठ और जो बडा आदमी बेईमानी करे तो वह बुद्धमानिता और हिकमत अमली कहलायगी। खैर वस्तुत गवर्नमेंटकी तरफसे बाह्यमें तो विश्वासदायक चित्तको प्रसन्न करनेवाले वचन दिए गए, परन्तु यथार्थमें जो मनुष्य जरा सिर उठाए देखा गया उसे दो हरफी खिताब देकर ठण्डा कर दिया गया या आनरेरी पदवी देकर दबा दिया। और इन लोगोंकी इतनी आवाभगत हुई कि लोगोंमें खिताबोंकी मागकी चाह पैदा हो गई। और उन्हें पानेके लिए सरकारी बोली बोलने लगे, उनके उनालीके इशारे पै नाचने आदि लगे। फलत सरकारी अफसरोंको भी यह सब भेद मालूम हो गया। फिर हमें कुछ होश आया तो विदित हुआ कि उन तिलोंमें तेल नहीं है। और जो कुछ करना हो अपनी हिम्मत पर करना चाहिए। और इस खिताबके जादूको तोडना चाहिए। इसी कारण कुछ कालसे देशमें असहयोगकी आवाज सुनाई पडने लगी है। इस नीतिकी चरचा तो सबके मुंह पर है पर तद्रूप वर्तनको इनेगिने ही हैं। विचारिए कि जब इसीसे उद्देश पूर्तिकी इच्छा है तो उस पर वर्तन भी तो होना चाहिए। इससे कुछ मतलब नहीं कि अथवा यह नीति हमारे लिए उपयुक्त है या नहीं? अब इसको व्यवहार होने पर उसकी सफलता अफलताका भी पता चल सक्ता है। भूखकी दवा रोटी है। पर यह कहते फिरनेसे ही भूख नहीं भाग जायगी। परन्तु आजकल ऐसा ही हो रहा है। जलसोंको देखिए तो हजारों लोग एकत्रित होते है और शुरूसे ही असहयोगके विषयमें इतने गरम व एकैकी विचार आवके जाते है कि हिलाए न हिले। इन विचारको बदलना तो दरकिनार! इसके विरुद्ध मतके मन्तव्योंको भी सुनना नहीं चाहते! और व्यवहारमें खाक भी असर नहीं! देखिए कि कहां वकीलों आदिने पूर्णतया उसका अमल किया है। बस इस कारण जलसोंका जोश खरोश केवल कपट कहा जावे तो क्या गलत है। हंसी आती है कि बडे बडे जलसोंमें अलीगढ कालिजके ट्रस्टियों आदिके विरुद्ध ना-

राजगीके विचार प्रगट किए जाते हैं पर विचारिए कि क्या यह नाराजगी यथार्थ हैं! यदि ऐसा ही है तो लड़के तो इन्ही शोर करने वालोंके हैं वे ऐसी कालिजोंमें न पढ़ावें। ट्रस्टी आदि स्वतः ही असमर्थ होजाते। लड़कोंके विदून दिवारोंको थोड़े ही पढ़ाते! यह तो वह बात हुई कि लड़कोंको जबरदस्ती मियांजीके यहां भेजा जाता है और मियांजीसे कहा जाय तुमने हमारे लड़केको क्यों पढाया! यदि उससे नहीं पढ़वाना चाहते तो उस मियांके पास अपने बच्चोंको न भेजिए। यदि आपको केवल उंगली कटा कर शहीदोंमें शामिल होना है तब तो आप जरूर वही करेंगे जो आजकल दिखाई दे रहा है। यथार्थ क्या है! वही गुप्ततः तो धनकी पूजा और तनका चुपड़ाव स्वार्थको लिए हुए है और बाह्यमें देश सेवा! यदि वकालत छोडे तो कमाईका नुकसान! स्वदेशी वस्तु बर्ते तो मूल्य अधिक और फैशन कम! खिताब और मेम्बरियां छोड़ें तो उनकी घौंसमें जो दस काम निकलते हैं वह कहांसे निकले! आदि यह तो हुई धनकी पूजा, अब लीजिए तनका मोह! यदी कहीं कारागार जाना पड़े तो वहां चक्की कौन पीसेगा। भला! कहीं इन बातोंमें स्वराज्य मिला करता है क्योंके रिवाजोंको महीनोंमें निकालना चाहते हैं। चालबाजीको चालबाजीसे काटनेकी कोशीश की जारही है पर यह उनका हत्यार है, हमारा हत्यार तो प्रारंभसे ही आत्मिक बल है। यह मेरी विरुद्धता साधारणतया है किसी विशेष लक्ष्य लेकर नहीं है। वैसे तो आज भी अच्छे२ देश भक्त लोकमान्य विद्यमान हैं और पूर्णतया अपहयोगका पालन कर रहे हैं। अब जरा पठन पाठनको लिजिए। क्या वजह है कि अबके शिक्षित नवयुवकोंमें वह पहलों कीसी बुद्धिमानिता व प्रभाव नहीं है। शिक्षाका उद्देश्य यह है कि हृदय और मन दृढ़ हों—आत्मिक एवं नैतिक शक्ति बढ़े-जो गुप्तशक्ति मनुष्यमें विद्यमान हो वह प्रगट होकर उसकी और दूसरों की भलाई और बहतरीके लिये योग्य रूपसे व्यवहृत होसके। अब शिक्षाका यह उद्देश्य है न पढ़ानेवालोंमें और न पढ़नेवालोंमें। गवर्नमेन्टने अबकी सन्तान को तो खिताब और आनरेरी पदवीके जालमें फसाया और आगामी सन्तानकी शिक्षा अपने हाथमें रक्खी और उस बातका ध्यान रक्खाकि उनमें कोई ऐसी शक्ति घर न कर जाए जिससे कल यह हमसे विरुद्धता प्रदर्शित करे। और जो किसीमें प्राकृतिक यह शक्ति उदय भी हो तो यह दब जावे और प्रारम्भसे उनके दिलोंमें यह बैठाया कि सफेद चहड़ों वालों ने रंगीन चमड़े वालोंके उद्धारके लिए ही जन्म लिया है। सरकारी नौकरीकी यहां तक कदर बढ़ी की माताएं दुआऐं देने लगीं कि भगवान तुझे डिप्टी करे। जहां शिक्षाका उद्देश ही उल्टा हो तो आश्चर्य क्या कि असर भी उल्टा हो और शिक्षिकी मिट्टी खराब हो जैसी कि हो रही है अर्थात धोबीके कुत्ते न घरके न घाटके।

अदालतोंको न्यायका घर समझा जाता है। कहा जाता है यहां शेर और बकरी एक घाट-पानी पीते हैं और दूधका दूध, और पानीका पानी बनता है। क्या वास्तवमें ऐसा होता है। तब तो समझना चाहिये कि यहां हिन्दुस्तानमें

अन्य आश्चर्य हैं उनमें यह भी एक है। हिन्दुस्तानियोंको हिन्दुस्तानमें कत्लकी सजा फांसी है वैसी विलायतमें गोरोंके लिए। पर हिन्दुस्तानमें आज तक कभी नहीं हुआ तो यह नहीं हुआ कि किसी यूरुपियनको किसी हिन्दुस्तानीके कत्लके जुर्ममें फांसी मिली हो। पर जब कभी भी ऐसा हो भी गया तो दो वजहसे यातो कातिलके मस्तिष्कका दोष या मक्तूलका कसूर। यह है मिसाल न केवल अपनी तनके पूजाकी वल्कि जातीय तन पूजाकी। व्यवहारका यह हाल है कि पहिले मजूर या कारीगर मजूरी लेता था तो यह भी ख्याल करताथा कि जिसका मैं धन लेता हूं उसका कुछ काम भी तो करूं। मजूरी खैर वस्तुओंकी महंगाईके कारण बढ़ गई परन्तु मजा यह कि कामके नाम टट्टी। भीगी विल्ली बताकर टाल देनेमें ही कारीगरी समझी जाती है। वर्तमानमें वस्तुओंकी बाहरी टीपटाप तो ऐसी दिल लुभानेवाली कि एखामखाह आवश्यक्ताके विदून भी खरीदनेको दिल चल आता है और जो खरीद कर अन्दरसे चीज़ निकालो तो सड़ा जूता मिलता है। कहां तो यह उद्देश्य था कि व्यवहारमें ईमानदारी कामयाबी की कुंजी है और कहां अब यह उसूल कि रोटी खाए शक्करसे और दुनियां पाए मकरसे!

खैर यदि यह कपटपन दुनियां तक ही रहता तो इतना डर भी न था परन्तु खैर तो इस बातका है कि धर्म (मज़हब) में भी कपटपन चल पड़ा है। दुनियांके कामोंमें तो हम समझते हैं कि बुराई भलाईकी यथार्थताको छोड़ कर दूसरोंकी मुंहकी तरफ देखना चाहिए कि वह क्या कहते हैं। यदि उनसे प्रशंसा पाली तो बुरा भी भला है और जो नहीं करा सके तो भला भी बुरा है। इस कारण सांसारिक कार्य्य तो लोक दिखावेको होते ही हैं। उस बातको नहीं सोचते कि जो काम अच्छा है वह दर हालतमें अच्छा है चाहे कोई देखे या न देखे। जो बूरा काम है वह बूरा ही है। धार्मिक कार्योंमें भी हम दूसरोंके मुंहतका हो गए हैं। जिसको लोग धर्मात्मा कहें वह धर्मात्मा जिसको न कहें वह अधरमात्मा। इस लिए धर्म भी दूसरोंको दिखानेके लिए होने लगा है। ताकि स्वर्गमें जानेके लिए परवाना मिल जावे। यदि धर्म करने पर भी धर्मात्मा न कहलाए तो समझते हैं कि कराकराया ग़ारत हुआ, महनत अक़ारत गई। कुछ सज्जन आजकलके शिक्षितों (बाबुओं) को यह दूषण लगाते हैं कि ये लोग पूजापाठको मटियामेट करना चाहते हैं। परन्तु यदि मैं इन शिक्षितोंकी मन्शाको ठीक समझा हूं तो मैं कह सक्ता हूं कि उसका हरगिज़ यह मन्शा नहीं है। वह पूजा पाठका निषेध कदापि नहीं करते परन्तु पूजा पाठकी हर ऐसी हरकतका जिसको हम अपनी सहूलियतके लिए पूजा पाठ करने लग जांय। किसी वस्तुमें केवल उसका नाम रख लेनेसे उस नामके गुण नहीं आजाया करते। जैसे किसी कंगालका नाम करोड़ीमल रख देनेसे वह करोड़पती नहीं हो जाता। पूजा पाठ तो असली पूजा पाठको ही कह सक्ते हैं। दिखावेकी और वह भी किराएकी फूंदफांदको नहीं कह सक्ते। पूजाके लिए यह आवश्यक है कि स्वतः की जावे—खास भावसे की जावे और

खास बुद्धिसे की जावे तब तो कुछ फल है वरना नहीं। आदमी अस्वस्थ होने पर वैद्यसे नुस्खा लिखाता है और स्वयं पीता है तब कहीं स्वस्थ होता है। यदि वह केवल नुस्खेको गाता फिरे या बनाए अपने दूसरेको पिलावे अथवा स्वतः पीवे पर परहेजसे उल्टा चले तो फलके स्थानमें हानि उठावेगा इसमें संशय नहीं। भला एक शारीरिक बीमारीको दूर करनेके लिए तो इतनी बातोंकी आवश्यक्ता है और हम चाहते हैं कि अनादिकालसे लगी हुई आत्मीक बीमारियोंको बातों ही बातोंमें उड़ा दें यह कैसे संभव है? धर्मके प्रत्येक अंगमें विश्वासकी मुख्यता है। अर्थात् हमारी शारीरिक क्रियाओंके साथ २ हमारा मन भी सम्मिलित होना चाहिए। हम अपने दूसरे हिन्दू भाइयों पर हंसा करते हैं कि यह कैसे मिथ्या मार्ग पर चल रहे हैं कि शरीरको गंगाजीमें धोनेसे ही आत्माका मैल कटना मानते हैं। परन्तु हम अपनी ओर नहीं देखते कि हम क्या करते हैं। हम भी तो भगवानकी मूर्तिके आगे अपने शरीरको नीचे गिरा देनेसे ही आत्माका मैल कटना मानते हैं। हां, यदि हृदयसे विश्वास पूर्वक ऐसा किया जाय तो अवश्य आत्मा उच्चताको प्राप्त होती है। परन्तु उस हालतमें भी गंगाजीकी विश्वास पूर्ण आत्माका मैल अवश्य गंगा स्नानसे कट जाता है। मदरास प्रांतमें एक ऐसी जाति है जो अपनी नवजात कन्याओंको मंदिरमें चढ़ा देनेको बड़ा पुन्य समझती है। कन्यायें -दियादासी अर्थात् ईश्वरकी दासी कहलाती हैं और संभवतः ईश्वरकी सेवाके लिए मंदिरमें चढ़ाई जाती हैं। यह बड़ी हो कर विवाह नहीं कर सक्तीं। बल्कि यों ही पुजारी और यात्रियोंके काम आती हैं। और यही उनकी सेवा समझी जाती है। पाठक! मुझे माफ करेंगे यदि मैं कहूं कि इनमेंसे जो लड़की विषय विचारोंको छोड कर अपनी जातिकी पक्की श्रद्धाके कारण विषय भोग करती है वह हजार दर्जा धर्मात्मा कहलानेके योग्य है व मुकाबले उस मनुष्यके जो लोगोंके मुंहसे धर्मात्मा कहलानेकी स्वार्थ बुद्धिसे भगवानके सामने घन्टों नाचता है यद्यपि वह कन्या मिथ्या पथ पर है और वह मनुष्य सत्य मार्ग पर परन्तु मेरे निकट जो मनुष्य अज्ञानताके कारण खुल्लमखुल्ला दुष्कृत्य करता है वह उससे अधिक उच्च है जो जान बूझकर उसी दुष्कृत्यको करता है परन्तु दूसरोंसे छुपाता है। और छुपानेके लिए सैकड़ों प्रकारके रूप भरता है। प्रथम मनुष्य हृदयसे दुष्मार्ग गामी नहीं है दूसरा हृदयसे। जिस मनुष्यके हृदयमें सच्चा विश्वास होता है उसको सच्चा अपने शरीरको हरकत देनेकी आवश्यक्ता नहीं है। वह जब अपने इष्टदेवके सामने पहुंचता है तो स्वतः नाचने लगता है गाने लगता है। उसकी जिह्वासे गद्य भी पद्य सदृश ही निकलती है। उसकी आवाजमें एक स्वर पैदा हो जाता है जो समस्त ... वाली आत्माओंको गुंजा देता है। और कोई उस गुंज तक पहुंच जाता है वह ... हुए विदून नहीं रहता। वह भी आपको दूसरी दुनियामें पहुंचा समझता है ऐसे मनुष्यकी क्रियाओं पर जो हंसे वह मूढ़

है कारण कि ऐसा मनुष्य केवल पूजा ही नहीं करता बल्कि स्वतः पूजनीक होता है। यह है सच्ची पूजा। ऐसे कितने मनुष्य हैं इसका उत्तर मैं नहीं दे सक्ता। पाठक स्वयं अपने हृदयोंसे पूछ लें और विचार लें। संभव है आप कहें कि इत्साविहून क्रिया कैसी होती है? मैं बतलाता हूं। जब हम कहीं जा रहे होते हैं और हमारा साथी अचानक हमसे कहता है कि कलेक्टर साहब आ रहे हैं तो हम यकायक चौंक पड़ते हैं और एकदम हमारे मुखसे निकल पड़ता है कि हैं! कहीं हैं! और शीघ्र ही सड़क छोड़ पटरी पर हो लेते हैं। यह है इत्साविहून क्रिया। सच पूछिए तो सच्ची पूजा और विनय आजकल हाकिमोंकी होती हैं। बड़े दिन पर जब हाकिम लोग किसी दूर स्थानको चले जाते हैं तो रहीस लोग डाली लेकर वहां पहुंचते हैं। और मालूम करते हैं कि साहब बाहर शेर शिकारको गए हैं। तब पेड़ोंके नीचे बैठ उनकी बाट जोहते हैं। साहबको दूरसे आता देखते हैं तो सड़के दोनों ओर खड़े होजाते हैं और फर्शी सलाम झुकाते हैं। साहब गुजर जाते हैं और देखते भी नहीं। तब अरदलीकी खुशामद प्रारंभ होती है कि हमारी मुलाकात करादो। अन्ततः अरदलीकी मुट्ठी गरम करने पर उनकी डाली मंजूर होती है। रहीस लोग उसे गनीमत समझते हैं। और दिन भरके भूखे प्यासे घरको वापस आते हैं। महाशय! यह कोई दृष्टांत नहीं बल्कि यथार्थ दृश्य है। कहिए यह काम हृदयसे किया गया है या कि पूजा पाठमें! बस, यदि बाबू लोग (!) निषेध करते हैं तो इस पाखण्डका! उनका कहना है यदि सच्ची पूजा कर सक्ते हो तो यथार्थ है—योग्य है और यदि नहीं कर सके तो बच्चोंका स्वांग मत बनाओ। अच्छा, तो पूजापाठमें मन क्यों नहीं लगता? वही धनका लालच! और तनकी पूजा! जितनी देर पूजा पाठ करेंगे उतनी देर पहुंचकर दुकान पर कुछ कमावेंगे। कोई रातको मर गया तो उसके लिए कफन बेचकर उस रकमसे कई गुनी अधिक हाथ आजावेगी जो पंडितकी तनखाहके चन्देमें देनी पड़ती है। और दूसरे जाड़के मोसममें एक कपड़ेमें दो टांगों पर कौन खड़ा रहे।

विशेष यह कि हम अपने प्रत्येक कार्यमें परमार्थका हो अथवा स्वार्थका—अपने सतको खो बैठे हैं और उक्ति विख्यात् है कि "सत छोड़े पति जाए"। हममें सत्य नहीं रहा तो पति भी जाती रही। मनुष्यमें पति भी एक वस्तु है। वह फिर्का भा 'तागो' कहलाता है, मेलों ठेलोंमें उठाईगीरीका काम किया करता है। परन्तु जब उनको कुच्छ देना ठराकर उन्हींके जिम्मेवारी कर दी जाती है तो मजाल नहीं कि कोई वस्तु इधरसे उधर होले। क्या कारण है कि कान्सटेबिल का विश्वास नहीं किया जाता जिसका कार्य ही यह है और जिसके पीठपर एक योग्य राज्यका बल है जिसके एक इशारह में अगणित सेना एकत्रित हो सक्ती है और तागोंका विश्वास किया जाता है जिसका काम चोरी है! केवल यह कि उसमें पति नहीं इसमें है। हम सोचा करते हैं कि पहिले एक आदमी कमाता था तो दस खाते थे अब दसों कमते हैं और पहिले से अधिक कमाते हैं फिर भी पेट नहीं भरता।

पहिले मामूली तौर पर भी हाकिमसे कोई शिकायत की जाती थी तो उसकी सुनवाई होती थी। अब हाय पुकार फिर भी कोई नहीं सुनता। पहिले मामूली लिखे पढ़ेमें वह बुद्धि और चातुर्यता होती थी जो आजकलके बी०ए०एम० ए०में भी नहीं पाया जाता आदि। सारांश यह किसी कार्य्यमें भी वरक्त दृष्टि नहीं आती परन्तु हम इस बातपर ध्यान नहीं देते कि पहिले भाव (नियत) क्या थे और अब क्या है। यह तो नियतकी वरक्त है। पश्चिमीय शिक्षा और सभ्यतामें ऐसे सन गए हैं कि सांसारिक-पौद्गलिक वस्तुओंमें फसे गए हैं और अपनी असली धन आत्मिक तत्वको विस्मृत कर बैठे हैं फिर हमारी स्थिति बिगड़ी और गिरी हुई न हो तो क्या हो ? जैन धर्म की नींव-जिसपर इतनी विशाल गृह निर्माण हैं-रत्नत्रय कहलाता है अर्थात् दर्शन-ज्ञान चारित्र। तीनों मिलकर मोक्षका मार्ग बनते हैं। किसी एककी कमीसे मोक्षकी प्राप्ति असंभव है। इसी प्रकार सांसारिक कार्यों में भी यही बात है। संसारमें भी विश्वास्त प्रतिज्ञा और तद्रूप वर्तन की आवश्यक्ता है। परन्तुः खेद कि झूठी स्वार्थ बुद्धिसे हम अपनी आत्माओंको खो बैठे हैं। जिस प्रकार जलराशि दुर्गंधित होनेसे जितने स्रोत उसमेंसे निकलते हैं वे भी दुर्गंध पूर्ण होते हैं इसी प्रकार जब आत्मा में कपटका मैल आजाता है तो उसके सर्व कार्य्य कपटके रंग में रंगे होते हैं। और जिस प्रकार बिजली के तार को खोलनेसे तमाम लम्प स्वतः ही दीप्यमान होजाते हैं उसी प्रकार आत्मा में सम्यक्त्वके उदय होते ही उसके प्रत्येक कार्य्य सत्यरूप होते हैं। बस यदि हम चाहते हैं कि फिर दुनियांके सिरमौर बनें-जिस अंधेरे गढ्ढेकी ओर दुनियां जा रही है उसे बचाएं तो हमें चाहिए कि अपनी खोई हुई आत्मा को फिर प्राप्त करें। उस समय हम सच्चा सांसारिक एवं पारमार्थिक सुख प्राप्त करने के योग्य बन सकेंगे। और मनुष्य मात्र को बना सकेंगे। इति।

नोट-सत्य का सम्बन्ध आत्मा से है। आत्मा का स्वभाव ही सत्रूप है। दूसरे शब्दोंमें आत्माका धर्म ही सत्य है। जब तक आत्मामें सत्य है वह धर्मात्मा है। और जब आत्मा सत्यसे खाली है तब अधर्मी है। जैसे कि शरीर पुद्गल है और उसके अन्दर आत्मा विद्यमान है जिससे वह सप्राण है-अर्थात् शरीरकी जान आत्मा है। आत्माके निकल जाने पर शरीर बेजान है। और नितान्त मिट्टी है। इस ही प्रकार सत्य आत्माका धर्म है। विदून सत्यके आत्मा अपने आपसे भी गिरी हुई है। सत्य केवल आत्माका ही कल्याण करनेवाला नहीं है बल्कि संसारमें जीवनको आनंदपूर्वक रखनेवाला भी है। यद्यपि सत्यको रखते हुए बहुत कुछ कष्ट उठाने पड़ते हैं। परन्तु सत्यव्रती आत्मा इनकी कुछ भी परवाह नहीं करती। वह इन कष्टों-परीक्षाओंके उपरान्त उत्तीर्णता पा लेती है। सोना बहु मूल्य वस्तु है। और वह अपने सोनेपनको धारण किए हुए हैं परंतु जब आगमें तपाया जाता है तो परीक्षाकी कठिनतासे निकल अपने स्वभावमें ही उच्चता पाके व

है उससे गिरता नहीं। बल्कि कुन्दन बन जाता है। और बढ़कर दामोंसे बिकता है। सत्यकी परीक्षाको श्री रामचन्द्रजीने पास किया-श्री कृष्णजीने पास किया-श्री वीर भगवानने पास किया-महात्मा बुद्धने पास किया-अकलंक देवने पास किया-ध्रुव और प्रह्लादने पास किया और राजा हरिश्चन्द्रने पास किया-यद्यपि परीक्षा देते हुए कष्टोंका सामना अवश्य करना पड़ा। परन्तु कुछ भी परवा नहीं की-और कामयाबी प्राप्त की अर्थात् 'विजयलक्ष्मी' के स्वामी बने।

सत्यको धारण करनेवाली आत्मा वह होती है कि जिसके अन्दर बल होता है, पराक्रम होता है और साहस होता है। निर्बल, कर्महीन, और दुःसाहसी आत्मामें सत्य कहां! वह तो जरासे दुःखमें सत्यसे गिर जाती है। और इस अपने धर्मसे हाथ धो बैठती है। आप हजारों दृश्य प्रति दिवस देखते हैं कि जरासे कष्टमें मनुष्य घबरा जाता है। और कुछ‌का कुछ कर बैठता है। एक आदमी अच्छी तरहसे जानता है कि रोगका निदान औषध है। परन्तु घबड़ा कर झाड़ फूंके पर ईमान ले आता है। और सत्यसे गिर जाता है। वर्तमानकी अदालतोंके अन्दर मुकद्दमेवाले जिस तरह सत्यका खून करते हैं, और वकील लोग उस खूनको छुपानेके जैसे प्रयत्न करते हैं और अन्तमें हाकिम द्वारा कामयाबी प्राप्त करते हैं; यह किसीसे छुपा हुआ नहीं है। बात क्या है? केवल आत्मिक निर्बलता! जो टकेके कारण उत्पन्न हुई है।

आत्माको कमजोर बनाया है जोशने-और यह पैदा हुए हैं आत्माकी अज्ञानतासे-जिसको यह खबर नहीं है कि "मैं कौन हूं" "मेरा रूप क्या है" "मेरा घर कहां है" "मेरा कर्तव्य क्या है" और "मुझे क्या करना चाहिए"। वह सत्य जैसे उत्तम धर्मको कैसे निभा सक्ता है। और किस तरहसे सत्य जैसी अटल चट्टान पर खड़ा रह सक्ता है। वह तो गिरेगा। फलतः आवश्यक्ता है आत्माके बलवान बनानेकी और वह बलवान हो सक्ती है आत्मिक विद्याध्ययनसे-और आत्माध्ययन कर सक्ता है ब्रह्मचारी पुरुष। अतः आवश्यक्ता है कि सत्यकी रक्षाके लिए ब्रह्मचर्यका पालन किया जाय अर्थात् वीर्यकी रक्षा की जाय।

'जैन प्रदीप'से अनुवादित।

चीनी खांड।

बहुत प्राचीन कालसे भारतवर्षमें चीनीका आदर देखा जाता है। चीनी कितने ही पदार्थोंसे बनाई जाती है, पर अधिकतरूपसे ईखके रसके ही द्वारा चीनी प्रस्तुत करनेकी प्रणाली देखीजाती है। किंतु पहले किस रासायनिक वेत्ताने इसका आविष्कार किया इस बातको हम यहां वर्णन नहीं करसकते।

इतिहासको पढ़नेसे मालुम होता है कि शूरवीर सिकन्दर (एलेक्जेण्डर) ने जिस समय भारत पर चढ़ाई की थी उस समय उसका "नियार्कस" नामक प्रधान सेनापति भारतवर्षसे ग्रीक देशमें ईखके पेड़ लेगयाथा। उसी समयसे यूरुपके कृषिक्षेत्रमें मधुर रसका अवतार हुआ है।

इस समय ईखके अतिरिक्त खजूर, ताड और नारियलके वृक्षोंके रस एवं चुकन्दर आदि कन्दोंके द्वारा भी चीनी बनाई जाती है।

म्याकग्राफ नामक एक जर्मनी वैज्ञानिकने सन् १७४७ ई०में चुकन्दरसे पहले पहिल चीनी बनाई थी नेपोलियनके शासनकालमें फ्रान्समें विट चीनीका आदर बहुत बढा हुआ था। इस समय विलायती चीनी का सब जगह प्रचार होरहा है। पर विलायती चीनी देशी चीनीकी अपेक्षा अत्यन्त हीनगुणों वाली होनेके कारण भारतवासी उसका आदर नहीं करते। विशेषकर औषधोपयोग में देशी चीनीका ही व्यवहार किया जाता है। पर इस समय शुद्ध ईखकी बनी हुई चीनीको खोज निकालना सहज काम नहीं है।

पाश्चात्य डाक्टरोंके मतसे चीनीकी उपयोगिता।

पाश्चात्य रसायनशास्त्रवेत्ता विद्वानोंने परीक्षा करके निश्चय किया है कि चीनी—कार्बन, हाईड्रोजन और आक्सिजन—इन तीनों मौलिक पदार्थोंके मिलनेसे तैयार होती है। चीनी खाते ही रक्तके साथ मिल जाती है, फिर मृदुरूपसे दग्ध होकर कार्बोनिक एसिड गाफ और जलमें परिणत हो जाती है। इसके दग्ध होनेके समय चीनीके द्वारा जो उष्णता (गरमी) उत्पन्न होती है—उस गरमीका कुछ अंश शारीरिक शक्तिमें परिणत होता है। अतएव शर्करासे उत्पन्न हुई गरमीसे हमारे देहकी गरमी सुरक्षित होती है। उस गरमीसे उत्पन्न हुई शक्तिकी सहायतासे ही हम सांसारिक समस्त कार्य कर सकते हैं।

भक्षण की हुई चीनी पकस्थलीमें स्थित रहती है, उसका कुछ अंश पाकस्थलीके रसके साथ मिलकर ग्रेप सुगर (Grape Sugar) के रूपमें परिणत हो जाता है। फिर आंतों में उपस्थित होनेसे आंतोंके रसके साथ मिलकर शेष अंश भी ग्रेप सुगर (Grape Sugar) में परिणत हो जाता है। यह ग्रेप सुगर रक्तके साथ मिलकर रक्तवाहिनी सिराओंकी सहायतासे यकृतमें पहुँच कर ग्लाइकोजिन (Glycogen) का रूप धारण करके यकृतमें ही स्थित हो जाता है। आवश्यकता होने पर यह ग्लाइकोजेन शारीरिक गरमी और शक्तिकी सहायता करता है। संक्षेपरूपसे यह ही चीनीकी उपयोगिता है।

चीनीके विशेष गुण।

१ इसका अत्यंत सुगमता से परिपाक होता है। २ शरीरमें बहुत शीघ्र शोषित होती है। ३ गरमी और शक्तिकी वृद्धि करके शरीरका पोषण करती है। चीनीके अन्य गुण—

पहला—हम प्रतिदिन दाल, भात, रोटी, शाक आदि जो कुछ श्वेतसारयुक्त पदार्थ खाते हैं, वे सब मुखकी लार और आंतोंके पाचक रसकी सहायतासे चीनीके रूपमें परिणत होकर शरीरमें शोषित होते हैं। किन्तु चीनी खानेपर वह एक बारमें ही शरीरमें शोषित हो जाती है। इसलिए शरीरके यन्त्रोंको अधिक परिश्रम करना नहीं पडता।

दूसरा हम दाल, भात, रोटी, फल—मूलादि जो कुछ भक्षण करते हैं, उन सब पदार्थोंके समस्त अंश हजम नहीं होते, उनका अधिकांश

अंश मलमूत्रके साथ मिलकर शरीरसे बाहर निकल जाता है। चीनी खानेसे-चीनीके समस्त अंश हज्म होकर शरीरमें रह जाते हैं। इस लिए शारीरिक यन्त्रोंको विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ता।

तीसरा-चीनीसे मेद (चर्बी-Fat) उत्पन्न होती है। मेद शरीरके भीतर संचित होकर आवश्यक्तानुसार गरमी और शक्तिको उत्पन्न करती है। एक विद्वान पाश्चात्य वैज्ञानिकने चीनीके गुणोंकी परीक्षा करके निम्नलिखित मत प्रकाशित किया है:—

(क) चीनीके खानेसे मांसपेशियोंकी शक्ति बढ़ती है। (ख) शारीरिक यंत्रोंका अनुचित रीतिसे क्षय नहीं होता। (ग) मुखरोचक होनेसे इसका शीघ्र परिपाक होता है। (घ) चीनी बहुत दिनों तक खराब नहीं होती। (ङ) चीनी मिले हुए खाद्य पचकर नष्ट नहीं होते। चीनीके इन सब गुणोंका एक २ उदाहरण देते हैं।

(क) चीनीके खानेसे मांसपेशियोंकी शक्ति बढ़ती है। इसलिए चीनी खानेवाला खूब परिश्रम कर सकता है, कष्ट सहसकता है और उद्योगी होता है। अरब देशके मनुष्य और वहांके पशु ऊंट अधिकतर खजूर खते हैं। खजूरमें सौमें ५८ भाग चीनी होती है। इस लिए अरब देशवासी लोग कष्टसहिष्णु और ऊँट अत्यंत परिश्रमी होते हैं। हाथी ईख अधिक भक्षण करता है इसलिए वह अत्यन्त कष्ट सहन कर सकता है। मल्लाह लोग यथेच्छ रूपसे ईखके रसको पान करते हैं, इसलिए नाव खेते समय उनको कुछ कष्ट प्रतीत नहीं होता। अँगरेज लोग बहुत चीनी खाते हैं, इसीसे वे उद्यमताके आदर्शरूप हैं।

(ख) अधिकतर परिश्रम करनेसे मांसपेशियोंमें दुर्बलता उत्पन्न होती है। चीनी खानेसे वह दुर्बलता तत्काल नष्ट हो जाती है। यूरुपके प्रसिद्ध २ पथिक मिश्रीकी डेलीको मुँहमें रखकर चूसते चूसते सुदीर्घ मार्गको तयनीत करते समय और बड़े २ ऊंचे पहाड़ोंको अतिक्रमण करते समय कुछ भी कष्ट नहीं मानते।

(ग) बालक मिठाई खानेसे प्रसन्न होते हैं। इसलिए बालकोंकी पाकस्थलीमें खाद्यादि पदार्थ शीघ्र ही पच जाते हैं और उनको बार बार भूख लगा करती है।

(घ) मिश्री, बतासे, कन्द आदि पदार्थ, चीनीके ही रूपांतर हैं। ये वस्तुयें बहुत दिनों-तक खराब नहीं होतीं।

(ङ) कुछ मिठाईयोंको छोड़ कर अन्य चीनी मिले हुए पदार्थ खराब नहीं होते। बहुतसी मिठाइयां भी बहुत दिनों तक बिगड़ती नहीं हैं।

प्राचीन मतसे चीनीके गुण।

पूर्वकालके महर्षि लोग, चीनीके बहुतसे गुणोंको जानते थे। आयुर्वेद शास्त्रमें इसका यथेष्ट प्रमाण पाया जाता है।

चीनी-पुष्टिकारक है। अत्यन्त कृश व्यक्ति भी चीनी खानेसे मोटा हो सकता है। इसलिए अनेक बलकारक पाकादि औषधियोंमें चीनीका अधिक प्रयोग देखा जाता है।

चीनी-क्षयनिवारक है। राजयक्ष्मावाले रोगीको और जीर्णज्वरवाले रोगीको चीनी सेवन

कराई जाती है। उससे शरीरका क्षय होना दूर होकर वजन बढ़ता है। इसलिए तालीशादि चूर्ण, सितोपलादि चूर्ण, समशर्कर चूर्ण, मार्गी-गुड, च्यवनप्राश, वासावलेह और खण्डकूष्माण्ड आदि क्षयरोग निवारक औषधियोंके लिये चीनी प्रधानरूपसे ग्रहण की जाती है।

चीनी-रक्तशोधक है। शरीरके किसी भी अङ्गके फटजाने पर उसमें चीनीको भर देनेसे तत्काल रक्त बन्द हो जाता है। चीनीकी नस्य लेनेसे नासिकासे रक्तस्राव (नकसीर छूटना) होना दूर होता है। चीनीके शर्बतको मुखमें धारण करनेसे रक्तजनित रोग शांत होते हैं।

चीनी-रक्तकी हीनता और व्याधिजनित दुर्बलतामें विशेष उपयोगी है। ऐसी अवस्थामें डाक्टर लोग मल्टका व्यवहार करते हैं। मल्ट यह जौ की शर्करा है। मल्टका काम चीनीसे ही चल सकता है और मल्टकी अपेक्षा चीनी अधिक सस्ती होती है।

चीनी खानेसे दूषित वायु और पित्त शमन होता है।

चीनी-शरीरकी सातों धातुओंकी वृद्धि करती है। इसलिये बालकोंको यथेष्टरूपसे चीनी सेवन करना उपयोगी है। चीनीके खानेसे शारीरिक गरमी बढ़ती है। वृद्धावस्थामें शारीरिक उष्णता स्वभावसे ही कम हो जाती है, अतः वृद्ध मनुष्योंके लिए चीनी एक उत्तम खाद्य पदार्थ है। हिन्दू धार्मिक शास्त्रोंमें जो वृद्धावस्थामें वानप्रस्थ आश्रमकी व्यवस्था की है, हमारी रायसे ऐसी अवस्थामें वनमें रह कर मधुर कन्द, मूलादि खानेकी विशेष सुविधा हो सकती है। पके हुए फलोंमें चीनीका अंश यथेष्ट परिणाममें होता है, इसलिए फल खानेसे चीनी खानेके समान ही कार्य होता है।

निराहार व्रत करनेवाले भगवान् बुद्धदेवको उनके एक शिष्यने गुप्तरूपसे चीनी भक्षण कराई थी। जैनमतके आदि अवतार भगवान् ऋषभ देवको छः महिने तक कठिन अनशन तप करनेके पश्चात् तत्कालका निकाला शुद्ध इक्षु रस पान कराया गया था।

शर्कराके दोष।

अब हम "वैद्य"के पाठकोंके निकट चीनीके दो चार दोषोंको भी प्रगट करते हैं।

चीनी-कफवर्द्धक है। इसलिए नवीन सर्दी व कास (खांसी) रोगमें चीनी खाना उचित नहीं है। यदि चीनी खानेकी अत्यन्त आवश्यकता हो तो उसको गरम करके अथवा किसी कटु पदार्थके साथ मिला कर खाना चाहिए। मिश्री और काली मिरच दोनोंको गरम जलके साथ सिद्ध करके पान करनेसे सर्दी कम हो जाती है।

चीनी-मेद (चर्बी)को बढ़ाती है। इसलिए जो पुरुष अत्यन्त स्थूल हैं, उनको चीनी नहीं खानी चाहिए। कुछ दिन तक चीनी अथवा चीनीके बने हुए खाद्य पदार्थोंको त्याग देनेसे स्थूल मनुष्यकी बहुत बढ़ी हुई तोंद कम हो जाती है। यदि स्थूल मनुष्यके शरीरमें वात-रोगका आविर्भाव हुआ हो तो वह चीनीको विषकी समान त्याग देवे।

जो शारीरिक परिश्रम नहीं करते वे यदि चीनी खाते हैं तो उनके वह चीनी शर्करा रूपमें परिणत होकर पूर्णरूपसे हज्म नहीं होती

और मूत्रके साथ बाहर निकल जाती है। मूत्रके साथ जो चीनी निकलती है उसको मूत्र शर्करा अथवा ग्लाइकोसुरिया रोग कहते हैं। इस रोगमें चीनीका शीघ्र ही परित्याग न करनेसे रोग बहुत जल्द मधुमेह (Diabetis) में परिणत हो सकता है।

मधुमेह (Diabetis) में चीनी और चीनीको बनाने वाले खाद्यद्रव्य (मधुर पदार्थ) प्राणनाशक विषके समान अहितकर हैं।

जो चीनीको या चीनीके बने पदार्थोंको अधिकता से सेवन करते हैं और नियमानुसार अधिक परिश्रम करते हैं, उनसे चीनीकी उपयोगिता मालूम होसकती है।

उपवासके अनन्तर प्रथम चीनीका शर्बत पीना अच्छा है। इससे पित्त प्रकृतिस्थ होता है। मुखशोष, शारीरिक ग्लानि और विषाद दूर होता है। मन्दोष्ण दूधमें चीनी मिलाकर पान करनेसे हृदयमें बलकी वृद्धि होती है और शरीरके रक्तस्रोत अत्यन्त वेगवान् होते हैं। घृतके साथ चीनी भक्षण करनेसे वीर्य्यकी वृद्धि होती है। मक्खनके साथ खानेसे मानसिक बल बढ़ता है और स्मरणशक्ति तीव्र होती है। दही के साथ चीनी खाने से कुछ भी लाभ नहीं होता, विशेषकर दहीका गुण भी नष्ट होजाता है। दहीके साथ चीनीका व्यवहार करनेसे अनिष्ट होता है।

जिनके शरीरमें रक्तविकार (रक्तपित्त, खुजली, क्षत, कुष्टादि) हो जिन्होंने जुल्लाब लिया हो, जिनकी आंतोंमें कृमि पड़गये हों और जो सर्वदा यकृत्‌की पीडासे आक्रान्त हों उनको चीनी नहीं खानी चाहिए। नवप्रसूता स्त्रीके लिए भी चीनी सेवन करना निषिद्ध है।

"वैद्य"से उध्धृत।

सुखकी प्राप्तिका मार्ग।

दुख, शोक और अशांति जीवनके साथ लगे हुए हैं। संसारमें ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं जिसके हृदयमें कभी दुखका कांटा न चुभा हो, जिसने कभी आपत्तिके गहरे समुद्रमें गोते न लगाये हो, तथा जिसने कभी असह्य दुःखके जलते हुए आंसु न बहाये हों। कोई ऐसा घर नहीं जिसमें रोग और मृत्युरूपी भयंकर शत्रुओंने प्रवेश न किया हो, संसारमें जितने प्राणी हैं सभी किसी न किसी दुःखमें ग्रसित हैं।

इन दुःखोंसे छुटकारा पानेके लिये अथवा इनको किसी भांति कम करनेके लिये लोग न जाने कैसे २ उपाय करते हैं और सुखकी प्राप्तिके अर्थ किन २ मार्गोंका अवलंबन करते हैं। कुछ लोग विषयवासनामें सुख मानते हैं, कुछ जिह्वाके स्वादमें आनन्द मानते हैं, बहुतसे मनुष्य धन, संपदा और मान, मर्यादाको ही दुनियांकी सब वस्तुओंमें उत्तम समझते हैं और रात दिन उनकी प्राप्तिके अर्थ उद्योग करते रहते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो धार्मिक कार्योंके करनेमें सुख मानते हैं। भावार्थ-प्रत्येक मनुष्य अपने २ विचारानुसार भिन्न २ बातोंमें सुख मानते हैं और उन्हीं के द्वारा सांसारिक दुखोंसे मुक्त होने और सांसारिक सुख प्राप्त करनेकी अभिलाषा रखते हैं।

अब प्रश्न यह है कि दुःख शोकसे छुटकारा पाने के लिये कोई उपाय नहीं है तो उसका उपाय यह है कि पहले दुःख और आपत्तिका

ठीक २ ज्ञान प्राप्त किया जाय और उनकी असलियतका पता लगाया जाय।

जैसे मनुष्यके मानसिक विचार होते हैं उन्हींके अनुसार उसके जीवनकी घटनाएं होती हैं जो मनुष्यके जीवनको बिगाड़ती और बनाती हैं अतएव जैसे तुम्हारे विचार हैं यथार्थमें ऐसे ही तुम स्वयं हो। यदि कोई मनुष्य सुखी और प्रसन्न है तो उसका कारण यह है कि वह अच्छे प्रसन्नताके विचारोंमें मग्न रहता है और यदि कोई मनुष्य दुःखी है तो उसका कारण यह है कि वह दुःख निराशा और निर्बलताके विचारोंमें तन्मय रहता है।

यदि तुम यथार्थमें स्थाई रूपसे सुखी होना चाहते हो तो पहले तुम्हें नेक और धर्मात्मा बनना चाहिये। इसके बिना सुखकी इच्छा करना, रात दिन उसकी चिंता करना और उसके लिये उत्सुक रहना मूर्खता है। चाहे तुम कितने हि निर्धन हो तो भी तुममें स्वार्थकी आहुति देनेकी शक्ति है। तुम अवश्य दूसरोंके लिये कुछ न कुछ अर्पण कर सके हो। जिस मनुष्यके हृदयमें परोपकार है, जो सच्चे हृदयसे दूसरोंका भला चाहता है, वह रुपये पैसेकी बाट नहीं जोहता। वह रुपयेके स्थानमें अपने जीवनको अर्पण कर देता है। अपने मनसे स्वार्थ, द्वेष, कषाय और वासनाको निकालकर अपने और परायेका भेद भाव निकाल कर, मित्र और शत्रु सबके साथ समान व्यवहार करता है सबका भला चाहता है और सबको लाभ पहूंचाता है वही सुखी कहा जासका है।

कर्मका सिद्धांत अटल है। जैसा हमने पूर्व जन्ममें किया अथवा इसी जन्ममें किया उसका फल हम भोग रहे हैं। जैसे हम अब करेंगे उसका फल आगे भोगेंगे। मानलो किसी मनुष्यका धन चोरी चल गया, अथवा किसीका पुत्र मर गया अथवा कोई अपने पदसे गिर गया, तो समझना चाहिये कि मैंने पूर्वमें कुछ ऐसे बुरे कर्म किये होंगे जिसका बुरा फल मुझे मिला। मैं इस फलको उदासीनतासे भोगलूं और आगामीमें शुभ कर्मोंका बंध करूं जिससे उनका फल अच्छा मिले। यदि मैं इनको भोगते हुए दुःखी होऊंगा तो यह मेरे लिये हानिका कारण होंगे। जो मनुष्य दुःखोंको उदासीनताके साथ सहन कर लेता है और अच्छे कामोंके लिये उद्योग करता है और सचाई और ईमानदारी पर जमा रहता है वह सदा सुखी और प्रसन्न रहता है।

अपने हृदयको शुद्ध करलेनेसे ही जीवन स्वतः सुधर जायगा। विषयवासना, रागद्वेष, कामक्रोध, लोभ, मोह, मद, माया, अहंकार, स्वार्थ और दुराग्रह ये सब निर्बलता और निर्धनताके कारण हैं। इनके विपरीत प्रेम, पवित्रता, नम्रता, सभ्यता, शील, संतोष, दया, अनुकंपा, उदारता, निःस्वार्थता, इन्द्रिय निग्रह ये सब धन और बलके सूचक हैं इनसे ही सुखकी प्राप्ति हो सकती है।

मनुष्यको उचित है कि जैसी उसकी अवस्था है, जो कुछ उसके पास हैं उसीपर संतोष करे और क्रमशः उन्नति करे। यदि तुम छोटी झोपड़ीमें रहते हो तो उसे ही स्वर्गका नमूना बनाकर दिखलाओ। उसे ऐसा साफसुथरा रखो कि

उसमें कोई धब्बा न रहे। तुम जहां तक होसके उसे सुंदर और रमणीय बनाओ। मोजनशाला-को स्वच्छ रखो, रोटी और चनेका साग तुम्हारे लिये हो उसे ही स्वादिष्ट बनाओ। यदि तुम्हारे पास झोपड़ेमें बिछानेको कालीन या फर्श नहीं है तो अपने कमरेमें हर्ष, आनन्द और स्वागत-के फर्श बिछाओ और उन्हें प्रेम युक्त कीलोंसे जड़कर संतोष और दृढ़ताके हथोड़ेसे ठोक दो। परस्परमें प्रेम और प्रीतिका व्यवहार करो। धैर्य और संतोष धरण करो। इसी से सुखी हो सकते हैं।

जो चीजें स्वयमेव नष्ट हो जानेवाली है क्या यह सम्भव है कि उनमें मन लगाकर तुम वा-स्तविक सुख प्राप्त कर सक्ते हो। सच्चा सुख तभी प्राप्त हो सक्ता है जब कि तुम उन वस्तु-ओंमें मन लगाओ जो कि नित्य और स्थाई हे कभी नष्ट नहीं होंगी। अतएव तुम्हें चाहिये कि क्षणिक और विनाशिक वस्तुओंसे अपने मनको हटा लो और उनकी कभी भूल कर भी इच्छा न करो। जितना तुम स्वार्थको छोड़ते जाओगे उतना ही तुममें प्रेम, पवित्रता, निःस्वार्थता, जीव मात्रके प्रति मैत्री भाव पैदा होता जायगा। इसी प्रकार उन्नति करते २ तुम सच्चे ज्ञानको प्राप्त हो कर सच्चा सुख प्राप्त कर सकोगे जो कभी नष्ट नहीं होगा।

जिसका हृदय प्रेम, पवित्रता, सत्य, उदार-ताते रहित है उसे सुखका अनुभव नहीं हो सकता। क्योंकि सुखका प्राप्त करना इसका सम्बंध मन और हृदयसे है। लालची मनुष्य चाहे कोटपती-हो जावे किंतु सदा नीच, पतित और घृणित ही रहेगा। जब तक दुनियांमें उससे धनाढ्य मनुष्य रहेंगे देख कर अपनेको निर्धन ही समझेगा, पर इसके विपरीत सच्चा ईमानदार और दयालु मनुष्य है उसके पास धन संपदा कुछ भी नहीं है तो भी वह सुखी कहा जा सक्ता है। यदि मनुष्यको संतोष नहीं है तो वह निर्धनसे भी निर्धन कहा जायगा।

सच्चे सुखकी प्राप्तिका सरल मार्ग यही है कि मनुष्य अपनी इन्द्रियोंको अपने वशमें रक्खे और अपनी आत्माको पवित्र बनावे। जो मनु-ष्य इन्द्रियोंके वशमें होता है वह सदैव निर्बल और दुःखी रहता है। संसारको उससे कोई लाभ नहीं पहूंच सक्ता। यदि तुम संसारमें सुख और ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहते हो तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष, रति, अरति आदि मान-सिक कषायोंको और वासनाओंको कम करो इसीसे सुखी हो सकते हो। अंतमें पाठकोंसे निवेदन है कि उपरोक्त नियमोंको क्रमशसे साधन करते हुए सच्चे सुखको प्राप्त करें।

मंगलप्रसाद मास्तर, पाटन।

स्त्री शिक्षाकी जरूरत।

शिक्षा—बहनों! शिक्षा उसे कहना चाहिये कि जो प्रत्येक कार्यका गुण औगुण सिखावे। पांचों इंद्रियोंके विषयोंको भोगना, उद्योग, हुन्नर सिखना सिखाना, बोलना, बैठना इत्यादि कार्योंको भले प्रकार करनेके लिये शिक्षाकी जरूरत है।

शिक्षाकी जरूरत मनुष्य मात्रको है क्योंकि मनुष्यको मनुष्यत्वमें स्थिर रखनेवाली शिक्षा ही है। देखो जिन मुल्कोंमें जब तक शिक्षा

नहीं दी गई थी तब तक वहांके मनुष्य बिल्कुल जंगलीवत् याने पशुवत् आचरण करने वाले थे; परंतु आज उन्हीं देशोंमें शिक्षा महारानीका शुभागमन होनेसे वहांके नाना प्रकारकी उन्नति रूप फूलोंको हम सब कोई लूट रहे हैं। समस्त मनुष्योंको शिक्षा लेनी आवश्यक है। तथापि मनुष्योंमें जो स्त्री वर्ग है उनको लेना विशेष जरूरी है। कारण कि ये मनुष्य मात्रकी जननी याने रक्षिका है।

मातके समान शरीर पोषनेवाला दूसरा नहीं। चिन्ताके समान शरीर सुखानेवाला दूसरा नहीं है, स्त्रीके समान शरीरको साता देनेवाला दूसरा नहीं है, विद्याके समान शरीरका गहना दूसरा नहीं है।

हाय अशिक्षा! तू बडा अपराध करती है।

संबंधियोंमें फूट—यह भी जो आपसमें फूट होजाती है सो अशिक्षाका कारण है। बहुतसे देशोंमें विवाह आदि कार्योंको करते, लेन देन करना पड़ता है उसमें मेरी बहनें लड़ उठती है, द्वेष कर लेती है, परस्परका हेल्मेल जरासी फूट होनेसे नष्ट होजाता है।

रोना पीटना और मरण पीछे जीवन जो कोई मनुष्य अपनी पर्यायको छोड़ दूसरी पर्यायको धारण करता है उसके सगे संबंधी स्त्रियों और वियोग दुख करके रोती है, आक्रंदन करके आर्त ध्यान बांध लेती है, और अन्य कोई शांति कराने आवे वह भी उसीके अनुसार रो पीटके पापाश्रयको बांधती है। शोक करने वालेको संसारकी अनित्यता समझाकर धर्ममें लगाना दूसरोंका कर्तव्य है।

प्रमाद—आज हमारी बहिनें प्रमादके वशीभूत होकर कोई प्रकारका साहस करनेको उद्यमवान नहीं बनती है। अन्य देशकी बहनें अपने पुरुषार्थके बलसे अनेक प्रकारकी विद्या, कला हुन्नर सीखकर औरोंको सिखाती हैं, अपना जीवन परोपकारसे बिताती हैं तथा लाखों रुपये दान धर्मार्थ व्यय करती हैं। इस लिये हमको भी आलस्यको छोड पुरुषार्थी बनना आवश्यक है। जब तक कर्मोंको दोष देके आलसी बन रहे हैं, निरुद्यमी हो बैठे हैं, तब तक कुछ नहीं कर सके।

श्लोक

आलस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्
अधनस्य कुतो मित्रः, अमित्रस्य कुतो बलम्॥

अर्थ—आलसीको विद्या नहीं आती, अविद्यावानको धन नहीं, निर्धनको कोई मित्र नहीं; विना मित्रवालेको कोई जोर नहीं।

समयकी हानि मेरी बहिनें! पराई निंदामें अपने समय बिगाडती हैं। कितना समय रसोईमें कितना समय निद्रामें व अन्य स्त्रियोंसे फिजूल बातोंमें अपने २४ घंटोंका व्यय कर देती हैं परंतु एक घडी भी धर्म कार्योंमें व परोपकारमें नहीं देती हैं, और कहने जाने तो कहे हमें फुरसत नहीं, सो मेरी बहनोंको एक समयको भी अमूल्य समझनेकी शिक्षा अवश्य लेनी चाहिये, जिससे समय व्यर्थ न जाने देवे। अशिक्षाके कारण समयकी कदर नहीं करतीं।

कुटुम्बमें क्लेश—माता पिता, भाइबंध, स्त्री, पुत्र, संबंधी जन, सबमें आज क्लेश देख पड़ता है उन सबका कारण एक अशिक्षित वर्ग है जहां

प्रेम, भक्ति, विनय मर्यादाका नाम तक न हों वहां क्लेश बिना कोई भी नहीं ठहर सक्ता। इस लिये ऐक्यता होनेमें योग्य शिक्षाकी अतिशय जरूरत है। जहां अशिक्षा है वहां फूटका ही राज्य रहता है।

जो पुत्र अशिक्षित मातासे उत्पन्न हुआ है वह बालकपनमें सम्हाल न रखे जानेके कारण सप्त व्यसनोंमेंसे कई व्यसनोंको सेवनेवाला हो सक्ता है।

कषायकी तीव्रता—आत्माको कषन्ति कहिये घाते सो कषाय है। मेरी अज्ञान बहिनें बिना ज्ञान रुपी अंकुश के तीव्र कषायके परिणामोंको नहीं रोक सक्ती। सवेरेसे शामतकमें काम क्रोध मान माया लोभ रूप भाव करती है और उसका स्वरूप न जानकर अपने आत्म भावोंका नाश करके कर्मोंको बांधती है। बहिनो-अच्छा घर वही कहलावेगा कि जहां सुघड़ स्त्री हो। बिना सुघड स्त्रीके अच्छा घर नहीं रह सक्ता, इस लिये अच्छा घर बनाने के लिये स्त्री शिक्षाकी ओर अधिक ध्यान देना चाहिये।

हा देव! नारी जातिकी कैसी दुर्दशा हो रही है? पूर्वकाल में गृह देवियां कैसी सुशिक्षित हो गई जिन्हों के गुण-यश कीर्ति आज तक गाये जाते हैं। वर्तमान में चित्रामकी मूर्तिके समान कुछ नारियां हों जिनको सिर से पांव तक सोना चांदी तथा वस्त्राभूषणों आदिसे लदी हुई अविद्या-मूर्तिके समान हैं, हा! क्या करें वे हमारे स्वार्थी बंधु मूर्ख रखते हैं। पूर्वीय समयमें हरएक घरमें कुटुंबके लोग पति, पत्नी भाइ-बंध आदि कुशल पूर्वक समय व्यतीत करती थीं। जब अविद्यारूपी देवीने घर २ में पांव रखा है तबसे एक घरमें दो नारियां हो वहां वाग्बाण बरसने लगते हैं।

बहिनों! अब गफलत की नींदको त्यागो और सचेत होके अपनी आत्मा को देखनेका उपाय सोचो। और अपनी संन्तानों को वीर बनाने की शिक्षा प्राप्त करो। बाल्यवस्था से ही उनके हृदयमें देश सेवा जाति सेवा कुटुंब सेवा आत्म सेवा का भाव कूट २ के भर दो। रागद्वेष का भाव उनके सुकोमल हृदय में मत जमने दो।

बहिनो! तथा बंधुओं। लेख बढ़नेके सबब इतना लिखके बंद करती हूं। फिर कभी समय मिलने पर लिखूंगी। इसमें अल्पबुद्धि से कम ज्यादा शब्द लिखा गया होवे तो क्षमा करेंगे।

एक जैन महिला—प्रतावद।

આપણી પુત્રીઓ વિષે વિચાર !

(३)

(લેખક–મા. નાનચંદ પુંજાભાઈ, બી. એ. વડોદરા।)

વિવાહ કરતી વખતે પુત્રીનું ભલું કેટલું જોવામાં આવે છે? ડીકરીઓને ઉછેરવામાં અને કેળવવામાં આટલી બધી બેદરકારી બતાવવામાં આવે છે તે જાણે પુરતી નથી તેમ કેટલીક ન્યાતોમા કેટલાક સ્વાર્થી અને અજ્ઞાન માબાપ દીકરીનો વિવાહ જે વધારે પૈસા આપે તેની સાથે કરે છે, ચાહે તો જમાઇ ઘરડો લૂલો કે મુંગો કે રોગી હોય પણ પૈસા તેજ જમાઇ થાય છે. આવી રીતે જ્યા જમાઇના ગુણ જોવાતા નથી ત્યાં કન્યાને સુખ પડતું નથી. કન્યાને બહુ વીતે છે ત્યારે એકાંતમા રડે છે, નીશાસા નાખે છે અને માબાપને ગાળો દે છે. આવી રીતે કકલાવનાર માબાપ પૈસેટકે ખાલી થઇ દુઃખી થાય છે. આમાં પૈસા આપી આ કામમા ઉત્તેજન આપનાર પણ ગુનેહગાર ઠરે છે.

જ્યા સાટા તેખડાં થાય છે ત્યા પણ કન્યાનું ભલું સચવાતું નથી. જ્યા છોકરીઓના વિવાહ નાનપણમાં કરવાનો રિવાજ છે ત્યાં છોકરાના કે છોકરીના ગુણદોષ જોઈ શકાતા નથી. મોટપણે કદાચ છોકરો દુરાચરણવાળો નીપજે છે કે કમાવાને અશક્ત માલુમ પડે છે. કેટલીક વખત કન્યાના કે જમાઇના શરીરનો બાંધો વિવાહ કરતી વખતે જોવાની જરૂર છે નહિતો બંન્નેના શરીરની ખરાબી થાય છે કે કાંતો અનીતિ થાય છે. કજોડાં કંઇ ઉમરનાજ હોય છે એમ નથી. ઉમરના કજોડા બહુજ ખરાબ છે. સારા ઘરવાળા ઘોડીઆમાંથી છોકરી ઝડપાય તેમાં મોટાઇ માને છે પણ આ મોટાઇ હવે ખોટી માનવી જોઈએ. સારૂ ઘર મળે તો છ બાર મહીને મુરતીઓ નાનો હોય તોપણ વધારી લેવામાં આવે છે.

વરકન્યાનો સ્વભાવ મળતો ન આવે તોપણ કજોડુંજ થાય છે. વર બહુ ભણેલો હોય અને કન્યા તદન અભણ હોય તોપણ કજોડું બને છે. કન્યા ભણેલી અને ડાહી હોય અને વર અભણ અને મુર્ખ હોય તો તો દેખીતુંજ કજોડું છે.

નવા પરણેલા જોડાને બે બોલ.

પ્રિય વાંચનાર! આ શીખામણનો વિષય ગંભીર છે. લખતાં કલમ અટકી જાય છે. મર્યાદા અને વિવેક લખતાં અટકાવે છે. પણ હાલની સ્થિતિ જોતાં માલુમ પડે છે કે આ બાબતમાં પુરૂષ તેમજ સ્ત્રી બંન્ને વર્ગને કંઇક જાણવાનું મળશે એમ ધારી નીચેની હકીકત આપવાની જરૂર સમજું છું. અંગ્રેજીમાં "What a young wife ought to know" નામે વહુએ શું જાણવું જોઇએ એ નામનું પુસ્તક છે. તે લખનાર એક અમેરિકન ડોકટર બાઇ મીસીઝ એમા કરીને છે. તેમાંના કેટલાક ફકરા ભાવાર્થ સાથે આપવાની જરૂર છે.

In the aggressive part of the human Family—aggressive in marital relations—There is great danger of allowing the *lower nature to dominate the higher.* Passion, when master, overrides all other considerations, and the selfishness, which is so dangerous, a part of the human nature, sees but one thing–The accomplishment of desire. No Thought of the possible results hinders him and while nothing is hazarded on his part, everything on hers-even this for the moment is forotten, and afterward he may, well wonder how his better self was so lost to the tender sympathetic love and consideration in which he should always hold her.

Be guarded, O husband! It is woman's nature to forgive, and when she loves, this impetuosity of passion uncontrolled can be many times forgiven. Aye, even when too frequent maternity is thrust upon her, but there comes a time when love and forgiveness have reached their limit, and love struggles vainly to rise above disgust and loathing, but it can never again attain to anything but tolerance.

ભાવાર્થ:—ઉંચા વિચારોને બદલે જ્યારે કુટુમ્બમાં હલકા વિચાર—અધમ વાસનાઓ—વધે છે ત્યારે કુટુમ્બની પાયમાલી થાય છે. માણસની જ્યારે વિષયવાસના વધે છે ત્યારે બધા સારા વિચારો ભૂલી જાય છે. અને સ્વાર્થને લીધે પોતાની ઇચ્છા પુરી કરવા સિવાય બીજું કંઇ સુઝતું નથી. કામાન્ધ થયેલો માણસ પરિણામ શું આવશે તેનો વિચાર સરખો પણ કરી શકતો નથી. પોતાને કંઇ નુકશાન થશે નહીં પણ સ્ત્રીને પૂર્ણ વેઠવું પડશે એવો ખ્યાલ માત્ર પણ આવતો નથી. દુષ્ટ પળ વીત્યા પછી તેને અચંબો લાગે છે કે શું હું એટલો બધો આંધળો થઇ ગયો હતો કે મારી સ્ત્રીનું મન દુભાશે કે એનું હેત ઓછું થશે એવો પણ વિચાર ન આવ્યો! વાચનાર માફી આપજો-ગુન્હો ભુલી જજો–એ સ્ત્રીનો સ્વભાવ છે. સ્ત્રી પતિ ઉપર એટલો બધો પ્રેમ રાખે છે કે ઘણી વખત પ્રેમની મારી ધણીની વિષયવાસનાને તાબે થઇ તેનો ગુન્હો માફ કરે છે. અરે! પણ જ્યારે એ અવિચારી પુરૂષ તેની ઉપર ઉપરાઉપરી સુવાવડના પ્રસંગ આણે છે, ત્યારે તેનો પ્રેમ ઓછો થાય છે, તેને તિરસ્કારની નજરથી જુવે છે અને તેનું કંઇપણ સાંખી શકતી નથી.

But the wife is not always, guiltless when this sad state of things has resulted, in what should have been a happy married life! While the husband is the aggressive one, yet she may, by many little carelessnesses, and thoughtless acts invite attentions which she afterward repels. The womanly modesty which characterized her girlhood should always be preserved and observed, and this innate dignity, this strogly asserted individuality, will tide them gloriously over many hard places.

પણ સ્ત્રી કંઇ હમેશાં નિર્દોષ હોતી નથી. આખરે જ્યારે આવી સ્થિતિ આવે છે ત્યારે પરણ્યાનું સુખ કંઇ મળતું નથી જો કે વાત છેડનાર ધણી હોય છે તોપણ સ્ત્રી કેટલીક વખત જાણે અજાણે પોતાના હાવભાવ અને ચેષ્ટાથી ધણીનું મન લોભાવે છે અને પછી સ્ત્રીને કંટાળો આવે છે. સ્ત્રીએ કુમારિકા અવસ્થાનું શરમાળપણું અને મલાજો પણ સાચવી રાખવો જોઇએ છે. આવી રીતનો સ્ત્રી જાતનો કુદરતી વિવેકી સ્વભાવ કાયમ રાખવાથી ઘણી મુસીબતોમાંથી બચી જાય છે.

ઘરમાં સારી મજેની આનંદ ઉપજાવે એવી વસ્તુઓથી માતાના ગર્ભમાં રહેલા બચ્ચા ઉપર કેવી અસર થાય છે તેનો એક દાખલો નીચે પ્રમાણે છે.

એક બાઇને જ્યારે પહેલો ગર્ભ રહ્યો ત્યારથી તેના પતિએ તેને અલગ રહેવાની રજા ઘણી ખુશીથી આપી. અલગ એટલે બીજા ઘરમાં નહિં પણ પોતાનાજ ઘરમાં રહી પવિત્રપણે જીંદગી ગુજારે એવો બંદોબસ્ત કરી આપ્યો. આ જોડુ ઘણા સંપ અને પ્રેમથી રહેતું. ઘરમાં સુંદર વસ્તુઓ ઘણી હતી પણ એક સુંદર છબી ઉપર આ બાઇનુ મન વારે ઘડીએ જતું તેથી તેણે જે પુત્રીને જન્મ આપ્યો તેનો ચ્હેરો તેની મા કે બાપના ચ્હેરા કરતાં છબીમાંના ચ્હેરાને વધારે મળતો આવતો. આ છોકરી જન્મી ત્યારથીજ ગુલાબની કળી જેવી ખુબસુરત હતી, રાત્રે કદીપણ રડતી નહીં, કદી ચીડાતી નહીં અને તેનો ચ્હેરો હરતો અને મોઢું આખો દહાડો મલક મલક થયાં કરતું, તેને લીધે ઘરમાં આનંદ આનંદ છવાઇ રહેતો. એ છોકરીને ઉછેરવામાં આ બાઇને જરાપણ કંટાળો કે મહેનત પડી નથી. આનું કારણ એજ હતું કે ગર્ભના દિવસથી આ બાઇ બહુ આનંદથી રહેતી અને સારા વિચાર કરતી.

થોડા વરસ પછી આજ બાઇને ફરીથી ખબર પુછતાં તેણે કહ્યું કે મારા ધણીના મનમાં એવો ખોટો વિચાર પેઠો કે ગર્ભ રહ્યા પછી ગમે તેટલા વખત સ્ત્રી સમાગમ થઇ શકે. સ્ત્રી જાતિ હું આથી લાચાર બની તેની દુષ્ટ ઇચ્છાને તાબે થતી હું ગભરાતી, દુઃખ પામતી, રડતી, આખરે મારા ધણીથી મને કંટાળો આવવા લાગ્યો અને તેનાથી બીવા લાગી, જેમ તેમ કરી આ દુઃખના ભરેલા

નવ મહિના પુરા થયા એટલે જે પુત્રનો જન્મ થયો તે માંદલો, ચીઢીઆ સ્વભાવવાળો અને સુકી હાડકાવાળો નીપજ્યો. ને આખરે દવા દારૂ અને ઉજાગરા અને ચીંતા કરાવી પાંચમે વરસે કાયર થઇ તે મરી ગયો. આ ઉપરથી સમજવાનું કે ગર્ભ રહે ત્યારથી સ્ત્રીએ આનંદ અને ખુશ મીજાજમાં અને પવિત્રપણે દહાડા ગુજારવા જોઇએ.

તે બાઇએ કહ્યું કે મારે એક મારાથી જરા નાની બ્હેનપણી છે. તે એક વિદ્વાન અને આબરૂદાર માણસને પરણેલી છે. તેમને સાત છોકરાં થયાં, તે થોડા થોડા વખતને આંતરે જન્મ્યાં તેથી એ બિચારી બાઇનું શરીર છેક લેવાઇ ગયું, તવઇ ગઇ. ઘટતી રીતે થયું હોત તો આ ઉમ્રે તે એક જુવાન ચાલાક સ્ત્રી હોત તેને બદલે તે એક મજુરણ જેવો અવતાર ભોગવે છે.

The very fact that conception may result at any time, proves that the conjugal relation was not instituted primarily for the gratification of the lower nature but for procreation.

ભાવાર્થ:—ગર્ભ ગમે તે વખતે રહે છે તે ઉપરથી સમજાય છે કે માણુસની અધમ વાસના તૃપ્ત કરવાજ સ્ત્રી સમાગમ કરવાનો નથી પણ સંતતિ ઉત્પન્ન કરવા માટેજ છે. પણ આ દુષ્ટ અને અધમ લાલચથી દુર રહેવા માણુસે કેટલાક નિયમો પાળવાની જરૂર છે. પ્રથમ સ્ત્રી અને પુરૂષે એક ઓરડામા ન સતાં જુદા જુદા ઓરડામાંજ સુવાની ટેવ પાડવાની જરૂર છે.

આપણા ગુજરાતીઓમા એક એવો દુષ્ટ રીવાજ પેશી ગયો છે કે છોકરો પરણે અને વહુ ઘેર આવે એટલે તે નવું જોડું એકજ શય્યામાં સુવે એવી ગોઠવણ મુખ્ય સ્ત્રી કરે છે. અણુસમજુ જોડું સંસારની જુંસરી ગળે ખુશીથી મુકે છે પણ આગળ તે ભારે થઇ પડે છે અને નથીમતો વાક કાડે છે. છોકરા કે છોકરીની ઉમર તેર કે ચૌદ વર્ષની હોય તોપણ કોઇને વિચાર આવતો નથી કે આ ઉમર સંસારમાં પડવા લાયક નથી. છોકરાનું વીર્ય ૧૬ થી ૨૫ વરસની ઉમર સુધીમા પાકું થાય છે અને કન્યાને ૧૬ થી ૨૦ વરસ સુધીમાં સ્ત્રીપણું આવે છે એટલેકે દરેક અવયવ સંપૂર્ણ રીતે ખીલે છે. એટલે સમજવું કે ૨૦ વરસની ઉમર પહેલાં તો વીર્ય કાચુંજ હોય અને આવા કાચા વીર્યથી જે પ્રજા ઉત્પન્ન થાય તે શરીરે નબળીજ થાય એ દેખીતું છે. નાના બાળકો વધારે મરે છે તેનું મુખ્ય કારણ આ છે. આપણે અહિંસા ધર્મ પાળનારા કહેવાઇએ પણ આ મોટી હિંસા (મનુષ્ય હિંસા) તરફ આપણું ધ્યાન કેમ જતું નથી ?

બીજું એકજ શૈયામા શયન કરવાથી એક બીજાનો શ્વાસ દમમાં લેવો પડે છે તેથી બન્નેના શરીર બગડવા સંભવ છે.

કેટલાક કહે છે કે પંડિતો વિશેષ કામાતુર હોય છે. ખરૂં જોતા પંડિતો એકલા નહીં પણ વ્યાપારી, નોકરવર્ગ, વકીલ વર્ગ, વિદ્યાર્થી વર્ગ, વીગેરે જેમનો બેઠાબેઠ ધંધો છે તે સર્વેને જલદી કામ વિકાર ઉત્પન્ન થાય છે.. જે લોકો જપ, તપ, વ્રત, ઉપવાસ કરે છે, હલકા ખોરાક ઉપર રહે છે, વૈરાગ્યની વાતો વિચારે છે તેમને કામ પજવી શકતો નથી. એટલાજ માટે વિધવાઓને વ્રત અને કાય કલેશ કરવાનું કહેલું છે. કાઠીઆવાડના કાઠી અને ગુજરાતના કોળી જેઓ દહાડે સખત મજુરી કરનારા હોય છે તેમને કામ વિકાર જલદી ઉત્પન્ન થતો નથી.

The sedentary life of many men renders them a prey to the gratification of their lower nature. To all such men exercise becomes a religious duty, and should be practised most persistently until their physical natures are well tired, and the sexual nature will not then dominate the finer and nobler instincts of their being.

જે લોકોનો બેઠાબેઠ ધંધો છે તેમને કામ વિકાર જલ્દી ઉત્પન્ન થાય છે, માટે કસરત કરવી તે તેમની ધાર્મિક ફરજ થવી જોઇએ. દુશરીરના દરેક ભાગને સારી પેઠે થાક લાગે ત્યાંસુધી શરીર કસવું જોઇએ. આથી વિષયવાસના સારા અને પવિત્ર વિચારો પર સ્વાર થઇ શકશે નહિ.

એકાંત બનતા સુધી સેવવું નહિં. એકાંતમાં વિષય ઈચ્છા જાગૃત થવા સંભવ છે. એ સિવાય બીજા કેટલાક નિયમો જેવા કે ખરાબ લોકની સોબત, નાટક જોવાં, સ્ત્રીનાં અંગ નિહાળવાં વગેરેનો ત્યાગ કરવો. એ દરેક જણ સમજે છે. સ્ત્રીઓ લાજ કાઢે છે, ચોટલો હોળતી વખતે પુરૂષના આવવાથી માથું ઢાંકી દે છે વગેરેનો હેતુ પુરૂષને આ અધમ ઇચ્છામાંથી બચાવવાનો હોય છે. ત્યારે કેટલાક પુરૂષો સ્ત્રીનાં અંગ નિહાળવામાં આનંદ માને છે. તેમની આંખ ઠરી જાય છે તેમા પોતાનેજ નુકશાન છે.

નાની ઉમરમાં સીમંત આવે છે ત્યારથી વર્ષે દોઢ વર્ષે સુવાવડો ચાલુ થાય છે. બે સુવાવડ વચ્ચે ઓછામા ઓછાં ચાર વર્ષનો અંતર જવો જોઇએ એટલાજ માટે પહેલી સુવાવડ પછી આણુ મોડું વળાવવાનો કેટલાકમાં રિવાજ છે. પણ આનો અર્થ બધાએ જાણવાની જરૂર છે. કેટલાં છોકરાંનું આપણે સારી રીતે પોષણ કરી શકીશું એવો સવાલ હિંદુસ્થાનમા ઘણા થોડાનેજ થતો હશે? આનું કારણ એજ છે. વિષય વાસના તૃપ્ત કરવા ખાતરજ સ્ત્રી સમાગમ કરવામા આવે છે પણ ખાસ સંતતિ ઉત્પન્ન કરવાના હેતુથી નહિં. ઘોડા કે ગાય પાળવાની શકિત ન હોય તો આપણે તે રાખતા નથી પણ છોકરા ઉછેરવાની શકિત છે કે નહિ તેનો વિચાર જો ન કરીએ તો ઢોરના કરતાં પણ છોકરાની કીંમત આપણે ઓછી આંકીએ છીએ એમ કહીએ તો ખોટું કહેવાય નહિં. છોકરાને માટે પીવા દુધ, ઓઢવા ગરમ વસ્ત્ર કે બીજી જરૂરીઆતની વસ્તુઓ કે સારી કેળવણી ન આપી શકીએ તો આપણી શકિત નથી તેમ સમજવું જોઇએ. છોકરાના શરીરનો પાયોજ આપણે મજબુત કરવામાં કેટલા બધા બેદરકાર છીએ? છોકરાને ધોતીઉં કે બુટ જોઇએ તો ચાર દુકાને ફરી બાર મહીના ચાલે તેવો લાવી આપીએ છીએ પણ તેનું શરીર કમતાકાતવાળું તેને આપતા આપણને કેમ વિચાર નથી આવતો!! કાચી ઉમરમા થયેલાં છોકરાની દશા આવી હોય છે. કાચી કેરી તોડે તો તેનો રખવાળ તેને મારવા ઉભો થશે પણ પોતે જે ગુન્હો કરે છે તેને માટે શિક્ષા આખી જીંદગી તેને મળે છે, પોતાનાં છોકરાને મળે છે અને દેશને મળે છે તેનો વિચાર થોડાજ કરે છે.

કામવાસનાની તૃપ્તિ કરવા જતા જે પ્રજા ઉત્પન્ન થાય છે તે તેવીજ વિષયવાસનાવાળી અને તામસી પ્રકૃતિવાળી થાય છે. પાકી ઉમર થયા પછી સાત્વિક વૃત્તિથી જે પ્રજા ઉત્પન્ન કરવામા આવે છે તે સાત્વિક વૃત્તિવાળી થાય છે, અને શરીરે મજબુત હોય છે.

કેટલીક જ્ઞાતિઓમા કન્યા રજસ્વળા થાય ત્યાર પછીજ પતિ પાસે મોકલવામા આવે છે. પણ કન્યા રજસ્વળા થાય એટલે પાકી ઉમર થઈ એમ સમજવું નહિ પણ તેનામાં સ્ત્રીપણાના ચિન્હ સંપૂર્ણ દેખાવાં જોઇએ. નાનું જોડું પવિત્ર જીંદગી કેટલાક વર્ષ સુધી ગાળે એવો બંદોબસ્ત કરવો એ માબાપનો ધર્મ છે. બૈરાંને એક એવો દુષ્ટ વહેમ છે કે છોડીને રૂતુ આવ્યા પછી પરણાવે તો કન્યાદાનનું ફળ ન મળે. રૂતુ એ કુદરતી ધર્મ છે. છોકરાને ઉમર થયે મુછ ફુટે છે અને છોકરીને રૂતુ આવે છે. બૈરાં પણ આ સારી પેઠે સમજે છે પણ ફક્ત રૂઢીને તાબે થઇ છોડીનું દુઃખ નજરે જોવાનો વખત જાણી બુઝીને લાવે છે. એ કેટલી બધી શરમની વાત છે!! આવાં બૈરા કન્યાદાનનું ફળ લેવા જતા મનુષ્ય હિંસાનું પાપ માથે વ્હોરી લેછે તે સમજતા નથી માટે આવો વહેમ ન રાખતાં કન્યાને મોટી ઉમરેજ પરણાવવી જોઇએ અને મોટી ઉમરેજ સાસરે વળાવવી જોઇએ. (અપૂર્ણ)

गुजरातना दिगंबर जैनोनी साहित्य सेवा अने समाजसेवा ।

વહાલા ધર્મબંધુઓ—

અનાદિ કાળની ચાલતો આવેલો જૈન સમાજ ભારતવર્ષમાં દરેક સ્થળે ઓછાવત્તા પ્રમાણમાં નિવાસ કરે છે.

જે વખતે મહાવીર સ્વામી વિહાર કરતા હતા એટલેકે આજથી ૨૪૪૬ વર્ષ પહેલાં જૈન સમાજ ભારતવર્ષમાં અન્યોઅન્ય ધાર્મિક અને વ્યવહારિક ક્રિયાઓમાં સંગઠન હશે એમ કલ્પી શકાય. કેમકે ગૌતમ ગણધરની ભાષા સર્વે શ્રોતાઓ સારી રીતે સમજતા હતા.

અત્યારે આપણો સમાજ જો કે દરેક સ્થળે પૂર્વના પ્રમાણમાજ નિવાસ કરે છે, પણ ફેર માત્ર એટલોજ છે કે-અત્યારે તેઓનો સંબંધ એકમેકથી છિન્નભિન્ન થઇ ગએલો છે તે છિન્નભિન્નતા એટલે સુધી વધી પડી કે-જુદા જુદા દેશના સમાજો જુદા પડવા ઉપરાંત જુદી જુદી જાતિયો જુદી પડી. અને અત્યારે તે જુદાઇ વધતી વધતી એકજ જ્ઞાતિમા બબે ત્રણ ત્રણ તડ પડવા સુધી આવી ગઈ છે.

મહાવીર સ્વામીના નિર્વાણ ગયા પછી ૧૬૦ વર્ષને આશરે શ્રીભદ્રબાહુ સ્વામીના સમયમાં જૈન સમાજના બે ભેદ પડયા જે દિગંબર અને શ્વેતાબર બે નામથી ઓળખાવા લાગ્યા. ભદ્રબાહુના પટ્ટપર વિશાખાચાર્ય થયા. તેમણે મુળ મતને કાયમ રાખી ઉપદેશ કરવા માંડયો. ૧૮૩ વર્ષમા ભદ્રબાહુના પટ્ટપર ૧૧ આચાર્ય ૧૧ અંગ તથા દશ પૂર્વના ધારક થઇ ગયા ત્યારપછી ૧૨૩ વર્ષ માં તે ગાદી ઉપર પાંચ આચાર્ય અગીયાર અંગ પાઠી થઇ ગયા ત્યારબાદ પૂર્વ પાઠી જ્ઞાનનો લોપ થયો તેમજ અંગ જ્ઞાન પણ કમી થવા લાગ્યું.

ત્યારબાદ ૨૧૫ વર્ષમા ૯ આચાર્ય થઇ ગયા જે ક્રમે ક્રમે ૧ અંગના પાઠી હતા તે જ્ઞાન ધીરે ધીરે મંદ પડવા લાગ્યું. અને લોકોની શ્રદ્ધા પણ ધર્મ તરફથી ઉતરવા લાગી.

અન્ય દેશોના સમાજથી ધાર્મિક અને વ્યવહારિક બાબતોમાં ગુજરાતનો દિ૦ જૈન સમાજ જોડાએલો હતો. તેનું ખરૂં ઉદાહરણ ગિરનાર પર્વતપર શંકાસમાધાનાર્થે ભરાયલા સંઘ પરથી પુરૂં પડે છે.

શ્વેતાબર અને દિગંબરની ઉત્પતિ પ્રથમ પછી નક્કી કરવા નિમિત્તે ગિરનાર પર્વતપર જુદા જુદા દેશોમાંથી જૈન સમાજ એકત્રિત થયો. ભેગા થએલા સંઘનું સંઘપતિત્વ કુંદકુંદાચાર્યના તીર્થરૂપ પિતા, કુંદ શેઠને આપવામાં આવ્યું કે-જે માળવામા ઉજ્જૈની નજીક આવેલા બારાપુર ગામના રહેવાસી હતા.

ભદ્રબાહુ સ્વામીના સમયમા પડેલા દુકાળથી થયેલા ચારિત્ર હીન (શ્વેતાબર) ની વસ્તી તે સમયે ગુજરાતમાં વિશેષ હતી. (આજે પણ દિગંબરોથી શ્વેતાંબરો વિશેષજ છે) કેમકે-દુકાળમા ચારિત્ર હીન થએલાં આચાર્યોને ગુજરાતના શ્રાવકોએ આશ્રય આપી પોતે તેમના મતમાં મળી તેમની વસ્તી વધારી દીધી હતી. વળી ગુજરાતમાં તે વખતે એક મૂળ આચાર્યનું આગમન થતું નહિ જેથી ગુજરાતનો આખો જૈન સમાજ શ્વેતાંબરી થઇ ગયો હતો. (હાલના દિગંબરો પછીથી માળવા, મેવાડ, મારવાડ તરફથી આવેલા જણાય છે.)

ઘણા દિવસના વાદને અંતે એકે પક્ષની જીત થઈ નહિ ત્યારે એક દિવસે કુંદકુંદાચાર્ય સર્વ સંઘ સહિત શ્રી નેમિનાથ તિર્થંકરના નિર્વાણ સ્થાનની વંદના કરી એવું બોલ્યા કે-જો દિગંબર અને શ્વેતાંબરોની ઉત્પત્તિનો નિર્ણય થવાનો હોય તો અહીં કોઇક ચમત્કાર થાઓ, તરતજ એક ઘડી પર્યંત દિગંબર મત મૂળ ધર્મને અનુસરતો પ્રથમનો છે, એમ આકાશવાણી થઈ. જે સાભળી શ્વેતાંબરી સંઘ માનભ્રષ્ટ થઇ ભાગી ગયો અને ગુજરાતમાં જઇ ખરી હકીકત ગુપ્ત રાખી પોતાની જીત જાહેર કરી.

શ્વેતાંબરી પક્ષનું ખંડન થયુ તેની યાદગીરી નિમિત્તે દિગંબર જૈનોએ ત્યાં મહાભિષેક કર્યો. ગંધોદકની પુષ્પમાળાની ઉછામણીના વર્ણન

પરથી ત્યાં ભેગા થએલા શ્રાવકોનું વર્ણન જણાય આવે છે, જેથી તે અત્રે ઉતારવામાં આવે છે.

(બ્રહ્મચારિ જીવનદાસના પ્રાકૃત પાઠ ઉપરથી ગુજરાતી ભાષાંતર)

ગંધોદકની માળની ઉછલામણી.

રાગ ચોપાઇ.

જંબુદ્વીપ દક્ષિણ દિશી સાર,
ભરત ક્ષેત્ર ભવિયણ મન ધાર.
સોરઠ દેશ તહાં સુવિચાર,
સિદ્ધ ક્ષેત્ર શોભે ગીરનાર.
બોતેર ક્રોડ સાતસો મુનિરાય,
મુક્તિ ગયે શ્રી નેમિકુમાર.
સંઘ મળ્યો શ્રાવકનો તહા,
સિદ્ધ ગયા નેમીશ્વર જહા.
ચર્ચા અરસ પરસ કરતાંય,
દિવ્ય ધ્વનિ પ્રગટી છે ત્યાંય.
દિગંબર મુળ ધર્મજ ખરો,
તસ અંગે શ્વેતાંબર થયો.
એવો ધ્વનિમાં ઉપજ્યો અર્થ,
શ્રાવક જન પામ્યા ત્યાં હર્ષ.
મહાપૂજન અભિષેક સાર,
આરંભ્યુ મન ધરી સુવિચાર
ગંધોદક ઉપરની માળ,
ગુંથી સુગંધિત પુષ્પ વિશાળ.
માણેક મોતી રતન પ્રવાલ,
હેમ જડિત શોભે તે માળ.
ગોલાપુરવ જૈન વિશાળ,
સહસ્ર એક માગે જિનમાળ.
ઉદાર જ્ઞાતિ છે બઘેરવાલ,
સહસ્ર પાચે માગે જિનમાળ.
હરખે શ્રાવક ત્યાં જૈસવાલ,
સહસ્ર આઠે માગી જિનમાળ.
સિંહલપુર વસે છે શ્રીમાળ,
સહસ્ર દશે માગે જયમાળ.
વિનયવંત છે હુમડ કોમ,
સોળ સહસ્રની પાડે બુમ.
ક્યાંયર કોમ મધુરીય વાણ,
વીસ સહસ્રે માગે સુજાણ.
દેશ માહુરના મેહતવાલ,
સહસ્ર બાવીસે માગે ગુણમાળ.
મંગલપુર વસે પુષ્કરવાલ
સહસ્ર ચોવીસે માગે જિનમાળ.
ખંડેલવાલ વણિક વિશાળ,
બત્રીસ સહસ્રે માગે ગુણમાળ.
અણુદીલ પાટણથી આવે અગ્રવાલ
સહસ્ર બાવને માગે જિનમાળ.
ભાગેલી જ્ઞાતિ ઓસવાલ વખાણુ,
સહસ્ર ચોરાસી માગે ગુણમાળ.
સહવ જ્ઞાતિ ઉત્સાહજ કરી,
લક્ષ એક દે હેતે ધરી.
પોરવાડ આવ્યા સુવિચાર,
માગે લાખ પાચે મન ધાર.
છે ગુણવંતી ચિત્રોડા કોમ,
સાત લક્ષ બોલે ધરી જોમ.
જયજયકાર કરે પલ્લીવાલ,
સોલ લક્ષ દઈ માગે માળ.
દિહુ જ્ઞાતિ આવે અતિ ચંગ,
લક્ષ અઢાર બોલે મનરંગ
નરસહવત વસે મહીપાર,
લક્ષ ચોવીસે માગે માળ.
લંબેચુ જ્ઞાતિ છે જયવંત,
લાખ પચીસ ધન આપે નિઃસંક
હરમોને વસે હરસાલ,
લાખ ત્રીસ આપે સુવિચાર.
દિશાવાલ આવેસુ વિશાલ,
બત્રીસ લાખે માગે માળ.
ગુર્જર જ્ઞાતિ ગુર્જર દેશ,
માગે માળ દઇ લાખ ચાલીસ.
માળવ દેશથી સોહિલવાલ,
બાવનલાખે માગે માળ,
આવે ઉત્તમ ત્યાં રાયકવાલ,
છપ્પન લાખે માગે માળ.

ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની સાહિત્ય સેવા અને સમાજસેવા।

વહાલા ધર્મબંધુઓઃ—

અનાદિ કાળથી ચાલતો આવેલો જૈન સમાજ ભારતવર્ષમા દરેક સ્થળે ઓછાવત્તા પ્રમાણમાં નિવાસ કરે છે.

જે વખતે મહાવીર સ્વામી વિહાર કરતા હતા એટલેકે આજથી ૨૪૪૬ વર્ષ પહેલાં જૈન સમાજ ભારતવર્ષમા અન્યોઅન્ય ધાર્મિક અને વ્યવહારિક ક્રિયાઓમાં સંગઠન હશે એમ કલ્પી શકાય. કેમકે ગૌતમ ગણધરની ભાષા સર્વે શ્રોતાઓ સારી રીતે સમજતા હતા.

અત્યારે આપણો સમાજ જો કે દરેક સ્થળે પૂર્વના પ્રમાણમાંજ નિવાસ કરે છે, પણ ફેર માત્ર એટલોજ છે કે-અત્યારે તેઓનો સંબંધ એકમેકથી છિન્નભિન્ન થઇ ગએલો છે તે છિન્નભિન્નતા એટલે સુધી વધી પડી કે-જુદા જુદા દેશના સમાજો જુદા પડવા ઉપરાત જુદી જુદી જાતિયો જુદી પડી. અને અત્યારે તે જુદાઇ વધતી વધતી એકજ જ્ઞાતિમાં બબે ત્રણ ત્રણ તડ પડવા સુધી આવી ગઈ છે.

મહાવીર સ્વામીના નિર્વાણ ગયા પછી ૧૬૦ વર્ષને આશરે શ્રીભદ્રબાહુ સ્વામીના સમયમાં જૈન સમાજના બે ભેદ પડયા જે દિગંબર અને શ્વેતાંબર એ નામથી ઓળખાવા લાગ્યા. ભદ્રબાહુના પટ્ટપર વિશાખાચાર્ય થયા. તેમણે મુળ મતને કાયમ રાખી ઉપદેશ કરવા માંડયો. ૧૮૩ વર્ષમા ભદ્રબાહુના પટ્ટપર ૧૧ આચાર્ય ૧૧ અંગ તથા દશ પૂર્વના ધારક થઇ ગયા ત્યારપછી ૧૨૩ વર્ષ માં તે ગાદી ઉપર પાંચ આચાર્ય અગીયાર અંગ પાઠી થઇ ગયા ત્યારબાદ પૂર્વ પાઠી જ્ઞાનનો લોપ થયો તેમજ અંગ જ્ઞાન પણ કમી થવા લાગ્યું.

ત્યારબાદ ૨૧૫ વર્ષમાં ૯ આચાર્ય થઇ ગયા જે ક્રમે ક્રમે ૧ અંગના પાઠી હતા તે જ્ઞાન ધારે ધારે મંદ પડવા લાગ્યું. અને લોકોની શ્રદ્ધા પણ ધર્મ તરફથી ઉતરવા લાગી.

અન્ય દેશોના સમાજથી ધાર્મિક અને વ્યવહારિક બાબતોમાં ગુજરાતનો દિ૦ જૈન સમાજ જોડાએલો હતો. તેનું ખરૂં ઉદાહરણ ગિરનાર પર્વતપર શંકાસમાધાનાર્થે ભરાયલા સંઘ પરથી પુરૂં પડે છે.

શ્વેતાંબર અને દિગંબરની ઉત્પતિ પ્રથમ પછી નક્કી કરવા નિમિત્તે ગિરનાર પર્વતપર જુદાં જુદા દેશોમાથી જૈન સમાજ એકત્રિત થયો. ભેગા થએલા સંઘનું સંઘપતિત્વ કુંદકુંદાચાર્યના તીર્થ રૂપ પિતા, કુંદ શેઠને આપવામા આવ્યું કે-જે માળવામા ણુંદી નજીક આવેલા બારાપુર ગામના રહેવાસી હતા.

ભદ્રબાહુ સ્વામીના સમયમા પડેલા દુકાળથી થયેલા ચારિત્ર હીન (શ્વેતાબર) ની વસ્તી તે સમયે ગુજરાતમાં વિશેષ હતી. (આજે પણ દિગંબરોથી શ્વેતાંબરો વિશેષજ છે) કેમકે-દુકાળમા ચારિત્ર હીન થએલા આચાર્યોને ગુજરાતના શ્રાવકોએ આશ્રય આપી પોતે તેમના મતમાં મળી તેમની વસ્તી વધારી દીધી હતી. વળી ગુજરાતમાં તે વખતે એક મૂળ આચાર્યનું આગમન થતું નહિ જેથી ગુજરાતનો આખો જૈન સમાજ શ્વેતાંબરી થઇ ગયો હતો. (હાલના દિગંબરો પછીથી માળવા, મેવાડ, મારવાડ તરફથી આવેલા જણાય છે.)

ઘણા દિવસના વાદને અંતે એકે પક્ષની જીત થઈ નહિ ત્યારે એક દિવસે કુંદકુંદાચાર્ય સર્વ સંઘ સહિત શ્રી નેમિનાથ તિર્થંકરના નિર્વાણ સ્થાનની વંદના કરી એવું બોલ્યા કે-જો દિગંબર અને શ્વેતાંબરોની ઉત્પત્તિનો નિર્ણય થવાનો હોય તો અહીં કોઇક ચમત્કાર થાઓ, તરતજ એક ધડી પર્યંત દિગંબર મત મૂળ ધર્મને અનુસરતો પ્રથમનો છે, એમ આકાશવાણી થઈ. જે સાભળી શ્વેતાંબરી સંઘ માનભ્રષ્ટ થઇ ભાગી ગયો અને ગુજરાતમા જઇ ખરી હકીકત ગુપ્ત રાખી પોતાની જીત જાહેર કરી.

શ્વેતાબરી પક્ષનું ખંડન થયુ તેની યાદગીરી નિમિત્તે દિગંબર જૈનોએ ત્યાં મહાભિષેક કર્યો. ગંધોદકની પુષ્પમાળાની ઉછામણીના વર્ણન

પરથી ત્યાં ભેગા થએલા શ્રાવકોનું વર્ણન જણાઇ આવે છે, જેથી તે અત્રે ઉતારવામા આવે છે

(બ્રહ્મચારિ જીવનદાસના પ્રાકૃત પાઠ ઉપરથી ગુજરાતી ભાષાંતર)

ગંધોદકની માળની ઉછલામણી.

રાગ ચોપાઇ.

જમ્બુદ્વીપ દક્ષિણ દિશી સાર,
ભરત ક્ષેત્ર ભવિયણ મન ધાર.
સોરઠ દેશ તહા સુવિચાર,
સિદ્ધ ક્ષેત્ર શોભે ગીરનાર.
બોતેર કરોડ સાતસો મુનિરાય,
મુક્તિ ગયે શ્રી નેમિકુમાર.
સઘ મળ્યો શ્રાવકનો તહા,
સિદ્ધ ગયા નેમીશ્વર જહા.
ચર્ચા અરસ પરસ કરતાંય,
દિવ્ય ધ્વનિ પ્રગટી છે ત્યાય.
દિગંબર મૂળ ધર્મજ ખરો,
વૃસ અગે શ્વેતામ્બર થયો.
એવો ધ્વનિમા ઉપજ્યો અર્થ,
શ્રાવક જન પામ્યા ત્યા હર્ષ.
મહાપૂજન અભિષેક સાર,
આરંભ્યુ મન ધરી સુવિચાર
ગધોદક ઉપરની માળ,
ગુથી સુગધિત પુષ્પ વિશાળ
માણેક મોતી રતન પ્રવાલ,
હેમ જડિત શોભે તે માળ
ગોલાપૂરવ જૈન વિશાળ,
સહસ્ર એકે માગે જિનમાળ.
ઉદાર જ્ઞાતિ છે વઘેરવાલ,
સહસ્ર પાચે માગે જિનમાળ.
હરખે શ્રાવક ત્યા જૈસવાલ,
સહસ્ર આઠે માગી જિનમાળ.
સિંહલપુર વને છે શ્રીમાળ,
સહસ્ર દશે માગે જયમાળ.
વિનયવંત છે હુમડ કોમ,
સોળ સહસ્રની પાડે બૂમ.
કાંથર કોમ મધુરીય વાણ,
વીસ સહસ્રે માગે સુજાણ.
દેશ માહુરના મેષ્ટવાળ,
સહસ્ર બાવીસે માગે ગુણમાળ.
મંગલપુર વસે પુષ્કરવાળ
સહસ્ર ચોવીસે માગે જિનમાળ.
ખંડેલવાલ વણિક વિશાળ,
બત્રીસ સહસ્રે માગે ગુણમાળ.
અણહીલ પાટણથી આવે અગ્રવાળ
સહસ્ર બાવને માગે જિનમાળ.
ભાગેલી જ્ઞાતિ ઓસવાળ વખાણ,
સહસ્ર ચોરાસી માગે ગુણમાળ.
સહદ જ્ઞાતિ ઉત્સાહજ કરી,
લક્ષ એક દે હેતે ધરી.
પોરવાડ આવ્યા સુવિચાર,
માગે લાખ પાચે મન ધાર.
છે ગુણવતી ચિત્રોડા કોમ,
સાત લક્ષ બોલે ધરી જોમ.
જયજયકાર કરે પલ્લીવાલ,
સોલ લક્ષ દઈ માગે માળ
દિહુ જ્ઞાતિ આવે અતિ ચગ,
લક્ષ અઢાર બોલે મનરંગ
નરસહપરા વસે મહીપાર,
લક્ષ ચોવીસે માગે માળ
લમેચુ જ્ઞાતિ છે જયવંત,
લાખ પચીસ ધન આપે નિઃસક
હરમોરે વસે હરસોલ,
લાખ ત્રીસ આપે સુવિચાર
દિશાવાલ આવેસુ વિશાલ,
બત્રીસ લાખે માગે માળ
ગુર્જર જ્ઞાતિ ગુર્જર દેશ,
માગે માળ દઇ લાખ ચાલીસ.
માળવ દેશથી સોહિતવાલ,
બાવનલાખે માગે માળ,
આવે ઉત્તમ ત્યાં રાયકવાલ,
છપ્પન લાખે માગે માળ

ગંગેદા જ્ઞાતિ આવે સહુ સાથ,
માંગે માળ નવદે ધન હાથ.
વાયડા જ્ઞાતિ વસે ગુજરાત,
આપે ધન માણેક ભલી ભાત.
વમેરા જ્ઞાતિ બેસે કરજોડ,
માલ લઇ આપીશું ક્રોડ.
ગાંગદા જ્ઞાતિ આવે સુજાણ,
માગે માળ સંઘને દઈ માન
ચન્ચોરા જ્ઞાતિ આવે સુવિચાર,
માળ લઈ ધન આપે સાર.
નાગર-ધાકડ-રોહીણીવાળ,
લક્ષ અડાવને માગે માળ.
રૈવાતટના નારાયણ શેઠ,
માળ લઇ ધન આપે ક્રોડ.
મેવાડ વસે મરેરા કોમ,
લાખ છપ્પન આપે ધરી જોમ
સોરઠ દેશે સોરઠવાલ,
ચોરાસી લાખે માગે માળ.
ચાર કોમ વળી જ્ઞાતિ કપોળ,
માળ લઇ આપે બહુ મુલ્ય.
ખેડાદ્દતા-ભાભુવ ગોહિલવાલ,
ધન પુષ્કળ દઇ માગે માળ.
સુણીને જાવુવ-સોહંદવાલ,
પંચ ક્રોડ દઇ માગે માળ.
સમેસરા ટેકવંત વિચાર,
કોડી દશ દઇ માગે માળ.
જાલોરા વસે છે ગોહીલવાડ,
અઢાર કરોડે માગે માળ.
જેસલ ને રણથોરા અભંગ,
માગે માળ કરી બહુ રંગ.
દીલીવ ગામ વસે મદરવાળ,
ચોવીસ કરોડે માગે માળ.
પાટણ વસે ચોવીસો સંઘ,
બત્રીસ કરોડ આપે ધરી રંગ.
શ્રીધર-જયમેરા ગુણવાન,
માળ લઇ દે કોડી બાવન.
રાજોરા રહે છે ગોહીલવાડ,
કરોડ ચોરાસી માગે માળ.
હેત ધરી આવે પરવાર,
કનક રતન દઈ માગે માળ.
ખેમવાળ આવે ગુણમાળ,
માણેક મોતીથી માગે માળ.
વિવેકમાં પૂરા જાતવાળ,
વિનય સહિત માગે જિન માળ.
ક્ષત્રિય વિપ્ર-વણિક ગુણવંત,
માળ માંગે જિનવર જયવંત.
શ્રાવક સંઘ ઉલ્લાસી થયો,
પૂજન કરી નિજ મંદિર ગયો.
માળ ગ્રહી ફલ પામે ધ્રુવ,
સ્વર્ગ-સુખ પામે તત્ખેવ.

ઉપર પ્રમાણે ૫૦ જાતના શ્રાવકો એકત્ર થયા હતા. ઘણું ખુશી થવા જેવું છે કે તે વખતે આપણી આર્થિક સ્થિતિ અત્યારથી કંઇક શ્રેષ્ઠ હતી.

સમય, સમયનો રંગ બદલે જાય છે તે પ્રમાણે આપણા સમાજમાં ફેરફાર થવા લાગ્યો. ઉપદેશની અભાવતાએ કે કેટલીક કોમોએ શ્વેતાંબર પંથનો સ્વીકાર કર્યો. વળી કેટલીક કોમોએ એથી પણ આગળ વધી જૈન ધર્મનો પણ ત્યાગ કીધો.

આપણું જ્ઞાન સાહિત્ય મુળ ભાષામાંજ રહ્યું. જેથી તેનો ચાલુ ભાષામાં ઉપદેશ થઇ શકતો નહિ. ભટ્ટારકો શ્રાવકોના ધન લેવા ઉપરાંત કંઈ કરતા નહિ જેથી આપણા સમાજની સ્થિતિ દિન પ્રતિદિન ઉતરતી ચાલી તે ત્યાં સુધી આવી ગઈ કે- ગુજરાતમાં દિગંબર જૈન ધર્મ છેજ નહિ એમ કેટલીક ક્ષુદ્ર બુદ્ધિના માનવા લાગ્યા તેમજ નહિ પણ કેટલાક સમર્થ લેખકો કે જે અન્ય ધર્મી હતા, તે પણ દિગંબર જૈન પંથને બીલકુલ વિસરીજ ગયા. ભાષા ઇતિહાસકારોએ પણ જૈન સાહિત્યની તપાસ કર્યા સિવાયજ ઇતિહાસ બાંધી દીધા. અને આખરે ઇતિહાસમાંથી દિગંબર માત્ર અલોપ થઇ ગયો હોય એવી સ્થિતિ આવી પડી તે સમયે જો કઇ દિગંબરોની યાદગીરી હોય તો તે આપણા પ્રાચીન અને ભવ્ય મંદિરોજ હતાં.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥



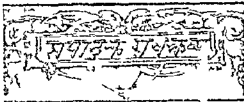
दिगंबर जैन.



THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततां, दैगम्बर जैन समाज मानम् ॥

वर्ष १४ वाँ	वीर संवत् २४४७ फाल्गुण, चैत्र विक्रम सं० १९७७	अंक ५-६ ठा



कानपुरकी महासभा ।

कई महिनोंसे कानपुरमें महासभा, जैन साहित्य प्रदर्शन, महिला परिषद्, शान्ति परिषद् होनेके आन्दोलनकी धूम मची हुई थी वह सब गत मासमें अपूर्व उत्साहके साथ होगया। कानपुरके भाइयोंने अजीब उत्साह और परिश्रमसे स्वागतका उत्तम प्रबन्ध किया था। कोई चार पांच हजार जनसमुह एकत्रित हुआ था। प्रदर्शनका लाभ तो कानपुरकी सारी जनताने लिया था क्योंकि प्रदर्शन जैनोंका प्राचीन साहित्य बतानेवाला अपूर्व था। प्रदर्शनमें बडे २ हस्त लिखित चित्र, सुनहरी अक्षरोंके तथा सचित्र ग्रन्थोंकी गजब शास्त्र विराजमान किये गये थे जिसमें बरमलद (गुजरात)का सुनहरी सचित्र यशोधर चरित्र (मोती नीलम जडे हुए गत्ते सहित) तथा आराके जैन सिद्धांत भवनका सचित्र रामायण सबको आकर्षित करते थे। प्रदर्शनके लिये पं० कन्हैयालालजी राजवैद्यका परिश्रम सफल हुआ था। महासभामें अनेक श्रीमान्, विद्वान्, त्यागी, ब्रह्मचारियों आदिका ऐसा समूह एकत्रित हुआ था कि शायद ही ऐसी उपस्थिति कभी हुई हो। परंतु महासभाम कार्य-सफलता जैसी आशा थी वैसी नहीं हुई। हम तो कहते हैं कि यदि सभापतिजीके सुपौत्र साहू जुगमंदरदासजीने धैर्यतासे काम न लिया होता तो महासभाका अधिवेशन निर्विघ्न पूर्ण होनेकी भी आशा न थी। प्रथम बैठकके अंतमें सब्जेक्ट कमेटीका चुनाव हुआ था उसमें करीब १०० नाम चुनाये गये बाद बहुत लोग उठने लगे थे और गडबड होने लगी थी तब किसीने उसमें दो बहिनें—श्रीमती मगनबाई और पं० चन्दाबाईका नाम लिखा दिया (जो हमारे सुननेमें भी नहीं आया था,) यद्यपि हम प्लेटफोर्म पर ही थे जो महासभाके नियम विरुद्ध था इससे रात्रिको सब्जेक्ट कमेटीमें कार्य प्रारंभ होते ही इसी बातकी चिकर चली थी और मामला यहां तक बढा कि रात्रिको कमेटीमें दो दल हो गये परन्तु अंतमें सब्जेक्ट कमेटी नई चुननेका निश्चय हुआ था तब दूसरे दिन दूसरा बैठकमें नई सब्जेक्ट क० चुननेके बाद ही कार्यारंभ

हुआ था। समय अतीव कम होनेके कारण आये हुए सभी प्रस्ताव कमेटीमें उपस्थित भी नहीं हो सके थे और बहुत कम और एक दो को छोड़कर मामूली ही प्रस्ताव पास हुए थे। (प्रस्तावोंकी सूची आगे दर्ज है) महत्वका एक नया १०वां प्रस्ताव हुआ है जो असली कार्रवाईका हुआ है इससे अब महासभाका कोई भी सभासद बाल लग्न, कन्या विक्रय, वृद्धविवाह, वैश्यानृत्य और आतशबाजी नहीं कर सकेगा, जो करेगा वह महासभाकी सभासदीसे पृथक् किया जायगा। सिद्धांत ग्रन्थकी नकल लेनेके लिये जो कमेटी नियत हुई है वह यदि ठीक २ कार्य करेगी तो अवश्य सफलता होगी। बजट तो २४८००) का किया गया है परन्तु आमदनी इतनी नहीं है। अंतिम बैठकमें चंदा भी विशेष नहीं हुआ। सिर्फ सभापतिजीने १००१) दिये और ५००)–७००) और आये होंगे इसका कारण यह हुआ कि आगामी अधिवेशनके लिये आगरा और लखनऊके आमंत्रण पर बहुत बहस होगई थी और अंतमें लखनऊका स्वीकार हुआ था तो भी समय अधिक हो जानेके कारण तथा सारी सभामें एकदिल न होनेके कारण प्लेटफोर्मपर बैठे हुए रायबहादुर रायसाहबोंने भी एक पाईका भी चंदा नहीं लिखाया था। सारांश कि उत्तम मौका होने पर भी महासभा इसबार कुछ विशेष कार्य न कर सकी। महाविद्यालय, गजट, परीक्षालय आदिके सुधारका भी कुछ प्रबंध नहीं हुआ। सिर्फ महाविद्यालयके लिये फिर प्रबंध कमेटी बनी है। देखें, वह भी कुछ करती है या नहीं?

महिला परिषद्में तो श्रीमती मगनबाई, श्री पं० कंकुबाई, पं० रामदेवी बाई (सभापति) के अटूट परिश्रमसे बहुत सफलता हुई थी और शास्त्रि परिषद्का कार्य भी उत्तम रीतिसे हुआ था। इन परिषदोंने जो पांच प्रस्ताव पास किये हैं वे महत्वके हैं। यदि यह परिषद् अपने प्रस्तावानुसार असली कार्रवाई भी करती रहेगी तो दि० जैन समाजका बहुत कुछ कल्याण कर सकेगी। महासभाके समय महत्वका कार्य यह तो हो गया है कि संयुक्त प्रांतिक सभाकी स्थापना हो गई और प्रथम अधिवेशन हस्तिनापुरमें कार्तिकी मेलेपर करनेका साहू सलेखचंदजीने अपनी ओरसे आमंत्रण भी दे दिया है। महासभाके सभापति साहू सलेखचंदजीका व्याख्यान और चित्र, स्वागत० सभापति ला० रायस्वरूपजीका व्याख्यान, शास्त्रि परिषद्के सभापति पं० लालारामजी शास्त्रीका व्याख्यान तथा महिला परिषद्के सभापति पंडिता चंदाबाईका व्याख्यान इसी अंकमें क्रमशः दिया गया है तथा तीनोंमें पास हुए प्रस्ताव भी आगे दर्ज हैं। हम हरएक पाठकसे आग्रह करते हैं कि वे ये तीनों व्याख्यान और सभी प्रस्ताव खास अवकाश निकाल कर अवश्य २ पढ़ें, उस पर मनन करें और इन सभापतियोंकी सूचना पर तथा प्रस्तावोंपर दृढतासे विचार करके उनकी असली कार्रवाईके लिये कटिबद्ध होवें।

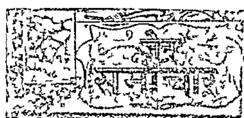
* * *

जैन समाजमें कार्यकर्ताओंकी तो अतिशय त्रुटि है और भी है

महा शोक!! उनमेंसे दो अगुओंका

वियोग होजाना अतीव दुःखदायक है। आज हमें ऐसे **दो व्यक्तियों का वियोग** हो गया है कि जिसकी पूर्ति होना असंभव है। प्रथमका नाम देते ही कलम कंपती है और हृदय भूनता है। यह वियोग है आरा निवासी **कुमार देवेन्द्रप्रसादजी**का। आप अचानक सिर्फ ३० वर्षकी आयुमें (१४ वर्षकी विधवाको छोडकर) इस संसारसे चल बसे। आप अंग्रेजी भाषामें जैन साहित्यका अनुवाद करके या कराके प्रगट कर तथा उसका विलायत तकमें प्रचार करनेका जो कार्य कर गये हैं वह अपूर्व है। बहुतसा कार्य आप अपूर्ण छोड गये हैं। हिन्दी साहित्यमें आकर्षक ग्रन्थोंका प्रकाशन भी आपका उत्तम था। आपकी हरएक पुस्तक ऐसी मनमोहक प्रगट होतीथी कि हरएक खुशी २ से पढता था। आपका चलाया हुआ कार्य बाबू अजितप्रसादजी लखनऊ तथा बाबू निर्मलकुमारजी आराको हस्तगत करना चाहिये। आपका स्मारक भी होनेकी अत्यंत आवश्यकता है। क्या ही अच्छा हो यदि एक देवेन्द्र ग्रन्थमाला, आपके नामसे स्थापित हो जावे। आपके आत्माको हम शांति चाहते हैं।

दूसरा वियोग ब्र० **गेंदनलालजी**का है। आपको कौन नहीं जानता ? ! आपने अच्छी नौकरी तथा स्त्री पुत्रादिको छोडकर ब्रह्मचर्यावस्था ग्रहण की थी और आपमें समाज सेवाका इतना प्रेम था कि आपने अतीव परिश्रम करके जैन समाजमें एक ऐसी संस्था स्थापित कर दी है जो जैन समाजमें प्रथम और दूसरोंको अनुकरणीय हुई है। यह है-हस्तिनापुरका श्री 'ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम'। आप ही इसके सब कुछ थे। बालकोंपर आपका प्रेम अपार था। अभी थोडे दिन हुए ही आश्रमसे अपना संबंध हटा लिया था। आपका एक पुत्र दीपचंदजी वकील है और दूसरा बडौदा कलाभवनमें पढता है। आपका परिणाम सरल और स्वभाव प्रेमालु था। आपका वियोग भी अतीव दुःखदायक हुआ है। आपकी आत्माको हम शांति चाहते हैं। आश्रममें आपके वियोग पर शोक सभा हुई थी तथा कुमारजीके वियोगपर भी अनेक स्थानोंपर शोक सभा हो रही हैं।



संयुक्त प्रां० दि० जैन सभा-की स्थापना कानपुरमें महासभाके समय हो चुकी थी। और उसका कार्य चैत्र सुदी १३ से प्रारंभ हो गया है। सभासदी फीस सिर्फ २) वार्षिक रखे हैं। संयुक्त प्रान्तके भाईयोंको अवश्य २ सभासद होना चाहिये। सभासदी फोर्म मंगानेका पता-स्वरूपचंद जैन स० महामंत्री संयुक्त प्रा० दि० जैन सभा, नई सडक-कानपुर।

महासभा-के महामंत्री ला० भगवानदासजीने उदेसरकी सभामें महामंत्री पदका स्तीफा भेजा है। देखें क्या होता है।

सेठीजी गिरफ्तार-पं० अर्जुनलाल सेठीजीको अजमेर प्रांतमें व्याख्यान न देनेकी

आज्ञा हुई थी। बादमें आप सिवनीके मजि-स्ट्रेटके वारंटसे गत सप्ताहमें अजमेरमें कॉंग्रेस ऑफिसमें गिरफ्तार किये गये हैं। और आपपर नं० १२४ और १५३की कलम (राजद्रोह और जातिद्वेष) लगाई गई है। आपको हाथकड़ी डालकर अजमेरसे जब सिवनी ले जानेवाले थे तब अजमेर स्टेशनपर हजारों लोग रेल्वे सड़कपर सो गये और कितनेकने तो कोलसेके पेडेका समूह ऐंजिनके पास जमा कर दिया था। इसकी असर ड्राइवरपर भी हुई। उन्होंने गाड़ी चलना रोक दिया। बादमें हाथकड़ा निकली गई, सेठीजी बहार आये और मौलाना मोयादीन और सेठीजीके खास आग्रहसे सब लोग दूर हो गये तब ५-६ घंटे बाद ट्रेन छूट सकी थी। मामला अब चलेगा। अजमेरमें एक दिन हड़ताल रही थी।

एटा-में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा और मेला वैशाख सुदी १२ से वद १ तक बड़े समारोहके साथ होगा। कासगंज और सिकंदराराऊ स्टेशनसे आया जाता है।

काशी-में ता, २०से २४ मई तक भारत दया कॉंग्रेस टाउन हालमें होगी।

श्राविकाश्रम-बम्बईकी वार्षिक परीक्षामें २७में से २२ श्राविका पास हुई हैं। आश्रममें १ मईसे १६ जून तक गर्मीकी छुट्टी होगी।

गोहाना-में रथयात्रा वै० सुदी ६ से ११ तक होगी।

प्रतिमाएं निकलीं-खेकड़ा (मेरठ) से दो कोस बडागांवमें एक प्राचीन अतिशय क्षेत्र पार्श्वनाथके नामसे मशहूर है। यहां महाराज अनंतकीर्तिजी पधारे और आपने फरमाया कि यहां प्रतिमा भी है। आपके कहनेसे फाल्गुन सुदी ७से खुदाई प्रारंभ हुई और अंतमें वैशाख वदी ८ को एक मौरेके पीछे करीब ८ हाथकी गहराईपर तीन प्रतिमाएं निकली हैं। जिनमें एक पार्श्वनाथकी पद्मासन कृष्णवर्णकी, दूसरी धातुकी खड्गासन और तीसरी एक खंडित प्रतिमा है। जिनका मस्तक व एक और छोटासा टुकड़ा है। जिसको स्फटिकमणीकी बतलाते हैं। लेख सवत कुछ नहीं है। हजारों लोग दर्शन करनेको आते हैं। अजैनोंको भी जैन धर्मपर बड़ी श्रद्धा हो रही है। और भी प्रतिमाएं निकलनेकी उम्मेद है। इस क्षेत्रका सुप्रबंध आवश्यक्ता है।

बद्रीप्रसाद जैन-खेकड़ा (मेरठ)

आरा-के जैन सि० भवनमें अब लिखा देनेकी व्यवस्था हुई है।

लाडनूं-में सद्विद्या प्र० जैन सभाका वै० सु० ११ से १४ तक होगा।

काम्पिलाजी-का मेला हो गया। उसमें बुंदेलखंड जैन सभाका उत्सव होकर स्वदेशी वस्तु प्रचार, कुरीति निषेध आदि होकर काम्पिलाकी प्रबंधक कमेटी भी हो गई।

देहलीमें-हीरालाल जैन हाईस्कूलका वार्षिकोत्सव बाबू रूपचंदास वकीलके सभापतित्वमें हो गया। यह स्कूल बहुत ही उन्नत चल रही है। धर्माध्यापक पं० छोटेलालजी हैं। स्थायी फंड ८१०००)का मिल

। और सहायता मिलनेकी भी, आशा है। ायद आगे यह कालेजके रूपमें हो जावे।

उड़ेसर (मैनपुरी)में-मेला और महास ाका नैमित्तिक अधिवेशन वै० सुदी २ तक े गया।

महावीर जयंती-उत्सव चैत्र सुदी ।३ के दिन सूरत, बम्बई, बलरंगढ, कारंजा, फेरोजाबाद, सेठफला, सोलापुर, कुंथलगिरी, ागपुर, कलकत्ता, सिवनी, होसुर, बडौदा आदि स्थानोंपर हुआ था।

नसीराबाद-में मेला और राजपूताना दि० जैन प्रां० सभाका अधिवेशन वै० सुदी २ तक हो गया।

अजमेर-में मेला और मुनि चंद्रसागरजीका केशलोंच चैत्र वदी १२ को हो गया। २०-५ हजार जनता एकत्रित हुई थी। बडी प्रभा-वना हुई थी। जैनकुमार सभाका उत्सव भी हुआ था। परस्पर वैमनस्यके कारण इतनी जनता होनेपर भी कुछ चंदा नहीं हुआ था। ब्र० शीतलप्रसादजीके अनेक धार्मिक व्याख्यान हुए थे।

कलकत्तेमें-पंचायती न्यायालयकी स्था-पना हो गई।

हस्तिनापुर-ब्र० आश्रमके ब्रह्मचारियोंने प्रण किया है कि सिवाय गाढेके और कोई कपडा काममें न लायेंगे, मेज कुर्सी काममें न लायेंगे और नित्य व्यवहारमें हिन्दी तारीख लिखा करेंगे।

कुंथलगिरि-के कुलभूषण देशभूषण दि० जैन विद्यालयको ब्र० पार्श्वसागरजी (अधिष्ठाता)के प्रयत्नसे बम्बईमें ६४४) आहा-रदान तथा ८६०) इक मुश्त सहायता गत मासमें मिली थी।

अंतरीक्षजी-में दि० श्वे० के झगडेकी तारीख लगी थी। परन्तु केस न निकल कर आगामी ता; १ अगस्त नियत हुई है।

मद्रास-में देहली संघ और ब्र० शीतल-प्रसादजीके उपदेशसे मंदिर और धर्मशालाके लिये ६०००)का चंदा हुआ है।

सोलापुर-में होलीके दिनोंमें गौ० ने० व्यायामशालाकी ओरसे पाठशाला और बोर्डि-गके विद्यार्थियोंके मर्दानी खेल हुए थे। जंजीर तोडनेवाले तथा दूर तक दौडनेवालेको इनाम दिया गया था।

आरा-के बा० हरप्रसादजी मृत्युके समय ट्रस्ट करके लाखों रुपयेका स्थायी दान कर गये हैं इसमें ६००००) कालेजके लिये भी हैं।

श्रीशिखरजी-में बिहार उड़ीसा प्रां० दि० जैन खंडेलवाल सभाका प्रथम अधिवेशन गत मासमें सेठ चैनसुखजी छावड़ा सिवनीके सभा-पतित्वमें हुआ था। जिसमें २४ प्रस्ताव पास हुए थे। जिसमें खास ये हैं-लडकी ११ और लडका १५ से कम उमरमें तथा पुरुष ४५ के ऊपर विवाह न करें तथा लडका लडकीसे ४ वर्ष बडा होना चाहिये।

माणिकचन्द्र-संस्कृत ग्रन्थमालाका १७ वां ग्रन्थ 'षट्प्राभृतादि संग्रह' छपकर प्रकट हो गया। ग्रन्थमालाको १००) सहायता देनेवाले-को मुफ्त दिया जाता है। विद्वानों और हरएक मंदिरके प्रबंधकोंको इस ग्रन्थमालाके सभी ग्रन्थ मंगा कर संग्रह करने चाहिये।

ભટ્ટારક બાપજીની ભૂગોળ ! !

આજ કાલ ભજ કલ્યાણમ્ ભૂદેવોના જેવી સ્થીતિએ પ્રાપ્ત થયેલા ભટ્ટારક બાપજીના નામથી કોણ અણજાણ્યું હશે ? એમના વ્યવસાય, ચારિત્ર અને ઉપયોગીતા માટે ઘણું લખાયું બોલાયું છે છતાં આપણે શું જોઈએ છીએ ? ઘેટાના ટોળા માફક ગાડરીઆ પ્રવાહમા તણાતા ભણેલા ગણેલા, ધર્મનો દાવો કરનાર, સમાજનું સુધારનાર અને તેમા પણ આજે સ્વતંત્રતા લેવા બહાર પડેલો વર્ગ, ગુજરાતમા ફરવા નિકળેલા નૃસિંહપુરાના ભટ્ટારક (યશકીર્તિ) બાપજી કે જે હમણા ક્ષેમકીર્તિની ગાદી પર બિરાજમાન થયેલા કહેવાય છે, તેમને જ્યા ભાવના થતી હોય ત્યા સંપુજમાં ઓછા પેસા પડે તો "લો બાપજી લો" "બાપજી બહુ થયું," વિગેરે વિશેષણો વાપરી આ આધુનિક નિર્માલ્ય ભટ્ટાચાર્યને સાતમે આસમાને ચ્હડાવી ધર્મને નામે ધતીંગ જેવા ઢીંગાણામા સામેલ થાય છે ?

આજે ગુજરાતના નૃસિંગપુરા ભાઈઓ કલહમા અથડાઈ ગયા છે, ભાગ્યેજ કોઈ ગામ બાકાત હશે, કલોલ ચોરાના તડમા એક ઘરની ધધાની તકરાર ખાતર બે તડ આજે કેટલોક વખત થયા પડ્યા છે. આ ભટ્ટારકજીએ ત્યા ચાતુર્માસ કર્યો હતો છતા તેમણે શું પ્રયત્ન કર્યો ? કહે છે કે કેટલાક ભાઈઓ આ ભટ્ટારકને ચાતુર્માસ કરાવવા વિરૂદ્ધ હતા છતા તેમના તેજમા અંજાઈ જઈને સંપૂજ ભાવના કરી અને હૃદયની ભાવનાને ઠોકર મારી! આમોદ ગયા ત્યા તો ગોત્ર લગનની પક્ષ કરનાર શ્રીમંત શેઠોની ભાવના લે તો સુરત ચોરાની બધી મેમાનગીરીપર પાણી ફરે એ ઉદ્દેશથી પ્રથમ વ્યારા, બુહારી, મઢી અને મુંબાઈ થઈ સુરતમાં મીજબાનીઓ ઉડાવી રહ્યા છે ! ! ! જોવાનું છે કે એક ગોત્રની કિમ્મતે ન્યાત બહાર થયેલા આમોદના ભાઈઓની ભાવના આ મેમાન લે છે કે નહી કે પછી સુરતવાળાની આખમા ધૂળ નાખે છે. કહ્યું છે કે, "તુમ તુમારે ઘરા કરો ઔર હમારા હોજ્ગ તો ભરો ભરો" કહે છે કે જ્યારે આ નામધારી ભટ્ટારકે એક ગરીબમા ગરીબ વિધવાને ત્યા પ્રથમ સંપૂજ નક્કી કરી આઠ લીધી હતી અને અંતે મનમાન્યા રૂપિયા લઈનેજ ભાવના કરી હતી. બુહારીમા તો બહુ માન મળ્યુ કહેવાય છે. પણ નજીવા કારણ સર મમતના મોભના જેવા ન્યાયે એ ભાઈઓમા જે ઠાયકો થયા એક માતાના બે સતાનો જુદા જમે છે તે તો તેમનું તેમજ રહ્યું ! ! એ માન શું કામનું કે જેણે ભાઈભાઈઓમા પણ મેળ ન કરાવ્યો ! ! મઢીમા તો બે કડાકા થયા પણ એક ટેકી તરીકે સંઘપણાનો ઠોકો રાખનારા શેઠ ઈચ્છારામ પણ હાર્યા. મુંબાઈમા તો કહે છે કે ખૂબ તડાકો પડ્યો. હવે સુરતમા કાર્ય ચાલુ થયો છે. જોઈએ છીએ ગોત્ર જેવી ધાર્મિક બાબતમા ન્યાત બહાર મુકાયેલ ભાઈ ખીમચંદ સવાઈચંદને માટે આ ધર્મના સવાલમા ઉંડા સુધી ભણેલા (ના,ના જંતર મંતર કરી આપવામા તો બડા હોશિયાર ! ! !) આ કહેવાતા નવજવાન ધર્મ ગુરૂ કેવી સમજાવટ કરી આપે છે તેમજ હજારોની પુંજી હોવા છતા જીર્ણોદ્ધાર કે બીજા ધર્મ કાર્યોમા મદદ માગવા જતા, હમારો તો હવે કોઈ વેપાર છે ? હમારે હવે કોઈ દીકરો રળનાર છે ? હમાન તો રળનાર ગયા, લો પાચ રૂપીયા ! "હમારી તે કંઈ પુંજી ? પાસેર દુધ ખાતા પણ કડે આવે, વગી ધર્મીષ્ટને નામે ઓળખાતા જોઈએ છીએ, આવા ભાઈઓ આ નામધારી 'ભટ્ટારકાચાર્યની કેવી બરદાસ્ત કરે છે તે જોવાનું છે. એક સત્યાગ્રહી ભાઈએ તો ભાવના કરવા કે સંપૂજ આપવા વસીને ના કહી છે.

લી॰ એક 'હિતેચ્છુ

ભ॰ સુરેન્દ્રકીર્તિ—ખાનદેશ તરફ ભ્રમણ કરે છે ને સંપૂજ ભાવનાઓ મનમાની લે છે છતા વળી આવવા જવાનુ રેલ ભાડું પણ, ચાર્જ પામે લોક જુલમથી કઢાવે છે એ બાબત અમને ખાનદેશ તરફથી એક પત્ર મળ્યો છે.

ઈડર—ના પેલા ભ॰ વિજયકીર્તિ (નોનાના કંડી કહેણવાળા) ઈડરમાથી ઘોડા ચકર નફર વગેરે સમેટી કાયમ પલાયન થઈ ગયાં છે ને હવે ઈડર આવે એમ આશા નથી અરે ગુજરાન ! તારી આ દશા ક્યારે સુધરશે ?



श्रीमान् साहू सलेखचन्दजी साहब रईस–नजीबाबाद

सभापति,

श्री भा० दि० महासभा २१वां अधिवेशन–कानपुर।

मिती चैत्र वदी ९–१०–११ वीर सं० २४४७

ता० १–२–३ अप्रैल १९२१.

'जैनविजय' प्रेस–सूरत।

। जैन तावज्ञ संस्कृत विद्वानोंका तयार होना, ...ीय, नागरिक और जातिय सभाओंका उद्धा- ...जैन समाचार पत्रोंका प्रचार, उपदेशकों द्वारा ...र्म प्रचार, कुरीति निवारण, तीर्थोंका सुप्रबन्ध आदि जो कुछ भी ...र्मिक और सामाजिक जागृति आज दीख रही है ...ह सब महासभाका ही फल है। कुछ सज्जन ऐसा कहते हुए सुने जाते हैं कि महासभाने विशेष कार्य नहीं किया है, मैं उनके इस आक्षेपको अपने विचारसे उचित नहीं समझता, जिन्हें महासभाके स्थापन कालके पहले समयका अनुभव है वे महानुभाव मेरे उक्त विचारसे सहमत होंगे। महासभाकी स्थापनाके पहले जैनसमाजकी कुछ और ही दशा थी। आज कुछ और ही दीख रही है। यद्यपि जैसी सफलता होनी चाहिये वैसी नहीं हुई है, उसका कारण मैं यह समझता हूं कि जैसी सहायता और योग देकर उसके कार्योंमें भाग लेना चाहिये वैसा भाग हमारे बान्धव नहीं ले रहे हैं, फिर भी महासभाके कार्योंसे बहुत कुछ सन्तोष होता है।

६—वर्तमान परिस्थितिको देखते हुए यह बात मुझे अवश्य कहनी पडती है कि महासभाके नामके अनुसार उसकी व्यापकता नहीं है। उसके " महा " शब्दकी सार्थकता तभी हो सकती है, जब कि स्थानीय प्रांतीय और जातीय सपूर्ण समाओंका सबन्ध महासभासे रहे। अब तक जिन समाओंका सम्बन्ध महासभासे नहीं है उन्हें उससे सम्बन्ध करना चाहिये, और अभी तक जो प्रान्त प्रातीयसभाओंसे खाली हैं उन्हें उनकी पूर्ति करनी चाहिये। जिस प्रान्तमें आज महासभाका यह पचीसवां अधिवेशन हो रहा है वही प्रान्त प्रान्तीय सभासे शून्य है। इस त्रुटिको दूर करनेके लिये युक्त प्रातकी जनता और प्रतिनिधियोंसे मैं आशा रखता हू कि वे इस सुअवसर पर अपने प्रातकी सभाका स्थापन करेंगे।

७—कुछ समयसे दि० जैन खण्डेलवाल, पद्मावती पुरवाल, जैसवाल, परवार आदि कुछ जातिय समाओंने जन्म लिया है मैं उनका स्वागत करता हू और उन्हें परामर्श देता हू कि वे सभाओंका रूप और लम्बा चौडा ढाँचा धारण न करके प्राचीन प्रथाके अनुसार पंचायतोंका रूप धारण करें। नाम भी 'अपना खडेलवाल पचायत, पद्मावतीपुरवाल पंचायत, परवार पचायत, इस रूपसे रक्खें। इन पचायतोंका मुख्य कार्य यह होना चाहिये कि अपने पचायती बलसे महासभाके प्रस्तावोंको अपनी जातिमें कार्य रूप परिणत करें। जातीय कुरीतियोंकी एक सुची बनावें। और उन्हें दूर करनेका यत्न करें। तथा जातीय झगडे निबटावें। जन्म, मृत्यु और विवाहादि अवसरों पर जो अधिकतर लोग जातीय मान बडाईकी इच्छासे व्यर्थ व्यय कर रहे हैं, इन फिजूल खर्चियोंको रोकनेके लिये हरएक जातीय पचायतको अपनी जातिके रीति रस्मोंके अनुसार खर्चकी एक नियमावली बनानी चाहिये और जातीय बलसे लोगोंको बाध्य करना चाहिये कि कोई भी उससे अधिक खर्च न कर सके। इन सब जातीय पचायतोंको भी अपना सम्बन्ध महासभासे रखना चाहिये।

८—प्रिय बन्धुओ! समस्त उन्नतियोंका मूल शिक्षा है। उसके निमित्त हमारी समाजमें जो कुछ आयोजन चल रहा है उसके सुधार सम्बन्धमें मैं अपने विचार आपके समक्ष रखता हू—वर्तमानमें

विद्याप्रचारार्थ जितनी संस्थाएं चली रही हैं उन सबोंकी उन्नति महासभाको इष्ट है, परन्तु दि० जैन महाविद्यालयके साथ इसका विशेष सम्बन्ध है। उसकी अवनतिका उत्तरदायित्व महासभा पर निर्भर है। जिस उत्साह और स्कीमको लेकर यह महाविद्यालय स्थापित किया गया था आज २०-२२ वर्षोंके बाद भी सामान्य जैन पाठशालाकी भांति इसका कार्य देख कर नितान्त खेद होता है। महासभाके अनेक अंगोंमें यह प्रधान अंग है। ऐसे समयमें जब कि शिक्षा प्रचारकी आवश्यकता बहुत बढ़ी हुई है महाविद्यालयका कार्य-विस्तृतक्षेत्र, उत्तम स्टाफ, बहु संख्यक छात्र संख्या, विशाल छात्रावास प्रभृति कारण कलापों द्वारा समुन्नत अवस्थामें होना चाहिये। मुझे बतलाया गया है कि महाविद्यालयके प्रबन्धके लिये जो कमेटी बनाई गई थी उसने इस्तीफा दे दिया है। यदि ऐसी निराशाका स्थल हो गया है तो महाविद्यालयको किसी दूसरी संस्थाके साथ मिला देना ही उचित होगा। काशी स्याद्वाद महाविद्यालय और इसकी शिक्षा शैली एक है। इन दोनोंको मिलाया जा सक्ता है जैसा कि पूर्वमें भी हो चुका है। ऐसी अवस्थामें यह विचार होगा कि हमारा पुराना कार्यक्षेत्र और अंतिम केवली श्री जम्बूस्वामीकी पवित्र निर्वाण भूमि शिक्षालयसे खाली हो जायगी, तो उनके लिये मैं यह उपाय बतलाऊंगा कि ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम-हस्तिनापुरको-जो कि वहांकी जल वायुके ठीक न होनेके कारण स्थान परिवर्तन चाह रहा है, और समाजको जिसकी बिल्डिंगके लिये बहुतसा द्रव्य लगाना पड़ेगा उक्त चौरासीकी भूमि पर पहुंचाया जा सक्ता है।

९-आजकल जैन समाजमें ३-४ परीक्षालय काम कर रहे हैं, जिनमें बम्बई परीक्षालयके कार्य सुचारु रूपसे चलना कहा जा सक्ता है, परन्तु परीक्षालयकी अब भी बड़ी आवश्यकता है जिसका सम्बन्ध भारतकी समस्त दि० जैन संस्थाओंसे रहे। इसलिये महासभा द्वारा एक भारतवर्षीय दि० जैन परीक्षालय खोला जाय। वही परीक्षालय एक ऐसा पठनक्रम तैयार करें जो समस्त संस्थाओंके लिये उपयोगी पड़े। समस्त संस्थाएं उसी परीक्षालयके प्रमाण पत्र (सर्टीफिकेट)से अपने छात्रोंको प्रमाणभूत बनावें। उसीसे छात्रोंको उपाधियां दी जांय, और उसीकी योजनासे अध्यापक, उपदेशक, संस्कारक, सम्पादक तैयार किये जांय। इस कार्यको सम्पादन करनेके लिये मेरी सम्मतिसे उत्साही एवं विचारशील पुरुषोंकी एक कमेटी बनायी जानेकी आवश्यकता है।

१०-अब मैं उपदेशक विभागकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करूंगा। मुझे अधिकांश गावोंकी दशा देख सुन कर दुःख होता है, जहांके जैनी भाई जैन धर्मकी मोटी मोटी बातोंको भी नहीं जानते, यही कारण है कि कुछ, दूसरोंके मन्तव्योंके अनुयायी बनते जा रहे हैं। कुछ, जैन तत्वोंकी जानकारीके बिना धर्मकी उपेक्षा करते हुए समयकी गतिकी ओर खिंच रहे हैं। उन सबोंको जैन धर्मके मन्तव्य समझानेकी बड़ी जरूरत है। यह कार्य विद्वान् उपदेशकोंसे ही हो सक्ता है। इस लिये महासभाको इस विभागका कार्य भी सुचारू रूपमें लाना चाहिये। इसके लिये परीक्षालय द्वारा एक पठनक्रम उपदेशकी विभागका निर्धारित होना चाहिये। और विद्यालयमें उसकी कक्षा खुलनी

हिये। इस आयोजनसे अच्छी संख्यामें योग्य उपदेशकों की प्राप्ति हो सकेगी।

११–समाजमें एक ऐसे फण्डकी भी आवश्यकता है जिससे शिल्प, विज्ञान, कृषि, वैद्यक, कलाकौशल्य विषयोंके सार्वजनिक शिक्षालयोंमें पढनेवाले असमर्थ जैन छात्रोंको छात्रवृत्तियां दी जांय। क्योंकि हमारी समाज भिन्न २ विषयोंकी अपनी स्वतन्त्र संस्थाएं नहीं खोल सक्ती। छात्रवृत्तियां तीन रूपसे दी जानी चाहिये (१) बिना किसी अपेक्षाके सहायता रूपमें यों ही दी जाय। (२) ऋणरूपमें दीजाय, पीछे आजीविकामें लग जानेपर उनसे बिना व्याजके वह द्रव्य वसूल कर लिया जाय। (३) जिस छात्रको छात्रवृत्ति दीजाय उससे वहांकी पंचायतकी मारफत एक ऐसा प्रतिज्ञापत्र लिखा लिया जाय कि वह भी समर्थ होने पर कमसे कम इतनी ही एक छात्रवृत्ति किसी जैन छात्रको अवश्य देवे।

१२–आजकल समाजमें जहां तहां नवीन २ संस्थाओंका उद्घाटन होता जाता है। जिसके जीमें आता है वह अपनी ढाई चांवलकी खिचड़ी अलग ही पकाता है। प्रायः सभी संस्थाएं अपने खर्चके लिये समाजसे अपील करती हैं। इनको पुष्ट करनेसे पहले मैं आपको सलाह दूंगा कि आप उनके संचालकोंकी प्रमाणता और उनके उद्देश्योंकी जांच कर लिया करें। ऐसा न होनेसे मैं देख रहा हूं कतिपय स्थानोंपर भोले समाजके बहुतसे पैसेका दुरुपयोग हो रहा है। इससे एक हानि यह भी होती है कि जो संस्थाएं वास्तवमें लाभ पहुंचा रही हैं, उनपरसे भी लोगोंका विश्वास उठ जाता है, और उन्हें पूरी सहायता नहीं मिल पाती। प्रत्येक व्यक्तिके लिये यह भी कठिन होगा कि पृथक् पृथक् ऐसी संस्थाओंकी जांच करे। इसकी सुलभ रीति यह होगी कि हर एक संस्थापक अपनी संस्थाकी प्रमाणताके लिये महासभासे एक प्रमाणपत्र प्राप्त करे।

१३–जैन साहित्य प्रकाश और उसका प्रचार भी जैन धर्मकी उन्नतिमें परम सहायक है। इस लिये उसकी रक्षा और वृद्धि करना हमारे लिये अत्यावश्यक है। यहां पर मुझे जैन साहित्य ग्रन्थोंका महत्व बतलानेका अवकाश नहीं है। जिन विद्वानोंने जैन साहित्य ग्रन्थोंका अवलोकन किया है वे आज उनका गुण गान कर रहे हैं। भारतके प्रसिद्ध एवं प्रखर दार्शनिक विद्वान् महामहोपाध्याय रामभिश्र शास्त्री, अम्बादास शास्त्री, डा० सतीशचन्द्र विद्याभूषण पी० एच० डी०, डा० आनंद ध्रुव एम० ए० प्रभृति विद्वानोंके सिवा पाश्चिमात्य देशोंमें भी जो जैन धर्मका महत्व फैला हुआ है वह सब जैन साहित्यका ही प्रभाव है। डा० हर्मन जैकोबी, मि० हर्बर्ट वारन आदि प्रसिद्ध विद्वानोंके सिवा अभी हालमें डा० थामसने जैन धर्मके विषयमें बड़े महत्वके विचार प्रगट किये हैं। डाक्टर साहब स्वामी कुंदकुंदाचार्य विरचित प्रवचनसारका इंगलिश अनुवाद करके भारतमें अपने साथ लाये हैं। वे चाहते हैं कि छपनेसे पहले उसका जैन विद्वानोंसे संशोधन करा लिया जाय। जैन साहित्यके विशेष ग्रन्थ और जैन विद्वानोंसे विशेष तत्वोंके जाननेकी उनकी उत्कट अभिलाषा है। मैं यह बात बड़े गौरवके साथ कहूंगा कि निःसन्देह तत्ववेत्ता जैन धर्मसे ही आत्माका सच्चा हित समझते हैं। कर्म सिद्धांत, जीव सिद्धांत, भाव विवे-

चना, व्रक्षा क्रमसे चारित्र निरूपणा आदि जैन धर्मके सभी अंगोंका यदि प्रचार किया जाय तो जैन धर्मसे जगतकी बहु भाग जनताका हित हो सक्ता है। परन्तु जितना साहित्य आज हमारे सामने उपलब्ध है वह अभी अपर्याप्त है। परम पूज्य जैनाचार्योंकी अभी बहुतसी कृति यत्र तत्र भण्डारोंमें छिपी हुई है। ईडर, नागौर आदि स्थानोंमें अनेक उत्तम ग्रन्थोंका भण्डार है। उन सब ग्रन्थोंको प्रकाशमें लानेकी बडी जरूरत है। यदि ये ग्रंथ प्रकाशमें न आये तो बडे दुःखका विषय होगा कि बहुतसे अमूल्य तत्त्व रत्न यों ही नष्ट भ्रष्ट हो जायगे। फिर तो आचार्योंकी कृतिके लोपसे हमारा विनय भाव कहा तक बडा हुआ एव प्रशंसनीय समझा जायगा इसे आप लोग ही सोचें। (यहा आपने आरानिवासी कुमार देवेंद्रप्रसादकी हृदयद्रावक आकस्मिक मृत्युके लिये अपना हार्दिक शोक प्रगट करके आपकी साहित्य सेवा की अतीव प्रशसा की थी।)

इसी साहित्यके प्रचारसम्बन्धमें आज महासभाके प्लेटफार्म पर मुझे यह बात कहते हुए संकोच नहीं होता कि ग्रन्थोंका मुद्रण भी साहित्य प्रचारमें बहुत कुछ सहायक बना है। जो महानुभाव छापेके विरोधी रहे हैं उनका विरोध करना विनय दृष्टिसे अनुचित नहीं कहा जा सक्ता। परन्तु उसके द्वारा बहुत बडा लाभ होता हुआ देखकर अब उनका विरोध नहीं रहा है जिनके अब भी कुछ रोष हैं उन्हें मैं उसे दूर करनेकी सलाह देता हूं। विरोध करनेवाले सज्जन साहित्य प्रचार और अन्तरग विनय भावोंका यदि अपने विरोधके साथ तुलनात्मक पद्धतिसे विचार करेंगे तो उनके विरोधका पलडा न गण्य होगा। यहा पर मुझ महासभाके उस प्रस्तावका उल्लेख कर देना जरूरी है जो छापे हुए जैन ग्रन्थोंके निषेधसे सम्बन्ध रखता है। यह प्रस्ताव सम्वत् १९५६ में पास हुआ था। उस समय जैन ग्रंथोंका छपना प्रारंभ ही हुआ था, और शायद यह सोचा गया था कि वह इस प्रकारकी कार्रवाहियों द्वारा रुक जायगा, परन्तु ऐसा नहीं हो सका, और प्रस्ताव पूर्ण रूपसे असफल रहा।

अब जब कि छपे हुए ग्रन्थोंका आम तौरसे खुला प्रचार हो गया है। सर्वार्थसिद्धि, राजवार्तिक, श्लोकवार्तिक, अष्टसहस्री, प्रमेयकमलमार्तण्ड, पंचाध्यायी, समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, गोम्मटसारादि जैसे बडे बडे और महान् ग्रंथ भी छप चुके हैं। अच्छे अच्छे विद्वान् पंडित लोग ग्रंथोंके छपानेका कार्य कर रहे हैं। कुछ सेठ लोग भी ग्रंथोंके उद्धारमें लगे हुए हैं। माणिकचन्द ग्रंथमाला, अनन्तकीर्ति ग्रन्थमाला, जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय-बम्बई, जैन सिद्धांत प्रकाशिनी सस्था कलकत्ता, दी सेंट्रल जैन पबलिशिंग हाउस आरा आदि कितनी ही संस्थाऐं ग्रंथोंको छपा कर उनका उद्धार कर रही हैं, मंदिरों तकमें छपे ग्रन्थ विराजमान किये जाते हैं, लोग प्रेमसे उन्हें पढते, खरीदते तथा वितरण करते हैं। और इस समय महासभाके साहित्य प्रदर्शनमें भी उनका एक अलग विभाग रक्खा गया है। तब ग्रन्थोंके छपाने और छपे ग्रन्थोंको पढने तथा खरीदनेके निषेध सम्बन्धी उक्त प्रस्तावको स्थिर रखनेका कुछ भी अर्थ नहीं रहता। उलटा सुननेवालोंके लिये यह एक हास्यका विषय बन

जाता है। और उससे महासभाके गौरवको धक्का पहुंचता है। इसलिये मेरी सम्मतिमें वह प्रस्ताव अब अनावश्यक और अव्यवहरणीय समझा जाकर रद्द किया जाना चाहिये।

१४—जैन इतिहास भी जैन धर्मके गौरवका प्रधान चिन्ह है। जैनधर्म और जैनियोंके महत्वका परिचय जैन पुरातत्वोंके अनुसंधानसे बहुत कुछ मिल सक्ता है। अभी तक जैनियोंका पुरातत्व इतस्ततः पड़ा हुआ है। प्राचीन पर्वत, गुफाऐं, प्राचीन मंदिर, ताम्रपात्र, शिलालेख, प्राचीन किले आदि बातोंके अनुसंधानसे जैनियोंका कितना साम्राज्य कहां रहा है, जैन धर्मका कितना प्रचार तथा प्रभाव था, इन सब बातोंका परिचय अच्छा मिल सक्ता है। कौन आचार्य कब हुए, उन्होंने किन २ ग्रन्थोंकी कब रचना की, ये बातें भी उसी विभागसे सम्बन्ध रखती हैं। इसलिये ऐसी खोजके लिये एक पुरातत्व विभाग भी आवश्यक है। यह विषय कितने महत्वका है इसका कुछ दिग्दर्शन यहांकी प्रदर्शिनीके उस विभागके देखनेसे हो सक्ता है।

१५—तीर्थक्षेत्र कमेटीकी स्थापनासे यद्यपि कुछ तीर्थोंकी सुव्यवस्था हुई है। परन्तु अधिकांश स्थलोंमें मंदिरोंके हिसाबकी जो गोलमाल हो रही है उसकी अभीतक कोई व्यवस्था नहीं हुई है। यह लिखते हुए हृदय क्षुब्ध हो उठता है कि कतिपय स्थानोंके भाई मंदिरोंका द्रव्य हड़पनेमें संकोच नहीं करते। ऐसे लोगोंने मंदिरों और तीर्थोंको अपनी जागीर बना रक्खा है। ऐसे लोगोंके साथ समाजको सख्त व्यवहार करना चाहिये। इस विषयमें आपको तीन बातें बतलाऊंगा—हर मंदिर व तीर्थका हिसाब प्रतिवर्ष ता० क्षेत्र कमेटीको भेजा जाय। स्थानीय मंदिर प्रबन्धकर्ता कई कई पुश्तोंतक वे ही न रहें प्रति तीसरे वर्ष बदलते रहने चाहिये। स्थानीय झगडे भी इन्हीं मंदिरोंके हिसाबकी लत होते हैं। और पवित्र पर्व अनन्त चतुर्दशी कलह चतुर्दशी बनाई जाती है। तीर्थक्षेत्र कमेटीको कुछ आडीटर (हिसाब निरीक्षक) नियत करने चाहिये, जो कि भ्रमण कर मंदिरों व तीर्थोंके हिसाबकी जांच करते रहें।

आजकल मंदिरोंका रुपया पूजन, उपकरण और इमारतके काममें ही लगता है। जिन मंदिरोंमें अधिक रुपया हो उन्हें अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाना चाहिये। उस द्रव्यको जीर्ण ग्रन्थोंकी प्रतिलिपि कराने, जहां जो ग्रन्थ नहीं हैं वहां उन्हें मंगा स्थानीय सरस्वती भवनकी वृद्धि कराने, तथा अन्य स्थानोंके मंदिरोंके जीर्णोद्धार करानेमें जहां आवश्यकता हो लगा देना चाहिये। एक मंदिरका रुपया दूसरे मंदिर कार्यमें लगाना शास्त्र विरुद्ध नहीं है। जिन स्थानोंमें जैनियोंका निवास है परन्तु भाइयोंकी असमर्थता के कारण मंदिर नहीं बन सका है, वहां अधिकांश रुपयेवाले मंदिरोंको वहां मंदिर बनवा देना चाहिये।

मुझे अवसर पाकर यह भी कहना पड़ेगा जिस समय यह तीर्थक्षेत्र कमेटी बनाई गई थी वह उस समयको सामने रखते हुए बनाई गई थी। अब उसका पुनः संशोधन करनेकी आवश्यकता हो गई है। कार्यकी सुविधाके लिये यह भी उचित मालूम पड़ता है कि तीर्थक्षेत्र कमेटीके अन्तर्गत ७ उत्साही सज्जनोंकी एक कार्यकारिणी कमेटी बना दी जाय।

१६—तीर्थ सम्बन्धी झगड़ोंको भी मैं नहीं भूल सक्ता। उस विषयमें भी मुझे कुछ कहना है। हम लोग परस्परकी लडाईसे अनैक्य, धनहानि, समयका दुरुपयोग और अशांति आदि बहुत कुछ ... उठा चुके हैं। अब जैसा कि दोनों सम्प्रदायोंके प्रधान पुरुषोंने तीर्थ सम्बन्धी झगड़ोंका परस्पर निबटारा करनेका संकल्प कर लिया है, और जितना जल्दी हो सके पूरा करना चाहिये। हर्षका विषय होता कि यदि आज मुझे इस समयमें यह कहनेका सुअवसर प्राप्त होता कि हमारे दोनों भाइयोंने बड़ी शांतिके साथ तीर्थ सम्बन्धी झगड़ोंका अंत कर दिया, और परस्पर गले मिल लिये। खेद है कि श्वेतांबर भाइयोंकी पिछली ... ने हम लोगोंको निराश सा कर दिया है। ... समय पर एक निश्चित विचारके बदलनेमें उसका क्या रहस्य है? इन सकल्प विकल्पोंको भूला कर आप लोग कुछ काल और प्रतीक्षा करें। हमारे श्वेतांबर भाइयोंने फिर वचन दिया है कि चार मास पीछे पूरी सफलताकी चेष्टा की जायगी। उक्त सभाके प्रमुख श्रीमान् महाराज बहादुरसिंहजी, रायकुमारसिंहजी, और मोतीचंदजी नखतजी ओरसे गत माघ सुदी ९ वींको यह विज्ञप्ति समाचारपत्रोंमें प्रगट हो चुकी है कि कलकत्तेमें होनेवाली कानफ्रेंसको ४ मासके लिये स्थगित करनेके पीछे स्थायी शांति, और सम्पूर्ण समाजकी ... के लिये सब स्थानोंके सब तीर्थोंके टंटोंको परस्पर मिटा डालनेकी शुभ योजना की जायगी। श्वेताम्बर सज्जनोंकी उक्त विज्ञप्तिसे मुझे आशा होती है कि अब झगड़ोंका अंत और पारस्परिक शान्ति होनेमें कुछ विलम्ब नहीं है। मुझे अपने दिगम्बर भाइयोंसे भी आग्रह पूर्वक कहना है कि वे भी अब पिछली सब बातोंको भूलाकर झगडोंको परस्पर मिटाने और मेल मिलाप बढानेके लिये सच्चे हृदयसे तयार रहें। मेरी यह भी सम्मति है कि महासभा ग्यारह महाशयोंकी एक कमेटी नियत करे, जिसको तीर्थ सम्बन्धी फैसलेका पूर्ण अधिकार दिया जाय।

१७—प्रतिनिधिगण! महासभाको स्थापित हुए पचीस वर्षका समय होता है। परन्तु अभी तक इसके द्वारा जैसी कुछ उन्नति और सफलता होनी चाहिये था वह नहीं हुई। इसका मुख्य कारण यही है, सभाके प्रस्ताव प्राय कागजोंमें ही रक्खे रहते हैं, और उन्हें अमली जामा बहुत कम पहनाया जाता है। प्रस्तावोंको असली सूरत देनेका सबसे पहला कर्तव्य सभाके सभासदों और कार्यकर्ताओंका होता है। यदि ये ही लोग अमल नहीं करते तो साधारण जनतासे उन पर अमलकी कोई आशा नहीं की जासक्ती। जहां तक मुझे मालूम है उन लोगोंके द्वारा महासभाके प्रस्तावों पर बहुत कम अमल हुआ है। और यही वास्तवमें उन्नतिके न होने अथवा असफलताका रहस्य है। कुरीतियोंको दूर करनेके कितने ही उपयोगी प्रस्ताव सभीसे हर साल पास होते रहे हैं, यदि उन पर अमल होता तो आज समाज उन सम्पूर्ण कुरीतियोंसे बहुत कुछ मुक्त हो जाता जिन्होंने उसके शरीरको बहुत कुछ जर्जरित बना रक्खा है। इसके लिये महासभामें एक ऐसे खास नियमके होनेकी बहुत बडी जरूरत है, जिसके अनुसार वे ही लोग महासभाके कार्यकर्ता और सभासद रह सकें जो उसके

प्रस्तावों पर पूरी तौरसे अमल करते हों, चाहे वे प्रस्ताव उनकी इच्छा और विचारके अनुकूल हों या प्रतिकूल। जब तक ऐसा नियम बनाकर दृढ़ताके साथ उसका पालन नहीं कराया जायगा तब तक बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय जैसी समाजमें घरी और भयानक हानियां पहुंचानेवाली कुरीतियां दूर नहीं हो सक्तीं। इन कुरीतियोंसे जो कुछ कटुक फल पैदा हो रहे हैं उनका समाज स्वयं आस्वादन कर रहा है। मैं उनका कथन करके आप लोगोंका समय नहीं लेना चाहता। विवाहके समय कन्याकी कमसे कम १३ वर्ष और वरकी कमसे कम १७ वर्ष अवस्था होनी चाहिये। विवाहके एक वर्ष अथवा तीन वर्ष पीछे जो गोना (द्विरागमन)की पद्धति चली आ रही है उसे उठा देना चाहिये। दूसरी बात यह है कि ४० वर्षसे ऊपर कोई पुरुष अपना विवाह न कर सके। जो लोग कन्या विक्रय करते हैं उन्हें इस घृणित प्रथासे रोकनेके लिये पूरी शक्तिसे काम लेना चाहिये। मुझे आशा रखनी चाहिये कि, इस वर्ष इस प्रस्ताव पर पूरा अमल किया जायगा, और आगामी अधिवेशनके सभापतिको इस विषयमें समाजको बधाई देनेका सुअवसर प्राप्त होगा।

१८-मेरी बहनो! दो बातें, विशेष रूपसे मैं आपसे कहना चाहता हूं-यह बात निर्विवाद है कि गृह देवियोंका सुव्यवस्था ही गृहस्थ जीवनको समुज्वल और समुन्नत बना सक्ता है। जिन घरोंमें सुशील एवं विवेक रखनेवाली स्त्रियां हैं उन्हींमें पात्र दान, उत्तम आचार विचार, मर्यादित शुद्ध भोजन, वैयावृत्य, मितव्ययिता, कुल मर्यादा आदि बातें पाई जाती हैं। जहां स्त्रियोंमें .. नहीं है वहां उपर्युक्त सभी बातोंमें हीनता पायी जाती है। इस लिये स्त्रियोंको सुशिक्षिताएं बननेकी बड़ी जरूरत है। सुशिक्षित माताएं ही सन्तानको सुशिक्षित एवं होनहार आदर्श बना सक्ती हैं। मुझे भरोसा है कि यदि स्त्री समाज, समाजमें फैली हुई कुरीतियोंको दूर करनेका पूरा प्रयत्न करे, तो उनका नामशेष भी न रहे। बालविवाह, कन्याविक्रय, ये दो बातें ऐसी हैं जिनका संबंध स्त्रियोंसे अधिक है। यदि वे इन भयानक कुरीतियोंको न होने देनेका हट पकड़ लें तो समाजसे ये कुरीतियां जल्दी दूर .. सक्ती हैं।

स्त्री समाजमें जो अभी तक मिथ्यात्व वर्धक अनेक कुरीतियां फैली हुई हैं, महिला परिषद् द्वारा उन सबकी एक सूची बनवा कर उन्हें दूर करनेका यत्न करें।

बहनों! एक बात मैं आपसे और भी कहे देता हूं-कुछ दिनोंसे हमारी समाजमें कुछ लोगोंने विधवा विवाहका प्रश्न उठा दिया है। मैं यह अच्छी तरह जानता हूं कि हमारी बहनें इस विषयको घृणाकी दृष्टिसे देखती हैं, पातिव्रत्य धर्मके महत्वको पूर्ण रीतिसे जानती हैं। ..आर्य.. आदर्शों पर पूर्ण विश्वास रखती हैं। .. .. पवित्र कर्तव्योंको पहचानती हैं। कुल मर्यादामें रह कर अपना मस्तक उन्नत रखनेका अभिमान रखती हैं। और अपने पवित्र जीवनको पुनर्विवाहके पापसे कलंकित कर स्वप्नमें भी घृणित बनाना नहीं चाहतीं। इन सब बातोंको जानते हुए मैं आपसे आशा करता हूं कि आप यहां होनेवाले

रक्खा जावे। यह सब रुपया भी सुरक्षित रहेगा और इसके द्वारा जैन व्यापारियोंको व्यापार वृद्धिमें बड़ी सहायता मिलेगी।

२१-मैं अपने नवयुवकोंको-उनके हितकी एक बात और समझाऊंगा, मुझे उनसे शिकायत है कि वे आजकल भिन्न २ आन्दोलनोंमें पड़कर अपने सच्चे धर्मकी श्रद्धा और धार्मिक मर्यादाको ढीला कर रहे हैं। जैन जनता-जिसे आज मैं इस बृहत् अधिवेशनमें देख रहा हूं भारतकी अग्रवाल, परवार, पद्मावती पुरवाल, हूमड़, चतुर्थ, पञ्चम आदि अनेक जातियोंका समुदाय है। इन सब जातियोंका पारस्परिक व्यवहार जुदा २ है। इस प्रकार व्यवहार भेद होनेपर भी सबका एक प्लेट फार्म पर एकत्रित होना किसी असाधारण विशेषताका सूचक है। इन सब जातियोंमें वह असाधारण विशेषता क्या है? वह है जैनधर्म, जो सब जातियोंमें व्यापक है और जिसने इन सब जातियोंको एक सूत्रमें बांध रखा है। उसी जैन धर्मकी श्रद्धा और चरित्रको ढीला करके आप अपने समाजके प्राणको ढीला कर रहे हैं। जो हमारे जैनियोंके मोटे चिन्ह हैं, जैसे-देव दर्शन, रात्रिभोजन त्याग, छना जलपान इन्हें पाश्चिमात्य शिक्षासे प्रभावित होकर कुछ लोग फिजूल समझने लगे हैं। एक ओर हम पाश्चिमात्य शिक्षाके औगुण दिखते हैं, दूसरी ओर उसके प्रवाहमें बह रहे हैं। यह एक दु:खकी बात है। मैं अपने नवयुवकोंको अपने अनुभवसे सलाह देता हूं कि वे आर्ष प्रणीत जैन धर्म पर श्रद्धान दृढ़ रक्खें, नित्य प्रति जिन मंदिर जावें, खान पान शुद्ध रक्खें, नख शुद्धि पर ध्यान रक्खें, संयमी बनें, अपने व्या व व्यवहारमें सचाई रक्खें, इन बातोंमें बड़ा ... है, और जैनियोंका गौरव है। इनको फिजूल न समझें। इस छोटेसे भाषणमें इस सम्बन्धमें विशेष बतलानेके लिये मुझे अवसर नहीं है।

२२-धर्मवत्सल बन्धुओ! ऊपरसे सम्बन्ध रखता हुआ मैं एक और विषय आपके रखना चाहता हूं-कुछ समयसे समाजमें यह आन्दोलन मच रहा है कि सत्योदय और जाति प्रबोधक नामके दो पत्रोंका बहिष्कार कर दिया जावे, ये दोनों पत्र जैन धर्मको केवल रूपान्तर ही करना नहीं चाहते, किन्तु उसे जड़मूलसे उखाड़ना चाहते हैं। मैं चाहता था कि ये दोनों पत्र अपनी नीति बदल दें और इस महासभाके मंचपर मुझे उनके विरुद्ध कुछ कहना न पड़े, परन्तु मामला आशातीत हो गया है। इनकी सहायता करना और अपने धर्मकी निंदा सुनना हमें अब सहन नहीं हो सक्ता। हमें अब इन पत्रोंको न खरीदने और न पढ़नेकी दृढ़ प्रतिज्ञा करनी चाहिये। खण्डनके अभिप्रायसे भी न लेना चाहिये। यदि आप पूरा बहिष्कार करेंगे तो परिणाम यह होगा कि ये दोनों पत्र शीघ्र बंद हो जावेंगे। हमारी दिगम्बर जैन समाजमें समाचार पत्रोंकी कमी नहीं है। ... समय लगभग १५ पत्र और निकल रहे हैं उनसे लाभ उठाना चाहिये।

२३-अपने स्थान पर बैठनेसे पहले मैं इस बातको भूला नहीं हूं-

"न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति"

स्वागतकारिणी कमेटीने महासभाको निमन्त्रित

करके हार्दिक अनुराग पूर्वक जैन बांधवोंको आह्वान किया है, विशेष आयोजनके साथ इस अधिवेशनको सफल बनानेके लिये परिश्रम उठाया है। अधिवेशनकी सफलता कार्योंकी सफलता पर निर्भर है। यहांका यह अधिवेशन कैसा हुआ, इसका ज्ञान आगे चल कर उसकी समाप्ति पर होगा, परन्तु स्वागत कारिणी कमेटीने अधिवेशनको प्रभावशाली बनानेमें तथा आगतोंके स्वागत करनेमें कोई बात उठा नहीं रक्खी है। इसके उपलक्ष्यमें मैं अपने शुद्धान्तःकरणसे स्वागतकारिणी कमेटीके सभापति महोदय अन्य कार्याध्यक्ष और समस्त कमेटीका आभार मानता हूं, और उन्हें धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूं।

जैन साहित्यका महत्त्व प्रदर्शन करनेके अभिप्रायसे जो यहां जैन साहित्य प्रदर्शिनी खोली गई है, उसके सम्बन्धमें वैद्यराज कन्हैयालालजी विशेष धन्यवादके पात्र हैं, जिन्होंने प्रदर्शिनीको सर्वांगसुन्दर बनानेके लिये अनेक नगरोंमें भ्रमण कर श्रम उठाया है।

महानुभावो! आज आपका बहुत सा अमूल्य समय मैंने लिया है इसके लिये मैं आपसे क्षमा प्रार्थी हूं। मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा यदि आप मेरे विचारोंसे लाभ उठावेंगे।

व्याख्यान

ला० रामस्वरूपजी सभापति, स्वागत कमेटी २८वां अधिवेशन, भा० दि० जैन महासभा, कानपुर,

श्रीमन् महोदय साहू सुमेरचन्द्रजी तथा प्रतिनिधि गण, बहनों और भाईयो!

कानपुरके जैन समाजकी ओरसे और विशेष कर स्वागत कारिणी समितिकी ओरसे, मैं आप माननीयोंका बडे प्रेम तथा उत्साहके साथ हार्दिक स्वागत करता हूं, तथा श्री भारत वर्षीय दिगम्बर जैन महासभा और आप महानुभावोंके प्रति इस बातके लिये कृतज्ञता प्रगट करता हूं, कि आप सज्जनोंने इतनी उदारताके साथ अनेक असुविधाओंको अधिक न गिनते हुए इस उत्सवके निमन्त्रण दाताके नम्र निवेदनको स्वीकार किया और श्री महासभाके इस अधिवेशनमें सम्मिलित होकर हमको कृतार्थ किया।

महाशय गण, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं, कि आप लोगोंके विश्राम तथा अन्य बातोंके लिये योग्य प्रबंध करनेमें अनेक त्रुटियां रह गई हैं और आप लोगोंके लिये जैसा चाहिये वैसा प्रबन्ध भी हमसे न होसका। इन त्रुटियोंके लिए मैं आप सज्जनोंसे क्षमा मांगनेका साहस करता हूं।

कानपुर शहरमें जैनी भाइयोंकी संख्या भी कुछ अधिक नहीं, फिर ये छोटा समुदाय कुबेर भगवानका कुछ विशेष कृपा पात्र भी नहीं, तिस पर भी मैं आप महानुभावोंको विश्वास दिलाता हु कि उनके हृदयमें प्रेमकी कमी नहीं

है। मुझे आशा है कि इन्हीं बातोंको ध्यानमें लाकर आप महानुभाव हमें इन त्रुटियोंके निमित्त क्षमा प्रदान करेंगे।

जब मैं इस बातको ध्यानमें लाता हूं, कि अपने प्राचीन, पवित्र धर्म तथा अपने जातिके हार्दिक प्रेमसे ही प्रेरित होकर आप सर्व महाशय यहाँ उपस्थित हुये हैं, तब मुझको विश्वास होता है कि आप हमारी त्रुटियोंकी ओर ध्यान न देंगे। किंतु जिस कार्यके हेतु आप सर्व सज्जन एकत्रित हुये हैं उसके पूर्ण करनेमें सहायक होंगे।

प्रिय प्रतिनिधि गण ? मैं अपने लिये एक बड़े सौभाग्यकी बात समझता हूं, और इस बातको बड़े गौरवका कारण मानता हूं, कि आप महानुभावोंका स्वागत व सेवा सन्मान मुझको प्राप्त हुवा।

जैन समाजके लिये बड़े दुःखकी बात है कि हमारे समाजके एक होनहार युवककी अभी हालहीमें मृत्यु हो गई। देशमें कोई भी ऐसा हिन्दी-भाषाभाषी न होगा जिसने आराके सुप्रसिद्ध रईस और उत्साही साहित्यसेवी कुमार श्री देवेन्द्रप्रसाद जैनका नाम न सुना हो। शोक है कि आज वे संसारमें नहीं हैं। हम लोग उनके कुटुम्बके प्रति समवेदना तथा उनकी आत्माकी शांतिके लिये प्रार्थना करनेके सिवा और क्या कर सकते हैं!

जैन समाज और सार्वजनिक जीवन।

सज्जनों! महासभाको स्थापित हुये २९ वर्ष हो गये। इन २९ वर्षोंमें संसार तथा देशमें अनेक परिवर्तन हुये, नये विचारों तथा नये आदर्शोंने संसारको सोती हुई अवस्थासे जगा दिया। हमारे देशके जातीय जीवनमें एक गहरा परिवर्तन हुवा। जैन समाज इन परिवर्तनोंसे अपनेको किंचित् मात्र भी विलग नहीं रख सक्ता। यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम लोग भी अपने इन पचीस वर्षके इतिहासको उलटें और देखें, कि कहां तक हम लोग अपने निश्चित उद्देश्योंमें पूर्णतया सफल हुये हैं, और कहां तक अपने देशके सार्वजनिक जीवनके प्रति अपने स्वाभाविक कर्तव्यको पूर्ण कर सके हैं। हम लोगोंका दावा है कि हम इस पवित्र भारतवर्षके प्राचीन निवासी हैं, हमारा धर्म लोक प्रचलित सभी धर्मोंसे प्राचीन तथा अनादि कालसे चला आनेवाला धर्म है, साथ ही हमारे सभी पूजनीय तीर्थंकर और ऋषि मुनियोंने इसी भूमि पर जन्म लिया था। क्या इन महत्वपूर्ण अमिट बातोंको ध्यानमें रखते हुये हमारा यह कर्तव्य भी नहीं है कि हम अपनेको उन पूर्वजों ... उस पवित्र धर्मके योग्य बनावें? और भारतीय राष्ट्रके अन्तर्गत अपने उचित स्थानको प्राप्त करें? पूर्वीय और पाश्चात्य सभी देशोंके तत्त्वदर्शी आत्माओंका अनुभव है कि ... सभ्यता और वर्तमान संसारके सभी ... मूल स्वार्थ ही है। स्वार्थ हीके वशीभूत होकर समाजका एक अंश दूसरे अंश पर, संसारका एक देश दूसरे देश पर, और एक जातिके दूसरी जातिके लोग पर अत्याचार करनेको ... हो जाते हैं। क्या "अहिंसा परमो धर्मः

सरीखे पवित्र महावाक्यके अनुयायी जैन समाजका यह कर्तव्य नहीं, कि अपने धर्मकी पवित्र प्रभाके प्रकाशसे, संसारसे इस दुष्ट स्वार्थ धारणाको दूर करनेकी चेष्टा करे ?

सज्जनों ! अब केवल धर्म भीरुता, देशप्रेम, राजभक्तिकी मौखिक दुहाई देनेका समय नहीं रहा—बल्कि अब इस बातकी आवश्यकता है कि कार्य रूपसे जैन समाज अपने धर्म प्रेम, देश-भक्ति, राज भक्तिका परिचय दे। इस देशके प्राचीन निवासी और संसारके सबसे प्राचीन धर्मके अनुयायी होनेके नाते यह हमारा कर्तव्य और अधिकार भी है, कि हम भारतवर्षको संसारके अन्य राष्ट्रोंके साथ २ ऊंचे आसनों पर बिठानेके हेतु सहायक बनें। और इस भांति भारतवर्षकी अध्यात्मिकताके द्वारा संसारके अनेक कष्टोंको दूर करनेमें सफल हों। राजनीति, समाजनीति, शिक्षानीति कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं, जिसके संस्कार और पुनरुद्धारमें जैन धर्म, जैन साहित्य और जैन सभ्यता सहायक न हो सके। और यदि यह सहायता हम न दे सके, तो हम स्वयं अपनी आत्माके सन्मुख अपराधी सिद्ध होंगे और अपने कर्तव्य पथसे गिरे हुये समझे जांयगे।

देशका व्यापार।

कोई देश और कोई जाति बिना व्यापारके सुखी और समृद्धशाली नहीं रह सकती। हमारी जातिके विषयमें भी यह बात ठीक लागू है। हमारा व्यापार सच पूछिये तो सर्वथा गैरोंके हाथमें है। हमारे देशके व्यापारी तो वास्तवमें दलाल सरीखे हैं। यहांसे कच्चा माल विदेशको भिजवाना और वहांका बना माल मँगाकर बेचना, केवल इतनेहीमें हमारा व्यापार परिमित है। मैं यह नहीं कहता कि मालका हेर फेर होही नहीं सक्ता परन्तु तौभी जिस देशके वैश्य अपनी सारी शक्तियां केवल दलालीमें नष्ट करते हैं, वह जाति आर्थिक उन्नति कदापि नहीं कर सक्ती। जैन समाज भी अधिकांश व्यापारी हैं। और लक्ष्मीदेवीकी इस समाजमें कुछ कृपा भी है। इसलिये देशके व्यापारकी असली उन्नति करनेमें जैन समाज बहुत कुछ प्रयत्न कर सक्ता है।

क्या मैं आशा करूं कि महासभा जैन समाजको देशमें सार्वजनिक जीवनमें अधिक उपयोगी बनाने तथा देशके व्यापारके उन्नतिके अर्थ सच्चे साधन इकट्ठा करनेकी ओर आप लोगोंका ध्यान आकर्षित करेगी ?

जैन साहित्य और शिक्षा।

यह कम सौभाग्यकी बात नहीं है, कि लगभग १० वर्षके अन्दर २ अनेक श्रद्धालु जैन विद्वानों तथा धनियोंका ध्यान जैन साहित्यके पुनरुद्धारकी ओर गया है। इन सज्जनोंके उद्योगसे जैन शास्त्रोंका प्रकाशन तथा प्रचार भी हो रहा है परन्तु तौभी अभी इस ओर सर्वथा सन्तोष जनक कार्य नहीं हुवा। यदि ये काम तनिक और श्रृङ्खलावत् होता और भिन्न प्रकाशक गण एक दूसरेसे सहयोग रखते हुये किसी पंडित परिषद्की अनुमति लेकर प्रकाशनका कार्य करते. तो यह कार्य अधिक [illegible]

बाल विवाहकी दुःखप्रद कहानी।

(लेखक-कवि शंकरलाल व्यास,-कसरावद)

१

प्रथम परिच्छेद।

रामलाल वृन्दावन वासी करते थे एक दिन आराम।
बैठी थी गृहिणी समीप ही छोड़ छांड़ घरका सब काम॥
कहने लगी मधुर वाणीसे विनय सुनो मोरी पति राम।
कन्या अपनी आठ सालकी क्वांरी है सो आती काम॥

२

व्याह योग्य होगई है कन्या अब कुछ उसका शोच करो।
प्राण पियारी पुत्रि अर्थ तुम शिघ्र हि वरकी खोज करो॥
क्या उसका वृद्धापकालमें लग्न करोगे तुम स्वामी।
उसे व्याहनेकी बुद्धि क्यों देता नहिं अन्तर्यामी॥

३

प्यारे वचन प्रियाके सुनकर बोला वह पुलकित हो गात।
समय उपस्थित होने पर ही की जावेगी उसकी बात॥
बिना समयके नहिं फलते हैं कदली जामुन बेर अनार।
लगे सुहावनि सब सुजनोंको व्याह समयमें ऐसी गार॥

४

दंत दूधके नहीं गिरे हैं बालि उमर हैं सुकुमारी।
कहो भला क्या समझे कन्या ब्याही हूं मैं या क्वारी॥
इसीलिये धीरज रखियो तुम चर्चा कुछ मैंने की है।
नाई पुरोहित युगल जनोंको पहिले ही सूचना दी है॥

५

वे अवश्य ही अल्प समयमें तलाश करके आवेंगे।
पुत्रि यशोदाका तब प्यारी शिघ्र ही व्याह रचावेंगे॥
इसी विषयकी चर्चा करते बैठे थे दम्पति घरमें।
आये तहां पुरोहितजी निज पोथी पत्र लिये करमें॥

६

प्रमुदित होकर उठे सेठजी प्रणाम कर बैठाये पास।
गरज पड़े पर धनी पुरुष भी निर्धनका हो जाता दास॥
लगे पूछने शिघ्र सेठजी कहो पुरोहित जी कुछ हाल।
कन्यादान करें ऐसा वर बता दीजिये अब तत्काल॥

७

शहर बनारसमें रोकड़मल एक सेठजी रहते थे।
चीन और जापान आदि देशोंमें वाणिज करते हैं॥
पुत्र रमेशचंद्र है उनका सुन्दरतामें चन्द्र समान।
उसको दीजे सुता तुम्हारी जो हैं रूपवती गुणवान॥

८

कहो पुरोहितजी लड़केकी वय होगी कितनी अनुमान।
बहुत बड़ा है या कन्यासे वह छोटा बिलकुल नादान॥
मान लीजिये एक साल वह कन्यासे छोटा होगा।
पर वह चंद दिनोंमें बढ़कर इससे भी मोटा होगा॥

९

गुण वर्णन कर गये पुरोहित अवगुण उसके निगल गये।
चिकनी चुपड़ी बातोंमें फप रामलाल भी पिघल गये॥
कहने लगे पुरोहितजीसे देख लीजिये पत्रा खोल।
कन्या वरके गण वर्गोंको मिला लीजिये काँटे तोल॥

१०

पंडितजी झट लगे खोजने ज्योतिषके पुस्तकको खोल।
उलट पलट कर लिये सफे कुछ करनी थी यों टालमटोल॥
है अनिष्ट कन्याको मंगल इससे हैं उसका नुकसान।
जाप जपा लीजे उसका तो निकल जाय दिलका अर्मान॥

११

लगे रुपैये जितने इसमें ले लो मुझसे आप अभी।
जपो जाप मंगलके जिहिं सो आवे नहिं संकट कभी॥
पुनि टीका लेकर तुम पहुंचो रोकड़मलजी ब्याही पास।
क्षमा कीजिये महाराज मारगमें जितने होवे त्रास॥

११

इतने सुनकर वचन सेठके लगे पुरोहितजी कहने।
देखे नहीं विश्वमें तुमसे उदार दिलके नर हमने॥
शिघ्र करूंगा कार्य आपका दिलमें अपने धार लिया।
लो बैठो अब जाता हूं मैं यों कह करके कूच किया॥

* * *

दूसरा परिच्छेद।

१२

गादी तकिये लगे हुए हैं एक बड़े गृहके अन्दर।
टहल रहे कोई लिखते हैं बैठे है नौकर चाकर॥
मध्य सभाके तोंद पसारे बैठे है गज राज समान।
सेठ हमारे कोटिध्वज हैं रोकड़मलजी यह मतिमान॥

१४

इतनेमें टीका लेकरके वही पुरोहित पहुंचे द्वार।
रोकड़मलजीने भी इनका खूब किया आदर सत्कार॥
कहो पुरोहित आज कृपा इस चाकर पर कैसी की है।
प्रभो वामन रूप बनाकर जिमि बलिसे पृथ्वी ली है॥

१५

वृन्दावनसे चलकर भाई पास तुम्हारे आया हूं।
रामलालजी कर कुछ नीनी एक संदेश मैं लाया हूं॥
एकुलती कन्या है उनकी चन्द्र तेज हरने वाली।
नयन काम शर वीणा वचनी चमक रही मुंहपर लाली॥

१६

उसे व्याहनेका प्रण करके द्वार आपके आया हूं।
पढ़ा लिखा होगा यदि लड़का तो टीका भी लाया हूं॥
रमेश मेरा बड़ा चतुर है बड़ाई उसकी नहि करता।
द्वितीय श्रेणीमें पढ़ता है वह पीछे पग नही धरता॥

१७

रमेश भी आ पहुंचा वहां पर जहां पुरोहित रहे बिराज।
तुतलाती बोलीसे बोले कैसे आये तुम महाराज॥

पास बुलाकर लगे पुरोहित उसे पूंछनेको यह बात।
पढी कहां लो विद्या तुमने और सीखने हो क्या बात॥
१८
ओनामा सिद्धं पढ कर अब सीदा पाटी पढ़ता हूँ।
इसके आगे बीडी पीना और पितासे लड़ता हूँ॥
हसने लगे पुरोहितजी उस बालककी सुन बानीको।
पिता रामने कैसी इसकी दांकी थी सैतानीको॥
१९
ऐसे बरसे क्या फल होगा जो कन्यासे है नादान।
कभी कपूत किसीको मत दे चाहे करदे नि सन्तान॥
काला अक्षर भैंस बराबर झूठ बोलते हैं दिनरात।
समय पडे पर ज्ञानी बनकर करे सभ्यताकी जो बात॥
२०
अपना बिस्तर बाँध पुरोहित लगे वहांसे चलनेको।
हम नहिं करते ब्याह इस तरह दावानलमें जलनेको॥
जान लिया रोकड़मलजीने पंडितजी तो रूठ गये।
अब कैसे समझावें इनको साधन भी सब छूट गये॥
२१
रही नहीं है कुछ भी युक्ती अब इनको समझानेकी।
एक मात्र पैसेकी लालच बाकी है बतलानेकी॥
खड़े हुए फांसी परसे भी पैसा ही लौटाता है।
पडी हुई फांसी पर भी हा! पैसा ही लटकाता है॥
२२
साधु महात्माओंका दर्शन पैसा ही करवाता है।
बीच हवेलीकी बीबीको पैसा ही पकडाता है॥
बूढे वरको छोटी कन्या पैसा ही दिलवाता है।
बच्चेमें युवती कन्याका पैसा खाट बढाता है॥
२३
घोर पाप है कन्याविक्रय वह पैसा करवाता है।
रिश्वत चौरी जारी करना पैसा ही सिखलाता है।
सास ससुर साहूकी संख्या पैसा ही बढ़वाता है।
गुप चुपकी बातें साखीसे पैसा ही करवाता है॥

२४

पैसेसे लजता जाते हैं पंडित हो चाहे धनवान ।
उठे सेठजी यों विचार कर अपने दिलमें कर अभिमान ॥
कहो पुरोहितजी क्यों हम पर इतने तुम नाराज हुए ।
बालककी बातें सुनकरके गुस्से क्यों महाराज हुए ॥

२५

मिरचीको मर जीरेको जर और सेठको सठ लिख ले ।
पढ़ा लिखा माना जाता है जो हममें इतना सिख ले ॥
भला एक म्यानमें छुरियां दो दो क्या रह सकती है ।
धन विद्या दोनोंका बोझा क्या आत्मा सह सकती है ॥

२६

है हममें जितनी विद्या बस उसमें ही संतोष करे ।
पड़े जरूरत विद्याकी तो शिघ्र ही व्यय धन कोष करे ॥
दो सहस्र मुद्रा लेकरके गुप्त बात रहने दीजे ।
टीका रख जाओ रमेशका पगड़ी औ सेला लीजे ॥

२७

टपकी लार पुरोहितजीकी मुद्राका सुनकरके नाम ।
विचार करने लगे मनहि मन उछलने अब कबले दाम ॥
दो सहस्र मुद्रा झट दे दो कहना नहीं किसीसे बात ।
यदि खुल जावे पोल हमारी तो चुत्ती पर लागे मात ॥

२८

जो भूदेव गिने जाते थे दुनियांमें सबके सिरताज ।
राजा तक चरणोंमें गिरकर कहते थे तुम हो महाराज ॥
आज उन्हींकी दशा देख लो दर २ मारे फिरते हैं ।
रुचे झूठे झगड़े करके अपना उदर भरते हैं ॥

२९

शेला पगड़ी और रुपये पाकर खुशी हुए महाराज ।
चले वहांसे आशिष देकर किये करो ऐसे शुभ काज ॥
फूलो फलो बढ़ो तुम दिन दिन जैसे बढ़ता है दिनमान ।
ऐसे गुप्त दान कर करके किया करो हमरा सन्मान ॥

* * *

तीसरा परिच्छेद।

१०

हरिगितिका।

बैठे हुए थे दम्पति आनंदसे निज गेहमें।
आये पुरोहित पाग सैला डालकर निज देहमें॥
आदर सहित बैठाय उनको पूंछते हैं प्रेमसे।
अब यह कृपा कह दीजिये टीका हुआ क्या क्षेमसे।

३१

सानन्द टीका दे आया हूं आपके दामादको।
सब पूर्ण करके ज्ञाति रीती रस्मकी मर्यादको॥
पुत्री यशोदाके लिये वर चन्द्रमा सा मिल गया।
मम प्रशंसा मैं करूंगा भाग्य उसका खिल गया॥

३२

उसकी बड़ाई एक मुंहसे कर नहीं सकता कभी।
ऐश्वर्य उसका कुछ समयमें दृष्टी आवेगा अभी॥
बस रामलाल सहर्ष होकर धन्यवाद ही कह उठा।
पर विदित किसको था कि जोड़ा ऊंट वर्षभका गठा॥

३३

अब हम कहेंगे विप्रकी करतूत दृष्टी आयगी।
तब अश्रुधारा युगल नेत्रोंसे बहाई जायगी॥
इन नारियोंके प्रेम रूपी मद्यमें वह चूर हो।
अट लग्न तिथि निश्चय करो कहने लगा आतुर हो॥

३४

लोभी गुरु हो लालची चेला कहावत सिद्ध है।
तब लोभमें तो विप्र भी अत्यंत पूर्ण प्रसिद्ध हैं॥
है शुभ तिथि वैशाख शुक्ला अष्टमी बुधवारकी।
इसमें हुआ जो ब्याह तो है कुशलता परिवारकी॥

३५

कर स्वाह दोनों ओरसे इस ब्याहमें बहु द्रव्यको।
धनका धुआं यों कर दिया पाला न निज कर्तव्यको॥
यों कर दिया अमेल जोड़ा उन चतुर मां बापने।
बिन पुत्र लाखोंको किये हा! देशमें इस पापने॥

चौथा परिच्छेद ।

३६

हम जोली सखियोंके संगका खेल कूद वह छूट गया ।
यहां आने पर स्वतंत्रता देवीसे नाता टूट गया ॥
मुझे लगी अब साल सोलवी पर मेरे पति है नादान ।
आज रात है सुहागकी पर रुदन करूं या मंगल गान ॥

३७

सज धज कर यों विचार मनमें युवती करती जाती थी ।
आवेंगे पति आवेंगे यह माला रटती जाती थी ॥
इतनेमें स्वामीको आते विलोक मनमें खुश दाई ।
पर छोटीसी उम्र देखकर लज्जासे अति सकुचाई ॥

३८

आदर स्वागत किया खूब पर पति मुहसे कुछ नहि बोले ।
लगे निरखने खडे खड़े ही इधर उधर टुक नहि डोले ॥
अहो प्राण धन इस आसन पर बैठ जरा विश्राम करो ।
प्रेम प्रीतिकी बातें करके निशिदिन यहां आराम करो ॥

३९

हाथ पकड़ कर निज स्वामीको बिठा लिया अपने ही पास ।
बोले नहीं शरमसे वे कुछ मगर हुआ दिलमें बहु त्रास ॥
इधर उधरकी बातें करके फिर छेड़ी मैंने यह बात ।
क्या तुमने अभ्यास किया और अब क्या करते हो दिनरात ।

४०

हिन्दीके अतिरिक्त अन्य भाषासे भी क्या परिचित हो ।
निज गृहिणीसे कह देना सब बातें जो जो समुचित हो ॥
जबसे गवना करके लाये तुझे यहां पर हे प्यारी ।
छोड़ दिया है पढ़ना मैंने और बना हूं संसारी ॥

४१

पढ़ करके मुन्सिफ नहीं बनना हमें कहींको जा करके ।
कृपा लक्ष्मीजीकी है बहु शीश झुकाते आ करके ॥
सुनकर वचन पतीके बिल्कुल मूरखतासे भरे हुए ।
बोली नम्र भावसे गृहिणी प्रेम वचन अनुरे हुए ॥

४२

विद्या परम देवतम ऐसा लिखा हुआ हम पाते हैं।
विद्या देवीका गुण गरिमा नीतिकार नित गाते हैं॥
विद्या द्वारा हो जाता है आदि देवका सच्चा ज्ञान।
विद्या धनसे मिल जाता है सच्चा जीवनका वह दान॥

४३

ऐसी मोक्ष दायिनी विद्या है उसको क्यों छोड दिया।
अभी रहा है समय आपका फिर क्यों नाता तोड दिया॥
क्रोधाग्नी बस भडक उठी निज गृहिणी को सुनकर यह बात।
ज्ञान सिखाती है गुरु बनकर तू क्या मुझको आय कमजात॥

४४

शयन भवनसे गुस्से हो कर आया निज जननीके पास।
ब्याह किया अच्छी स्त्रीसे जो नित देती मुझको भास॥
माता कहने लगी पुत्रसे इतने क्यों नाराज हुए।
क्या दुख हुआ कामिनीसे जो इतने रंजित आज हुए॥

४५

कहना मेरा इतना ही है और न मैं कुछ कहता हूं।
जैगोपाल आज हीसे बस मैं अब उसको वरता हूं॥
यों कह निज जननी समीपसे रमेशने बस गमन किया।
उसी रोजसे अपनी स्त्री से भी नाता तोड़ दिया॥

* * * *

पांचवा परिच्छेद।

४६

सब ऐश्वर्य स्थित रहते पति सुखसे वंचित जो रहती।
वह अबला सुख होने पर भी दावानलमें नित जलती॥
हितकी बात कही थी जिससे स्वामीने मुंह मोड़ लिया।
गुस्से से पागलसे हो कर मेरा बहु अपमान किया॥

४७

हाय प्रभू इस विरहानलको कैसे रोक सकू तनमें।
पति वियोग सम दुःख नहीं दूजा रहते शर्म लगे मनमें॥

यों विचार मनहि मन करती ज्यों खिड़कीके पास गई।
नजर पड़ी इक नवजवान पर जिसे देखकर थकित रही॥

४८

नाम बिहारी उस प्रेमीका जो दुकान पर बैठा था।
जिसने अपनी चतुराईसे सर मुनीम पद पाया था॥
वय किशोर सुन्दर स्वरूप तन जिसको देख लुभाती थी।
लगी विलोकन इकटक उसको मनहि मन मुसक्याती थी॥

४९

ज्योंहि अचानक मुनीमकी खिड़कीके ऊपर नजर पड़ी।
तो उसने एक परम सुन्दरी युवती देखी वहां खड़ी॥
एक एककी ओर निहारे प्रेम मग्न हो कर दोनो।
जैसे सागरमें आई हो सरिता मिलनेको मानो॥

९०

भांति भांतिकी चीजें लाकर मुनीम जी दे आते थे।
किसी प्रकार गुप्त गू बातें करनेको ललचाते थे॥
इधर पूर्ण रूपसे युवती मोहित इन पर बिलकुल थी।
पति वियोगकी दावाग्नीमें यह निशिवासर जलती थी॥

९१

मनमें इच्छा उन दोनोंकी मिलनेकी बहु रहती थी।
किन्तु निराशा युगल मूर्तिको सहसा रुदन कराती थी॥
एक दिवस जन शून्य गेहमें भेंट अचानक ही हो गई।
प्रेम मग्न हो मिले परस्पर दुःख व्यथा सब ही मिट गई॥

९२

बोला उत्कंठित होकर वह अहो प्रीति करने वाली।
मेरी प्राणाधार सुन्दरी निज मन बसने वाली॥
धन्यवाद ईश्वरको दे कर बार बार मैं बलि जाऊं।
प्यारी तुमको गले लगाकर निज जीवनका सुख पाऊं॥

९३

बार बार यों मिले परस्पर खूब प्रेम रस पान किया।
औ स्वतंत्र होकर भगजाना यह भी मनमें ठान लिया॥

प्रेम नशेमें मस्त युगल हो द्रव्य बहुत लेकर भागे।
उनके दूर निकलने पर ही इधर सेठजी भी जागे।

९४

खेद हुआ धन जानेका पर प्यारी बहू भी चली गई।
आश्चर्यित हो लगे सोचने हाय विधाता भली भई॥
था ऐश्वर्य पूर्ण उसको फिर भग जानेको क्यों सूझी।
काला मुंह कर दिया हमारा नाक कटी तो वह दूजी॥

९५

यों शोकाकुल देख पिताको रमेशने यों वचन कहे।
जा घर नार कुलक्षन है बस ता घरके नर दुःख सहे॥
बाल विवाह कियेका हमको पूर्ण नतीजा आज मिला।
बिना विचारे बिना आपने दिया मुझे हा ? जहर पिला॥

९६

करनेसे अब शोच फिकर वह वापिस लौट नहीं सकती।
छोटे तो भी इस गृहमें नहीं छाया उसको गिरसकती॥
अब कीजे वह उपाय जिसमें पकडे शीघ्र बिहारीको।
धनके सहित बुला कारागृह भेजें निमक हरामीको॥

९७

जोडी युगल प्रेम मूरति वह वह चन्द्र तेज हरने वाली।
पहुंची बम्बई शहर अनुपम महामोद करने वाली।
एक मकान बड़ा ही विस्तृत लिया बड़ी फेशन वाला।
रहने लगे उसीमें दोनों प्रेम भावकी जयमाला॥

९८

ट्राम साइकल मोटर तांगे खूब ही वे दौड़ाते थे।
कभी भुलेश्वर चौपाटीमें कभी कहींको जाते थे॥
हवा खिलावे नित नूतन ही उस रमणीको लाकरके।
किये व्यतीत कई दिन ऐसे प्रेम नशेमें आकरके॥

९९

। चन दाम्पत्य प्रेम बस खूब मसखरी करते थे।
॥ हीं भी दुनियाकी वे इसको स्वर्ग समझते थे॥

फिर रंगमें भंग एकदम पोलिसने उनके घरमें।
हुई अचानक वहां बिहारीका वारंट लिये करमें॥

६०

होश हवास उडे उनके औ सूख गये मुँह क्षण भरमें।
टूट गया अब प्रेम हमारा यही समझलें निज मनमें॥
गिरफ्तार कर लिया हथकडी डाल शीघ्र चालान किया।
रही अकेली यशोदा लज्जासे मुँह ढांक लिया॥

६१

हरे मुरारे मुकुन्द केशव कहां अकेली अब जाऊं।
मेरा जीवन मूल बिहारी प्रेम पियारा कहां पाऊं॥
फिर दृढ आशा धर निज मनमें चली वहांसे वह रमणी।
घोर अन्धेरे में नहि छिपती कोई छिपाई सर्प मणी॥

६२

शहर छोड़कर कुछ दूरी पर एक मदारी मिला उसे।
जाल बिछाकर पकड़ी उसको चिडियां सदृश युक्तिसे॥
उसे साथ ले ग्राम ग्राम वह फिरता था मंगता खाता।
जहँ जावे वहँ उस युवतीको अपने संगमें ले जाता॥

६३

नगर नगर निज खेल दिखाता और घूमता फिरते थे।
दैव योगसे सरायमें दोनो ही जाकर ठहरे थे॥
उसी स्थान पर एक मुसाफिर आराम करता बैठा था।
मानो किसी गुमे व्यक्तिकी खोज लगाना चाहता था॥

६४

इतनेमें उस युवतीने झट कहा आप कहँ रहते हैं।
विचार मनमें करके साहब कोन शहरको जाते हैं॥
वृन्दावन रहता हूं युवती रामलाल है नाम अहो।
क्यों आग्रह करती हो इतना तुम अपना कुछ भेद कहो॥

६५

लिपटी गले सजल नेत्रोंसे गदगद वाणी उचारी
बड़े लाड़से पाली थी वह सुता तुम्हारी हूं प्यारी

मेरी राम कहानी मुझको कहनेका अवकाश नहीं।
क्या बबूलको बोकर कोई पासका है आम कहीं॥

६६

लिखा हुआ था यही भाग्यमें पिता दोष अब किसको दूं।
अब विचार दृढ मनमें है कि यहीं आत्म हत्या कर लूं॥
तेरी भगनानेकी चिंता सदा तीर सम लगती थी।
फिर भी मिलनेकी दृढ आशा मनम धीर बनाती थी॥

६८

किया श्याम मुह तूने मेरा दुसह दु ख जग सहता हू।
पर देता नहि तुझे दोष मैं अपना कर्म समझता हू॥
विनय एक यह करता हू अब मुझे मुह मत दिखलाना।
तेरी इस क्रंदन बाणोंसे हमें कभी मत रूलवाना॥

६९

इतना कह कर रामलाल निज सुता बिलखतीको तजकर।
चले यहांसे बेगवान हो गणेशजीको ही भजकर॥
हाय! प्रभू मैं निजकुकर्मसे इतनी दुष्टा आज हुई।
जो मेरा मुंह अवलोकनसे अहा! पिताको लाज हुई॥

७०

पडूं जलाशयमें जाकर अब सिवाय उसके मुक्ति नहीं।
मरनेके अतिरिक्त अन्य जीनेकी मेरी युक्ति नहीं।
कहा कूपके समीप जाकर बाल ब्याह करने वालों।
निज बुद्धिसे विचार करके मेरी ओर दृष्टि डलो॥

७०

वहलादेव करजे अब रक्षा शरण तुम्हारी आती हूं।
राम राम श्रीराम तुम्हारा नाम अन्तमें गाती हूं॥
यों कह कर वह गिरी कुएमें समझ सोचलो वाचक वृन्द।
प्रणाम करता 'व्यास' सज्जनोंके चरणोंमें यह सानन्द॥

ગુજરાતના દિ૦ જૈનોની સાહિત્ય-સેવા અને સમાજસેવા ।

(ગયા અંકથી ચાલુ)

વર નહિ મળવાથી બાળ લગ્ન-વૃદ્ધ લગ્ન, કજોડાં કરીએ છીએ એ કુચાલ આપણામા એટલો સજ્જડ પેસી ગયો છે કે-આપણામાના કેટલાક નિર્ધન કુળવાન તેનાથી અવિવાહીતજ રહી જાય છે. તેણે કરી આપણામાં કન્યા વિક્રય અરે અસ્થિ રૂધિરનો વિક્રય કરવાની રૂઢી દાખલ થઇ છે. આપણે અહિંસા પરમોધર્મના ઉપાસક જૈન તે આપણાજ શરીરથી ઉત્પન્ન થએલી ગાય જેવી નિર્મળ કન્યાને દ્રવ્યને માટે કસાઇવાડે આપીએ, એ કેટલું દિલગીર થવા જેવું છે.

કન્યા વિક્રયના પ્રતાપે કરીનેજ આપણામા ઉચ્ચ અને નિચ એમ બે કુળો પડી ગયા. તે લોકોમાં કુળનું અભિમાન ઘુસી ગયું. આપણે એટલે સુધી આગળ વધ્યા કે ધર્મનો કે જ્ઞાતિનો ડર રાખ્યા સિવાય કન્યાનું લીલામ સ્વેચ્છા પ્રમાણે કરવા લાગ્યા.

કન્યા વિક્રયના પ્રતાપે કરી દ્રવ્યવાન પુરૂષો ભારતની ભવાઇઓ કરવા લાગ્યા, અર્થાત એક છતા બીજી-ત્રીજી લાવવા લાગ્યા. જેણે કરી ધર્મનો અંતર રહ્યો નહિ. જેથી સાઠ વર્ષના ડોસા પણ સુવાન વહુ લાવવા છુટલે હાથે પૈસા ખરચવા લાગ્યા. અને અઢળક દ્રવ્ય આપી ઘરે બાર વર્ષની બાળાના મુખારવિંદનું દર્શન કરવા લાગ્યા. અને કન્યાના પિતાની બુદ્ધિમાં ધુળ નાખવા લાગ્યા. તેની સાથેજ જ્ઞાતિની પડતી કરવાનો પ્રયાસ કરવા લાગ્યા કેમકે તેમની શક્તિ ક્ષીણ થઇ ગએલી હોવાથી તેઓ સંતાન પ્રાપ્તિ કરી શકતા નહિ. પણ મુખારવિંદના દર્શન-આલીંગનથી સંતોષ માનતા. છતાં કન્યા તેમને પિતા સમાનજ લેખતી. ને અન્યથી મદનજ્વર શાંત કરતી પોતાના વૃદ્ધ પતિને યમયાતનામાં મોકલી દેતી. અને પોતે ગર્ભ ધારણ થવા દેતી નહિ. એવી રીતે એક બાજુ વંશવૃદ્ધિ એવી રીતે અટકવા લાગી, ત્યારે બીજી બાજુ કેટલાક કુળવાનનો ખોટો ડોળ બતાવનારાઓ પોતાની કન્યાને મોટપણે યોગ્ય વર નહિ મળે એ બીકથી બાળ લગ્ન કરવા લાગ્યા, જેથી પણ વંશ વૃદ્ધિ અટકવા લાગી. ત્યારે ત્રીજી બાજુ દ્રવ્ય હીન બંધુઓ દ્રવ્ય સિવાય કન્યા નહિ મળવાથી નિર્વંશ થતા ગયા. એમ ચારે બાજુથી આપણી વસ્તી ભાગતી ચાલી. આવી રીતે આ ને આ સ્થિતી જો દશ વર્ષ કાયમ રહેશે તો આથી પણ હીન દશા આવ્યા સિવાય રહેશે નહિ.

મારી દરેક આગેવાન બંધુઓને વિનંતી છે કે તેમણે પોતાની જ્ઞાતિને સુધારી અન્ય ભાણે ખપતી જ્ઞાતિથી કન્યા વહેવારમાં જોડવા પ્રયત્ન કરો; અને કન્યાઓની આશીષ મેળવી તમારા સમાજમાં વૃદ્ધિ કરો !

ગુજરાતની છિન્ન ભિન્ન જૈન જાતીઓ ઐક્યતાનો મહામંત્ર શીખી સામ સામી બેટી-બેટી વહેવાર દાખલ કરે તો જૈન સમાજની ઉન્નતિ થતાં વાર લાગે નહિ. તેની સાથેજ કેટલાંક કન્યા સિવાય પડી ભાગતા ઘર અટકી પડે નહિ. વળી યોગ્ય દંપતિના સંગઠનથી લાયક સંતાન ઉત્પન્ન કરી શકાય તો ભવિષ્યમાં તેઓ કંઇક જુદો ચળકાટ ચળકાવી શકે. સરકારી અંકુશ સિવાય આપણે એકે કુધારા દૂર કર્યા નથી એ આપણી નિર્માલ્યતાજ છે.

સમગ્ર ગુજરાતના દિગંબર જૈન સમાજમાં દ્રષ્ટિપાત કરતાં તેમની વસ્તીના પ્રમાણમા સેંકડે એક જણ સમાજ સેવામાં ભાગ લેનાર ભાગ્યેજ જણાઇ આવે છે. કદાચ સુધારકની ગણત્રીમાં ઉચ્ચ શિક્ષણ (રાજકીય) લેતા અને લીધેલા યુવાનોને દાખલ કરીએ તો તે સંખ્યા સેંકડે બે જેટલી થવા જાય-પણ તે કામ ઢીંગલીને શણગારી રંગીલી નામ આપી વાઢાભાઈ સાથે પરણાવી આનંદ માનવા જેવું છે. કેમકે રાજકીય કેળવણી લેતા પૈકી સેંકડે નેવું જણાનું શ્રદ્ધાન જૈન સમાજ જૈન શાસ્ત્ર તરફ હોતુંજ નથી એટલે તેમને જરાપણ સુધારાના પ્રયત્નશીલ સ્વયં સેવક માની શકાય નહિ.

આવુ વાતાવરણમાં એક ઘરમાં બેસી વાતો કરનારા તડાકીયા સેવકો ઘણા જણાઈ આવે છે. પણ બહાર નીકળી જાતે સેવક બની પોતે સુધરી અન્યને સુધારનાર કોઇ વિરલાજ નિકળી આવે છે.

બંધુઓ! આપ એમ ન ધારશો કે-અન્ય જાતિઓ સાથેના સંગઠનથી આપણી મોટાઇ નાશ પામશે? તમારી મોટાઇ તમારામાં યોગ્યતા હશે તો પછી પણ સારી રીતે જળવાઇ રહેશે. વધારામા તમો અનેક નરનારીના આશીર્વાદ મેળવી સુયશે શિખરે સ્થાન પામશો.

હવે હુ દિ૦ જૈનોએ જે સમાજ સેવા તથા સાહિત્ય સેવા કરી છે તેમને ધન્યવાદ સહ અભિનંદન આપી તેમના નામ ચિરસ્મરણીય બનાવવા અત્રે પ્રસિદ્ધ કરી આ લખાણને બંધ કરીશ.

ગુજરાતના સમાજ-સાહિત્ય સેવા કરનાર ઉત્સાહી નરરત્નો.

હરજીવન રાયચંદ શાહ આમોદ નિવાસી-

ભક્તામર સ્તોત્ર, કલ્યાણ મંદિર સ્તોત્ર, જૈન ધર્મની માહિતીના પ્રકાશક અને ગુજરાતમાં દિ૦ જૈન ગ્રંથો પ્રથમ પ્રકાશિત કરનાર. અને અન્ય ધાર્મિક સામાજિક લેખ લખનાર.

સ્વ૦ શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ ઝવેરી-મુંબઈ અને કુટુંબીજન.

જૈન વ્રત ગુજરાતી કથા સંગ્રહ, જૈન નીયમપોથી-રત્નકરંડ શ્રાવકાચાર આદિ પુસ્તક પ્રકાશક અને ગુજરાતમા રાજકીય અને ધાર્મિક કેળવણી દિગંબર જૈનને અપાવવા અમદાવાદમાં બોર્ડિંગ સ્થાપનાર અને અન્ય ધાર્મિક સામાજિક-કાર્યોમા ભાગ લેનાર.

દિગંબર જૈન પત્રના સ્થાપક દિગંબર જૈન નરરત્ન મુળચંદ કસનદાસ કાપડીયા સુરત અને કુટુંબીજન,

દિગંબર જૈનના સંપાદકનું કાર્ય નિ:સ્વાર્થપણે કરનાર, જુદા જુદા ધાર્મિક-સામાજિક-ગુજરાતી ભાષામા પચીસથી ત્રીસ પુસ્તકના પ્રકાશક અને ઉત્સાહી સુધારક બંધુ.

દો૦ બાપુલાલ કપુરચંદ શાહ નાર.

ધર્મ પ્રબોધિની, આલોચનાપાઠ, નિત્ય નિયમ પૂજાના પ્રકાશક અને દિગંબર જૈનમાં લેખ લખનાર.

મોતીલાલ ત્રીકમદાસ માળવી બાકરોળ.

દિગંબર જૈન સ્તવનાવળી, અનિત્ય પંચાશત, જીનાલય-ગમન, અકલંક સ્તોત્ર, સુતક નિર્ણય, આદિ ગ્રંથોના પ્રકાશક, દિગંબર જૈનના મુખ્ય લેખક, સમાજમથી કુધારા દુર કરવાનો પ્રયાસ કરનાર.

ચીમનલાલ જીવાભાઇ શાહ-કરમસદ

રવીવાર વ્રત કથા, વિદ્યાલક્ષ્મી સંવાદ-એ બે નાનકડા પુસ્તકો દ્વારા ગુજરાતી પૈસે દમ દિગંબર જૈનને રવીવાર વ્રત તરફ પ્રીતી ઉત્પન્ન કરનાર.

સ્વ૦ ધર્મચંદજી-અંકલેશ્વર.

બાળબોધ જૈન ધર્મ, ચોવીસઠાણા, આરાધના સ્વરૂપના પ્રકાશક, જૈન સાહિત્યમા પ્રવેશ કરનારને ચોવીસઠાણા (ધર્મ ચર્ચા) થી માર્ગ સરળ કરી આપનાર, પાલીતાણા તીર્થને તન, મન, ધન, અર્પણ કરનાર ઉત્સાહી ધર્મ બંધુ.

શ્રી ભટ્ટારક સુરેન્દ્રકીર્તિ-સોજીત્રા

સમેદશિખર પૂજન વિધાન, પ્રાયશ્ચિતના પ્રકાશક-ગુજરાતના એક ગ્રહસ્થાચાર્ય.

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ કાણીસા.

જૈન સંસ્કાર વિધાન અને લગ્ન વીધીના પ્રકાશક, ગુજરાતના દિ૦ જૈનને વિવાહ સંસ્કાર જૈન વીધીથી અપાવવા જૈન લગ્ન વિધીના સંશોધક અને શરૂઆત કરનાર, દિગંબર જૈનના મુખ્ય લેખક, ને યજ્ઞોપવીતનો પ્રચાર કરવા ઉમંગ રાખનાર ઉત્સાહી યુવક.

હાથીચંદ માણેકચંદ શાહ-સોનાસણ.

દિગંબર જૈનમા સેવા ભાવે લેખો લખનાર, કુધારાપર સખત પ્રહારો કરી સુધારો સ્થાપન કરવા પ્રયત્ન કરનાર.

સ્વ૦ લલ્લુભાઇ પ્રેમાનંદદાસ બોરસદ.

ગુજરાતના દિગંબર જૈનના આગેવાન-સામાજિક ઉન્નતિ કરતા ધાર્મિક ઉન્નતિમા વધારે પ્રીતિ રાખનારા મેવાડા કોમના પ્રથમ સુધારક.

છોટાલાલ ઘેલાભાઈ શાહ અંકલેશ્વર.

લઘુ અભિષેકનાં પ્રકાશક, દિગંબર જૈનના લેખક, જૈન લગ્ન વિધિના હીમાયતી.

જેસંગભાઇ ગુલાબચંદ મલીયાતજ.

મેવાડા કોમમાં વીસા મેવાડા હિત વર્ધક સભાના સ્થાપક અને મેવાડાની ઉન્નતિમાં તન, મન, અને ધન અર્પણ કરનાર વયોવૃદ્ધ મહાશય.

આ રીતે જે જે સજ્જનોએ સામાજીક અને સાહિત્ય સેવામાં ભાગ લીધો છે તે દરેકને ધન્ય વાદ ઘટે છે.

ગુજરાતના દિગંબર જૈનમાં આવી જુજ સંખ્યાજ સાહિત્યક્ષેત્રમાં પ્રવેશ કરે છે. ત્યારે શ્વેતામ્બર જૈનમાં હજારોની સંખ્યામાં વિદ્વાનો ખ્યાતિ ધરાવે છે એ ખેદ પામવા જેવું છે કે-આપણે સમજુ હોઇ આ બાબત કંઈ કરી શક્યા નથી.

બંધુઓ! ઉઠો 'તૈયાર થાઓ' ને સમાજમાંના કુધારા દૂર કરી જુદા જુદા જૈન સમાજોને એકજ સમાજમાં મેળવી એક ગુજરાત દિગંબર જૈન સમાજ એ નામથી સ્થાપન કરો. અન્યોન્ય રોટી બેટી વહેવાર દાખલ કરી અન્યોન્ય એકજ જ્ઞાતિના જોડાણની માફક જોડાઇ ધર્મ પ્રતિજ્ઞા પૂર્વક વ્યવહારિક ક્રિયામાં દૃઢ થાઓ. અને તે એકત્ર બળથી તમારી ગએલી એકતાઇ પાછી લાવો. ને તમારી પાસે સમાજનો સુવર્ણ કળશ સ્વર્ગના વિમાન સુધી ઝળકાવો, એમ મારી તે પરમાત્મા પ્રત્યે પ્રાર્થના છે.

ૐ શુભમ્ ૐ તત્સત્ ૐ શાન્તિ:

લી० સમાજ સેવક,

એક દુ:ખી હૃદય.

तृतीय शास्त्रि परिषद

सभापतिका व्याख्यान और प्रस्ताव।

कानपुरमें महासभाके दिनोंमें दि० जैन शास्त्रि परिषद्का तृतीय अधिवेशन समारोहके साथ हुआ था जिसमें सुयोग्य विद्वान सभापति पं० लालारामजी शास्त्रीका व्याख्यान इस प्रकार हुआ था।

वन्दनीय त्यागी ब्रह्मचारियों, महासभा और स्वागतके रिणी सभाके माननीय सभापति महोदय, शास्त्रियों, सभ्यगण और माताएं व बहनियो!

१–जब कि छोटी बडी सभी सभाओंके लिये सुयोग्य, दूरदर्शी, विद्वान् सभापतिके निर्वाचनकी गहरी गवेषणा की जाती है, तो मुझे यह बतलानेकी कोई आवश्यकता शेष नहीं रह जाती कि इस शास्त्रि परिषद्‌के लिये कितने योग्य और दूरदर्शी विद्वानका निर्वाचन करना आवश्यक है। शास्त्रि परिषद्का साथ शास्त्री ही हो सक्ता है, इस नाते भले ही मैं इस पदका अधिकारी एवं उसका योग्य समझा जाऊं परन्तु चारों अनुयोगोंकी जैसी प्रखर विद्वत्ता इसके लिये अपेक्षणीय है, उसका अंशांश भी मैं अपनेमें नहीं पाता। ऐसी विषम समस्यामें इस परिषद्के विचारशील शास्त्रियोंने मुझे इस पदका महान् गुरुत्तर भार क्यों सौंपा? इसका अन्तस्तत्व वे ही जाने। यदि इस विषयमें मैं उनसे शास्त्रार्थ करता हूं, तो भी मुझे आशा नहीं कि मैं इस विशाल शास्त्रि मण्डलके समस्त प्रकार विषयमें विजय पाऊं। अतएव अब इसी निश्चय पर कि जिस प्रकार उन्होंने मुझे यह गुरुतर कार्यभार सौंपा है,

उसी प्रकार वे मुझे कार्यमार्ग बतलानेमें भी सत्परामर्श एवं सहायता प्रदान करेंगे। मैं उनके दिये हुवे सम्मानका परम आभारी एवं कृतज्ञ बनता हुआ इस पदको सादर स्वीकार करता हूं।

२—सभ्य बांधवो! जगतमें गहरी खोज करने पर भी केवल दो पदार्थोंकी उपलब्धि होती है (१ला) जड (२रा) चेतन। इन दोको छोड़ कर तीसरा कोई पदार्थ किसी युक्ति और प्रमाणसे सिद्ध नहीं होता। जो कुछ अनन्त पदार्थोंकी सृष्टि आपके समक्ष उपलब्ध है, जिसमें कि आप स्वरूप वस्तुओंका बोध करते हैं वह सब उन्हीं दो तत्वोंका विस्तार है। इन दोनोंमें जड तत्व पांच भागोंमें बटा हुआ है। जिस जडसे चेतनका सम्बन्ध है, वह पुद्गल तत्वके नामसे प्रख्यात है। आज जो कुछ भौतिक उन्नति पाश्चिमात्य देशोंने की है, वह इसी पुद्गल तत्वकी अचिन्त्य एवं महाशक्तियोंका परिणाम है। दोनों ही तत्व, विकाशशील हैं। अंतर इतना है, कि पुद्गल स्वयं विकाशी है, चेतन प्रयत्नसाध्य है, दोनोंके विकाश भेदसे ही विद्वानोंको ध्येयका परिज्ञान हो जाता है। विकाशभेद और ध्येयका परिज्ञान ये दोनों बातें अभी सूत्र रूप कही गई हैं। इनका संक्षिप्त खुलासा इस प्रकार है:—यद्यपि पुद्गलका अनेक रूपोंमें आविष्कार किया जाता है, उसका विकाश भी प्रयत्नसाध्य ही प्रतीत होता है तथापि सूक्ष्म विचारसे यह बात अच्छी तरह समझमें आ जाती है कि पुद्गलकी भिन्न भिन्न शक्तियोंका अनुरूप एवं अनुकूल समुदाय मात्रकी ही आविष्कारों द्वारा सिद्धि की जाती है। न कि शक्तियोंकी व्यक्तिकी। यदि शक्तियोंकी व्यक्ति पुद्गलमें प्रयोग साध्य ही हो तो स्वयं किसी स्कंध एवं परमाणुमें उस जातिकी व्यक्ति जैसी कि विद्वान वादियोंके प्रयोगमें सम्पादित की जाती है, स्वयं नहीं होनी चाहिये। परन्तु आज सभी देख रहे हैं, कि वाष्पका प्रयोग आज बड़े २ यंत्रोंको चला रहा है, वह कहीं स्वयं उत्पन्न अग्निके संचार और जलके सम्बन्धसे बन २ कर व्यर्थ जा रहा है। जिस विद्युच्छक्तिसे आज टेलीफोन, टैलीग्राफ, आदि अनेक आविष्कार किये जा रहे हैं वह विद्युत एक महान् शक्तिको लिये हुये भयंकर रूपमें स्वयं उत्पन्न होती है। और बादलोंमें विलीन हो जाती है। जो शब्द बिनातारके तार द्वारा सहस्रों कोश दूर चला जाता है, वही शब्द परस्पर जड टक्करोंसे स्वयं पैदा होकर महान् विस्तृत गगनका मैदान करता हुआ सहस्रों कोश चला जाता है। समुद्रादिके शब्दोंके सिवाय बादलोंकी गडगडाहट एवं बिजलीकी तटतड़ाहट इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। इस कथनसे तात्पर्य यह निकालना चाहिये, कि पुद्गलकी शक्तियां अचिन्त्य हैं, और वे स्वयं विकसित हैं। भिन्न भिन्न आकृतिरूपमें उनका समुदाय एवं सदुपयोग करना मात्र प्रयत्नसाध्य है। चेतनमें यह बात नहीं है, उसका विकाश बिना प्रयत्नके हो नहीं सकता। उसकी शक्तियां पहिलेसे व्यक्त नहीं हैं। किन्तु अनादिकालसे निगोदादिपर्यायोंमें रहनेके कारण सर्वथा लुप्तप्राय बनी रहती हैं। पीछे उपदेश-

दिग्रहण, व्रतविधान, मुनिचर्या आदि कारण कलापों द्वारा बडी कठिनाईसे उसका आवरक दूर किया जाता है। आत्मीयविकास पुरुषार्थ साध्य है। इसलिये उसकी चरमोन्नति होनेपर आत्मा फिर कभी अशुद्ध एवं अविकाशी नहीं बन सकता। परन्तु पुद्गलका जो कुछ विकाश है वह स्वयं होता है, इस लिये कभी शुद्ध कर्म अशुद्धरूपमें आया करता है। सर्वथा शुद्ध होने पर भी वह फिर अशुद्ध हो जाता है। इसी लिये पुद्गलकी उन्नति नहीं कही जा सकती। उन्नति शब्दका वाच्य सुधार है। विचार करने पर भौतिकवादमें कभी कोई सुधार नहीं होता है वह सदा एक रूपसे दूसरे रूपमें आता रहता है। लौकिक दृष्टिसे जिसे सुधार कहा जाता है, वह भी वास्तवमें कुछ सुधार नहीं किन्तु रूपान्तर मात्र है, इसी लिये आत्मीय सुधार ही सुधार कहा जा सकता है। जितने अंशमें आत्मीय विकाश है, उतने ही अंशमें आत्मोन्नति कहना चाहिये, इस लिये उन्नति आत्मा ही की हो सकती है, पुद्गलकी नहीं। जो लोग भौतिक उन्नतिमें ही अपनी एवं अपने देशकी उन्नति समझते हैं वे भूल करते हैं। भौतिक उन्नति वास्तवमें कोई उन्नति नहीं है। किन्तु व्यवहारिक-निर्वाहका साधन मात्र है। विद्वानोंका ध्येय आत्मोन्नति होना चाहिये और उसीके उपायोंकी खोज करना चाहिये।

आत्मोन्नतिमें मूलकारण केवल आत्मोपयोगी तत्वोंका चिन्तवन, ध्यान, संयम आदि है। परन्तु विना पदार्थोंकी यथार्थ परिस्थिति एवं आत्मीयतत्वका पूरा रहस्य समझे आत्मानुसार असम्भव है। इसलिये सबसे प्रथम पदार्थोंकी यथार्थ प्रतीति वांछनीय है। उसके विना बहुत कुछ ज्ञानका विकाश होने पर भी मदिरापायीके समान जीव यथार्थज्ञानी नहीं बन सकता, खास कर आत्मोपयोगी तत्वों तक उसकी पहुंच नहीं हो पाती। क्यों नहीं हो पाती? इसके उत्तरमें मदिराके समान कर्मकृत अवरोधके और कुछ नहीं कहा जासक्ता। जो लोग आत्मीय विचार शून्य केवल भौतिक आविष्कारोंमें लगे हुये हैं वे खोजी विद्वान् अवश्य समझे जांयगे। परन्तु उनका वह ज्ञान कुमति विकाश है। यथार्थ प्रतीति और ज्ञानके होनेपर भी विना आत्मसम्बंधित पदार्थोंका त्याग किये आत्मीय उन्नति कभी नहीं हो सकती। इस लिये आगमोक्त विधिके अनुसार हमें पदस्थानुसार क्रम २ से आत्मेतर पदार्थोंका संबन्ध छोडना चाहिये। जितने अंशमें हम बाह्य पदार्थोंसे उपेक्षित होंगे उतने ही अंशमें हमें आत्मीय आल्हाद एवं निर्मलता प्राप्त होगी।

६-जैनधर्म द्वारा कही गई तत्वव्यवस्थापर दृष्टि डालने, एवं उसका मनन करनेसे, युक्ति और प्रमाणवादियोंका हृदय, यह स्वीकार किये विना नहीं रह सका, कि जैन धर्म सर्वज्ञप्रणीत है अथवा जैनधर्म ही सर्वज्ञप्रणीत है। क्योंकि जैनधर्म द्वारा बताई गई पदार्थ व्यवस्था, युक्ति प्रमाण और आगमसे अखण्डित है, अविरुद्ध है, अनुभव गम्य है। ऐसे सन्मार्ग प्रदर्शक सर्व जीव हितकारी जैन धर्मका जगतमें प्रचार करना शंकाकारोंकी शंकाओंको दूर करना, एवं शैथिल्य न आने देना, जैन तत्वज्ञ

सृष्टि बनी रहे इसके लिये संस्थाओंको सुव्यवस्थित और सुदृढ़ करना इत्यादि बातोंकी सिद्धिके लिये ही इस शास्त्रिपरिषद्‌की योजना है।

उपर्युक्त कार्योंकी सिद्धिके सिवाय शास्त्रिपरिषद्‌की सबसे बड़ी जिम्मेदारी यह है कि सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था आर्षानुकूल सदा दृढ़ बनाये रखना। वर्तमानके सामायिक प्रवाहने कुछ लोगोंके हृदयमें यह विचार तरंग पैदा करदी है कि सामाजिक बातोंमें धर्मकी कोई आवश्यकता नहीं। समाजसुधार सदा समयानुसार हो सक्ता है, इसे केवल विचार स्वतंत्र करा जा सकता है। किसी युक्ति और प्रमाणकी भित्तिपर इस कथनकी रचना नहीं है। यदि सामाजिक सुधार धर्मकी कोई बाधा नहीं करता तो फिर समाज व्यवस्था क्या वस्तु है? लोकनीतिकी मर्यादा क्या है? अनेक तर्कणाओंके उठाने पर परिणाम यही निकलेगा कि धर्ममूलक समाज व्यवस्था ही हितकारी एवं उपादेय हो सक्ती है। अन्यथा नहीं! दूसरी बात यह है कि धर्ममूलक समाज व्यवस्था मानेपर ही धार्मिक व्यवस्था स्थिर रह सक्ती है, धार्मिक समाज ही धार्मिक उन्नति कर सक्ता है। क्या धर्म विहीन क्रियाचारी समाज कभी धर्मपरायण बन सकता है? आज विधवाविवाह और वर्णव्यवस्था जैसी धर्मविरुद्ध बातें सुनी जाती हैं जिनसे कि समाजका अवश्यम्भावी पतन सुनिश्चित है। इन्हीं उत्सूत्रभाषियोंके विचारोंका दुष्परिणाम है इसलिये सामाजिक व्यवस्थाको आगमानुकूल रखना, इसी प्रकार जैन सिद्धान्त अथवा ऋषि वाक्योंकी रक्षा शास्त्रीय बोध शून्य लोगों द्वारा फैलाये जानेवाले मिथ्या विचार एवं सिद्धान्त विपरीतवालोंका सुयुक्तिक निराकरण कर जनताको सुमार्ग पर रखना, यह सब जिम्मेदारी इस परिषद्‌के शास्त्रियोंकी है। "कुछ शंका समाधान करलेना, अथवा किसी विषय पर शास्त्रार्थ कर लेना, यही इसके अधिवेशनका सदुपयोग है।" ऐसा जिन सज्जनोंका कहना है, उन्हें अभीतक इसके दायित्वपूर्ण कार्यक्षेत्रका ध्यान नहीं है ऐसा मालूम होता है। आगमोक्त मार्ग बतलाकर सामाजिक और धार्मिक व्यवस्थाकी रक्षा और वृद्धि ये दो कार्य इस शास्त्रि परिषद्‌के द्वारा ही सिद्ध हो सक्ते हैं। इनका सुव्यवस्थास ही जैन समाज और जैन धर्मका सच्चा उन्नति है इस लिये शास्त्रिपरिषद्‌का उपयोगिता और कार्य-गौरव कितना आवश्यक और महत्वका है। यह बात सबके ध्यानमें आचुकी होगी।

४ अभीतक परिषद्‌ने अपने दायित्वोंको यद्यपि पूरा नहीं किया है, फिर भी इसके कार्योंसे बहुत कुछ सन्तोष होता है। धर्मविरुद्ध लेखनी उठानेवालोंको सयुक्तिक और सप्रमाण लेखों द्वारा निरुत्तर बनाना, यत्र-तत्र शास्त्रीय व्याख्यानों द्वारा धर्म प्रभावना करना, जैन सिद्धान्त द्वारा दार्शनिक तथा सामाजिक सिद्धान्तोंके अन्तस्तत्वोंका समीचीन रहस्य बतलाना, ये सब इसीके कार्य हैं। यह तीसरा अधिवेशन है। तीन वर्षके कार्योंसे इसकी भावी समुन्नतिमें मुझे किसी अंशमें निराशा नहीं होती।

विद्वज्जनो!

जैन धर्मकी उन्नतिके लिये किन २ बातोंकी समाजको आवश्यकता है इस विषयमें मेरे निम्नस्थ विचार हैं:—हरएक समाजकी उन्नति विद्वानों द्वारा हुई है। हमारी समाजमें इस समय ऐसे विद्वान् तैयार करनेकी बड़ी आवश्यकता है जो एक २ विषयके पूर्ण निष्णात हों।

शास्त्रीय कक्षामें छात्रके पहुंचने पर सिद्धांतके साथ गणित ज्योतिष, विज्ञान, भूगोल, वैद्यक, न्याय–व्याकरण, साहित्य आदिमेंसे कोई एक विषय प्रधान रूपसे पढना चाहिये। किसी विषयके मर्मज्ञ विद्वान इसी व्यवस्थासे बन सकते हैं, इसके लिये भिन्न २ विषयोंके विद्याभ्यासी शास्त्रीय कक्षाओंके छात्रोंके लिये निर्वाह योग्य अच्छी वृत्तियां देनी चाहिये। इसके सिवाय श्री धवधवल, महाधवलादि सिद्धांत ग्रंथ उपलब्ध होते हुये भी जो अभी तक पठनपाठनमें नहीं आ रहे हैं उन्हें लानेकी आवश्यकता है। यहां पर मुझे जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके उपवास और कर्णाटकके पंचोंकी आपवादकी बात भी याद आती है। क्या सिद्धांत ग्रंथ उनकी निजी सम्पति है या इसीको सची विनय कहते है? आचार्योंकी एक महती कृतिके लुप्त रहनेसे धर्मप्रचारमें पूरी बाधकता समझना चाहिये। मैं इस विषयमें खेद प्रगट करके ही संतुष्ट नहीं होने चाहता किंतु मेरी सम्मति है कि इस विषय पर यहां परामर्श करके उक्त ग्रन्थोंको बडे २ नगरोंमें भिजवानेकी योजना शीघ्र करनी चाहिये।

६–सामान्य रीतिसे हरएक जैन बान्धव शास्त्रीय सिद्धांतोंके जानकार बनें, इसका सरल उपाय शास्त्रसभायें हैं। आजकलके उपदेशोंकी सम्प्रदायसे मैं कुछ हानि नहीं समझता हूं। इतना अवश्य हुआ है कि इस प्रतिद्वंद्वतामें शास्त्र सभाओंका प्रचार कम होता चला जाता है।

वह कम न हो, ऐसा प्रयत्न करना आवश्यक है। हरएक श्री जिनमंदिरमें शास्त्र सभायें अवश्य हों। जहां २ पर विद्वान् रहते हैं, उन्हें सोत्साह इस कार्यमें भाग लेना चाहिये। मुझे याद है कि पंडितप्रवर भागचंदजीके समय तक तत्वचर्चाका अच्छा आनंद रहता था। परम पूज्य सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी पर एक शिला "ज्ञानगुदड़ी" के नामसे प्रख्यात है। मेलों आदिमें १–२ घंटा तत्वविचार अवश्य होने चाहिये। आजकल मेला उत्सवोंमें विद्वानोंका समागम होने पर भी जनता शास्त्रीय चर्चाका आनंद नहीं लेती, यह एक बड़ी त्रुटि है। इसे दूर करना चाहिये।

७–मेरी यह भी सम्मति है, कि साल भरमें एक बार एक तत्वविचार सभा हुआ करे। इसका कार्य यह होगा कि विवादकोटिमें आये हुये, या नहीं आये खास २ विषयों पर कुछ नि[illegible] विद्वान भाषण करें। ऐसे विद्वानोंकी [illegible] नियत समयसे चार मास पहिले परिषद्के मंत्री द्वारा की जाय। विषय और स्थानकी सूचना भी एक मास पहले प्रगट की जाय। दिनमें तत्वचर्चा और रात्रिमें भाषण रक्खा जाय। इस कार्य क्रमसे तत्वविचार सभाकी उपयोगिता जनताके लिये अत्यन्त हितकर होगा।

८-इसी तत्वविचार प्रसंगमें मैं कुछ नेतृत्वकी लालसा रखनेवाले व्यक्तियोंके विचारों एवं कुछ पत्रोंके विषयमें भी दो बातें कहना आवश्यक समझता हूं। अब यह बात तो हरएक धार्मिक पुरुषोंको ध्यानमें रख लेनी चाहिये कि जो लोग जैन धर्मसे प्रतिकूल लेखनी चला रहे हैं, वे कुछ उसमें मतभेद रखते हों ऐसा नहीं है, किंतु वे जैन धर्मका सर्वथा लोप करना चाहते हैं, उनका कोई निजी मत भी नहीं है। किंतु सभी लोग भेद-भावको मिटा कर नरक, स्वर्ग, मोक्ष, आदि बातोंके झगडोंको छोड कर केवल आर्थिक एवं भौतिक उन्नति द्वारा संसारमें सुखी रहें, यही उनका मत है, ऐसे व्यक्तियोंमें कुछ तो प्रगट हो चुके हैं, और कुछ अभी अप्रगट हैं। मैं ऐसे विचारों पर खेद करता हुआ, जैन समाजको सम्मति दूंगा कि वह जैन धर्मको जड़मूलसे उखाड़ देनेवाले पत्रोंको सर्वथा न खरीदें और न पढ़ें। जैनहितैषी, सत्योदय और जातिप्रबोधक ये तीन पत्र जैन धर्मसे प्रतिकूल चल रहे हैं, सत्योदय और जातिप्रबोधकके लेखोंसे तो एकदम परिणामोंमें आकुलता होने लगती है। इसलिये उन्हें तो छूना भी हानिकर है। अभी कुछ दिन पहिले स्वर्गीय लोकमान्य तिलकके विषयमें एँग्लो इंडियन पत्र "स्टेट्समेन" ने कुछ अपमानजनक शब्द लिखे थे। उसके प्रतिफलमें तिलकभक्त देशने उस पत्रके घोर बहिष्कारके सिवाय उसके खरीदनेवालों तकका बहिष्कार किया था जहां तक दैशिक नेताके विषयका इतना ध्यान है, तो क्या धर्मको प्राणोंसे प्यारा समझनेवाला जैन समाज अपने परमपूज्य आचार्योंको और उनकी कृतिको झूठा ठहरानेवाले पत्रोंका बहिष्कार करनेके लिये तैयार न होगा? धर्मनिष्ट समाजसे मुझे ऐसी सम्भावना नहीं है।

९-धर्मकी सत्ता स्थिर करनेके लिये एवं विवादग्रस्त विषयमें निश्चित परामर्श देनेके लिये मुनियोंमें आचार्य और गृहस्थोंमें गृहस्थाचार्य रहा करते थे। उन्हींकी आज्ञानुसार धार्मिक प्रवृत्तियोंका पालन होता था। वर्तमान समयमें वह व्यवस्था नहीं है। परन्तु धार्मिक शासनके बिना धार्मिक शिथिलता एवं जनताकी अनर्गल उच्छृंखल प्रवृत्ति रुक नहीं सकती। अतएव आगमोक्त मार्गपर आरूढ़ रहनेवाले जैनसमाजके लिये आवश्यक है कि वह विवादग्रस्त विषयोंमें शास्त्रिय परिषदकी सम्मतिको प्रमाणभूत समझे। शास्त्रिपरिषदकी सम्मति कोई स्वतंत्र सम्मति नहीं होगी किन्तु सप्रमाण होगी।

१०-धार्मिक ज्ञानकी कमी होनेसे बहु संख्यक ग्रामोंमें धर्मक्रियायें लुप्त सदृश हो गई हैं। नगरोंमें भी शिथिलता देखनेमें आती है। इसके लिये सदुपदेष्टा विद्वान् उपदेशकोंकी बड़ी आवश्यकता है। इसकी पूर्तिका सुगम उपाय यह होगा कि विशारद और शास्त्रि कक्षाओंमें इसका पाठ्यक्रम रक्खा जाय, भाषणकलाके लिये उपयुक्त समय रक्खा जाय। यदि उपदेशक विभागका उचित संगठन हो गया तो उससे अनेक आत्माओंके हित होनेकी पूर्ण सम्भावना है। यद्यपि महासभाने एक उपदेशक विभाग खोल रखा है। परन्तु योग्य उपदेशकोंकी सृष्टिका अभी तक कोई उपाय नहीं हुआ है।

बिना संस्थाओंको खास विषय और कुछ छात्र नियत किये यह कार्य नहीं हो सकता।

धर्म बन्धुओ!

११-मैं एक आवश्यक विषयकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करता हूं। वह है "संस्कार"। बहुत दिनोंसे हमारे यहांसे संस्कारोंके उठ जानेसे हम संस्कारोंकी आवश्यकता और उनसे होनेवाले लाभोंको एकदम भूलसे गये हैं, संस्कारोंके बिना हमारा कुलाचार मन्द पड़ गया है। बुद्धियोंमें सद्विकाश की कमी आ गई है। यदि आज हमारे यहां विद्यारम्भ आदिक संस्कार प्रचलित होते तो अनपढ़ पुरुषोंकी संख्या थोड़ी भी देखनेमें नहीं आती। अनिवार्य शिक्षाके लिये तो हमने दूसरोंसे बहुत दिनों तक पास कराये, परन्तु विद्यारम्भ संस्कार द्वारा प्राप्त समिचीन अनिवार्य शिक्षा की ओर जो कि हमारा आवश्यक स्वतंत्र कर्तव्य था ध्यान ही नहीं दिया, अब आवश्यकता है कि हम धीरे २ सभी संस्कारोंका प्रचार करें। कमसे कम यज्ञोपवीत संस्कार जो कि हमारे ध्येय रत्न त्रयका एक स्मारकचिन्ह विशेष है, जो हरएक जैन गृहस्थको अवश्य करना चाहिये सभी संस्थाओंके छात्र इस संस्कारसे शून्य न रहें। ऐसा प्रबंध उन संस्थाओंके संचालकोंको करना उचित है। इसी प्रकार इस विषयमें मैं अपनी माताओं और भगिनियोंका भी ध्यान आकर्षित करूंगा कि वे भी अपनी परिषद द्वारा बालकोंके संस्कारोंका प्रचार करावें। सन्तानकी धर्म निष्ठाके लिये संस्कार मूलकारण हैं। बाल्यजीवन माताओंसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। इस लिये उन्हें संस्कार शुद्धिपर पूर्ण लक्ष्य देना चाहिये

१२-मुझे एक बात श्रावक श्रेष्ठ ... सम्मान्य ब्रह्मचारि महोदयोंसे भी कहना ... कि जो ११वीं प्रतिमाधारी क्षुल्लक अथवा ऐलक हैं। उन्हें रेलगाड़ीसे सफर नहीं करना चाहिये। ग्यारहवीं प्रतिमावाले उद्दिष्ट त्यागी हैं। अतएव उनका रेलसे सफर करना शास्त्र निषिद्ध होनेके सिवाय ईर्यापथशुद्धिको भी नहीं पलने देता। ऐसे संयमी ग्रामोंमें घूमते भ्रमण करें तो, ग्रामवासियोंको सदुपदेशकी प्राप्ति, पात्रदान, वैय्यावृत्त, भोजनशुद्धि, आदि बहुतसी बातोंका लाभ हो सकता है। तथा व्रतियोंकी क्रियायें भी निराकुल पल सकेंगी। व्रतियोंको चरणानुयोग शास्त्रोंका पूरा मनन करना चाहिये। मेरी यह भी सम्मति है, कि हरएक गृहस्थको सबसे प्रथम, श्रावकाचारका स्वाध्याय करना, नितान्त आवश्यक है। इसके बिना हमलोग प्राथमिक क्रियाओंको भी भूलते जाते हैं।

१३-आजकल जो दिगम्बर और श्वेताम्बरोंमें तीर्थोंका झगड़ा चल पड़ा है, उस सम्बन्धमें मुझे इतना ही कहना है, कि मुझे जहांतक इस पारिस्पारिक सम्बन्धका इतिहास मालूम है, दिगम्बरोंकी ओरसे आज तक कोई झगड़ा नहीं उठाया गया है। हां, अपने धार्मिक हक्कोंकी रक्षाके लिये उन्हें सामना करनेके लिये बाध्य होना पड़ा है। यह कोई उनका दोष नहीं कहा जासकता। इस समय भी जब कि शांतिविधानकी बात निर्णीत हो चुकी थी, फिर भी हमारे श्वेताम्बर भाइयोंने नहीं मालूम क्यों दाल कर दी। जिसका हमें खेद है। परंतु साथ

ही हर्ष है कि वे फिर शांतिविधानका वचन दे रहे हैं। हमारे दिगम्बर भाई इस अवसरको भी देखें। अच्छा है यदि परस्पर ही शांति और समझौता हो जाय।

१४-मुझे अभी एक अत्यावश्यक विषय और भी आपके सामने उपस्थित करना शेष है। मैं इस समय महाविद्यालयकी दशा साधारण रूपमें ही देख रहा हूं। इसका दिग्दर्शन करानेमें मैं आपका समय नहीं लूंगा। किन्तु उसके सुधारका उपाय यह बतलाऊंगा, कि उसमें प्रवेशिकाकी कक्षायें न रखी जाय। किन्तु उसके नामके अनुसार विशारद और शास्त्रीय कक्षायें रखी जाय। स्थान उसका किसी बड़े शहरमें रखा जाय। बड़े शहरमें चले जानेसे बड़े २ छात्रोंको बहुत नागरिक व्यवहारोंका बहुत कुछ अनुभव बिना शिक्षाके स्वयं होजाता है। जिसकी कि उनके लिये बड़ी आवश्यकता है। अध्यापकोंकी योजना अच्छे रूपमें की जाय। एक उत्साही विद्वानको मंत्री नियत कर देना चाहिये।

१५-जितनी शिकायत मुझे महा विद्यालयसे है उतनी ही परिक्षालयके विषयमें है। जब तक एक व्यापक परीक्षालय नहीं होगा तब तक छात्रोंकी पढ़ाईका सिलसिला किसी नियत रूपमें नहीं आसकेगा। बम्बई परिक्षालयका कार्य इस समय श्रीयुत सेठ रावजी सखाराम दोशीद्वारा चल रहा है। या तो उन्हें ही भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिक्षालयका मंत्री नियत किया जाय, या किसी दूसरे योग्य विद्वान को। इस कार्यको शास्त्रि परिषद अच्छी तरह कर सकती है। उसीके आधिन इसे करना अच्छा होगा। वर्तमान समयमें जो सरकारी परिक्षाओंकी बाढ़ चल पड़ी है, वह संस्कृत विद्याकी समुन्नतिका चिन्ह आवश्यक है। परन्तु इन परीक्षाओंसे छात्रोंकी सिद्धांतकी योग्यतामें बहुत कुछ कमी रह जाती है। और वैसी अवस्थामें हमारे लक्ष्यकी सिद्धिमें बाधा आती है। इसलिये एक व्यापक परिक्षालय खोलकर उसकी उपाधियोंसे छात्रोंको विभूषित किया जाय, और वे ही उपाधियां प्रमाणरूप समझी जाय। वर्तमान देशिक अभ्युत्थान भी हमारी सम्मतिका समर्थन करता है। इस परिक्षालय द्वारा, उन वृद्ध अनुभवी विद्वानोंको सम्मानित किया जाय जो समाजमें तात्त्विक योग्यतासे प्रसिद्ध हैं।

परिक्षाओंके केन्द्र नियत किये जाय। और शास्त्रीय परिक्षा मौखिक भी ली जाय। जिससे शास्त्रार्थ योग्यताका परिज्ञान होजाय। तथा शास्त्रीय उपाधि किसी केन्द्रमें छात्रोंको बुलाकर दी जाय।

१६-जैन समाजोंके लिये पाठ्य पुस्तकोंके नवीन निर्माणकी भी पूर्ण आवश्यकता है। यह विषय पहिले परिषदमें कहा जा चुका है, ऐसा मुझे स्मरण है। परन्तु अभी तक उसका कोई परिणाम दृष्टिगोचर नहीं हुआ है। हिन्दीकी प्रचलित पुस्तकोंसे छोटे २ बच्चोंके संस्कार ईश्वर कर्तृत्व आदिसे दूषित होजाते हैं। इस दोषको हटाना एवं छात्रोंमें जैन तत्वोंका सुगमतासे ज्ञान करानेके लिये बालोपयोगी पुस्तकोंके निर्माणकी पूरी आवश्यकता है। शास्त्री-परि

पदका एक यह भी आवश्यक कार्य है कि समाजमें जो पुस्तकें या ट्रेक्ट निकलें उनकी जांच की जाय कि वे धर्मानुकूल हैं या प्रतिकूल ?

१७-हमें धार्मिक और आर्थिक दृष्टिसे स्वदेशी वस्तुओंका उपयोग करना परमावश्यक है। शुद्ध स्वदेशी औषधी, वस्त्र, उपकरण आदि सभी पदार्थ स्वदेशी वर्तना उचित है। जैन संस्थाओंके छात्रोंको स्वदेशी वस्त्रोंका धारण करना अत्यावश्यक है। यहां पर मैं यह कहना भी उचित समझता हूं कि स्वराज्यके हम भी पक्षपाती हैं। परन्तु धर्मको ताकमें रखकर जो स्वराज्य चाहते हैं, व देशके हितैषी नहीं किन्तु देशको हानिकर है। धर्मकी रक्षा करते हुए स्वराज्य प्राप्तिमें हमें पूरा २ भाग लेना चाहिये। अहिंसा प्रचारमें देश इस समय हमारा साथ देरहा है इसलिये उसकी ओर जैनियोंको विशेष प्रयत्नशील होना चाहिये।

१८-अन्तमें मैं दो बातें और कहकर अपने भाषणको समाप्त करूंगा। एक तो भट्टारकोंके विषयमें कुछ कह देना समयोचित समझता हूं। पहले समयमें भट्टारक महोदयोंसे बहुत कुछ धर्म प्रभावना और सामाजिक मर्यादा रह चुकी है, इतिहास इसका साक्षी है। अनेक महत्वशाली संस्कृत ग्रन्थोंके उपलब्ध होनेसे प्राचीन भट्टारकोंके प्रखर पांडित्यका परिज्ञान भी सहज हो जाता है। कई स्थलों पर शास्त्रार्थमें विजय पाकर धर्मका महात्म्य भट्टारकोंने ही दिखलाया है। परन्तु आजकल बहुत भाग भट्टारकोंकी प्रवृत्तियां शिथिल हो रही हैं। उनमें ज्ञानकी मात्रा भाषा ग्रन्थोंके समझने तककी भी शेष नहीं दीखती, चारित्रांश भी जो कुछ शेष है वह केवल प्रतिष्ठाके लिये दिखाने मात्रका है। धमार्थ संचित संपत्ति विलासिताकी ओर उन्हें खींच रही है ये ही सब कारण ऐसे हैं जो भट्टारकोंकी वर्तमान परिस्थितिको दूषित एवं निंद्य बना रहे हैं। मैं उन भट्टारक महोदयोंको सलाह देता हूं कि वे वर्तमान समयको अपनी आवश्यकताका समय समझ कर अपने सदुपकारों द्वारा जनताको आकर्षित करें। जैनियोंमें चारित्रकी मात्रा शिथिल हो रही है, श्राद्धिक भाव उठते जा रहे हैं। सामाजिक बंधन तोडनेके लिये कुछ आवाजें उठ रही हैं। ऐसी अवस्थामें आपका कर्तव्य है कि गृहस्थाचार्योंके समान उन्हें धार्मिक दृढ़ता पर स्थित रक्खें। सबसे प्रथम आपका कर्तव्य यह है कि आप अपने पदस्थानुसार संयमी बनें। आपकी क्रियाएं आदर्श हों, इन्द्रियों विजयी और संयमी बनने से ही आप जनताको मार्ग बतलानेमें समर्थ हो सकते हैं अन्यथा कभी नहीं। दूसरा कर्तव्य आपका यह होना चाहिए कि संस्कृत ग्रंथोंका अच्छी तरह अवलंबन करें। चारों अनुयोगोंका कमसे कम सामान्य ज्ञान आपको अवश्य होना चाहिए। तीसरा कर्तव्य आपका यह होगा कि अधिकृत सम्पत्तिसे सुशिक्षा, धर्मायतनोंकी रक्षा, शास्त्रोद्धार, उदासीन श्रावक समुन्नति आदिक कार्य करें। उपर्युक्त तीन कर्तव्योंसे भट्टारक संप्रदाय जैनियोंके लिये हितकारी और परमावश्यक बन जायगा।

१९-शास्त्र परिषदका संगठन उत्तम और

व्यापक बने इसके लिये निम्नलिखित कार्य विधानके लिये मेरी सम्मति है। मैं देखता हूं कि प्रायः सभी प्रांतोंमें शास्त्रियोंका निवास एवं प्रवास है। हरएक प्रांत अथवा कतिपय नगरोंके कार्योंका उत्तरदायित्व उस प्रांतके शास्त्री महाशयको सौंपा जाय। परिषद्के उद्देश्य तथा प्रस्तावोंका प्रचार, धर्म विरुद्ध बातोंका निवारण, सामाजिक कार्योंमें धर्मानुकूलता, संस्थाओंकी उचित समालोचना आदि सभी कार्योंके लिये प्रांतीय शास्त्रियोंको मंत्री नियत किया जाय। वे स्वयं सुधार करें। और परिषद्के मंत्रीको वहांकी व्यवस्थाकी रिपोर्ट भेजते रहें। समाजको परिस्थितिका ज्ञान कराते रहें। इस प्रकार भिन्न २ प्रांतके शास्त्रियोंने यदि अपना २ मंतव्य पूरा किया तो समस्त समाजका अभ्युदय हो सक्ता है। शास्त्रियोंका कर्तव्य है कि वे सोत्साह उक्त कार्योंमें भाग लेवें। उनकी शक्तिके सदुपयोगका यह अच्छा अवसर है।

२०—अब मैं अपने भाषणको समाप्त करनेके पहिले अपना प्रधान कर्तव्य समझता हूं कि उन महोदयोंका कृतज्ञ बनूं जिनकी कि कृपासे यह शास्त्रि परिषद् अपना अधिवेशन यहां कर रही है। स्वागतकारिणी समितिके सभाध्यक्ष ला० रामस्वरूपजी, उसके मंत्री बाबू रूपचंदजी, शास्त्रि परिषद्के कार्य सचिव पं० दुर्गाप्रसादजी-के कार्योंका आभारी बनता हुआ उन्हें धन्यवाद देता हूं। मेलेकी शोभा बढानेवाली और प्राचीन शास्त्रोंके दर्शन करानेवाली प्रदर्शनीके श्रमशील उद्योगी मंत्री पं० कन्हैयालालजी वैद्यराजको भी मैं भूरि धन्यवाद देता हूं इसके सिवाय कानपुरके सभी भाई खास कर बाबू नन्दकिशोरजी वकील विशेष धन्यवादके पात्र हैं। जिन्होंने कि इस सम्मेलनमें पूरा २ भाग लिया है और समाज सुधारका विचार किया है।

२१—अन्तमें परन्तु प्रधान धन्यवाद मैं महासभाके सभापति महोदय और महामन्त्रीजीको दूंगा जिनकी कृपासे महासभा विघ्न बाधा कार्योंके रहते हुए भी इस परिषद्के लिये समय मिला है तथा जिन्होंने परिषद्के कार्योंमें पूरा योग दिया है।

श्री जिनेंद्रदेव उपस्थित महानुभावोंको सुविचारके लिये सुबुद्धि प्रदान करें ऐसी भावना करता हुआ अब मैं अपने स्थानको ग्रहण करता हूं।

पास हुए प्रस्ताव।

प्रस्ताव १—**माणिकचन्द दि० जैन ग्रन्थमाला**में जो ग्रन्थ प्रकाशित होतेहैं उनके साथमें उसके मंत्रीकी तरफसे ऐसी भूमिकाएं होती हुई देखी गयी हैं जो कि धर्मविरुद्ध और विवादग्रस्त हैं अतएव यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि वर्तमान मंत्री महोदयकी ओरसे कोई भी ऐसी भूमिका न लिखा जाय और इस प्रस्तावकी नकल उक्त ग्रन्थमालाके दफ्तरमें भेज दी जाय।

प्र० पं० मक्खनलालजी शास्त्री, स० वासुदेव शास्त्री

प्रस्ताव नं० २—यह परिषद् प्रस्ताव करता है कि समस्त दिगंबर जैनियोंमें तथा खासकर त्यागी और छात्रोंमें दिगम्बर जैन ऋषिप्रणीत आगमानुसार **संस्कारोंका प्रचार** किया जाय।

प्र० पं० दुर्गाप्रसादजी स० पं० पन्नालालजी

प्रस्ताव नं० ३—**सागारचारित्र**के विषयमें ११ प्रतिमाओंके स्वरूपको लोग प्रायः अच्छी तरहसे नहीं जानते और उसके अनुसार प्रायः आचरण करनेवालोंके आचरणमें विभेद रहता है अन-

एव यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि कुछ विद्वा-नोंसे ११प्रतिमाओंके आचरणको किस प्रकार पाला जाय इस विषयके आर्ष वचनानुसार निबन्ध लिखवाये जाय और वे निबंध निम्न-लिखित विद्वानोंकी कमेटीमें पेश हों.—

पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प० नरसिंहदासजी, पं० दुर्गाप्रसादजी, पं० गणेशप्रसादजी, ब्र० शी तलप्रसादजी।

इस तरहकी पुस्तक निम्नलिखित विद्वानोंने लिखना स्वीकार किया और वे निबंध ६ महि-नाके भीतर परिषदके दफ्तरमें भेज दिये जायगे।

पं० वंशीधरजी सोलापुर, पं० अवाहरलालजी, पं० देवकीनन्दनजी।

प्र०—रावजी सखाराम दोशी।

स० पं० वंशीधरजी मोरेना, ब्र० पायसागर उगारकर।

प्रस्ताव नं० ४—माय जैन विद्वानोंके खान-पान आदिकी शुद्धिमें शिथिलता देखकर यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि अपने **खानपान आदिकी शुद्धता**के उपर विशेष ध्यान दें। प्र० पं० देवकीनन्दनजी स० प० खूबचदजी शास्त्री।

प्रस्ताव न० ५—यह परिषद प्रस्ताव करती है कि **मूडबिद्री**में श्री धवल, जयधवल, मह धवल जो ग्रन्थ हैं उनका अभिप्राय रहनेके लिये उनकी दश पाच प्रति होकर बड़े बड़े शहरोंमें तथा संस्थाओंमें रहनी चाहिये इसके लिये महासभाने जो कमेटी उन ग्रंथोंको लानेके लिये नियत की है उसका समर्थन किया जाय और इसकी नकल वहाके पच व भट्टारकके पास तथा महासभाके पास भेजी जाय। सभापति।

महिला परिषदके प्रस्ताव।

भारत दि० जैन महिला परिषदकी १०वीं बैठक कानपुरमें ता० २-३ अप्रेलको श्री० महिला चंदाबाईके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें पास हुए प्रस्ताव—

प्रस्ताव न० १—यह परिषद् श्राविकाओं और कन्याओंको योग्य धार्मिक और लौकिक ज्ञानमें व्युत्पन्न करनेके लिये एक भारतवर्षीय **दि०जैन कन्या महाविद्यालय**के स्थापनकी बहुत आवश्यक्ता समझती है। तथा इसके लिये शीघ्र कमसे कम एक लाखका फंड करके कार्य संचा-लनके प्रबंधार्थ महासभाका लक्ष्यदान चाहती है। यद्यपि महासभाके दयालु भाइयोंने स्त्री शिक्षा सम्बन्धी कितने ही प्रस्ताव समय २ पर पास किये है। परन्तु अब समय अमली कार्यवाईका है अतएव एक स्त्री शिक्षा विभाग सुचारू रूपसे चलाना चाहिये और उसके लिये स्त्री पुरुषोंकी सम्मिलित कमेटी बनाकर कन्या महाविद्यालय खोलना चाहिये। आशा है कि महासभा इस प्रस्तावको अपने यहां भी अवश्य स्थान देगी और पास करेगी। प्र० श्री कंकु-बाईजी शोलापुर। अ० श्री व्रजबाला देवी—वृन्दावन।

प्रस्ताव न० ३—वर्तमानमें बालविवाह एवं वृद्धविवाहने तो जैन समाजको भ्रष्ट कर ही रखा था कि तृतीय उपद्रव **विधवाविवा**हने प्रारम्भ किया है। यह घृणित प्रथा केवल जैनोंको ही नहीं बल्कि समस्त उच्च जातीय महिलाओंके आत्मबलको नष्ट करनेवाली है। अतएव परिषद् इस अनुचित कार्यका **घोर विरोध** करती है। प्र० सभापति।

प्रस्ताव नं० ३—क्योंकि जिन समाजमें वस्त्राभूषण पहिननेका अधिक चाव रहता है इससे यह महिला परिषद उचित समझती है कि अपने देशका धन परदेश न जाकर इसी देशमें रहे और यह देश निर्धनतासे बचे, इस हेतुसे हमारी बहिनें अपने **देशके बने ही वस्त्राभूषण पहिनें और अपनी संतानोंको पहिनावें** तथा मोज शौकमें पड कर देश व समाजका अकल्याण न करें। प्र०—यशोदाबाई मुंबई आश्रम, अ० कस्तूरीबाई बडवाहा।

प्रस्ताव नं० ४—जैन स्त्री समाजमें कन्याओंके लिये योग्य **पाठ्य पुस्तकें** नहीं है इसको सम्पादन कराकर प्रकाशित करनेके लिये चंदाबाई एवं अन्यान्य विदुषी बहिनों और विद्वान भाइयोंसे प्रार्थना करती है।

प्र० सुशीलादेवी-अंबाला अ० श्रीरामदेवीव ई

प्रस्ताव नं० ५—क्योंकि जैन स्त्री समाजमें शिक्षा प्रदायक संस्थाओंकी अत्यंत कमी है इस लिए यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि स्त्रियोंके हर्ष, एवं मृत्यु समय जो **धर्मादा रकम** निकाली जाय, वह जैन स्त्री समाजमें **शिक्षा प्रचारार्थ** खर्च की जाय। तथा निकालते समय भी उसी प्रकार उल्लेख करके ही बहीमें जमा करनी चाहिये। प्र० कंकुबाई। अ० कौशल्याबाई।

आपणी पुत्रीओ विषे विचार।

(लेखकः—शा० नानचंद पुंजाभाई बी. ए. वरोडरा)

(गया अंकथी चालु)

सुवावडनो ओरडो.

हिंदु समाजमां सुवावडना ओरडा माटे कोइ पण जातनु खास लक्ष हजु अपातु नथी. प्रसुति माटे परसाळ के अंदरनो ओरडो के ज्यां बारी के जाळीउ पण होय नहि अने होय तो कुचा घानी पुरी नाखे छे, एवो ओरडो पसंद करवामा आवे छे. सुवावड करावनार दायणनी पसंदगी करवामा पुरुषो कइपण भाग लेता नथी. वैराज गोठवण करी ले छे. बाइने सुवा माटे एक जुनो काथीनो खाटलो जे खास सघरी राखवामां आवेलो होय छे, ते काढवामां आवे छे. तेनी दोरडीओ लबडती होय छे, धुगनुं तो पूछवुंज नहि पाथरवा माटे एक चींथरानी घागडी बाइए पोतेज तइयार करेली होय छे ते पाथरवामां आवे छे. उपर जुनो फाटलो साल्लो पाथरे छे. उशीकाने बदले कुचानी भरेली कोथळी माथा तळे मुके छे गमे तेवी टाढ पडे तोपण चींथरानी घागडी सिवाय ओढवानुं कंइ अपाय नहि. सुवावड जेवा प्रसंग उपर काथीनुं भरेलुं गादलुं अने उशीकुं भरावी तैयार राखवु जोइए. ओढवा माटे बनुम कामळी आपवी जोइए. प्रसव थया पछी माताने आरामनी बहु जरुर छे तेने खुब उंघवानी जरुर छे, पण आवा नमुनेदार खाटलामां सुवानुं होवाथी बराबर उंघ आवती नथी. पासां तपी जाय छे. वळी ओरडामां चोख्खी हवानी आवजा छुटथी थती नहीं होवाथी बाइना शरीरनुं लोही तदन चोख्खुं बनतु नथी. तेने शेकनी जरुर होवथी सघडी धीकती राखवामा आवे छे तेमा वळी लमणु सुवा बळावामा आवे छे एटले ते हवा केवी बनती हशे ते वांचनार पोतेज समजी लेशे बाइने ज्यारे आ वखने गभरामण थाय

તો બીજા ઘેરાં કહેશે કે ગભરામણ તો બધાંને આ વખતે થાય પણ શાથી થાય છે તેનું કારણ સમજતાં નથી. વળી મૂર્ખ અને અજ્ઞાન ઘેરાં પુરૂષને તો એમજ કહેશે કે તમે આ બાબતમાં શું સમજો. દેવતામાંથી અંગાર વાયુ નીકળે છે તે માણસને ગુંગળાવી નાખે એવો હોય છે. માટે તેને બહાર નીકળી જવા બારી કે જાળીઆ ઉઘાડાં રાખવા જોઇએ. સુવાવડી સ્ત્રીના નબળા શરીરને પ્રાણવાયુ એટલે ચોખ્ખી હવાની ખાસ જરૂર છે. સારી હવા ન મળે તો લોહી ચોખ્ખું લાલચોળ ન બને એવું આરોગ્ય શાસ્ત્ર કહે છે. સુવાવડના ઓરડામાં ચોકડી પણ હોતી નથી તેથી બિચારીને ઘરની બહાર રહેજ કારણ માટે જવું પડે છે ને તેના શરીરને બહુજ નુકશાન પહોંચે છે. ઘરમાં નાનાં છોકરા ધમાચકડી કરે, તોફાન કરે, રડે, એવી કલબલમાં બિચારીને આવા નમુનેદાર ખાટલામાં ક્યાંથી ઊંઘ આવે !! વળી સુવાવડી બાઇની ચાકરી કરનાર જે બાઇ હોય તે હોંશીયાર, ચાલાક, દયાળુ અને આ કામમાં માહિતી ધરાવનાર હોવી જોઇએ.

ડૉ. કેખશરૂ દાદાચાનજીની ગુપ્ત સંસારીક દુખ દરદોની ચોપડીમાં દાયણને ઉપયોગી ઘણી બાબતો આપી છે, તેમાંથી કેટલીક અહીં આપવાની જરૂર લાગે છે.

મૂર્ખ દાયણ સુવાવડીનું પેટ જાણે અખાડો હોય તેમ પેટ ઉપર જોર કરે છે એવા વિચારથી કે બાળકને જલદીથી કમલમાં નીચે ઉતરી શકાય. આ અથવા આવી કોઇ પણ બીજી રીતે નકામું જોર કરવાની જરૂર નથી. પોતાની મેળેજ આ કામ થયા કરે છે. દાયણ પોતાના ગંદા દાગેભેલું તેલ લગાડી છુપા ભાગમાં દાખલ કરે છે કે તે ભાગો પોચા ને મોટા થાય. પણ આ ભુલ છે. મેલાં આંગળાં દાખલ કરવાથી બાઇની જીંદગી જોખમમાં આવી પડે છે.

બાળકના જન્મ પછી ઓરનું અન્તર પડ ગર્ભસ્થાનમાંથી આખું ને આખું નીકળે છે કે નહિં તે અજ્ઞાન દાયણો તપાસ કરતી નથી. જો આખું ન નીકળે ને નાના મોટા કટકા ગર્ભસ્થાનમાં ચોંટી રહે તો માને ઘણી વેદના પાછળથી ખમવી પડે છે. કટકા રહેવાથી અતીશય લોહીનું વહેવું ઘણા મહિના સુધી ચાલે છે અથવા આવે છે. માટે ઓરનું અંતરપડ ગર્ભસ્થાન આખું ને આખું છુટું પડી યોની માર્ગમાંથી બહાર આસ્તે આસ્તે કાઢવું જોઇએ. પછી તેણીના છુપા ભાગોપર તદ્દન ચોખ્ખો રુવાલ બાંધી ઉપર એક સખ્ત પહોળો પાટો બાંધવો જોઇએ. અજ્ઞાન દાયણ આવો પાટો બાંધવાનું કંઇ જાણતી નથી.

પછી દાયણે કલાકેક સુધી ગર્ભસ્થાન સંકોચાઇ રહ્યું છે કે નહિ તે જોવા થોડે થોડે વખતે ઉપર હાથ મુકી તપાસ્યા કરવું. જો ન સંકોચાય તો થોડા વખતમાં લોહી વહે, ભરાય અને ગંઠાવાથી પાછું કુવે છે. અને માતાની જીંદગી જોખમમાં આવી પડે છે. લોહી અટકાવવા ખાતર અરગટ નામની દવાનું ટીંકચર માને દર ત્રણ કલાકે પીવડાવવામાં આવે છે. પછી આરામ ખાતર માતાને સુઇ રહેવા દેવી જોઇએ.

જન્મ થયા પછી રક્તસ્રાવ આઠેક દિવસ સુધી ચાલુ રહે છે. છઠ્ઠા દિવસથી લોહી નીકળતું નથી પણ ફક્ત રસી નીકળે છે. લોહી ખરાબ ગંધાય તો સમજવું કે અંદરના ભાગોમાં ઝેર ઉત્પન્ન થયું છે.

જન્મ આપ્યા પછી છ કલાકમાં બાઇને ઝાડો પેશાબ થવો જોઇએ. ચાર દિવસ સુધી તો ખાટલામાજ સુતાં સુતાં પેશાબ કરવો જોઇએ. પેશાબ ન થાય તો ગરમ પાણીનો શેક પેઢા પર કરવો. ઝાડો સાફ ન થાય તો બીજે દિવસે સાંજે દિવેલ આપવું. જ્યાં સુધી લોહી વહેતું હોય એટલે કે સાતેક દિવસ સુધી તો ખાટલામાંજ પડી રહેવું જોઇએ. ઝાડા પેશાબ માટે પણ ચાર દિવસ સુધી તો ઉઠવુંજ જોઇએ નહિ. પણ આપણામાં તો બાળકને તરતજ બાઇને સોંપવામાં આવે છે. તેને છાનું રાખવા કે બચ્ચાંને ધોવા કે બાળોતીઉ ધોવા પણ ઉઠવું પડે છે પણ આ કામ તેની પાસે નહીં કરાવતાં ચાકરી કરનાર બાઇએજ કરવું જોઇએ છે. જો ઉઠ બેસ વધારે થાય છે તો ગર્ભસ્થાન ઓછું સંકોચાય કે પાછળ વળી જાય છે અને અનેક બિમારીઓ થાય છે.

દાયણ હમેશાં મેલી આંગળી છુપા ભાગોમાં દાખલ કરે છે તેથી ઝેરીજંતુઓ દાખલ થાય

છે અને ઝેરી તાવ લાગુ પડે છે જેને સુવારોગ આપણે કહીએ છીએ.

ખોરાકમાં આપણે એમ સમજીએ છીએ કે જેમ ઘી વધારે અપાય તેમ સારૂં એટલા માટે શીરો ખવડાવવામાં આવે છે. આ ભુલ છે. ડા. બંજારીઆએ વહુને શીખામણ એ પુસ્તકમાં જુવાન સ્ત્રીઓને માટે ઘણી સારી શીખામણ આપેલી છે. તેમાં ખોરાક વિશે લખે છે કે પહેલા બે દિવસ તદન હલકો ખોરાક આપવો જોઇએ, દુધ, ભાત, કાંજી, ઓસામણ, રાબડી અને વખતે પુરી આપી શકાય. પણ ઘીમાં બોળેલી રોટલી કે શીરો કદી પણ ન અપાય. પછીથી રોજનો ખોરાક આપવો જોઇએ.

દાયણો આ બાબતમાં પોતાની ફરજ બરોબર બજાવે, કેટલાક વ્હેમ કાઢી નાંખવામાં આવે, સુવાને વધારે સગવડ કરી આપવામાં આવે, બાઇને પુરતો આરામ આપવામાં આવે તોજ સુવાવડમાં થતા મોત બચે. પુરૂષોએ આ વિષય જરા વધારે ગંભીરતાથી વાંચવાની જરૂર છે, આ તરફ વધારે કાળજી રાખવાની જરૂર છે. નસીબનો ખોટો વાંક કાઢી જરૂર નથી.

"Sitting down when tired or overheated or excited to nurse your little one, do not wonder if you have a cross, fretful, and many times feverish child as the result. When under a fit of anger, the mother's milk has many times produced in the child very alarming symptoms or sometimes even caused death."

જ્યારે બાઇ ઘણી થાકેલી હોય, કે ખરા તાપમાં કુવે તળાવ કરી બહારથી આવી હોય તે વખતે જો બાળકને ધવરાવે તો તે ગુસ્સાવાળુ, ચીડીઉં થાય છે, અને તાવ લાગુ પડે તો કંઇ નવાઇ પામવા જેવું નથી. મા જ્યારે ગુસ્સામાં હોય ત્યારે જો ધવરાવે તો ઘણી વખત બચ્ચામાં ભયંકર પરિણામ આવેછે અને વખતે મરી પણ જાયછે. નાનું બાળક જરા રડે કે તેની મા ધવરાવશે. રડતા બાળકને ખુશ કરવાના બીજા કોઇ ઉપાય નહિં આવડતા હોવાથી મા તેને ખોળામાં ઘાલી ધવરાવવા મંડી જાય છે. વારે વારે ધવરાવવાથી છોકરૂં માંદુ પડે છે. માનું શરીર ખરાબ થાય છે. એક બે મહિના સુધી તો બબ્બે કલાકને આંતરે ધવરાવવું જોઇએ. બે કલાકની વચમાં રડે તો કોઇપણ કારણે ધવરાવવાની જરૂર નથી. પણ શાથી રડે છે તેનું કારણ તપાસવું. રાત્રે નવ દશ વાગે ધવરાવ્યું હોય તો સવારમાંજ ધવરાવવું જોઇએ. રાતમાં રડે તો જરા ભીનું કોરૂં કરવાથી અથવા પાસું બદલાવાથી બચ્ચું છાનું રહે છે.

"A well trained baby will have to wright feeding." ટેવ પાડી હોય તો બચ્ચું રાત્રે ધાવવા માગશેજ નહિં.

બીજી બાબત એ છે કે આપણાં ઘોડીયાનાં ખોયાં ઝોળી જેવાં હોય છે તેવી ઝોળી ન જોઇએ. તેનાથી બચ્ચાની પાંસળીઓ અને પેટના બીજાં અવયવો બેઉ બાજુએથી દબાય છે. બરડાની કરોડ વાંકી વળે છે, અને ફેફસાં દબાય છે. આવી રીતે તેના શરીરને નુકશાન પહોંચે છે. માટે ઝોળી ન રાખતાં માંચી કે ટોપલી રાખવી તે સારી છે. માંચી ઉપર મચ્છરદાની પણ નાંખી શકાય છે. વડોદરામાં હમણાં તંદુરસ્તીના પ્રદર્શનમાં આવી માંચી મુકી હતી. બાળકનું શરીર નિરોગી હોય તો રડતુંજ નથી, પડ્યું પડ્યું હસ્યાજ કરે છે. "It is better for the little one not to be rocked to sleep." ઉંઘાડવાની ખાતર બચ્ચાને હીંચોળવાની જરૂરજ નથી. અરે પણ ઘોડીઆમાં સુવાડવાનીયે કશી જરૂર નથી. બચ્ચાને જ્યારે ઉંઘ આવે ત્યારે માંચી ઉપર સુવાડ્યું કે તરતજ ઉંઘી જાય એવી ટેવ પાડવી જોઇએ. ઘરના કામની મોકાણે બચ્ચાને મા ઘોડીઆમાં નાખી હીંચકાની ટેવ પાડે છે. પછી બચ્ચું જ્યારે હીંચકો ન મળે ત્યારે રડે એમા નવાઇ નહિં. નાનાં છોકરા પાસે હીંચકો નખાવવાથી ગમે તેવા નાંખી છોકરાંને હેરાન કરે છે. મોટાં માણસોને હીંચકો નાંખવાની ફુરસદ ન હોવાથી ઘરમાં તકરાર થાય છે. આ અખતરો સમજુએ કરવા જેવો છે. પછી જુઓ ઘરમાં કેવો આનંદ વર્તે છે. બાળ ઉછેરવાની વધુ માહિતી માટે ધાત્રી શિક્ષા, સારી સંતતિ વીગેરે પુસ્તકો દરેકે વાંચવા.

अघटित घटना।

बंधुओ, घणीज विचारवा जोग घटनाओ आजकाल केटलीक ज्ञातिओमा थवा लागी छे, के जे घटनाओनो विचार करता हृदय धृजे छे, बाळाओना दुःखे हृदय कंपे छे, ते अघटीत घटनाओना नाम सांभळवानी साथे आखा शरीरना रोमांच उभा थाय छे, अने तेने दरेक ज्ञाति धिक्कारे छे, एवी ते घटना **बाळलग्न, वृद्धविवाह अने कन्याविक्रय** छे

अरे! विचार करो के मनुष्य पर्यायमां पुत्र पुत्रीनी उत्पति थाय छे माता पिता तेओने पाळीपोषी मोटा करे छे, तेओनु संरक्षण करती वखते अनेक कष्ट तेना मा बापने भोगववा पडे छे. अने तेओ सदा बाळकोने सुख थाय एवाज विचारो करता रहे छे. बाळकोनुं हित ईच्छवु, तेओनु रक्षण करवु, तेओने विद्या संपादन करावबी, अने छेवटनु कर्तव्य ए छे के उमरलायक थया पछी तेओने योग्य वर वधुने शोधीने घर संसारमा जोडवा, ए मोटामा मोटी माता पितानी पुत्रपुत्री प्रत्ये फरज छे.

परन्तु मूर्ख अने अज्ञानी माबापोने पोतानी फरज बराबर अदा करता आवडती नथी. तेओ पोतानी फरजमा मोटामा मोटी भूल करे छे.

बंधुओ, विचार करो के पोतानाज स्वार्थने माटे मूर्खा माबापो एवी साथे बाळलग्न वृद्धविवाह अने कन्या विक्रय करे छे. माता पिता पोतानी नव दश वर्षनी बाळ कन्याने वृद्धोने एटले ४०, ४५ वर्षना घरडाओने आपे छे, अने वळी तेओनी पासेथी रूपीयाओनी मोटी रकम पण ले छे ए रीते दीन कन्यानो विक्रय करे छे. आवा निकृष्ट रीवाजो जडमूळथी काढी नाखवा जोईए तेना बदलामा केटलीक ज्ञातिमा एना मूळ रोपाय छे आ नकाम्ा आ रिवाजो नथी ज्ञातिओमाथी नीकळी जवा मागे छे अने केटलीक ज्ञातिओए तेना मूळनेज उखेडी नाख्या छे पण एक एवी ज्ञात छे के तेमा आ त्रणे कुरिवाजोना मूळ रोपाय छे. धिक्कार छे एवा माता पिताने के पैसाने माटे बाळिकाओने महामथानक ए ऊंडा कुवामा धकेली दे छे अने धिक्कार छे ए। विषयलंपटी वृद्धोने के जे पोतानी कामवासनाओने पुरी करवा माटे बाळ, दीन अने गरीबडी कन्याने परणी तेओने माथे विधवापणानुं असह्य दुःख नाखी थोडा वर्षोमा मृत्यु पामे छे. हवे जो ए बाळ विधवाने सासरामां दीयर जेठोनी साथे रहेवा मळे छे के तरत उमरलायक थया पछी ते बगडे छे अने पाछळथी पाछा तेने दोष देवा तैयार थाय छे.

बाळकी समर्पणी न होवाथी, माता पिताना छाज ने मयथी पोतानुं हित न समजवाथी ते बिचारी गमे ज्या दोरो त्या जाय छे. "गाय दोरे त्या जाय" ए कहेवत प्रमाणे तेनी दशा थाय छे, पण ज्यारे ते समजवा लागे छे, त्यारे तो ते पोताना माता पिताने शत्रुज गणे छे. खरेखर, एवा माबाप, अने बाळ विधवानो पायो नाखनाराओ तमे ते गरीबडी बाळकीना कट्टा शत्रुज छो, तमे मोटामां मोटा पाप करनाराओ अने दुर-विचारी छो. बंधुओं, तमे तेना शत्रु शामाटे छो? मित्र के हितेच्छु जे होय छे सामानुं भलु इच्छे छे अने दुःखथी बचावे तो बदो तेने तो तमे दुःखमा धकेली हवे तेना माता पिता के हितेच्छु तरीके दावो चाहो तो कदी बनवानु नथी वळी तमे केम छो? पापोने उत्पन्न करनार जे होय

ते पापी कहेवाय छे. बाळ विधवा चोरी करता, जुठुं बोलता, हिंसा करता, कुशील सेवता शीखे छे तेथी पापोनी उत्पादक बने छे. दुर्विचारी केम छो? के माबापे परणावतीवखते अने वृद्धोए परणती वखते जरा पण बाळकीनुं हित विचार्युं नथी तेथी तमे दुर्विचारी छो.

हवे मलकापुर (वराड) शहापुर अने बमाडा (निमाड) ना पोरवाड जातिने खुब सारी रीते विचार करवानी जरूर छे केः—

आ जातिमां एक व्यक्तिए ४० वर्षनी उमरमां १० वर्षनी कन्या साथे १२००) रुपिया आपीने आवते वर्षे लग्न करवानुं निरधार्युं छे। एटले सुधी के कन्याना पिता पासेथी करारनामुं (स्टांप) पण लखावी लीधुं छे। वळी गयेल वर्षे एवोज एक बनाव पण थई गयो छे.

माटे पोरवाड जातिना पंचो शुं तमे आंख बंद करी उंघो छो? के स्वार्थतामां बीजानुं हित देखातुं नथी, के वेपार रोजगारमांथी फुरसद मळती नथी के छे शुं ते समजातुं नथी. निद्रामांथी जाग्रत थाओ, ज्ञातिमां थतां अन्यायो रोको अने दीन बाळाकाओने विधवानी दुःखरूपी बेडीथी मुक्त करो, तमे पंच थया छो कंईक न थवा योग्य कार्य थाय तो तेने माटे दंड आपवा तथा जाति बहार काढवा समर्थ छो छतां पण जाति सुधारवानो तो कंई ख्याल करता नथी. जरा विचारो, सोच करो अने उभयनुं हित तपासी योग्य होय ते करो. आ कार्य पर जो पंच ध्यान नहि आपे, विवाह थई जाय अने थोडा वर्षमां भाग्य वश विधवा थाय तो ते सर्वेनुं पाप तमारे शीर छे.

एक जाति सेवक.

प्रांतिज दि० जैन बोर्डिंग।

फंडनी स्थितिः—आ बोर्डिंग खुल्ली मुकाओ लगभग सवा वर्ष थवा आव्युं, तेम छतां तेना स्थायी फंड सारु जोइओ तेवा संगीन पाया उपर तेनी व्यवस्था जोवामां आवती नथी. फंड सारु जे टीप शरु थएली ते पण पुरी थइ होय तेम लागतुं नथी. आथी मुश्केली ओ उपस्थित थवानी के ज्यां सुधी टीप पुरी थशे नहिं त्यां सुधी मेनेजींग कमीटीओ ठराव्या प्रमाणे व्याज तेओ भरे तेम लागतुं नथी. तेथी जो फंडनी कुल रकम रु० ३००००) धारवामां आवे तो प्रतिवर्षे लगभग रु. १३५०) ना व्याजनो फंडने धोको लागवानो, अने टीपना पैसा सौ सौनी पासे होवाथी बोरडिंगनुं खर्च चलाववाने फांफां मारवा पडे तेवी स्थितिमां आवी पडवानुं. टीपमां भराओली रकम अमुक हप्तेथी वसुल करवानो ठराव पसार कर्यो, पण तेने क्यारे अमलमां मुकवो ते कोइ जोशीने पुछवापर मुलत्वी राख्यो होय तेम देखाय छे। आटलेथी पण हवे जाग्रत थइ, (१) बाकीनी टीप पुरी कराय (२) टीपमां भराओली रकम अमुक हप्तेथी वसुल करी ओकज ठेकाणे ट्रस्टीओद्वारा जमे मुकवामां आवे, बाकी रहेली रकम उपर अमुक तेरीखनुं व्याज ठरावावामां आवे अने (४) ते व्याज दर वर्षे ओकत्र करवानो प्रबंध करवामां आवे, तो फंडनी रु. ३००००) जेटली धारवामां आवेली रकमने बिलकुल आंच आव्या सिवाय बोरडिंगनुं कार्य थओ जाय. विद्यार्थीओनी संख्या सरेरास चालीस धारवामां आवे तो तेमनुं मासिक खर्च रु. २००) लेखे गणतां, दर वर्षे रु. २४००) भोजन खर्च वीगेरेना आवे. हवे चालीस छोकरामां २५ छोकरा पेइंग अने सरेरास १५ छोकरां नोनपेइंग राखवामां आवे तो तेओनी वार्षिक फीना रु. १२५०) आवे ओटले फीनी रकम बाद करतां (२४००–

૧૨૫૦=૧૧૫૦) ૧૧૫૦) રૂા. ભોજન ખર્ચ વીગેરેના આવે. જો ઉપર પ્રમાણે વ્યાજ મેળવવામાં બંદોબસ્ત કરવામાં આવે તો લગભગ રૂા. ૧૩૫૦) ની આવક થાય. આથી ઉલટી ૧૩૫૦-૧૨૫૦=૨૦૦) રૂા. ની દર વર્ષે બચત રહેશે. ટુંકામાં આથી કોઇને પણ ભારે ન પડે તેવી રીતે ફંડ ધીમે ધીમે એકત્ર થશે. વ્યાજની સારી રકમની આવક થશે, અને ફંડને બિલકુલ આંચ આવ્યા વિના બોરડિંગનું કાર્ય થએ જશે.

વ્યવસ્થા:—હાલમાં બોર્ડિંગની અંતરંગ સ્થિતિ શી થઇ રહી છે તે ચર્ચવાને હું ઇચ્છતો નથી, પણ એટલું તો મારે કહેવું પડશે કે હાલમાં જે બોર્ડિંગ ઉપર દેખરેખ રાખનારાઓ છે તેમાંના ઘણાખરા જરી મંદગતિવાળા દેખાય છે. મો દિવસમાં એક દિવસ પણ બોર્ડિંગની મુલાકાત લેતા હોય યા તેનો હેવાલ જાણવા ઇચ્છતા હોય તોપણ બોર્ડિંગનું સદ્ભાગ્ય, અને તેઓએ કદાચ તેમ કર્યું હશે તો લેવા યોગ્ય યોગ્ય ઉપાયો તેમણે લીધા હોય તેમ જણાતું નથી આથી પરિણામ જોઇએ તે કરતાં ઉલટું આવે તે દેખીતું છે. સુપ્રિન્ટેન્ડેન્ટ તેમજ છોકરાઓને બરોબર ચાનક આવે તે સ્વાભાવિક છે; અને તેથી તેઓ પોતાની ફરજ પ્રતિ દુર્લક્ષ રહેવા પ્રેરાય તેમાં કંઇ નવાઇ નહિ.

સુંબાઇ યુવક મંડળને વિજ્ઞપ્તિ:—બોર્ડિંગની મેનેજીંગ કમીટી બરોબર જાગૃત થઇ, ઉપર પ્રમાણે ફંડની વ્યવસ્થા જેમ બને તેમ તાકીદે કરે તથા બોર્ડિંગની વ્યવસ્થા જાળવવાને યોગ્ય ઉપાયો લે તેવી ચળવળ કરવાનું કામ ખાસ યુવક મંડળે હાથમાં લેવું જોઇએ છે. તેમનું મંડળ તે પણ એક પંચ છે; માટે જો તે ધારે તો આ બાબતમાં બોર્ડિંગના કાર્યવાહકો ઉપર બહુ સારી અસર કરી શકે. જો મેનેજીંગ કમીટીની ઇચ્છા હોય તો તેઓએ તેમના મંડળના માણસોમાંથી એક વર્કીંગ-કમીટી ચુંટી કાઢવી. અને તેમાથી બોર્ડિંગના હિસાબ કિતાબ વગેરે ઉપર દેખરેખ રાખવાને એક સેક્રેટરી નિમવો, ને વર્કીંગ સલાહ લઇ મેનેજીંગ કમીટી જે ખર્ચનો અં (બજેટ) નક્કી કરે તે પ્રમાણે ખર્ચ બૉર્ડિંગની વ્યવસ્થા સાચવે એટલેકે ફંડ વગેરે વ્યવસ્થા મેનેજીંગ-કમીટી કરીલે અને તે બજેટ નક્કી કરે તે આધારે ખર્ચ કરી વર્કીં કમીટી બોરડિંગની વ્યવસ્થા જાળવી રાખે. સુપ્રી ની દેખરેખ તેમજ છોકરાઓના બોર્ડિંગ નોનબો ગના ફોર્મ પાસ કરવા વગેરે બોરડિંગને લગ બાબતોનો નિવેડો વર્કીંગ કમીટી કરી શકે તેમ હો જોઇએ. યુવક-મંડળ જો ઉપર પ્રમાણે કામ ક વાને ઉત્સુકતા દર્શાવે તો હું ધારતો નથી કે મેનેજી કમેટી પોતા ઉપરનો ભાર ઓછો કરવાને નારાજ બતાવે. મેનેજીંગ કમીટીને પણ હું સાથે સાં વિનંતી કરું છું કે જો બોરડિંગની વ્યવસ્થ બરોબર જાળવવી હોય, કાર્યને બહુ સરલ બના વવું હોય તો તે મંડળ ઉપર પ્રમાણે કામ કર વાની ઉત્સુકતા દર્શાવેથી તેને તે કામ તાકીદે સોંપી દેવાની ઉમદા તક ગુમાવવી જોઇએ નહિ. યુવક-મંડળ સુધરેલા વિચારનું હોઇ તેનો ઇનકાર કરે તે સર્વથા અસંભવિત છે. મેનેજીંગ કમીટીને જોવું જોઇએ છે કે યુવક-મંડળ જેવું કામ કરી શકે તેવું બીજું કોઇ કરી શકે નહિ. હાલ જે અસહકારની ચળવળને દીપાવી રહ્યા છે તે ખરેખર પુરકોજ છે.

એક જ્ઞાતિ બંધુ

सादे चित्र।

सम्मेदशिखरजी, चंपापुरी, पावापुरी, मांगीतुंगी, सोनागिरि, मुक्तागिरि, मातकुञ्जी, पावागढ़, गिरनारजी, श्री गोम्मटस्वामी, त्यागी श्री पन्नालालजी, मुनि चन्द्रसागरजी, त्यागी सम्मेलन, ब्र० शीतलप्रसादजी आदिके सादे चित्र सोसेमें मढ़वाने योग्य तैयार हैं। मूल्य हरएकका सिर्फ एक २ आना।

मैनेजर:—दि० जैन पुस्तकालय-सुरत

भारत दि० जैन महिला परिषद्की प्रमुखा पं० चंदाबाई [आरा] का व्याख्यान ।

कानपुर ता० २-४-२१

प्रिय समागत भगनी गणों

मुझमें ऐसी कोई योग्यता प्रतीत नहीं होती जिससे मैं आप लोगों जैसी धर्मज्ञ, देशहितैषिणी बहिनोंकी इस महती परिषद्की सभा पक्षा हो सकूं तथापि इतना अवश्य है कि मैं आप लोगोंकी एक सेविका हूं। और यथाशक्ति सेवा करनेमें किसी प्रकारकी त्रुटि नहीं करूंगी। इस परिषद्के दशवें अधिवेशनके निर्विघ्न कार्य समाप्त होनेके लिये जो आप लोगोंने मुझे सभापतिका आसन प्रदान किया है, इसके लिये मैं कोटिशः धन्यवाद देती हूं। यद्यपि इस प्रकार भरके योग्य मेरी वयस मेरी बुद्धि एवं मेरा ज्ञान पर्याप्त नहीं है तो भी आप पूजनीया बहिनोंकी आज्ञा शिरोधार्य करना कर्तव्य समझकर सेवामें उपस्थित होती हूं। इस महत् कार्यके आद्योपान्त निर्वाह करनेमें आप लोगोंकी पूर्ण कृपाका ही भरोसा है।

आजसे दश वर्ष पहले जब कि यह परिषद् श्री समेद शिखरजी परम पवित्र भूमिपर स्थापित हुई थी उस समय स्त्री समाजमें बड़ा गाढ़ा अज्ञानान्धकार छा रहा था उस समय यह आशा नहीं थी कि परिषद अपना जीवन चिरस्थायी रख सकेगी अथवा अपने नियमानुकूल भी समाजका सङ्गठन कर सकेगी, परन्तु परमात्माकी कृपासे यह भय मिथ्या निकला, इसके भिन्न २ अधिवेशन भिन्न २ स्थानोंमें श्री गजपन्थ शिखर, दाहोद, अम्बाला, उदयपुर, आदिमें यथासाध्य समारोह और उत्साहके साथ हुए, तदनुकूल आज यहां कानपुरमें भी जन समूहके बीचमें कार्य चल रहे हैं। कानपुर निवासिनी बहिनोंके इस अपूर्व उत्सव और संगठनको देखकर बड़ा हर्ष होता है। इस युक्त प्रान्तमें भी स्त्री समाजके नवीन सुधारकी आशाका सञ्चार होता है। अधिवेशनोंकी बात तो यों रही परन्तु अब दूसरी बातका विचार करना भी आवश्यक है। वह यह है कि परिषद्से स्त्री समाजको कौन २ से लाभ हुए? इसके नियमोंका प्रतिपालन और सञ्चालन कहांतक समाजने किया? इसका उत्तर हमको सन्तोष जनक नहीं मिलता। इस विषयमें यही कहना पड़ता है कि अभी तक हमारा वास्तविक सुधार कुछ भी नहीं हुआ है। हम लोग अधिवेशनोंमें एकत्रित हुईं, प्रस्तावोंसे सहमत हुईं परन्तु अपने २ घर जाकर इनके नियमानुकूल नहीं चलीं इसीका यह प्रतिफल है कि अविद्या, बालविवाह, वृद्धविवाह, व्यर्थव्यय, दरिद्रता आदि दुष्ट शत्रुओंके पंजेसे अभी तक नहीं निकली हैं। यहां पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि ऐसा क्यों हुआ, आज तक महिला मण्डलने असली कार्रवाई क्यों नहीं की? इसका उत्तर केवल इतना ही है कि हमारी समाज व्यक्तिगत सुधार नहीं जानती। इस समय प्रत्येक व्यक्ति यही कहता है कि अकेले सुधार करनेसे क्या होगा? क्या एक मनुष्यके कुरीति छोडनेसे देशका सुधार